GAEKWAD'S ORIENTAL SERIES

Edited under the supervision of the Curator of State Libraries, Baroda.

NO. IX.

परिशिष्ट

अवधेश पृष्ठ ३७८–३७९

४ और ६ नंबर के अवधेश एक ही हैं।

आलम पृष्ठ ३८०

यह १७६० के लगभग हुए हैं। मुंशी देवीप्रसाद, जो पूताने के एक प्रसिद्ध विद्वान् और ऐतिहासिक लेखक माने त थे, उनके पास आलम और शेख के ५०० के लगभग छंद दूद थे। ग्रंथ कोई नहीं मिलता।

उदयनाथ पृष्ठ ३८५

इनका रचना-काल १७९१ है, इसलिये जन्म-काल १७११ न कर १७५० के लगभग होना चाहिए।

कवीन्द्र सारस्वत ब्राह्मण पृष्ठ ३८६

इनका जन्म-काल १६२२ नहीं, १६५० के लगभग होना चाहिए। क्योंकि यह शाहजहाँ के यहाँ थे। १६२२ में तो शाहजहाँ ा या इनका जन्म भी न हुआ होगा। इन्होंने १६८७ में समरसार थ बनाया है।

कवीन्द्र पृष्ठ ३८९

भका जन्मसंवत् १७३६ के लगभग होना चाहिए, १८०४ ग़लत है।

कालिदास त्रिवेदी पृष्ठ ३८८

इनका जन्म-संवत् १७४९ अशुद्ध है। १७१० के लगभग ोना चाहिए। कारण, इन्होंने १७४५ में होनेवाली गोलकुंडा की ड़ाई का वर्णन, औरंगज़ेब के साथ रहकर, प्रत्यक्षदर्शी की रह किया है।

ग्वाल कवि पृष्ठ ४०८

खोज से इनके रसिकानंद, राधामाधव-मिलन और राधाष्टक, ग्रंथ और मिले हैं।

ज्ञानचन्द्र यती पृष्ठ ४१०

इनका जन्म-काल १८१३ और कविता-काल १८४० होना चाहिए।

घनश्याम कवि पृष्ठ ४१०

इनका जन्म-काल १७३७ के लगभग है। १६३५ या तो अशुद्ध है, और या वह घनश्याम दूसरे होंगे।

चन्द कवि नं० १ पृष्ठ ४११

इन कवीश्वर का जन्म-संवत् ११८३ और कविता-काल १२२५ से १२४६ तक के भीतर समझना चाहिए।

चन्द कवि नं० २ व ३ व ४ पृष्ठ ४१२

मिश्रबंधुओं की राय में ये तीनों चंद एक ही हैं, और उसी एक चंद ने पठानसुलतान के नाम से सतसई पर कुंडलियां कही हैं।

चन्दनराय पृष्ठ ४१३

इन्हें बुंदेलखंडी रईस ने नहीं, अवध के बादशाहने बुलाया था।

चरणदास ब्राह्मण पृष्ठ ४१५

खोज से इनका जन्म-काल १७६० मालूम हुआ है।

चिन्तामणि त्रिपाठी पृष्ठ ४१२

भूषण के समय के अनुसार इनका जन्म-संवत् १७२६ नहीं, १६६६ के लगभग होना चाहिए; क्योंकि यह भूषण के भाई और उनके समकालीन थे। खोज से इनके रसमंजरी नामक एक और ग्रंथ का पता मिला है।

जसवन्त सिंह बघेले पृष्ठ ४२०

मुरारिदान के जसवंतजसोभूषण ग्रंथ से ज्ञान पड़ा कि भाषा-भूषण ग्रंथ इनका नहीं, मारवाड़ के महाराज जसवंतसिंह का बनाया हुआ है। इनका जन्म-संवत् १८५५ अशुद्ध है। यह इनका कविता-काल होना चाहिए।

ठाकुर प्राचीन पृष्ठ ४२५

इनका जन्म-काल १८६२ के लगभग होगा। १७०० ठीक नहीं जान पड़ता।

ताज़ कवि पृष्ठ ४३०

जोधपुर के मुंशी देवीप्रसादजी की राय में इनका समय १७०० के लगभग है।

दास भिखारीदास पृष्ठ ४३२

इनके ग्रंथ से ही जान पड़ता है कि यह अरवर, ज़िला प्रतापगढ़ के निवासी थे। इनके विष्णुपुराण और नामप्रकाश, ये दो ग्रंथ और मिले हैं। बाग़बहार नाम का कोई ग्रंथ नहीं मिलता। शायद नामप्रकाश ही का दूसरा नाम बाग़बहार हो। इनका जन्म-काल १७५५ के लगभग होगा।

दूलह कवि पृष्ठ ४३३

इनका जन्म-संवत् १८०३ ग़लत है। क्योंकि इनके पिता कवीन्द्र के जन्म का संवत् इसी ग्रंथ में १८०४ दिया हुआ है। अनुमान से इनका जन्म-संवत् १७७७ के लगभग होना चाहिए; क्योंकि इनके पितामह कालिदास का जन्मकाल १७१० के लगभग है। और इनके पिता कवीन्द्र का जन्म-काल १७३६ के लगभग है।

देव कवि पृष्ठ ४३४

इनका जन्म-संवत् अनुमान से १७३० होना चाहिए।

देवकीनन्दन पृष्ठ ४३५

इनके सफ़राज़चंद्रिका नामक एक और ग्रंथ का पता लगा है।

धनीराम पृष्ठ ४३६

इनका जन्म-काल १८४० के लगभग होना चाहिए।

नागरीदास पृष्ठ ४३९

डा० ग्रियर्सन ने १५९१ और शिवसिंह ने १६४८ इनका जन्म-संवत् माना है। पर दोनों ही ठीक नहीं जान पड़ते। १७५६ होना चाहिए।

नीलकण्ठ त्रिपाठी पृष्ठ ४४२

इनका जन्म-संवत् १७३० ग़लत है, १६६२ के लगभग होना चाहिए।

पदमाकर पृष्ठ ४४५

इनका जन्म-काल १८१० होना चाहिए।

परतापसाहि पृष्ठ ४४५

यह चरखारी के राजा विक्रमसाहि के यहाँ थे, छत्रसाल के यहाँ नहीं। छत्रसाल तो इनके समय से १०० वर्ष पहले ही मर

चुके थे। परतापसाहि और परताप दो नहीं, एक ही हैं। व्यंग्यार्थ-कौमदी भी इन्हीं की है।

बलदेव अवस्थी, दासापुर के पृष्ठ ४५३

इनका जन्म-संवत् १८६७ है।

बेनीदास कवि पृष्ठ ४६३

यह १८६६ में उत्पन्न और १८६० संवत् में तारीख-नवीसी में नौकरी करते लिखे गए हैं, सो सरासर ग़लत है।

बोधा कवि पृष्ठ ४५७

यह सरवरिया ब्राह्मण राजापुर, प्रयाग के निवासी थे। यह राजापुर तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर, बाँदा से भिन्न है। यह असल में फ़ीरोज़ाबाद, ज़िला आगरा के पुराने निवासी थे।

भगवन्तराय पृष्ठ ४६४

इनका जन्म-काल १८०६ के लगभग है।

भीषम कवि पृष्ठ ४६६

आगेके २८ नं० के भीषम और यह दोनों एक ही जान पड़ते हैं।

भूषण कवि पृष्ठ ४६३

इनका जन्म-काल १७३८ ग़लत है। १६७० के लगभग होना चाहिये।

भौन कवि पृष्ठ ४६६

इनका जन्म-काल १८८१ नहीं, १८२५ होना चाहिए। क्योंकि १८५१ में इन्होंने शक्तिचिन्तामणि ग्रंथ बनाया है।

मतिराम पृष्ठ ४७४

खोज से इनके साहित्यसार और लक्षणशृंगार नाम के दो और ग्रंथ मिले हैं। इनका जन्म-काल १७३८ ग़लत है, १६७४ के लगभग होना चाहिए। इनकी एक सतसई भी मिली है।

मनियारसिंह पृष्ठ ४७१

इनका जन्म-काल १८०० के लगभग होना चाहिए।

मनीराम पृष्ठ ४७२

इनका जन्म-संवत् १८२६ ठीक नहीं। कारण १८२६ में इन्होंने छंदछप्पनी और आनंदमंगल ग्रंथ लिखे हैं।

महा कवि पृष्ठ ४७३

महाकवि कालिदास कवि ही का एक उपनाम था। इस नाम का अन्य कोई कवि नहीं हुआ।

मीराबाई पृष्ठ ४७५

१४७५ में इनका जन्म और १४७० में विवाह शिवसिंहजी ने लिखा है। यह सरासर ग़लत है।

मून कवि पृष्ठ ४६६

खोज से इनका सीतारामविवाह नाम का एक और ग्रंथ मिला है।

मोहन भट्ट पृष्ठ ४६८

इनका जन्म-काल १७६० के आसपास होना चाहिए। इसलिये जन्म-संवत् यह ठीक नहीं है।

रसलीन कवि पृष्ठ ४८२

इनका जन्म-काल १७४६ के लगभग होना चाहिए। खोज से इनका नखशिख-अंगदर्पण-भी मिला है।

रहीम कवि पृष्ठ ४८६

इनके उदाहरण में जो छंद दियागया है, वह अनीस कवि का है, इनका नहीं। इनका समय १७८० के पहले है।

लाल कवि नं० ४ पृष्ठ ४८७

मिश्रबंधुओं ने इनका जन्म-काल १७३० के लगभग माना है।

शिव कवि पृष्ठ ४९२

इस नाम के दो कवि हैं। एक पयागपुर (ज़िला बहराइच) के, दूसरे असनी के। पहले का जन्म-समय १८०० के आसपास और दूसरे का १८३१ के लगभग है।

शंभु कवि पृष्ठ ४९१

इनका कविता-काल १७०७ के लगभग है; क्योंकि मतिराम इनके मित्र थे, और उनका जन्मकाल १६७४ तथा कविता-काल १७१० के लगभग है। इसलिये १७३८ इनका संवत् ग़लत है।

श्रीधर मुरलीधर पृष्ठ ४९६

इनका जन्म-संवत् १७३७ के लगभग है।

सबलसिंह चौहान पृष्ठ ५००

इनका जन्म-काल १७०२ के पहले ही होना चाहिए; १७२७ अशुद्ध है। कारण १७१८ में इन्होंने महाभारत के भीष्मपर्व का अनुवाद किया है।

सुवंस शुक्ल पृष्ठ ५०१

खोज में इनका एक पिंगल-ग्रंथ भी मिला है।

सूरति मिश्र पृष्ठ ५०३

इनका जन्म-काल १७४० के लगभग होना चाहिए। १७६६ ग़लत है। इनके एक ग्रंथ रसग्राहक-चंद्रिका का भी पता लगा है।

सूरदास पृष्ठ ५०२

इनका जन्म-संवत् १६४० ठीक नहीं जान पड़ता।

सेन कवि पृष्ठ ५०१

इन रीवाँवाले सेन का जन्म-काल १४५७ के लगभग है। १५६० वाला सेन दूसरा है।

सेनापति पृष्ठ ५०२

इनका एक ग्रंथ कवित्त-रत्नाकर भी खोज में मिला है। उसमें ५ तरंग हैं। पहले तरंग में ६४, दूसरे में ७४, तीसरे में ५६, चौथे में ७६ और पाँचवें में ५७ छंद हैं। शेष २७ कवित्तों में चित्र-काव्य है। १–२ तरंगों में शृंगार-रस, ३ तरंग में षट्ऋतु, ४ में रामकथा और ५ में भक्ति का वर्णन है।

सोमनाथ पृष्ठ ५००

१८८० जन्म-काल ग़लत है; क्योंकि इन्हीं के रसपीयूषनिधि ग्रंथ से जान पड़ता है, कि उसकी रचना १७९४ में हुई है।

हरिकेश कवि पृष्ठ ५०७

इनके ब्रजलीला और जगत्सिंह दिग्विजय, ये दो ग्रंथ और मिले हैं।

हितहरिवंश पृष्ठ ५०७

इनका जन्म-संवत् १८७० के लगभग है।

श्रीगणेशाय नमः

भूमिका

मैंने संवत् १९३३ में भाषा-कवियों के जीवनचरित्र-विषयक एक-दो ग्रंथ ऐसे देखे, जिनमें ग्रंथकर्त्ता ने मतिराम इत्यादि ब्राह्मणों को लिखा था कि वे असनी[1] के महापात्र भाट हैं। इसी तरह की बहुत-सी बातें देखकर मुझसे चुप न रहा गया। मैंने सोचा, अब कोई ग्रंथ ऐसा बनाना चाहिये, जिसमें प्राचीन और अर्वाचीन कवियों के जीवनचरित्र, सन्-संवत्, जाति, निवासस्थान आदि कविता के ग्रन्थों-समेत विस्तार-पूर्वक लिखे हों। मैंने प्रथम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, भाषा, और अँगरेज़ी के ग्रन्थों से पूर्ण अपने पुस्तकालय को छः महीने तक यथावत् अवलोकन किया। फिर कवियों का एक सूचीपत्र बनाकर उनके ग्रन्थ, उनके विद्यमान होने के सन्-संवत् और उनके जीवनचरित्र, जहाँतक प्रकट हुए, सब लिखे। पहले मैंने सोचा था कि एक छोटा-सा संग्रह बनाऊँगा; पर धीरे-धीरे ऐसा भारी ग्रन्थ हुआ कि १००० कवियों के नामोंसहित जीवनचरित्र इकट्ठे हो गये, जिनमें ८३६ की कविता मैंने इस ग्रन्थ में लिखी, और विस्तार के भय से केवल इतने ही कवियों की कविता लिखचुकने पर ग्रंथ को समाप्त कर दिया। मुझको इस बात के प्रकट करने में कुछ संदेह नहीं कि ऐसा संग्रह कोई आज तक नहीं रचा गया।

---

१ असनी गंगा-तटपर, ज़िला फ़तेहपूर (ई. आई. आर.) में एक बड़ा क़स्बा है। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँके भाट कवि बड़े मशहूर थे।

परंतु इस बात को प्रकट करना अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना है। इस कारण इस संग्रह की बुराई-भलाई देखने-पढ़नेवालों की राय पर छोड़ी जाती है। जिन कवियों के ग्रंथ मैंने पाये, उनके सन्-संवत् बहुत ठीक ठीक लिखे हैं, और जिनके ग्रंथ नहीं मिले, उनके सन्-संवत् हमने अटकल से लिख दिये हैं। जो कहीं एक कवि का नाम दुबारा लिखा गया हो, अथवा एक कवि का कवित्त दूसरे कवि के नाम से लिखा हो, तो विद्वज्जन उसे सुधार लें, और मेरी भूल-चूक को क्षमा करें। क्योंकि मुझे काव्य का कुछ भी बोध नहीं है। कविलोग इस ग्रंथ में प्रशंसा के बहुत कवित्त देखकर कहेंगे कि इतने कवित्त वीर-यश के क्यों लिखे? मैंने सन्-संवत् और उस कवि के समय-निर्माण करने को ऐसा किया है; क्योंकि इस संग्रह के बनाने का कारण केवल कवियों के समय, देश, सन्-संवत् बताना है। जिन-जिन पुस्तकों से मुझको इस ग्रन्थ के बनाने में सहायता मिली है, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं—

१ कालिदास कवि का हज़ारा, जो संवत् १७५५ के लगभग बनाया गया, और जिसमें २१२ प्राचीन कवीश्वरों के कवित्त लिखे हैं।

२ लाला गोकुलप्रसाद कवि बलरामपुरीकृत दिग्विजयभूषण नाम संग्रह, जो संवत् १९२५ में बनाया गया, और जिसमें १९२ कवियों के कवित्त हैं।

३ तुलसीकवि-कृत कविमाला नाम संग्रह, जो संवत् १७१२ में बनाया गया, और जिसमें ७५ कवियों के कवित्त हैं।

४ ओयल के राजा सुब्बासिंह-कृत विद्वन्मोदतरंगिणी नाम संग्रह, जो संवत् १८७४ में सुवंस कवि की सम्मति से रचा गया, और जिसमें ४४ सत् कवियों के कवित्त हैं।

५ बलदेव कवि बघेलखण्डी कृत सत्कवि-गिरा-विलास नाम संग्रह, जो संवत् १८०३ में बनाया गया, और जिसमें १७ महान् कवीश्वरों के कवित्त हैं ।

६ बाबू हरिश्चन्द्र बनारसी कृत सुंदरीतिलक नाम संग्रह, जो संवत् १९३१ में बनाया गया, और जिसमें ६७ कवियों के शृंगाररस के सुंदर-सुंदर सवैया हैं ।

७ ठाकुरप्रसाद कवि किशुनदासपुरी का रसचंद्रोदय नाम संग्रह, जो संवत् १९२० में रचा गया, और जिसमें २४२ कवियों के ९ रस के कवित्त हैं ।

८ मातादीन मिश्र-कृत कविरत्नाकर नाम संग्रह, जो संवत् १९३३ में छापा गया, और जिसमें २० कवियों के कवित्त हैं ।

९ महेशदत्त पण्डित-कृत काव्यसंग्रह नाम संग्रह, जो संवत् १९३२ में छापा गया ।

१० कृष्णानन्द व्यासदेव स्वामी-कृत रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम नाम संग्रह, जो संवत् १८०० में बनाया गया, और जिसमें प्रायः २०० महात्माओं के पद लिखे हैं ।

११ टाड साहब रज़ीडंट राजपूताना-कृत टाड राजस्थान नाम इतिहास, जो संवत् १८८० में बनाया गया, और जिसमें प्राचीन कवीश्वर चंद इत्यादि का वर्णन है ।

१२ कल्हण, जोनराज इत्यादि-कृत संस्कृत काश्मीर-राजतरंगिणी और रघुनाथ मिश्र विद्याधर-कृत संस्कृत दिल्ली-राजतरंगिणी, राजावली ग्रंथ, जिसमें पाँच हज़ार वर्ष तक के समाचार लिखे हैं ।

१३ तुलसीदास-कृत उर्दू भक्तमाल, जो संवत् १९११ में बनाया गया, और जिसमें सूरदास इत्यादि भक्त कवीश्वरों के जीवनचरित्र लिखे हैं ।

१४ दलसिंह, किशोर, ग्वाल, निपटनिरंजन, कमंच इत्यादि के संगृहीत पाँच संग्रह, और इनके सिवा २८ और संग्रह के ग्रंथ, जिनमें सन्-संवत् नहीं लिखे।

संस्कृतसाहित्यशास्त्र का निर्णय

अथ काव्य-लक्षण। (काव्यविलासमते)

दोहा—गुन-जुत सब दूषन-रहित, सब्द-अर्थ रमनीय।
स्वल्पअलंकृत काव्य को, लच्छन कहि कमनीय॥

(काव्यप्रदीपमते)

अद्भुत वाक्यहि ते जहाँ, उपजत अद्भुत अर्थ।
लोकोत्तर रचना जहाँ, सो कहि काव्य समर्थ॥

(साहित्यदर्पणमते)

रस-जुत व्यंग्यप्रमान जहँ, सब्द अरथ सुचि होइ।
उक्ति जुक्ति-भूषनसहित, काव्य कहावै सोइ॥

(रसगंगाधरमते)

जहँ बिभाव, अनुभाव पुनि, संचारी पुनि आइ।
करि विसिष्टता व्यंजना, स्वाद बढ़ावै भाइ॥

(अथकाव्यप्रयोजन)

चारि बर्ग लहि जासु ते, आवत करतल मद्धि।
सुनत सुखद, समुझत सुखद, बरनत सुखद सुमद्धि॥

(विष्णुपुराणे)

काव्यालापाश्च ये केचिद्गीयन्तेनाखिलेन च।
शब्दमूर्तिधरस्यैते विष्णोरंशामहात्मनः॥

भाषा दोहा—करत काव्य जे जगत मैं, बानी अखिल बखानि।
सब्दमूर्ति ते जानिये, विष्णुअंस पहिचानि॥

(अग्निपुराणे)

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

भाषा दोहा—नरतन दुरलभ लोक मैं, ताते विद्या जानि ।
विद्या ते पुनि काव्य कहि, ताते सक्ति सुमानि ॥

(अथ काव्य को कारण)

प्रथम सक्ति व्युत्पत्ति पुनि, तीजो पुनि अभ्यास ।
कारन तीनि सुकाव्य के, बरनत सुमतिविलास ॥

प्रथम सर्वविद्या-ईशान श्रीसांब-सदाशिव हैं । उनके पीछे संस्कृतकाव्य के प्रथम आचार्य श्रीब्रह्माजी को समझना चाहिये, जिन्होंने छंदस्वरूप वेद का निर्माण किया । दूसरे आचार्य श्री वाल्मीकिजी हैं, जिन्होंने आदिकाव्य रामायण को नाना छंदों में रचा । उपरांत मनु महाराज इत्यादि और याज्ञवल्क्य इत्यादि महाऋषीश्वरों ने विंश स्मृतियों को अपने-अपने नाम से बनाया । फिर श्रीवेदव्यास महाराज ने भारत-इतिहास को अष्टादश पुराणों सहित रचा, और ऋषीश्वरों ने अष्टादश उपपुराण बनाये । इसके पीछे संस्कृत-साहित्य के तीन आचार्य हुए—भरत, भाम, मम्मट । इन्हीं तीनों आचार्यों ने काव्य के दसों अंग विस्तार-पूर्वक वर्णन करके काव्यप्रकाश नाम ग्रंथ बनाया । तदनन्तर सैकड़ों आचार्य हुए और उन्होंने सैकड़ों काव्य के ग्रंथ बनाये । कुछ ब्यौरा हमारे बनाये हुए कविमाला नाम ग्रंथ से प्रकट होगा । यहाँ केवल संस्कृत-काव्य के विवरण में ३४ दोहे उसी ग्रंथ से लिखते हैं—

(कविमालानाम ग्रंथे)

दोहा—मंगल-मूरति गौरिसुत, संकर-सुवन गनेस ।
हरिबल्लभ करिवर-बदन, बानी-सदन दिनेस ॥ १ ॥

कबिकुल को माला कहत, सेंगर शिव मतिमंद ।
हरहु बिघ्न करुनायतन, कृपासिंधु जगबंद ॥ २ ॥
पहिले भाषत संसकृत, साहित्यन के नाम ।
सूत्र भरत ऋषि के किये, श्लोकबंध गुनधाम ॥ ३ ॥
व्याख्या काव्यप्रकाश कबि, मम्मट कियो प्रकास ।
दूजो साहितचंद है, बिबरन बुद्धि-बिलास ॥ ४ ॥
दसौ अंग साहित्य के, कीन्हो दसौ उलास ।
बावन सूत्रै में कियो, साहित सबै बिकास ॥ ५ ॥
साहित काव्य-प्रदीप है, छाया काव्यप्रकास ।
मम्मट को व्याख्यान करि, कियो नाम निज खास ॥६॥
साहित-दर्पण पुनि समुझि, रस-रत्नाकर नाम ।
अलंकार-सरबस्व पुनि, चंद्रालोक ललाम ॥ ७ ॥
अलंकार-सेखर बहुरि, रस-गंगाधर सार ।
रुद्राटालंकार पुनि, बागभटालंकार ॥ ८ ॥
सरस्वतीकण्ठाभरन, काव्यादर्स स्वछंद ।
चित्रमिमांसा दीक्षितौ, कियो कुवलयानंद ॥ ९ ॥
रुद्रप्रताप सहित्य को, काव्य-बिलासहि जानि ।
साहित संग्रहसार पुनि, रसतरंगिनी भानि ॥ १० ॥
रुद्रट तिलकसिंगार किय, रसमंजरि कबि भानु ।
ग्रंथ नील उज्वल मनिहु, गीतगोबिन्दहि जानु ॥ ११ ॥
करनामृत श्रीकृष्ण को, पुनि भामिनीबिलास ।
गोबर्द्धन की सतसई, अनँगरंगपरकास ॥ १२ ॥
नागराजकृत सतक पुनि, कांतासतक कटाच्छ ।
ये सिंगार के ग्रंथ हैं, रसपुमान के आच्छ ॥ १३ ॥
कबि की कल्पलता लता, काब्यकल्प है एक ।

अन्योक्तिकल्पद्रमहु, काव्यमिमांसा नेक ॥ १४ ॥
प्रस्ताविकरतनाकरहु, बासवदत्ता जानि ।
महासेन कादंबरी, महानाटकहु मानि ॥ १५ ॥
दसरूपक को आदि दै, नाटक अपर प्रमानि ।
प्रहसन चंपू नाटिका, भंड प्रसस्ति बखानि ॥ १६ ॥
बेद सास्त्र रामायनो, तंत्र पुरानहु जोइ ।
बेदअंग[1] उपबेदहू[2], धर्मसास्त्रजुत होइ ॥ १७ ॥
चित्रकाव्य पुनि चित्र को, काव्य नलोदय जानि ।
है षटऋतु उपसंहतिहु, बाकभूषनहु मानि ॥ १८ ॥
पुनि बिदग्धमुखमंडनो, काव्य सुभाषितलेखि ।
सारँगधरबरजा कहौ, दसकुमार पुनि देखि ॥ १९ ॥
सालिहोत्र गज तुरग को, बैदकजुत है सोइ ।
बीरचरित नाटक बहुरि, भारत चंपू जोइ ॥ २० ॥
रामायन चंपू तथा, अनिरुध चंपू और ।
आनँदबृंदाबन सहित, चंपू है सिरमौर ॥ २१ ॥
चंपू श्रीनरसिंह को, चल चंपू सुनि लेहु ।
पद्य-गद्य-जुत काव्य को, चम्पू नाम कहेहु ॥ २२ ॥
प्रथम काव्य रघुबंस है, कालिदास कबि कीन ।
तीनि माघ कबि-कृत सुभग, माघ बैस्य धन हीन ॥२३॥
सिरीहरष मिश्रहु कियो, नैषध काव्य प्रवीन ।
भारवि कियो किरात को, अर्थ बहुत जुत पीन[3] ॥२४॥
मेघदूत संभव[4] कियो, कालिदास कबि तीनि ।
बृहत्त्रयी रघुबंस पुनि, माघ नैषधौ गीनि ॥ २५ ॥

१–छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, निघंटु आदि । २–धनुर्वेद, गांधर्ववेद आदि । ३–गंभीर । ४ –कुमारसंभव ।

काव्य किरात कुमारहू, मेघदूत हू जानि ।
लघुत्त्रयी इनको सुनो, कबिजन कहत बखानि ॥ २६ ॥
हंसदूत इक काव्य है, दुर्घट[1] काव्य नवीन ।
बिद्वन्मोदतरंगिनी, भोजप्रबन्धहु गीन ॥ २७ ॥
रतिरहस्य सामुद्रिकहु, कोकसार हू मानि ।
पँचसायक पुनि अनँगरँग, कोकमंजरी जानि ॥ २८ ॥
अमरकोस पुनि मेदिनी, हेमधनंजय लेखि ।
रत्नकोस रत्नावली, बिस्वकोस हू देखि ॥ २६ ॥
बिस्वगुनादसकोस[2] पुनि, एकाक्षरी बखानि ।
अनेकार्थध्वनिमंजरी, मानमंजरी मानि ॥ ३० ॥
और अनेकाअर्थ है, कास निघंटुहु जानि ।
और मातृकाकोस है, अच्छररूप बखानि ॥ ३१ ॥
हनुमतनाटक नाटकहु, उत्तररामचरित्र ।
नाटक राघवबीर नृतराघव बहुत पवित्र ॥ ३२ ॥
अनरघराघव नाटकहु, प्रबुधबिधूदय[3] मानि ।
इतने रघुबरचरित के, नाटक उर में आनि ॥ ३३ ॥
पाकसास्त्र बिद्या कला, सब मिलि कविता साक्षि ।
ये पढ़िकै बित चित्त हू, अभ्यासहि करि ब्याक्षि ॥ ३४ ॥

भाषा काव्य का निर्णय

महाराजा विक्रमादित्य के समय तक भाषा-काव्य का प्रचार किसी प्रबंध और तवारीख़ से नहीं पाया जाता । राजा भोज की सभा में ये नव महान् कवि थे-- धन्वतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास बराहमिहर, वररुचि । वे भी संस्कृत के कवि थे, और कोई ग्रंथ भी उस समय का बनाया हुआ

१-कठिन । २-विश्वगुणादर्श । ३-प्रबोधचंद्रोदय ।

भाषा में नहीं देखा गया । भाषा-काव्य का मूल खोजने के लिये मैंने बड़े-बड़े ग्रन्थ यथावत् विधिपूर्वक बहुत उलटे-पुलटे; पर कुछ भी पता नहीं चला । मैंने बिचारा, कदाचित् भाषा का प्रथम आचार्य चंद कवीश्वर न हो, जिसने संवत् ११२५ में नाना छन्दों में पृथ्वीराजरासा रचा है । जब पृथ्वीराजरासा के पत्र उलटे, तो विदित हुआ कि चन्द कवि से पहले भी बहुतेरे अच्छे-अच्छे कवीश्वर हो गुजरे हैं । तब मैंने टाडसाहब की किताब राजस्थान और राजतरंगिणी इत्यादि हिन्दू राजों के प्राचीन इतिहासों को देखना-भालना शुरू किया । किताब राजस्थान में मुझको अवंतीपुरी के एक प्राचीन इतिहास में लिखा मिला कि संवत् सात सौ सत्तर में अवंतीपुरी के राजा भोज के पिता राजा मान काव्यशास्त्र में महानिपुण थे । उन्होंने संस्कृत अलंकार-विद्या पुषी नाम एक बंदीजन को पढ़ाई । पुषी कवि ने संस्कृत अलंकारों को भाषा दोहरों में वर्णन किया । उसी समय से भाषा-काव्य की जड़ पड़ी । और, कुछ आश्चर्य नहीं कि उन्हीं दिनों किसी-किसी कविने नायिकाभेद इत्यादि के भाषाग्रन्थ बनाये हों । परन्तु राजा भोज के समय में संस्कृत-विद्या का अधिक प्रचार होने के कारण भाषा यथावत् उन्नति को प्राप्त न हुई हो । संवत् ८१२ में रावल खुमानसिंह गुहलौत सीसौदिया, महाराजा चित्तौड़गढ़, भाषा-काव्य के बड़े अधिकारी हुए । संवत् ६०० में खुमानरासा नाम ग्रंथ भाषा में अपने नाम से नाना छन्दों में बनाया । पीछे संवत् ११२४ में चन्द कवीश्वर ने पृथ्वीराजरासा भाषा में बनाना प्रारम्भ किया, और ६९ खंडों में एक लक्ष श्लोक ग्रंथ को रचकर पृथ्वीराज चौहान का जीवनचरित्र संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक वर्णन किया । इन्हीं दिनों जगनिक और केदार कवीश्वरों ने चंदेलों और

गोरियों के प्रबंध भाषा में लिखे । संवत् १२२० में कुमारपाल खींची महाराजा अनहलवारा के नाम से एक ग्रंथ भाषा में कुमारपालचरित्र नाम बनाया गया, जिसमें महाराजकुमारपाल के जीवनचरित्र और वंशावली का वर्णन है । संवत् १३५७ में चंद कवीश्वरवंशोद्भव सारंगधर बंदीजन ने, जो काव्य-विद्या में महान् पंडित था, हमीररासा और हमीरकाव्य, ये दो ग्रंथ भाषा में बनाये । हमीररासा में महाराजा हमीरदेव चौहान रणथम्भौरवाले का जीवनचरित्र और हमीरकाव्य में काव्यविद्या के सब अंग वर्णन किये । संवत् १४५७ में महाराना * कुंभकर्ण चित्तौरगढ़ के राणा ने गीतगोविन्द को संस्कृत से भाषा करके नाना छन्दों को प्रकट किया । उनकी रानी मीराबाई ने कवियों का ऐसा मान किया कि उस समय भाषा-काव्य बनाने की हिन्दुस्तान में बड़ी चरचा होगई । जिस स्थान में राणा कुंभकर्ण और मीराबाई अपने इष्टदेव के सामने अपनी बनाई हुई कविता को गाते और अन्य कवीश्वरों के काव्य को श्रवण करते थे, उसकी तैयारी में ९९ लक्ष रुपये खर्च हुये थे । संवत् १५०० में भाषा-काव्य सारे हिन्दुस्तान में ऐसा फैला कि गाँव-गाँव, घर-घर कवि हो गये । इधर व्रजभूमि में वल्लभाचार्य्य, विट्ठलस्वामी और हरिदास जी महात्माओं के शिष्य ऐसे कविता में निपुण हुए, जैसे कोई न हुए थे और न कभी होंगे । सूरदासजी, कृष्णदास, परमानंद, कुँभनदास, चतुर्भुज, छीतस्वामी, नंददास, गोविन्ददास, ये आठ कवि अष्टछाप के नाम से विदित हुए । इन आठों ने शृङ्गार-रस के समुद्र व्रजभूमि में बहाये, जिन समुद्रों ने सारे हिन्दुस्तान को

* यह गलत है । मीराबाई के पति भोज राजा थे, जो राना साँगा के बेटे थे, और थोड़ी ही अवस्था में मर गए ।

आनंदरूपी लहरों में मग्न कर दिया। उधर श्री गोस्वामी तुलसी दास, केशवदास, बलभद्र, ब्रह्मराजा बीरबल, गंग, रहीम खानखाना, नरहरि, करन इत्यादि ने नव रस को दशांग-साहित्य-समेत और संस्कृत साहित्य के बड़े-बड़े ग्रंथों के आशय भाषा में ऐसी विधि से प्रकट किये कि हरएक छोटे बड़े राजा-बाबू गनी-गरीब काव्य-शास्त्र के विनोद में काल व्यतीत करने लगे। केशव-कृत कविप्रिया ने सब संस्कृत के पंडितों को इस बात पर आरूढ़ कर दिया कि वे सब संस्कृत काव्य को छोड़ भाषा-काव्य करने लगे। इसी कारण संवत् १७०० में चिन्तामणि, मतिराम, भूषण, कालिदास, कवीन्द्र, दूलह, देव, करन, सुखदेव, श्रीपति, ठाकुर, निवाज, बिहारीलाल, बीरतन, कान्ह, बेनी, मंडन, भगवंत, भोज, नृप शंभु, सुंदर, सूरति मिश्र, देवीदास, मुबारक, रसखानि, राम कवि इत्यादि श्रेष्ठ कवियों ने भाषा-काव्य के बड़े-बड़े अद्भुत ग्रंथ बनाये। संवत् १८०० में जैसे अच्छे कवि हुए, ऐसे किसी शतक के भीतर नहीं हुए थे। भिखारीदास ने इसी शतक में संस्कृत-साहित्य को भाषा में भलीभाँति से प्रकट किया। रघुनाथ, गोकुलनाथ, मणि-देव, मुकुंदलाल, बनारसी, कुमार, किशोर, खुमान, ग्वाल राय, दत्त, पद्माकर, गुमान, मित्र, चंदन राय, नृप यशवन्त, शम्भुनाथ, बिक्रम, सुखदेव (२), देवकीनंदन, जगतसिंह, शिव कवि, परतापसाहि, रूपसाहि, मृदुव, सुवंश, शिवलाल, पून, बलदेव बघेलखंडी, रसलीन, बेनीप्रबीन, पजनेस इत्यादि इसी शतक में हो गये हैं। संवत् १९०० अर्थात् वर्तमान शतक में लाल त्रिपाठी, सरदार बनारसी, गणेश, द्विजदेव, क्षितिपाल, दीनदयाल गिरि, राजा रणधीरसिंह, राजा रघुराजसिंह, सेवक, बिहारीलाल, भोज इत्यादि बहुतेरे सत्कवि कैलाशवासी हो चुके और बहुतेरे विद्यमान हैं।

अब इस समय बहुधा कविलोग नीचे लिखे हुए ग्रन्थों को पढ़ते हैं। पिंगलों में सुखदेवमिश्रकृत वृत्तविचार, छंदविचार, फ़ाज़िलअलीप्रकाश, भिखारीदास-कृत छंदोर्णव। साहित्य में काव्यविभूषण, फ़तेहप्रकाश, रसकल्लोल, काव्यकल्पद्रुम, काव्यसरोज, कविकुलकल्पतरु, कविवल्लभ, व्यंग्यपचासा, और शृंगार अलंकार में भाषाभूषण, रसरहस्य, रसिकप्रिया, कविप्रिया, सभाप्रकाश, काव्यरसायन, काव्यविलास, रूपविलास, व्यंग्यार्थकौमुदी, अलंकार भाषा इत्यादि।

ज्येष्ठशुक्ल १२, संवत् १९३४ { शिवसिंह सेंगर इन्स्पेक्टरपुलिस
मुल्क अवध, मुक़ाम काँथा,
ज़िला उन्नाव.

श्रीगणेशाय नमः

शिवसिंहसरोज

१. अकबर कवि (श्रीमुहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह)

शाह अकब्बर बाल की बाँह अचिंत गही चलि भीतर भौने।
सुन्दरि द्वार ही दृष्टि लगाय के भागिबे की भ्रम पावत गौने॥
चौंकत सी सब ओर बिलोकत संक-सकोच रही मुख मौने।
यों छबि नैन छबीलीके छाजत मानो बिछोह परे मृगछौने॥१॥
शाह अकब्बर एक समै चले कान्ह बिनोद बिलोकन बालहिं।
आहट ते अबला निरख्यो चकि चौंकि चली करि आतुर चालहिं॥
त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सु भई छबि यों ललना अरु लालहिं।
चम्पक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये अहि बालहिं॥२॥
केलि करै बिपरीति रमै सु अकब्बर क्यों न तिया सुख पावै।
कामिनि की कटि किंकिनि कान कियौं गनि भीतम के गुन गावै॥
बेंदी छुटी मनिमै सु ललाट ते यों लट में लटकी लगि आवै।
साहि मनोज मनों चितमें छबि चंद लिये चकडोरि खिलावै॥३॥

---

१ अचानक। २ साँप के बच्चे को। ३ मणिजटित।

२. अमरदास कवि

छप्पै

एक चरन मों पदुम, एक पग झंझन बज्जै।
एक हाथ मों डमरु, एक कर कंकन सज्जै॥
एक ओर है चीर, एक उरियाँ[1] मृगछाला।
एक कान मों बीर, कान इक मुद्रा माला॥
अधसीस अलक, अधसिर जटा, गंगा बेनी सीस धर।
अमरदास आसन भनै अरधंगी[2] शंकर गवर॥ १॥

३. अजबेश (१)

बड़ी बादशाही ज्यों हीं सलिल[3] प्रलै के बड़े राना, राव, उमरात्र सब को निपातै[4] भो। बेगम बिचारी बही, कतहूँ न थाह लही, बाँधौ-गेब[5] गाढो गूढ़ ताको पक्ष-पात भो॥ शेरशाह सलिल प्रलै को बढ्यो अजबेश बूड़त हुमायूँ के बड़ो ई उतपात भो। बलहीन बालक अकब्बर बचाइबे को बीरभान भूपति अछैबट को पात भो॥ १॥

४. अजबेश (२)

संगर समत्थ सज्यो बाँधो-धनी बिश्वनाथ बीरता को रूप खूब आनँद लखात है। मारू बजे बाजे गाजे दुरद[6] दँतारे[7] भारे सुभट-समूह सावधान दरसात है॥ बिक्रम बिहद हिंदुवान हद अजबेश जैसिंह के नंद के अनंद अधिकात है। तरकत जात बंद, करकत जात कौच, फरकत बाहु, बाजी[8] थरकत जात है॥ १॥ जोगिन को जोग भोग भोगिन को यामें सबै रोगिन के रोग मेटिबे को बिधि करी है। ज्ञान ध्यान दानी सनमानी सदा संभुजू की बुद्धि की निसानी बानी बेद उरबरी[9] है॥ सुख सरसावनी है पावनी परम अजबेश जी भियावनी प्रसिद्धि सिद्धि-जरी है। उमँगी उमंग ते वै तरल तरंग-भरी एक रंग हरी पै अनेक रंग भरी है॥ २॥

---

१ एक तरफ़। २ पार्वती। ३ जल। ४ गिरना, पतन। ५ रीवाँ। ६ हाथी। ७ दाँतवाले। ८ घोड़ा। ९ निकली।

५. अयोध्याप्रसाद वाजपेयी (सातनपुरवा)

साहित्यसुधासागर-ग्रंथ

उड़िगे चकोर, मोर, खंज, शिलीमुख्य जोर जंग लगे उरग, तुरग, मृग, द्विपनाह । झख मारि मन हारि कंज कारि बूड़े बारि ऊपर परीन की परीन की परी न आह ॥ अवध अकल यों बहाल हर हाल लाल सौति-साल बोलचाल वाह-वाह आह-आह । लखत सखत दसखत ये तखत भाव बखबबलंद प्यारी तेरे नैन पाद-शाह ॥ १ ॥

घनश्याम-घटा सी छटा सी दुकूल प्रकासत औध बिलाजत ही ।
बिन देखे छमा सी छमासी पला उपहाँसी की नासी न काजत ही ॥
मृदु हाँसी की फाँसी में फाँसी फिरै सुखमा सी उदासी न साजत ही ।
बि[1]बि बाँसी ये गाँसी सिखा[2] सी हिये लगै बाँसी बिसासी के बाजत ही २

बाटिका-बिहंगन[3] पै, बारिगा[4]-तरंगन पै, वायु-बेग गंगन पै बसुधा बगार है । बाँकी बेनु-तानन पै, बँगले बितानन[5] पै, बेस औध पानन पै, बीथिन[6] बजार है ॥ बृन्दाबन-बेलिन पै, बनिता नबेलिन पै, ब्रजचन्द्र-केलिन पै बंशीबट मार है । बारि के कनाकन[7] पै, बद्दलन बाँकन पै, बीजुरी बलाकन[8] पै बरखा-बहार है ॥ ३ ॥

हरखे हरौल है अमरखे अनंग हेत करखे कलापी[9] चोपि चातक-चमू चली । उमड़े घटा हैं मानि करने कटा हैं छटा फेरत पटा हैं उठा सूर की हटाकिली ॥ घेरि कै अड़े हैं, बिन बूँदन लड़े हैं, औध आनँद खड़े हैं देखि दादुर बड़े दिली । कादर बियोगी हारि चादर बलाक फेरि बादर बहादर को नादर फते मिली ॥ ४ ॥

---

१ दो । २ नोक । ३ पक्षी । ४ नदी । ५ चँदोवा । ६ गली । ७ कण । ८ बगले । ९ मोर ।

जाको जोबन जगमगात। बरस बरस अभरन रसबस लगि अबला तरुन दूनो रस रस सरसात॥ बिद्यागृह बाढ़ी जुवती जु मौढ़ा दूनी कला सकल हिये में बसैं आजम सदा सुहात। जैसे मनिमंदिर में छोटी बड़ी मनिन में एकै रूप प्रतिबिंब पूरो सबको लखात॥ १॥

१२. अहमद कवि

दोहा—पीतम नहीं बजार में, वहै बजार उजार।
पीतम मिलै उजार में, वहै उजार बजार॥ १॥
कहा करौं बैकुंठ लै, कल्पबृच्छ की छाँह।
अहमद ढाँख सुहावने, जहँ पीतम-गल-बाँह॥ २॥
गवन समय पटुका गह्यो, छाँड़हु कह्यो सुजान।
प्रानपियारे प्रथम ही, पटुका तजौं कि प्रान॥ ३॥
अहमद या मन-सदन में, हरि आवैं केहि बाट।
बिकट जुरे जौलौं निपट, खुले न कपट-कपाट॥ ४॥
कहि आवत सोई बिथा, चुभी जु हित चित माहिं।
अहमद घायल नरन को, बे कलार कल नाहिं॥ ५॥
अहमद गति अवतार की, कहत सबै संसार।
बिछुरे मानुष फिरि मिलैं, यहै जानि अवतार॥ ६॥

सोरठा—बुंद समुद्र समान, यह अचरज कासों कहौं।
हेरनहार हैरान, अहमद आपै आप में॥ ७॥

१३. अनन्य कवि (१)

करम की नदी जामें भरम के भौंर परैं लहरैं मनोरथ की कोटिन गरत हैं। काम, शोक, मद, महामोह सो मगर तामें क्रोध सो

---

१ मन के मंदिर में।

फनिंद जाको देवता डरत हैं ॥ लोभ-जल-पूरन अखंडित अनन्य भनै देखैं वारपार ऐसो धीर ना धरत हैं। ज्ञानब्रह्म सत्य जाके ज्ञान को जहाज साजि ऐसे भवसागर को बिरले तरत हैं ॥ १ ॥

वैष्णव कहत विष्णु बसत बैकुंठ धाम शैव कहत शिव जू कैलास सुख भरे हैं । कहैं राधावल्लभी बिहारी बृन्दावन ही में रामानंदी कहैं राम अवध से न टरे हैं॥ ये तो सब देव एकदेसिक अनन्य भनै हम तुम सब आप ठौरन ज्यों धरे हैं। चेतन अखंड जासे कोटिन ब्रह्मांड उड़ैं ऐसो परब्रह्म कहाँ पुरनि में परे हैं॥ २॥

बिन भेदन भेदन में जु कछू मति के अनुसार लही सो लही।
नहिं बेद-पुरान की रीति कछू, अनरीति की टेक गही सो गही ॥
समुझायो नहीं समुझै गुरु को, गुरु को अपमान लही सो लही।
यह तामस ज्ञान अनन्य भनै, पुनि मूरख गाँठि गही सो गही ॥ ३ ॥

१४. औध कवि

भूली किधौं ह्याँ की पीर बाढ़ी है उहाँ की भरैं नैन झरना की सुधि आये उर वाकी है। चंचला चलाकी करै नट की कला की तैसी दौर बदरा की औ धुकार धुरवा[1] की है ॥ है न कछु बाकी औध आसरा निसा की तामें आइ परै डाकी पै झकोर पुरवा[2] की है। टेर पपिहा की करै सेल-समताकी डरै करै उर झाँकी ये पुकार पुरवा की है ॥ १ ॥

१५. अयोध्याप्रसाद शुक्ल गोलावाले

पूरि रही है अनंद-बिलास सबै बिधि सौं सुख सोभा बिराजै।
फीकृत है दृग चंचल मीन सो खंजन की गति कौन कि राजै॥
जोधी भले अधरान की लाली मनो रबि प्रात उदोत बिराजै।
ह्याँ मध्याह्न[3] को साज सजै संकेत निधान में हाँसिहि राजै॥१॥

---

१ मेघ। २ पुरवाई हवा। ३ दोपहर।

जानत औलि किताबनि को जे निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हे।
पालत हौ इत आलम को उत नीके रहीम के नाम को लीन्हे॥
मोजमशाह तुम्हैं करता करिबे को दिल्लीपति हैं बर दीन्हे।
काबिल हैं ते रहैं कितहूँ कहूँ काबिल होत है काबिल कीन्हे॥२॥

२२. अनन्य कवि (२)

दुर्गाभाषा

बंक्र[1] बिक्राल प्रज्वालनंदा निवासानि संघट्ट सो घट्ट घाराग्रनी।
नासस्वासासनी सहस फौजें उड़ैं मात हत्थीन हत्थ्यारपारायनी॥
फेरि त्रैसूल त्रैसूल छै कारिनी जारनी जै बिजै बिस्त्रकारायनी।
भद्रकाली-कृपा काल भौभंजनी श्रीनमो भो नमो मातु नारायनी॥ १ ॥

२३. असकन्द गिरि बाँदावाले

स्कंदबिनोद

और बनवाइबे की चरचा चली है कहूँ तिनहिं दिखाइबे की आनि परी तिनको। ये तौ ब्रजठाकुर न देइ तौ करौगी कहा माँगन है आरसी अँगूठा चारि दिन को॥ भनि असकन्द यामें कछू बरजोरी नाहिं सुनियो सखी री औ सुनाइ कहौं किनको। सौंह कुलकानि की निदान बलि देहौं नाहिं निसि को, दिवस को, घरी को, एक छिन को॥ १ ॥

दोहा—सबै देवता पूजि कै, पूरी मन की आस।
अब मैं गोरख पूजिहौं, जाकी सबको त्रास॥ २॥

२४. अनूपदास कवि

पासनि सों बाँधि कै अगाध जल बोरि राखे, तीर-तरवारिनि सों मारि मारि हारे हैं। गिरि ते गिराय दिये, डरपे न नेक तब, मतवारे भूधर[2] से हाथी तरे डारे हैं॥ फेरे सिर आरा लै, अगिनि

---

१ टेढ़ी। २ पहाड़।

माँझ जारे पुनि पूँछ मीड़ि तन सों लगाये नाग कारे हैं । पूछे ते बतायो खम्भ तहँई दिखायो रूप प्रकट अनूपदास बानि ही से प्यारे हैं ॥ १ ॥

२५. ओलीराम कवि

डरी डार दीजै उठि राह लीजै जिस राह ते राम को पाइये जी ।
दुख सुक्ख ही न्यारे ह्वै रहिये नित हरिसये खेलिये गाइये जी ॥
मुये मुकुति की गति कहाँ जीव ते मुकति को पाइये जी ।
ओलीराम मरे पर जाना जहाँ जहाँ जीवते क्यों नहिं जाइये जी ॥

२६. अभयराम कवि

एक रज रेनुका पै चिंतामनि वारि डारौं, लोकन को वारौं सेवा-कुंज के बिहार पै । लतन के पातन पै कल्पबृक्ष वारि डारौं, रमा हू को वारि डारौं गोपिन के द्वार पै ॥ ब्रज पनिहारिन पै सची रची वारि डारौं बैकुँठ को वारि डारौं कालिंदी की धार पै । कहैं अभैराम एक राधा जू को जानत हौं, देवन को वारि डारौं नंद के कुमार पै ॥ १ ॥

२७. अमृत कवि

बानी में सारद, काठ हुतासन, तार के यंत्र में राग कलोलैं ।
सिद्धि सुभावन ही जिनमें हरि साधुन संगन में निज डोलैं ॥
मैन में जीव, ज्यों धेनु में अमृत, ज्यों दधि में घृत पाइये छोलैं ।
फूल में गंध, मही महँ कंचन, पंचन में परमेस्वर बोलैं ॥ १ ॥

२८. आनंदघन दिल्लीवाले

आपु ही ते तन हेरि हँसे तिरछे करि नैनन नेह के चाउ में ।
हाय दई सु बिसारि दई सुधि, कैसी करौं सु कहौ कित जाउँ मैं ॥
मीत सुजान अनीति कहा यह, ऐसी न चाहिये प्रीति के भाउ में ।
मोहनी मूरति देखिबे को तरसावत हौ बसि एकहि गाँउ में ॥ १ ॥

जैहै सबै सुधि भूलि तुम्हैं फिरि भूलि न मो तन भूलि चितैहैं।
एक को आँक बनावत मेटत पोथिय काँख लिए दिन जैहैं॥
साँची हौं भाखति मोहिं कका कि सौं पीतम की गति तेरि हू ह्वैहैं।
मोसों कहा अठिलात अजासुत कैहौं ककाजी सों तो हूँ सिखैहैं॥२॥

२९. अभिमन्यु कवि

औधि बदी हरि आवन की मनभावन की उपजी जक चाकैं।
काम की पीर बढ़ी अभिमन्यु धरै नहिं धीर यहै बक वाकैं॥
दे बिधि पाँख मिलौं उड़िजाय अघाय बुझाय हिये लगि वाकैं।
जो परि पाँखनि पीउ मिलैं सखी पाँख जु हैं चकई चकवाकैं॥१॥

३०. अनंत कवि

कहौं यक बात बुरो जनि मानहु कान्हहि देखि कहा मुसकानी।
मैं धौं कबै चितयों इहि ओर पै दाऊ की सौं तुम और गुमानी॥
आपन सो जिय जानती और को तातें अनंत यहै जिय जानी।
कहौं जु कही अलि जो कह्यो चाहती दूध को दूध सो पानी को पानी॥१॥
मनमोहन हैं जिन वे सुख दीने इतै चितयो चित भूलि न जैये।
और सुनो सखी मीत मिताई की मीत जो बेचै तौ बेचे बिकैये॥
अनंत हँसे ते हँसै बिचच्छन[1] रूपै हँसे ते गँवारी कहैये।
मान करौ तौ करौ घरी आध लौं प्यारी बलाय ल्यों सौंह न खैये॥२॥

३१. आदिल कवि

मुकुट की चटक, लटक बिबि कुंडल की, भौंह की मटक नेकु आँखिन दिखाउ रे। एहो बनवारी बलिहारी जाउँ तेरी मेरी गैल किनि आइ नेक गाइनि चराउ रे॥ आदिल सुजान रूप गुन के निधान कान्ह बाँसुरी बजाइ तन-तपनि बुझाउ रे। नंद के किसोर चितचोर मोर-पंखवारे बंसीवारे साँवरे पियारे इत आउ रे॥ १॥

---

१ विचक्षण-समझदार।

३२. अलीमन कवि

जैयत पीतम प्यारे बिदेस को मोहिं कहा उपदेस बतैयत ।
तैयत है छतियाँ जो कहीं बतियाँ चलिबे की सुने बिलखैयत ॥
खैयत रावरे पाँय की सौंहैं अलीमन याको उपाय ना पैयत ।
पैयत औधि के औसरे जो बिछुरे ते जियैं यहि लाज लजैयत ॥१॥

३३. अनीस कवि

सुमिये बिटेप प्रभु पुहुप तिहारे हम राखिहौ हमैं तौ सोभा रावरी बढ़ाइ हैं । तजिहौ हरषि कै तौ बिलग न सोचैं कछू जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनो जस गाइ हैं ॥ सुरन चढ़ैंगे नर-सिरन चढ़ैंगे पर सुकबि अनीस हाथ हाथ में बिकाइ हैं । देस में रहैंगे, परदेस में रहैंगे, काहू भेस में रहैंगे, तऊ रावरे कहाइ हैं ॥ १ ॥

३४. अनुनैन कवि

दुति देखत दंतन की हिय हारत हीरन के गन दाड़िम हैं ।
बसुधा बिच चारु सुधा की मिठाई सुधाधर सो धरँ सालिम हैं ॥
अनुनैन बनी भ्रुकुटी कुटिलै कल मैन के चाप सों आलिम हैं ।
जग जाहिर जोर जनाइ सकैं अँखियां जमराज सों जालिम हैं ॥१॥

सुंदर सजीले परलंब सहजीले राधे परम लजीले सुभ काजन कजीले हैं । बेलिन बसीले अलि बोलिन हँसीले आदि-रस में रसीले रूप जसमें जसीले हैं ॥ नेह सरसीले पर-नेह पर सीले अनुनैन चहकीले चटकीले मटकीले हैं । तेरे कच नीले छूटि छबि से छबीले मानो पन्नग रँगीले मैन मंत्र पढ़ि कीले हैं ॥ २ ॥

---

१ जलती हैं । २ वृक्ष । ३ फूल । ४ तुम्हारी । ५ अनार । ६ चंद्रमा । ७ अधर । ८ सर्प ।

३५. अनन्यदास ब्राह्मण चकेंद्वावाले (अनन्ययोग)

छंद—का होत मुड़ाये मूड़ बार। का होत रखाये जटाभार ॥
का होत भामिनी तजे भोग। जौलौं न चित्त थिर जुरै जोग ॥
थिर चित्त करै सुमिरन मँझार। ऊपर साधै सब लोकचार ॥
यह राजजोग सुख को निधान। कोइ ज्ञानवंत जानत सुजान ॥
सुखमारग यह पृथिचंद राज। यहि सम न आन तम है इलाज॥

३६. अनाथदास कवि

छप्पै—चतुरानन[1] सम बुद्धि बिदित जो होहिं कोटि धर।
एक एक धर प्रतिन सीस जो होहिं कोटि बर॥
सीस सीस प्रति बदन कोटि करतार बनावहिं।
एक एक मुख माँह रसनै[2] फिरि कोटि लगावहिं॥
रसन रसन प्रति सारदा कोटि बैठि बानी बकहिं।
नहिं जन अनाथ के नाथ की महिमा तबहूँ कहि सकहिं॥ १॥

३७. अक्षरअनन्य कवि

दुखन सों दुख और सुखन सों अनुराग निंदक सों बैर फिर बंदक सों गीरी है। पूजा को भरम औ पुजायबे को दंभ[3] जौलौं पाये ते खुसी है अनपाये दिलगीरी है॥ जीवन की आसा औ मरन की फिकिर जौलौं बिना हरिभक्ति जक जामत की जीरी है। अक्षरअनन्य एती फाटै न फिकिरि जौलौं तौलौं फजिहति बाबा फुरै ना फकीरी है॥ १॥

३८. आसकरन

पद

उठो मेरे लाल गोपाल लाड़िले रजँनी बीती बिमल भयो भोर।
घर घर में दधि मथत गोपियाँ द्विज करत बेद की शोर॥
करो कलेऊ दधि अरु ओदन मिसरी बाँटि परोसों ओर।
आसकरन प्रभु मोहन तुम पर वारों तन, मन, प्रान अकोर॥ १॥

---

१ ब्रह्मा। २ जिह्वा। ३ पाखंड। ४ रात।

३९. ईश्वर कवि

आये हौ आजु भले बनि मोहन सोहति मूरति मैनमई है।
आरस सों, रस सों, उपहास सों, रूप सों, रंग सों डीठि छई है॥
रावरे ओठनि अंजन देखत ईश्वर मो मति तेह तई है।
जानति हौं वहि भावती और सों बोलिबे को मुँह छाप दई है॥१॥

चारिहुँ ओर उदै मुखचंद की चाँदनी चारु निहारि ले री।
यह प्रानहिप्यारो अधीन भयो मन माँह बिचार बिचारि ले री॥
कवि ईश्वर भूलि गयो जुग पारिबो या बिगरी को सुधारि ले री।
यह तौ समयो बहुरयो न मिलै बहती नदी पाँय पखारि ले री॥२॥

४०. इन्दु कवि

ऊँचे धौल[1] मंदिर के अंदर रहनवाली ऊँचे धौलमंदिर के उदर रहाती हैं। कंदपानभोगवारी कंद पान करैं भोग तीनि बेरखान वाली बीनि बेर खाती हैं॥ मैननारी सी प्रमान मैननारी सी प्रमान बीजन डुलाती ते वै बीजन डुलाती हैं। कहै कवि इन्दु महाराज आज बैरीनारि नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं॥ १ ॥

४१. ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी पीरनगर

(रामबिलास, बाल्मीकीयरामायण का उल्था)

लहत सकल रिधि-सिधि सुख-संपदा हू बिद्या-बुद्धि सुमिरि गनेस गौरीनन्दनै। सिंधुरबदन सुठि सोहत तिलक लाल चंद्र बाल भाल नैन देत हैं अनन्दनै॥ एकदंत, भुजगबिभूषन, परसु-पानि, चारिभुज अभय करत दासबृन्दनै। सुन्दर बिसाल तन ईश्वरी सँभारु मन दयाधन हरन बिघन दुख-द्वंदनै॥ १ ॥

---

१ धवल=श्वेत।

४२. इच्छाराम ब्राह्मण अवस्थी पचरुवा इलाके हैदरगढ़
(ब्रह्मविलास ग्रन्थ)

दोहा—संबत सत दस आठ गत, ऊपर पाँच पचास।
सावन सित दुति सोम कहँ, कथा अरंभ प्रकास ॥ १ ॥
गनपति दिनपति पद सुमिरि, करिय कथा हिय हेरि।
ब्रह्मबिलास प्रयास[1] बिनु, बनत न लागै देरि ॥ २ ॥
बानी इच्छाराम कृत, बिप्र बरन तन जानि।
पढ़िहैं सज्जन समुझि हिय, देवगिरा परमानि ॥ ३ ॥
बिप्र सुदामहि देवता, सुचि बानी तेहि केरि।
श्रवन सुने दूषन नहीं, भूषन हरि हिय हेरि ॥ ४ ॥
नर बानी फीकी यदपि, बर्न ब्रह्ममय जानि।
साधु समुझि आदर करहिं, ज्ञान अमी अनुमानि ॥ ५ ॥
बड़ गरूर कबि होत हैं, बादशाह दिलदौर।
लूटि जात नर नगर पुर, छंद सैन सजि दौर ॥ ६ ॥

४३. ईश कवि

एकै करैं ओट पट ओट कर ओट करि एकै जे निथर घट चोटहि-बचावतीं। एकै निरसंक अंक मागतीं सु बंक ताकि एकै जे मयंक-मुखी लंकाहि लचावतीं ॥ ईश कहैं केसरि गुलाब नीर घोरि घोरि जोरि जोरि मुंड रंग धूमहि मचावतीं। देतीं गाल गुलचा गुलाल-हि लपेटि मुख दै दै कर ताली नंदलालहि नचावतीं ॥ १ ॥

४४. इंद्रजीत कवि

चहचही चटकीली चुनि चुनि चातुरी सों चोखी चारु चाँदनी की रँगी रंग गहरे। कंचन किनारी ता पै लागी छोर लौं हैं खुली दामिनी सी गोरे गात प्यारी सारी पहरे ॥ इंद्रजीत धनुष

---

१ परिश्रम।

सों कढ़ी न परत छबि आनन झलक चहुँ ओर ऐसी छहरे। गहगही पँचरंग महमही सोंधे सनी लहलही लसैं ये लहरिया की लहरे ॥ १ ॥

४५. उदयनाथ

रगमगी सेज पर जगमगी सोभा चारु मनिमय मंदिर मयूखनि[1] अथाह की। उदैनाथ तामें प्रानप्यारी अरु प्यारे लाल कोक की कलानि केलि करत सराह की ॥ किंकिनी की धुनि तैसी नूपुर निनोद[2] सुनि सौतिन के बाढ़त बिषाद बाढ़ि गाह की। त्रिभुवन जीति कै उछाह की बजति मानों नौबति रसीली मनमथ बादसाह की ॥ १ ॥

४६. उदेश कबि

पंडित कबिंदन की बूझि है न कूरनि के काथिक कलावत फिरत तान गाने को। कहत उदेश देखि समर सपूतनि को घोड़े के चढ़ैयन को चना ना चबाने को ॥ आदर सों लेत ताहि जौन वाहियाति बकैं छोड़ि कै पुरान बेद धरम के बाने को। जुरिकै गँवारगट्टा बैठत चौहट्टा[3] आइ आल्हा के गवैया को रुपैया रोज खाने को ॥ १ ॥

४७. ऊधोराम कबि

बैठे दृग-आसन हौ तपत हुतासन[4] ज्यों कारे पीरे होत एजू काहे असकत हौ। दास कैसी सेवा कहूँ दासी पै न होति है जू कहै ऊधो-राम अंग-अंग नसकत हौ ॥ ऐहैं पिय नीरे धीरे कमल चहैहैं सीरे होहुगे प्रसन्न ऐसे काहे ससकत हौ। शंकर भवानीनाथ भूतनाथ भैरौनाथ काशीनाथ काहे काज कैसे कसकत हौ ॥ १ ॥

---

१ किरणें। २ नूपरों का शब्द। ३ चौराहा। ४ अग्नि।

४८. ऊधो कबि

चाहौ तौ तेल औ फुलेल डारौ चोटिन में चाहौ तौ बनाओ जटा कुंतल[1] लटन के। चाहौ तुम सुंदर बिभूति को लगाओ अंग ओढ़ौ मृगछाला छोड़ौ ओढ़िबो पटन के॥ ऊधोजू कहत हमैं करने कहा री बाम हम तौ करत काम श्याम की रटन के। जैसी उन कही तैसी हम तौ कहोई चहैं नातरु कहावै कहा चाकर भटन के॥१॥

४९. उमेद कबि

राजत रुचिर सुमनस[2] को रहत संग पानिप-कलित मोदकर अति-सैनी की। सोहत सुरंग गुन गूँदे हैं बिसद जामें लावैहारी पद लोक हत चित चैनी की॥ जामें जलजावलि लसत नीकी भाँति बनी सुकबि उमेद रूप रसिक रिझैनी की। प्यारी प्राननाथजू की गावत चतुरमुख भूतल की बेनी कैधौं बेनी पिकबैनी की॥ १॥

५०. उमरावसिंह पवाँर

आनन में नखरेखैं लगीं भुजमूल परी हैं तरौन की छापैं।
भाल में लीक महाउर की उमराउ बिलोकि अलीक[3] न लापैं॥
सोहत है गुनहीन[5] की माल हिये अवलोकि बतावत आपैं।
पीठि गड़ी बल कै उघरी सुघरी हैं भली ये मनोज की थापैं॥१॥

५१ केशवदास सनाढ्य मिश्र उड़छेवाले (१)

(कबिप्रिया)

दोहा—गुरु करि माने इंद्रजित, जन मन कृपा बिचार।
ग्राम दये इकईस तब, ताके पाँय पखार॥ १॥
रतनाकरलालित[6] सदा, परमानंदहि लीन।
अमलकमलकमनीय कर, रमा कि रायप्रबीन॥ २॥
सबिता जू कबिता दई, ता कहँ[4] परम प्रकास।
ताके कारन कबिप्रिया, कीन्ही केशवदास॥ ३॥

---

१ बाल। २ फूल और देवता। ३ झूठ। ४ कहँ। ५ बिना डोरे की। ६ समुद्र और रत्न-समूह द्वारा लालित।

कवित्त । प्रथम सकल सुचि मंजन अमल बास जावक सुदेस केसपासनि सुधारिबो । अंगराग भूषन बिबिध मुखबास राग कज्जलकलित लोल लोचन निहारिबो ॥ बोलनि हँसनि मृदु चातुरी चलन चारु पलपल पतिब्रत प्रीति प्रतिपारिबो । केसौदास साबिलास करहु कुँअरि राधे इहि बिधि सोरहौ सिंगारन सिंगारिबो ॥ १ ॥

(रसिकप्रिया)

दोहा—संबत सोरह सै बरस, बीते अड़तालीस ।
कातिकसुदि तिथि सप्तमी, बार बरन रजनीस[1] ॥ १ ॥
अति रति गति मति एक करि, बिबिध बिवेक बिलास ।
रसिकन को रसिकप्रिया, कीन्हीं केसवदास ॥ २ ॥

वन में बृषभानुकुमारि मुरारि रमैं रुचि सों रसरूप पिये ।
कल कूजत पूजत कामकला बिपरीत रची रति केलि किये ॥
मनि सोहत स्याम जराइ जरी अति चौकी चलै चल चार हिये ।
मखतूल के झूल झुलावत केसव भानु मनो शनि अंक लिये ॥ १ ॥

(रामचंद्रिका)

दीनदयाल कहावत केसव हौं अतिदीन दशा गहि गाढ़ो ।
रावन के अघओघ[2] में राघव बूड़त हौं बरही लइ काढ़ो ॥
ज्यों गज की प्रहलाद की कीरति त्यों ही बिभीषन को जस बाढ़ो ।
आरत बात पुकार सुनौ प्रभु आरत हौं जो पुकारत ठाढ़ो ॥ १ ॥

(विज्ञानगीता)

ओरछे तीर तरंगिनि बेतवै ताहि तरैं रिपु केसव को हैं ।
अर्ज्जुनबाहुप्रबाहुप्रबोधित रेवा[3] ज्यों राजन की रज मोहैं ॥
जोति जगै जमुना सी लगै जग लोचन लोलित पाप बिपोहैं ।
सूरसुता सुभ संगम तुंग तरंग तरंगिनि संग सी सोहैं ॥ १ ॥

---

१ सोमवार । २ पाप-प्रवाह । ३ नर्मदा नदी ।

दोहा—सोरह सै बीते बरष, बिमल संत सुख पाइ ।
भई ज्ञानगीता प्रकट, सब ही को सुखदाइ ॥१॥
बिदित ओरछे नगर को, राजा मधुकरसाहि ।
गहिरवार कासीस रवि, कुलमंडन जसु जाहि ॥ २ ॥
बापी बघेले को राजु सुखाइगो पाँ परि छुद्र पठान अठानी ।
केसव ताल तरंगिनि तोमर सूखि गई सेंगरी बहु बानी ॥
साहि अकब्बर अर्क[1] उदै मिटी मेघ महीपन की रजधानी ।
उजागर सागर सी मधुसाहि की तेग चढ़्यो दिन ही दिन पानी॥१॥
दोहा—बीरसिंह नृप की भुजा, जद्यपि अहि[1] के तूलं[2] ।
एक साहि को फूल सम, एक साहि को सूल ॥२॥

(रामअलंकृतमंजरी पिंगल)

दोहा—जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन[3] सरस सुवृत्त ।
भूषन बिना न राजई, कबिता बनिता मित्त ॥१॥
प्रकट सब्द में अर्थ जहँ, अधिक चमत्कृत होइ ।
रस अरु ब्यंग्य दुहून ते, अलंकार कहि सोइ ॥२॥

फुटकर

पावक[4] पच्छी पसू नग नाग नदी नद लोक रच्यो दसचारी[5] ।
केसव देव अदेव[6] रच्यो नरदेव रच्यो रचना न निवारी ॥
रचिकै नरनाह बली बर बीर भयो कृतकृत्य महाब्रतधारी ।
दै करतापन आपन ताहि दियो करतार[7] दोउ कर तारी ॥ १ ॥
सोभति सो न सभा जहँ वृद्ध न वृद्ध न ते जु पढ़े कछु नाहीं ।
ते न पढ़े जिन साध्यो न साधन दीह दया न दिपै जिन माहीं ॥
सो न दया जु न धर्म धरै धरि धर्म न सो जहँ दान बृथाहीं ।
दान न सो जहँ साँच न केसव साँच न सो जु बसै छलछाहीं ॥२॥

---

१ सर्प । २ तुल्य । ३ अच्छे वर्ण और अक्षरोंवाली । ४ अग्नि ।
५ चौदह । ६ राक्षस । ७ ब्रह्मा ।

छप्पै ।

तजहु जगत बिन भवन भवन तजि तिय बिन कीनो।
तिय तजि जु न सुख देय सुक्ख तजि संपति हीनो ॥
संपति ताजि बिन दान दान तजि जहँ न बिप्रमति ।
बिप्र तजहु बिन धर्म धर्म तज्जिय बिन भूपति ॥
तजि भूप भूमि बिन भूमि तजि दीह दुर्ग बिन जो बसै।
तजि दुर्ग सु केसवदास कवि जहाँ न पूरन जल लसै ॥ ३ ॥

सीखे रसरीति सीखे प्रीति के प्रकार सबै सीखे केसौराइ मन मन को मिलाइबो। सीखे सौहैं खान नटतान मुसकान सीखे सीखे सैन बैननि में हँसिबो हँसाइबो॥ सीखे चाह चाह सों जु चाह उपजाइबे की जैसी कोऊ चाहै चाह तैसी वाहि चाहिबो। जहाँ तहाँ सीखे ऐसी बातैं घातैं ताते तब तहाँ क्यों न सीखे नेक नेह को निबाहिबो ॥४॥

भूषन सकल घनसार ही के घनस्याम कुसुमकलित केस रही छबि छाई सी। मोतिन की सरि सिर कंठ कंठमाला हार और रूप जोति जोति हेरत हिराई सी॥ चंदन चढाये चारु सुंदर सरीर सब राखी सुभ सोभा सखि बसन बसाई सी। सारदा[1] सी देखियत देखौ जाइ केसौराइ ठाढ़ी सुकुमारि सो जुन्हाई[2] में जुन्हाई सी ॥ ५ ॥

५२. केशवदास (२)

आली ऐंड़दार बैठी ज्वानी के तखत पर नैन फ़ौजदार खड़े लखैं चहूँ ओरा है। द्वादस हू भूषन के द्वादस वज़ीर खड़े सोलह सिंगार भूप लखैं दृगकोरा है॥ रूप को गुमान सीस मुकुट है छत्र चौंर जेवर की नौबति बजति साँझभोरा है। कहै कबि केसौदास आली बरनी न जाति जोबन की जोरा मानौं बादसाही तोरा है ॥ १ ॥

---

१ सरस्वती। २ चाँदनी।

५३. केशवराइ बाबू बुन्देलखण्डी (३)

छाती लागी उँचन[1] सकोचनि सकान लागी खान लागी पान औ ओनाने[2] रसबतियाँ। कटि लागी घटन मटन चढ़ि जान लागी बैन लागी नटन जगन लागी रतियाँ॥ चारु लागी चलन सुधारन अलक लागी जेबै[3] लागी जगन पगन लागी गतियाँ। नैन लागी फेरन निहोरन सखिन लागी मन लागी चोरन पढ़न लागी पतियाँ॥ १॥

बाहैं धरै मुख नाहीं करै उठि आँसु ढरै अँग में अँग चोरै।
हाहा करै उठि भागै धरै तुतराति लरै तकि भौंह मरोरै॥
लाल करै हित बाल अरै हठि साल लरै गहि धातु सों तोरै।
साँस भरै अति रोसै करै परि पाटी धरै फुँफुँदी[4] जब छोरै॥ २॥

५४. केशवराम कबि
(भ्रमरगीतग्रन्थे)

दोहा—सब सायर समरत्थ हैं, मैं सेवक लघु एक।
प्रकट करौं गोपिनकथा, जो देवी दे टेक॥ १॥

५५. कुमारमणिभट्ट गोकुलस्थ
(रसिकरसालग्रन्थे)

खौरि को राग छुट्यो कुच को मिटिगो अधरारस देखो प्रकासहि।
अंजन गो दृगकंजन ते तन कंपत तेरो रुमंच[5] हुलासहि॥
नेक हितू जन को हित चीन्हो न कीन्हो अरी मन मेरो निरासहि।
बावरी बावरी न्हान गई पै तहाँ न गई वहि पीय के पासहि॥ १॥

बैठी जहाँ गुरुनारिसमाज[6] में गेह के काज में है बस प्यारी।
देख्यो तहाँ बन ते चले आवत नंदकुमार कुमार बिहारी॥

---

१ ऊँची होने लगी। २ कान लगाकर सुनना। ३ सौंदर्य। ४ गिरह। ५ रोमांच। ६ बड़ी-बूढ़ी औरतों की मंडली।

लीन्हे सखी करकंज में मंजुल मंजरी बंजुल कंज चिन्हारी।
चन्दमुखी मुखचंद की कांति सों भोर के चंद सी मंद निहारी ॥ २ ॥

राम भुवमंडल-अखंडल निहारे भुजदंड लेत कोदंड[1] अखंड बैरी कूटे जात। मंडि ना सकत रन मंडल अखंड तेज खंडे खंड खंड के मवास बास लूटे जात॥ चलत उदंड दल मंडल बितुंडे[2] झुंड खैंचे सुंडा-दंडनि उदग्ग दुग्ग छूटे जात। छंडे दिगमंडरीक पुंडरीक भू को भार कुंडली सकोरै फन-पुंडरीक फूटे जात ॥ ३ ॥ सुखनिकुमार भोरही ते कर आरसी लै साजती सिंगार बार बासती सुबास हौ। बातैं मनभावती बतावती न सखि हू सों राति रतिरंग पति संग परिहास हौ॥ मृदु मुसक्याती प्रेमराती रिस ठानती हौ आनती हौ मिस बस जानती बिलास हौ। प्रीतिमदमाती ना समाती फूलि अंगनि हौ काहे को लजाती क्यों न जाती पिय पास हौ ॥ ४ ॥

आधिक जाम करौ बिसराम कुमार अराम की कुंज इतै है।
अंत बसंत के ग्रीषम की लपटैं न घटैं दिन साँझ समै है॥
छाँह घनी पियो नीरजनीर सुसीत समीर लगे सुख दैहै।
हाल लखौ फल लाल रसीली रसाललता में कहूँ मिलि जैहै ॥ ५ ॥

देखैं अटा चढ़ि दोऊ घटा दृग लागे दुहूनि सों प्रीति लही है।
दै पठयो कुसुँभी रँग को पट यों पर प्रीतम प्रीति कही है॥
चूनो मिलै हरदी रँग रोचन प्यारे कुमार पठायो सही है।
बाढ़त रंग है एकंत[3] संग ही संग भये बिन रंग नहीं है ॥ ६ ॥

ज्यों बरजी तरजी गुरुनारिनि त्यों त्यों तजी कुल कानि ढिठाई।
सीख-नखी सखियान की हौं अँखियानि लखे लावि रूप इठाई॥
हेरि हियो हरि लीन्हो कुमार कहा निठुराई अहो हरि ठाई।
बावरी हौं भई रावरी प्रीति ठई हमको ठग कैसी मिठाई ॥ ७ ॥

---

१ धनुष। २ हाथियों के झुंड। ३ एकत्र।

५६. करनभट्ट श्रीमद्वंशीधरात्मज

(रसकल्लोल)

दोहा—सुमनवंत सोभासदन, बारनबदन बिचारि।
बितरत फल नित रत चतुर, सुरतरुबर कर चारि ॥ १ ॥
षटकुल पाँड़े पहितिया, भारद्वाजीबंस।
गुननिधि पाँइ निहाल के, बंदौं जगतप्रसंस ॥ २ ॥
रस धुनि गुन अरु लच्छना, कबित भेद मति लोल[1]।
बाल बोध हित-कर सदा, कीन्हो रसकल्लोल ॥ ३ ॥
खल खंडन मंडन धरनि, उद्धत उदित उदंड।
दलमंडन दारुन समर, हिन्दु-राज भुजदंड ॥ ४ ॥

कबित्त। कंटकित होत गात बिपिन समाज देखे हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतु है। निपट चवाई भाई बंधु जे बसत गाँउ दाँउ परे जानि कै न कोऊ बरजतु है॥ एते पै करन धुनि परत मयूरन की चातक पुकारि तेह ताप सरजतु है। अरजो न मानी तू न गरजो चलति बेर एरे घन बैरी अब काहे गरजतु है॥ १ ॥
भौंरन को कंजराज हंसन को मानसर चन्द्रमा चकोरन को करन बितै गयो। द्विजन को कामतरु कान्ह ब्रजमंडल को जलद पपीहन को काहूने रितै गयो॥ दीपनि को दीप हीरहार दिगबालन को कोकन को बासरेस[2] देखत अथै गयो। छत्ता छितपाल छिति मंडल उदार धीर धरा को अधार जो सुमेरु यौं कितै गयो॥ २ ॥

५७. करन ब्राह्मण पन्नावाले

(साहित्यचन्द्रिका)

दोहा—बिघनहरन पातकदरन, अरिदलदलन अखंड।
सुरसिच्छक रच्छाकरन, गनपति सुंडादंड ॥ १ ॥

---

१ चंचल। २ सूर्य।

गौरी—हियो सिरावनो, उदित उदार उदंड ।
जगत बिदित छबि छावनो, गनपति सुंडादंड ॥ २ ॥
बेद खंड गिरि चंद्र गनि, भाद्र पंचमी कृष्ण ।
गुरुबासर टीका करन, पूर्‌यो ग्रन्थ कृतष्ण ॥ ३ ॥

कबित्त । सीतल सुखद सुभ सोभा के सुभाये मढ़ी कढ़ी बाल पाइ घनी दीपति अमाप ते । छाई हिमगिरि पै जुन्हाई-सी जगमगात करन अनूप रूप जागि उठ्यो आप ते ॥ ऊजरी उदार सुधाधार सी धरानि पर पघिलि प्रवाह चल्यो तरानि के ताप ते । बरफ न होइ चारौ तरफ निहारि देखौ गिर्‌यो गरि चंद अरबिंदन के साप ते ॥ १ ॥ बड़े बड़े मोतिन की लसत नथूनी नाक बड़े बड़े नैन पगे प्रेम के नसन सों । रूप ऐसी बेलिन में सुंदर नबेली बाल सखिन समूह मध्य सोहत जसन सों ॥ काँकरी चलायो तहाँ दुरि कै करन कान्ह मुरकि तिरीछी चितै ओट दै बसन सों । नेक अनखानी सतरानी मुसुकानी भौंह बदन कँपायो दाबि रसना[1] दसनै[2] सों ॥ २ ॥ चंदन में वंदन में है न अरबिंदन में कुरुबिंद में न भानुसारथी[3]-बरन में । मोहर मनोहर में कोहर में है न ऐसी गुंजन की पीठ में मजीठ अवरन में ॥ जैसी छबि प्यारी की निहारी मैं तिहारी सौंह लाली यह चरन करन अधरन में । है न गुलनार में गुलाब गुड़हर हू में इंद्रबधू[4] में न बिंब नारँगी फरन में ॥ ३ ॥

५८. कादर पिहानीवाले

गुन को न पूछै कोऊ औगुन की बात पूछै कहा भयो दई कलिजुग यों खरानो है । पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्ठन में डारि देत चुगुल चवाइन को मान ठहरानो है ॥ कादर कहत जासों कछू

१ जीभ । २ दांत । ३ अरुण । ४ बीरबहूटी ।

कहिबे की नाहिं जगत की रीति देखि चुप मन मानो है। खोलि देखौ हियो सब भाँतिन सों भाँति भाँति गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है ॥ १ ॥ देखत के नीके परिनाम बहु आदर के देखत भलाई सदा जीव में जरे रहैं। भेद भेद पूछैं मूछैं टेवत न आवै लाज पाप के समूह सिन्धु आँखिन अरे रहैं ॥ कादर कहत जे लटीन के तलासिबे को हाटबाट हू में दरबार में खरे रहैं। निंदा को जु नेम जिन्हैं चुगली अधार परस्वारथ मिटाइबे के खोज ही परे रहैं ॥ २ ॥

५६. किशोर कवि दिल्लीवाले

(किशोरसंग्रह)

कोकिला कलापी[1] कूजैं जमुना के नीर तीर बीर ऋतुराज को समाज सरस्यो परै। भनत किसोर जोर अंबन कदंबन ते मंजु मंजरीन ते सुगंध सरस्यो परै ॥ कामबिथा मेटन को सुखन समेटन को भेंटन को प्रीतम को प्रान तरस्यो परै। अवनि ते अंबर ते द्रुमन दिगंबर ते बैहरि ते बन ते बसंत बरस्यो परै ॥ १ ॥

बरसै बन कुंजन पुंज लता सुख मंजु मयूरन को सरसै।
मधु घोर किसोर करैं घन ये चपला चल चारु कला दरसै ॥
अलि हो बलि तू चलि बेगि हहा उत तो बिन प्रानपिया तरसै।
उमड़ै दुमड़ै घुमड़ै घन आज मिहीं बुंदियाँन मड़ो बरसै ॥ २ ॥
फूलन दे अबै टेसू कदंबन अंबन बौरन छावन दे री।
री मधुमत्त मधूकन पुंजन कुंजन सोर मचावन दे री ॥
क्यों सहि है सुकुमारि किसोर अरी कल कोकिल गावन दे री।
आवत ही बनि है घर कंतहि बीर बसंतहि आवन दे री ॥ ३ ॥
चहुँ ओरन कौंधि[2] जगावैं किसोर जगी प्रभा जेबन जूटी परै।
तिहि पै झरि मानौं अँगार अनी अवनी घनी इंद्रबधूटी[3] परै ॥

१ मोर। २ चमक। ३ बीरबहूटी।

नभ नाचै नटी सी जराय जरी प्रभा सी खुटी सी नित खूटी परै। अरी एरी हटापटी बिज्जु छटा छटी छूटी घटानि ते टूटी परै ॥४॥ भृकुटी कमान तानि फिरत अनोखी कहा कहत किसोर कोर कज्जल भरे है री। तेरे दृग देखे मेरो कान्हर डरात इत मघवा[1] निगोड़ो अबै रोष पकरै है री ॥ कीरतिकुमारी हे दुलारी वृषभानुजू की मेरो कह्यो मान तेरो कहा बिगरै है री। चंचल चपल ललचौहैं चख[2] मूँदि तौलौं जौलौं गिरिधारी गिरि नख पै धरै है री ॥ ५॥ देखो याते ऐसो समै फेरि ना मिलैगो कौन कौन जानै कौन से जठर झूला झूलौगे। कहत किसोर जोपै मानिहौ न मेरी कही जैसे कछू बैहौ तैसे नखन अरूलौगे ॥ फेरि आखिरी पै दुख तुमहीं सहौगे अघ-अनैल[3] दहौगे ये कहैंगे सो कबूलौगे। ऐसे तौ न फूलौगे न बतियाँ वसूलौ हरिभजन जौ भूलौगे तौ हर भाँति भूलौगे ॥ ६ ॥ एक तो दियो है तोहिं मानुस को तन दूजे उत्तम बरन तीजे उत्तम बरन देह। तेहू पर परम कृपा करि कृपानिधान कैरा बैरा बौरा गुंग बावरो करो न येह ॥ कहत किसोर जोर अच्छर को आयो भयो चातुर कहायो पायो प्रेमपथ निज गेह। धिक तोको अधम अभागे कृत-हीन जोपै ऐसे मैं न ऐसे दीनबंधु से लगायो नेह ॥ ७ ॥ चलत चपल चतुरंग जब सेना साजि तब तब दिग्गज के सीस धसकत है। डग्गमग्ग चलत महीतल रसातल को कच्छप बराह पीठि सोऊ कसकत है ॥ कहत किसोर बड़े मेरु सम धूरि होत सूझत अकास है न सूर ससकत है। उथल-पुथल भयो लोक लोक लोकन में देखि रामचन्द्र-दल सत्रु मसकत है ॥ ८ ॥ प्रात उठि मज्जन[4] कै मुदित महेस पूजि षोड़स प्रकार के विधान जानै वोर की। आवाहन आदि दै प्रदच्छिना करी है पाँव दोऊ कर जोरि

---

१ इंद्र। २ नेत्र। ३ पाप की आग। ४ स्नान।

सीस ऊपर निहोर की ॥ आरसी अँगूठी मद्धि देखि प्रतिबिंब ता में भनत किसोर जरदाई[1] मुख भोर की । गौरीपति मेरी प्रीति होय ब्रजभूषन सों हम सों न होय प्रीति नन्द के किसोर की ॥ ६ ॥

६०. कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अंतरबेदवाले

गढ़न गढ़ी से गढ़ि महल मढ़ी से मढ़ि बीजापुर ओप्यो दल[2]-मलि उजराई में। कालिदास कोप्यो बीर औलिया अलमगीर तीर तरवारि गह्यो पुहमी[3] पराई में ॥ बूँद ते निकसि महिमंडल घमंड मची लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई में । गाड़ि कै सु झंडा आड़ कीन्ही पादशाह ताते डकरी चमुण्डा गोलकुंडा की लड़ाई में ॥ १ ॥ बाग के बगर अनुरागभरी खेलैं फाग बाल अलबेली मनमोहनी गुपाल की । कालिदास ललित ललौहीं छबि झलकति नथ मुकतान की कपोल दुति भाल की ॥ चन्द करौ राज अर-बिंद आज कौन काज जाकी छबि देखन को बदन रसाल की । भृकुटी तिलक पर बरुनी पलक पर बिथुरी अलक पर गरद गुलाल क़ी ॥ २ ॥ रतिरन बिषे जे रहे हैं पतिसनमुख तिन्हैं बक-सीस बकसी है मैं बिहँसि कै । करन को कंकन उरोजन को चन्द्रहार कटि की सु किंकिनी रही है कटि लसि कै ॥ कालिदास आनन को आदर सों दीन्हों पान नैनन को कज्जल रह्यो है नैन बसि कै । एरे बैरी बार ये रहे हैं पीठपाछे याते बार बार बाँधति हौं बार बार कसि कै ॥ ३ ॥ चूमौं करकंज मंजु अमल अनूप तेरो रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दे । कालिदास कहै मेरे पास हँसि हेरि हरि माथे धरि मुकुट लकुट कर डारि दे ॥ कुँवर-कन्हैया मुखचन्द्र की जुन्हैया चारु लोचन-चकोरन की प्यासनि निवारि दे । मेरे कर मेंहदी लगी है नन्दलाल प्यारे लट उरझी

---

१ ज़रदी । २ सेना । ३ पृथ्वी ।

है नकबेसरि सम्हारि दे ॥ ४ ॥ चंद्रमई चम्पक जराव जरकसमई आवत ही गैल वाके कमलमई भई । कालिदास मोद-मद-आनँद-बिनोद-मई लालरंगमई भई बसुधा सुधामई ॥ ऐसी बनी बानक सों मदनछकाई रसिकाई की निकाई लखि लगन लगी नई । नेह को हितै करि गुपालै मोहितै करि सखिन दुचितै करि चितै करि चली गई ॥ ५ ॥ प्रथम समागम के औसर नबेली बाल केलि की कलान पिय प्यारे को रिझायो है । देखि चतुराई मन सोच भयो प्रीतम के लखि पर-नारि मन सम्भ्रम भुलायो है ॥ कालिदास ताही समै निपट प्रबीन तिया काजर लै भीत हू में चित्रक बनायो है । ब्यात लिखी सिंहिनी निकट गजराज लिख्यो योनि ते निकसि छौना मस्तक पै आयो है ॥ ६ ॥

(वधूविनोद ग्रन्थे)

दोहा—नगर सु जम्बूद्वीप में, जम्बू[2] एक अनूप ।
तरे बहै[1] त्रिपदा नदी, त्रिपथगामिनीरूप ॥ १ ॥
तिलक जानि जा देश को, दुवन[3] होत भयभीत ।
जाहिर भयो जहान में, जालिम जोगाजीत ॥ २ ॥

वंशवर्णन ।

छप्पै ।

मालदेव महिपाल प्रथम पुनि रामसिंह हुव ।
जैतसिंह समरथ्थ हथ्थ[4] किय बहुरि सकल भुव ॥
माधवसिंह प्रसिद्ध भयो जग रामसिंह पुनि ।
पुनि प्रचण्ड गोपालसिंह सुव हरीसिंह पुनि ॥
पुनि गोकुलदास नरिंदमनि तनय सु लक्ष्मीसिंह हुवै[5] ।
रघुबंस-अंस पूरन बखत वृत्तिसिंह जिमिधरनि ध्रुव ॥

---

१ बच्चा । २ जामुन का पेड़ । ३ शत्रु । ४ हाथ में की । ५ हुए ।

दोहा—वृत्तिसिंह जिमि धरनिधुव, जाते अरि भय भीत ।
जाहिर भयो जहान में, ताको जोगाजीत ॥ १ ॥
जोगाजीत गुनीन को, दीन्हें बहुबिधि दान ।
कालिदास ताते कियो, ग्रंथ पंथ अनुमान ॥ २ ॥

चौपाई ।

सम्वत सत्रह सै उनचास । कालिदास किय ग्रंथ बिलास ॥
वृत्तिसिंह-नंदन उद्दाम । जोगाजीत नृपति के नाम ॥१॥

६१. कवीन्द्र उदयनाथ कबि । श्रीकालिदास कवि के पुत्र बनपुरानिवासी

हाड़ा सैन आड़ा है अमीर आमखास बीच बोला बेतुवान कहँ बात जौन बर की । जौलौं जुद्ध बिरचि कटारी निरधारी भारी भनत कबिंद कारी कला ज्यों कहर की ॥ पंजर समेत मंज मंजर लौं पैठि आव अरि के उमेठि आनी पीठि जाय फरकी । बाँह की बड़ाई कै बड़ाई बाहिबे की करौं कर की बड़ाई कै बड़ाई जमधर की ॥ १ ॥ कूरमनरिंद गजसिंहजू के चढ़े दल लंक लौं अतंक बंक संक सरसाती है । भनत कबिंद बाजै दुन्दुभी धुकार भारी धरा धसमसै गिरिपाँती डगलाती है ॥ कमठ की पीठि पर सेस के सहस फन दीवा लौं दवात उमगात अधिकाती है । फनन ते बाहिर निसरि द्वै हजार जीभैं स्याह स्याह बाती सी बुझाती रहि जाती है ॥ २ ॥ गहिरी गुराई सों प्रथम चूमि चामीकर चम्पक के ऊपर बहुरि पाँव रोप्यो है । तीसरे असल अरबिंद आभा बस करि हँसि करि तड़िता को तोयँद में तोप्यो है ॥ भनत कबिंद तेरे मान समै सौतैं कहा सुरबनितान को गुमान जात लोप्यो है । मेरे जान आली आज ऐंड़भरो तेरो मुख भौंहैं तानि सौंहैं री कलानिधि पै कोप्यो है ॥ ३ ॥ पौन के झकोरन कदंब झहरान

१ चलाने की । २ डगमगाती । ३ सोना । ४ बादल । ५ चन्द्रमा ।

लागे तुंग फहरान लागे मेघ-मंडलीन के। भनत कबिंद धरासारन भरन लागे कोस होन लागे बिकसित कंदलीन के॥ उटज निबासिन के त्रास उपजन लागे संपुट खुलन लागे कुटज-कलीन के। माचो बर्हीन[1] के अहीन सुर झिल्लिन के दीन भये बदन मलीन बिरहीन के॥ ४॥ ऐसे मैन मैन के न देखे ऐन सैन के जगैया दिन रैन के जितैया सौति सीन के। कमल कुलीनन के मुकुलीकरनहार[2] कानन की कोरन लौं कोरन रँगीन के॥ भनत कबिंद भावती के नैन चायक से देखे मैन-पायक से नायक नवीन के। सींचे हैं अमीन[3] के अमीन मानौ मीन के बखानै को मृगीन के खगीन पन्नगीन के॥ ५॥

(विनोदचन्द्रोदय)

सम्बत सकत अठारह चारि। नाइकादि नायक निरधारि॥
लहि कबिंद लच्छित रसपंथ। किय बिनोदचन्द्रोदय ग्रंथ॥

दोहा—कालिदास कबि के सुवन, उदयनाथ सरनाम।
भूप अमेठी के दियो, रीझि कविंद सुनाम॥ १॥
तासु तनय दूलह भयो, ताके पढ़िबे हेतु।
रसचन्द्रोदय तब कियो, कबि कबिंद करि चेतु॥ २॥

कबित्त। चलत मरालन[4] की महिमा घटावै बैन बोलत अबैन करै प्रभुता पिकन की। मुसक्यात सुधा को सुहाग सो सकेले लेति बरनन जीते सुन्दराई सुबरन की॥ भनत कबिंद जाकी निरखत सुन्दराई पाई है दगन हू बड़ाई दीठिपन की। मन ते न भूलति भुलावै मन ही को वह चहचहे चखन की लहलहे तन की॥ १॥ धुकत चलत अरि लुकत उलूकन[5] लौं मुकत किलान के धुकारनि दवेश के। भनत कबिंद जहाँ पेस की मवासी कौन कम्पत

---

१ मोर। २ मुकुलित करनेवाले। ३ अमृत। ४ हंस। ५ उल्लू, जिसे दिन को नहीं सूझता नर पक्षी।

अवास अलकेस के लँकेस के ।। जीति कै जहूर साजै फौजनि के अग्र बाजै भारी भगवन्त के सँवारे बलबेस के । दरजैं दिल्ली के उमराइन के उर परैं गरजैं नगारे गाजीपुर के नरेस के ।। २ ।।

कास कपास कैलास कि लाल कनी कचनार कुसूम कनोने ।
कासित कोमल कुंडल कानन कंज कदम्बनि कम्बुक रोने ।।
कुन्दकली कलहंस कपूर कनी कर कुंद कबिन्द कहोने ।
काम कमान कलाकर की नर कृष्ण किसोर कि कीरति कोने ।।३ ।।

समर अमेठीके सरोस[1] गुरुदत्तसिंह सादति की सेना समसेरन सों भानी है। भनत कबिंद काली हुलसी असीसन को ईसन के सीस की जमाति सरसानी है ।। तहाँ एक जोगिनी सुभट-खोपरी लै उड़ी सोनित पियति ताकी उपमा बखानी है । प्यालो लै चिनी को छकी जोबनतरंग मानौ रंग हेत पीवति मँजीठ मुगलानी है ।। ४ ।।

६२. कबिंद्राचार्य्य सरस्वती काशीवासी
(कवीन्द्रकल्पलता)

मंडत घमंडि कै अखंड नवखंडन मैं चंड मारतंड जोति लौं बखानियत है । प्रलैपारावारपयपूर[2] से पसरि परे पुहमी के ऊपर यों पहिचानियत है ।। खंडव[3] के दाह समै पंडव[4] के बान जिमि मंडि महिमंडल के अरि भानियत है । साहिजहाँसाहजू की फौज को फैलाइ देखौ जंबूद्वीप सों उभरि तम्बू तानियत है ।। १ ।।

दोहा—सप्त द्वीप नव खंड में, भुवन चतुर्दस माहिं ।
साहिजहानाबाद सो, नगर दूसरो नाहिं ।। १ ।।
नहिं उपमा को दूसरो, जामें छरित सु बाद ।
साहिजहानाबाद सो, साहिजहानाबाद ।। २ ।।

---

१ क्रोधित । २ प्रलय के सागर की जलराशि । ३ खांडव बन । ४ अर्जुन ।

६३. कृष्णलाल कवि (१)

केसरि को कंचन ने कंचन को चंपक ने चंपक को जीत्यो प्यारी रूप ने अमंद है । गजगति छीने भूप भूपगति छीने हंस हंसगति छीनिबे को तेरी गति मंद है ॥ सब हारे बानन ते बान पंचबानन ते कृष्णलाल तोहिं देखि रीझे नंदनंद है । गजमुख मूँदै कंज कंजमुख मूँदै चंद चंदमुख मूँदिबे को तेरो मुखचंद है ॥ १ ॥ चातक चिहुँक मत मुरवा कुहुक मत झींगुर झिहुक मत भेकी[1] मननाय मत । चकवा चिकार मत पपिहा पुकार मत बूँद झरि धार मत धार धहराय मत ॥ कृष्णलाल गाय मत पीर उपजाय मत बालम बिदेस पाय मैन तन ताय मत । पौन फहराय मत चपला चवाय मत धाय मत धुरवा औ घन घहराय मत ॥ २ ॥

६४. कुंभनदास कवि

पद ।

स्यामसुन्दर रैनि कहाँ जागे । देखि बिन गुन माल अधर अंजन भाल जावक लग्यो गाल पीक पागे ॥ चाल डगमगी अति सिथिल अँग अंग सब तोतरे बोल उर नखनि दागे । गड़्यो कंकन पीठि निपट बिह्वल दीठि सर्बरी लाल नहिं पलक लागे ॥ कहिये साँचि बात काहे जिय सकुचात कौन तिय जाके अनुराग रागे । दास कुंभन लाल गिरिधरन एते पर करत झूठी सौंह मेरे आगे ॥ १ ॥

६५. कृष्ण कवि (२)

वैद को वैद गुनी को गुनी ठग को ठग ठूमक को मन भावै ।
काग को काग मराल मराल को काँध गधा को गधा खजुवावै ॥
कृष्ण भनै बुध को बुध त्यों अरु रागी को रागी मिलै सुर गावै ।
ज्ञानी सों ज्ञानी करै चरचा लबरा के ढिगा लबरा सुख पावै ॥ १ ॥

---

१ मेढकी ।

६६. कृष्ण कवि (३)

जाकी प्रभा अवलोकत ही तिहुँ लोक की सुंदरता गहि वारी। कृष्ण कहैं सरसीरुह लोचन नाम महामुद मंगलकारी ॥ जा तन की झलकैं झलकैं हरिता द्युति स्यामल होत निहारी। श्रीबृषभानु कुमारि कृपा करि राधा हरो भवबाधा हमारी ॥ १ ॥

कूरम-कलस महाराज जयसिंह फैलो रावरो सुजस सुरलोक में अपार है। कृष्ण कबि ताके कन सुंदर जलज जानि सुरन की सुंदरीन लीन्हो भरि थार है ॥ तिनही के संग को सरस तेरो गुन लैकै हार पोहिबे को उन करती बिचार है। मोती जो निहारैं कहूँ रंध्र[1] को न लवलेस गुन को निहारै कहूँ पावती न पार है ॥ २ ॥

६७. करनेश कवि असनीवाले

खात हैं हराम दाम करत हराम काम धाम धाम तिन ही के अपजस छावैंगे। दोजक में जैहैं तब काटि काटि कीड़े खैहैं खोपरी को गूदा काग टोटनि उड़ावैंगे ॥ कहै करनेस अबै घूसनि ते बाजि तजै रोजा औ निवाज अंत जमै कढ़िलावैंगे। कबिन के मामिले में करैं जौन खामी[2] तौन निमकहरामी मरे कफन न पावैंगे ॥ १ ॥

पौन हहराई बनबेली थहराई लहराई सुभ्र सौरभ कदंबन की सान ते। झिल्ली झननाई पिक चातक चिच्याई उठै बिज्जु छहराई छाई कठिन कृपान ते ॥ कहै करनेस चमकत जुगुनून चाय मेरे मन आई ऐसी उक्ति अनुमान ते। बिरही दुखारे तिनपर दईमारे मनो मेघ बरसत हैं अँगारे आसमान ते ॥ २ ॥

६८. कुंजलाल कवि मऊ रानीपुरा बुंदेलखंडवासी

आई एक नारि तहाँ चारि एक नारि तहाँ पाई एक नारि तहाँ नारि हू सो धाम है। रही कौन अंग लागि रही कौन अंग लागि रही अंग लागि जौन लागि हू सो नाम है ॥ कहै कबि कुंजलाल

---

१ छिद्र। २ कमी।

कुंज है न कुंजलाल कुंज में न कुंजलाल कुंज हू सों स्याम है। वाम को न काम इतै वाम को न काम कितै बाम को न काम जितै बाम हू सों काम है ॥ १ ॥

६९. कुंदन कवि

सपनेहु सोन तोहिं दयो निरदई दई बिलपति रहौं जैसे जल बिन झखियाँ। कुंदन सँदेसो आयो लाल मधुसूदन को सबै मिलि दौरीं लेन अंगन हरखियाँ ॥ बूझे समाचार न मुखागर सँदेसो कछु कागद लै करो हाथ दीन्हों हाथ सखियाँ। छतियाँ सों पतियाँ मिलाइ बैठीं बाँचिबे को जौलौं खोलौं खाम[1] तौलौं खुलि गईं अँखियाँ ॥ १ ॥

७०. कमलेश कवि

आजु बरसाइति बर साइति करिये तो ताते तिय हित पाइ तोहिं बार बार बूझिये। कहै कमलेस यों महेस को तिहारो पन ताते छन भरे को री एकसंग हूजिये ॥ मैन के उमंग मैनजू की मनभावन सों बूझि मनभावन सों फेरि आनि जूझिये। पीपर के पास ते परोसिनि मो पास आव आजु बर पूजि फेरि पीपर को पूजिये ॥ १॥ रंभा से रसिक नीके चंचल तुरंगम से संख से सपेद चारु चंद से गनाइये। कहै कमलेस कामधेनु से सखीन चित्त सौतिनको चिंतामनि चाप से गनाइये ॥ पय को पियूष श्री सुरतरु धनंतरि से काके बिष मद से मतवारे से गाइये। रूपनिधि मथि मनमथ ने निकासे जे रतन दस चारि प्रिया-नैनन में पाइये ॥२ ॥ सुरत करत बिधि प्यारी बिपरीत रची मदन महीप को रिझावत हैं साँसे से। कहै कमलेस हैं कलान में प्रवीन फेरि अंग-अंग-बासजौं बिचारि गाँस गाँसे से ॥ आसु[2] तहीं कंकन लौं भूषन चलाइ दये नूपुर दबाइ मानौ चुगुलनि ठासे से। ज्यों-ज्यों कटि लचै मचै

१ लिफ़ाफ़ा। २ शीघ्र।

कंकन उलाहनो त्यों नथ में को मोती करै नट लौं तमासे से ॥ ३ ॥
कबि कमलेस हैं अधीन गुन राजन के राजन को छिति के अधीन लेखियतु है। छिति के अधीन धान धान के अधीन प्रान प्रान के अधीन देह सोई पेखियतु है ॥ देह के अधीन नेह नेह के अधीन गेह गेह के अधीन नारि सो बिसेषियतु है। नारि के अधीन भाव भाव के अधीन भक्ति भक्ति के अधीन कृष्णचंद्र देखियतु है ॥४॥
मिलिये उड़ि कै किमि पंख नहीं लखिये किमि नाहिं कला ससिकी। हरि के श्रुति से श्रुति जो लहते सुनते हँसि बोलनि वा मुख की ॥ मुख सेस हू से लहते कहते कमलेस कथा गुन औ जस की। मिलिबौ बिछुरौ बिछुरौबौ मिलौ अपने बस ना बिधना-बस की ॥ ५ ॥

७१. कान्ह कवि कन्हईलाल कायस्थ राजनगर बुंदेलखण्ड (१)

सोने के सतून[1] ब्रजराज-मन-मंदिर के रचिबे को चारु चतुरानन कहाँ के हैं। कैधौं रसराज महराज के निसान खंभ कान्ह कहै कैधौं सौतिमानभंज नाके हैं ॥ कौन उपमा के अति राजै सुखमा के गजगवनबिथा के राजहंसगति नाके हैं। मोहन बना के मन मोहिबे के नाके खंभ कामपलना के किधौं पग ललना के हैं ॥ १ ॥ कैधौं मरजाद बिधिना की बिधि ताके सखी गहब गुलाब आब राखे प्रेम गोरी के। कैधौं मनि मानिक ललाई अवरेखियतु मानो द्युति मुकुरै[2] सुहाये काम जोरी के ॥ कान्ह भनै पद जुग सागर कुसुम रंग तामें दसकमल परागनि झकोरी के। नवलकिशोरजू के नवल सनेहभरे नव नख राजैं खरे नवलकिशोरी के ॥ २ ॥

७२. कान्ह प्राचीन कवि (२)

कानन लौं अँखियाँ ये तिहारी हथेरी हमारी कहाँ लगि फैलि हैं।

---

१ खंभे। २ आईना।

मूँदे तऊ तुम देखति हौ यह कोरैं तिहारी कहाँ लौं सकेलि हैं ॥
कान्हर हू को सुभाव यहै उनको हम हाथन ही पर झेलि हैं।
राधेजू मानो भलो कि बुरो आँखिमीचनो संग तिहारे न खेलि हैं ॥१॥

अवनि अकास के प्रकासित बनाये पला दिसन की जोति कान्ह ओज अति ऊरो भो। मारुत की दंडिका बनाई सुघराई घर चतुर सुनार चतुरानन[1] सु रूरो भो ॥ तो पै सुनु राधे या अनोखी तौल तौली गई गयो वह ऊँचे यह नीचे आनि भूरो[2] भो। तारागन जदपि चढ़ाइ समुँदाइ[3] दीन्हें तदपि न चंद मुखचंद भर पूरो भो ॥ २ ॥

७३. कमलनयन कवि

आजु कौंलनैनजू सों मोसों ऐसी होड़ परी और कहा सखिन की बातैं अवरेखिये। दरपन लै कान्ह कह्यो मेरे बड़े नैन हैं जू तो हूँ कह्यो प्यारेजू के ऐसे ही तेखिये ॥ दीरघ बिसाल मेरी राधा कौंरिजू के कही ल्याओ चलि देखिए जू रोष न बिसेखिये। आये हैं हराबी हाहा प्यारी बलि गई तोपै एकबार आँखिन सों आँखि मापि देखिये ॥ १ ॥ मने कीजो मेरी आली जिय में न ऐसी आनैं हम तो हितू सो बात हित की बताय हैं। जानत हौ पाँयन सों मापे हैं सुतीनो लोक याही के भरम भूले भरम गँवाय हैं ॥ दई की सँवारी बृषभानु की कुमारी तासों सरबर किये हरि पाछे पछिताय हैं। राधे चंदमुखी वे कनौड़े हैं कमलनैन आँखिन सों आँखि मापि कैसे जीति जाय हैं ॥ २ ॥

७४. काशीनाथ कवि

जोरत न नैन मुख बोलत न बैन अब लागे दुख दैन ढिग हौंही निबसत हौ। ऐसी चतुराई निठुराई कहा काशीनाथ मेरो हिय जारन को और तैं हँसत हौ ॥ हम तरस्यो करैं तुम्हें तो है तरस नहीं

---

१ ब्रह्मा। २ भारी। ३ सब।

एते पर बार बार मोहिं को कसत हौ । जाउ जू सिधारो लाल जहाँ लाग्यो नयो नेह बोलाचाली नाहिं एक गाउँतौ बसत हौ ॥१॥ ऊदी होति नीलमनि बरनि सकत कौन चुनी छिपि जाति नीठ नीठ डीठ ना परैं । जानि जानि जौहरी जवाहिर धरे हैं ढाँपि पीरे होत पैग सों भगोई छवि को धरैं ॥ लेत देत बनि है न घटि है हमारो माल आपनी अनोखी यह तेरहो गुना करैं । बाल हाथ मुकता प्रवाल[1] सम ह्वै ह्वै जात काशीनाथ रजत रुपैया होत मुहरैं ॥ २ ॥

७५. कन्हैयाबख़्श बैस

छप्पै ।

चलत सेन महि डगत होत उच्छलित सिंधुजल ।
कंप सेस फन सहस धरत अकुलाय धरा बल ॥
कमठपृष्ठ दलमलत परत दिगदन्तिन खलभल ।
कोल दसन भरपूर धसत मसकत बच्छस्थल ॥
उड़ै रेनु रवि झंपिगो भनै कान्ह सकि सप्ततल[2] ।
श्रीरामचन्द्र गढ़ लंक पर चढ़्यो सज्जि कपि-ऋच्छ दल ॥ १ ॥

७६. कविराज कवि

कोउ अटको मुख स्वाद कला कोउ मोहन या मन को भटकाये ।
कोउ अटको सुखसंपति में कोउ दंपति अंक रहे लपटाये ॥
या दुनिया बहु भाँति फँसी कविराज विचारि कहैं गोहराये ।
राम भजौ परिनाम यही नहिं जात इया तन लात लगाये ॥ १ ॥

मेरु सकसेना श्रीवास्तव भटनागर हैं रोशन कलम रहै सबकी सवार की । गौर अशठाने जग जाहिर बखाने बहु बचन अडोल बात कहैं उपकार की ॥ माथुर की महिमा कही न जाति कविराज

---

१ मूँगा । २ अतल से पाताल तक नीचे के सात लोक ।

कीरति विमल जाकी सदा गुलजार की। धरमधुरंधर धरा में धरमातमा हैं कायथ कलपतरु सोभा दरबार की ॥ २ ॥

७७. कविराय कवि

दान बिन दरबि निदान ठहरान कौन ज्ञान बिन जस अपजस करि करिगे। कविराइ संतन सुभाइ सुने सूमन के धरम-बिहूने धन धरा धरि धरिगे ॥ काम आये काहू के न दाम दुहूँ दीननके धाम गाड़े गाड़े सब गथ गरि गरिगे। बोरि बोरि बिरद बड़ाई बेसहूर केते जोरि जोरि कृपन करोरि मरि मरिगे ॥ १ ॥

७८. कल्याणदास

पद—सुमिरो श्रीबिठ्ठलेसकुमार।

अतिअगाध अपार भवनिधि भयो चाहौ पार ॥
मैं बलि रहत करुनासिंधु कोमल सदा चित्त उदार।
गोकुलेस हृदै बसो मम माल पाल निहाल ॥
माल तिलक न तजी कतहूँ परी जदपि पुकार।
अन्त भक्तन दियो धीरज भये पद दातार ॥
चार जुग में बिसद कीरति भक्तहित अवतार।
नवकिसोर कल्याण के प्रभु गाऊँ बारम्बार ॥ १ ॥

७९. कविराम कवि

स्याम सरीर भयो कलपद्रुम मैं हूँ भई आइ प्रेमलता।
सो उरझाइ गयो कबिराम पै को सुरझावन जोग हता ॥
मन तो अटको मुरलीधरसों मन ब्यापि गई तनकी ममता।
हम कौन की लाज करैं सजनी मेरो कंतको कंत पिताको पिता ॥ १ ॥
बंधुबिरोध करो सिगरो झगरो नित होत सुधारस चाटत।
मित्र करै करनी रिपु की धरनीधर देखि न न्याउ निपाटत ॥

कविराम कहैं विष होत सुधा घर नारि सती पति सों चित फाटत ।
भा बिधना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकुर काटत ॥ २ ॥

८०. कालीदीन कवि

देखि चंड-मुंड को प्रचंड उग्र बोली सिवा अबल अरच्छन की रच्छ पच्छ पाली हौं । कहै कालीदीन देव कौतुक बिलोकौ नभ चारौ दिग दंतिवे को आजु दुराताली हौं ॥ फोरि डारौं बसुधा मरोरि डारौं मेरुगिरि कालचक्र तोरि डारौं आजु मैं बहाली हौं । काली करौं अरिदल अति बिकराली करौं जंगभूमि लाली करौं तौ मैं महाकाली हौं ॥ १ ॥

८१. कल्याण कवि

नैन जग राते माते प्रेममय देखियत आनन जम्हात ठौर ठौरन खगात है । कजरा कुटिल लागे अधरनि ओर कोर सकुच सरम नहीं सोहैं सौंहैं खात है ॥ केसव कल्यान प्रानपति जानि पाये जाहु नेकु पहिचानी सब हो तिहारी बात है । छीलि छीलि बतियाँ न छैल बर बोलौ कहूँ कर के छिपाये ते छपाकर छिपात है ॥ १ ॥

८२. कमाल कवि

राम के नाम सों काम पूरन भयो लच्छिमन नाम ते लच्छ पायो ।
कृष्ण के नाम सों वारि से पार भे बिष्णु के नाम बिसराम आयो ॥
आइ जग बीच भगवंतकी भगति कीन्ही और सब छाँड़ि जंजाल छायो ।
कहत कम्माल कब्बीर का बालका निरखि नरसिंह पहलाद गायो॥१॥

८३. कलानिधि कवि प्राचीन

गावत गोधन की धुनि लै सु कलानिधि मैनकलान बतावत ।
तावत है तन मो तरुनी जब भाव-भरी भृकुटीन नचावत ॥

---

१ तमाशा ।

चावत ओक सबै ब्रज लोगन में मनमोहन मो हित आवत।
आवत हैं तरसावत हैं न लगावत अंक कलंक लगावत ॥ १ ॥

८४. कुलपति मिश्र

मेरे जुद्ध क्रुद्ध लखि आयुध सकै न कोऊ मानुष की कहा है गति दानव न देव की। अर्जुन गराजे जिन आइ सनमुख सूर तू न जानै गति इन बानन के भेव की॥ कुटिल बिलोकनि ते होत लोक लोक खण्ड जाको कर प्रगट धरा[1]धरन टेव की। भीषम हौं आयौं आज भीष[2]म मचाइ रन खगग[3]बल पैज हि छुड़ाऊँ वासुदेवकी॥१॥

८५. कारबेग फ़क़ीर

माफ़ किया मुलुक मताहदी बिभीषन को कही थी ज़बान कुरबान ये करार की। बैठिबे को ताइफ़ तख़त दै तखत दिया दौलत बढ़ाई थी जुनार[4]दार यार की॥ तब क्या कहा था अब सर्फ़राज़ आप हुए जब की अरज सुनी चिड़ीमार ख़्वार की। कारे के करार माहँ क्यों जी दिलदार हुए एरे नंदलाल क्यों हमारी बार [5]बार की॥ १॥

८६. केहरी कवि

इतै साहिजादे जू बनाये सार मोरचनि उतै कोट भीतर दबाये दल द्वै रह्यो। केहरि सुकबि कहै सूर मारे सैहथीन वहाँ अवतरानि तमासे आनि ब्वै रह्यो॥ औचक गलीन मैं ग[6]नीम दल गाजि उठो तुंड गजराजन के मद आगे च्वै रह्यो। समर सँहारे भट भेदैं रबि-मंडल को मंडल घरीक नटकुंडल सो ह्वै रह्यो॥ १॥

८७. कृष्णसिंह कवि

कानन समीर बसैं भृकुटी अपाङ्ग अङ्ग आसन अजिन मृगअजिन अनाधा के। अरुन बिभोगे कोर बिसद बिभूति अंग त्यागे नींद

---

१ पहाड़। २ भयानक। ३ तलवार के ज़ोर से। ४ यज्ञोपवीत-धारी, मित्र अर्थात् सुदामा। ५ विलंब। ६ शत्रुदल।

बिषय निमेष बिष बाधा के ॥ कृष्णसिंह कामकला बिबिध कटाच्छ ध्यान धारना समाधि मनमथसिद्धि साधा के । प्रेम के प्रयोगी सुख संपतिसँयोगी अति श्याम के बियोगी भये योगी नैन राधा के ॥ १ ॥

८८. कविदत्त कवि

हीरन के मुकतान के भूषन अंगन लै घनसार लगाये ।
सारी सपेद लसै जरतारी की सारदरूप सो रूप सोहाये ॥
पीतम पै चली यों कबि दत्त सहाय है चाँदनी याहि छपाये ।
चाँदनी को यहि चंद्रमुखी मुख चंद की चाँदनी सों सरसाये[1] ॥१॥

८६. कालिका कवि

यह प्रीति की बेलि लगाई जु है तिहि सींचि भले सरसाइये जू ।
नित साँझ-सकारे[2] कृपा करिकै पग धारि सुधा बरसाइये जू ॥
कबि कालिका यों कर जोरि कहै मति देखिवे को तरसाइये जू ।
इन आँखैं हमारी कुमोदिनी[3] को मुखइन्दु लला दरसाइये जू ॥१॥

६०. कविराम कवि—(नाम रामनाथ)

यह ऐसो अदाँव भयो या घरी घरहाइन के परी पुंजन में ।
मिसैं[4] कोऊ न आय चढे चित पै इनकी बतियान की गुंजन में ॥
कबि राम कहै भई ऐसी दसा गिरिलंघन की जिमि लुंजन में ।
किमि हौं अब जाय सकौं हे दई बजी बैरिनि बाँसुरी कुंजन में ॥१॥

६१. केवलराम कवि

पद—सरस रसरंग भीने नवल हरि रसिकवर प्रात ही जात इतरात सोहै । परम प्रीति के ऐनहित हुलसि जागै रैन चैन चित निरखि द्युति मैन मोहै ॥ मंद मृदुल हँसनि छबि लसनि मुखमाधुरी ललित कच कुटिल दृग बंक भौंहै । मदनगोपाल अवलोकि धीरज धरै कहै री सजनि ऐसी बाल को है ॥ चकित चितवत चित करत

---

१ बढ़ाए । २ सुबह । ३ कोकाबेली । ४ बहाना ।

चंचल चखनि बिसरि गति बिबस बावरी होहै। सोभा को सदन मुखवदन की ज्योति लखि होत है कोटि रबि ससि लजोहै॥ लपटि उदगार उर हार कंचन बसन प्रेम सिंगार तन घन लगोहै। केवल-राम बृन्दाबन जीवनि छकी सब सखी दृगनि सों रूप जोहै॥ १॥

६२. काशिराज कवि (बलबानसिंह, महाराजा चेतसिंह काशीनरेश के पुत्र (चित्रचन्द्रिका)

छप्पै

उज्ज्वल भूषन बसन जयति बीना-पुस्तक-धर।
शुभ्र[1] हंस आरूढ़[2] कंठगत मुक्तमाल बर॥
सेस सुरेस महेस चरन पंकज बंदत नित।
मनबांछित[3] फल लहत कहत जन बानी धरि चित॥
कबि काशिराज अनुनय करै कुमति तिमिर[4] तुम-ही हरौ।
यहि चित्रचंद्रिका ग्रंथ को जगतजननि पूरन करौ॥ १॥

६३. कृष्ण कवि प्राचीन

काँपत अमर खलभल मचै ध्रुवलोक उडुगनपति[5] अति नेक न सकात हैं। दस के दिनेस के गनेस सब काँपत हैं सेस के सहस फन फैलि फैलि जात हैं॥ आसन डिगत पाकसासन[6] सु कृष्ण कबि हालि उठे दुग्ग बड़े गंध्रब को खात हैं। चढ़े ते तुरंग नवरंगसाह बादसाह ज़िमी आसमान थरथर थहरात हैं॥ १॥

६४. कोविद कवि (श्रीत्रिपाठी पंडित उमापतिजू)

(दोहावली-रत्नावली)

दोहा—श्रीदसरथ सुत जानिये, अवतारी अति चित्र।
मित्र मयंक अनेक द्युति, श्रुति बर्णित सुपवित्र॥ १॥
ईश्वर तासु दयालुता, सुन्दरता तन और।

---

१ श्वेत। २ सवार। ३ मनचाहा। ४ अंधकार। ५ चंद्रमा। ६ इंद्र।

कोबिद बनबासी ऋषी, मोहै तेहि सिरमौर॥२॥
रमा सदा उत्साह इन, छमा दया ऋतबैन[1]।
निष्किंचन[2] हू चाहिये, हिय उछाह निसिऐन॥३॥
द्विविध सिकार करत ललन, खलन मृगन जब चाह।
धर्म सर्म नरतन दरस, कोबिद नितहि उछाह॥४॥
तात मात गुरु की सदा, भक्ति बिसेष महेस।
मित्त प्रीति अरु चित्त की, बितरत[3] रहत हमेस॥ ५ ॥

९५. कलानिधि (२) (नखसिख)

सुन्दरी की बेनी हेमफूलन की सेनी-जुत अमित अपछरन की सीस छबि छरि लै। सुघर सखीन करकमलनि घोरि पाटी पारी मरकत[4] की मयूख[5] दुति हरि लै॥ कलानिधि फैलि रही सीस सीसफूल-रुचि उपमा अनूप माँग मोतिन की लरि लै। मानों बस्यो तिमिर अखिल[6] परिवार लैकै रबि की सरन सोह बीच सुरसँरि[7] लै॥ १ ॥

९६. कृपाराम ब्राह्मण नरैनापुरवाले
(भागवतभाषा)

दोहा—कछु धन चोरी ते गयो, कछु ज्ञातिन[8] हरि लीन।
कछु धन पावक ते जर्‌यो, भयो काल तन हीन॥ १ ॥
ऐसे नर जो जगत में, जो जद्यपि कछु लोभ।
तौ सब गुन अवगुन भये, तेहि पुनि कछुअ न सोभ॥ २ ॥

९७. कृपाराम कवि (२) जयपुरवाले
(समयबोध)

कातिक में कहत बिदेस को चलन कंत परिवारु पंचमी भली न घन छाई है। सातम अग्यारसऽरु तेरस अमावस जो गाजत सघन घन महादुखदाई है॥ करत बियोग रोग बारि बरसै न आगे ऐसो जोग

१ सत्य वचन। २ कोमल। ३ बाँटते। ४ पन्ना। ५ किरणें। ६ सारा ७ गंगा। ८ जातिवालोंने।

जानि बात मोको न सुहाई है । एकमत कहे यामें मेघ भलो प्राची[1] दिसि रहिये कृपाल गेह नवौ निधि पाई है ॥ १ ॥

९८. कमच कवि

दानव देव नाग नर किन्नर गन गंध्रब जोगी जड़ जंटी ।
कीटपतंग पच्छि पसु जंगम स्थावर गुरु चेला अरु चंटी ॥
महिमंडलमंडली कमच कहि जिहि नव खंड विस्व धर बंटी ।
तिहुँ पुर तिथि तिहुँ लोक तिहूँ पुर को को मरि न भयो मिलि मंटी[2] ॥१॥

९९. किशोर सूर कवि

सची[3] सिर ढोरै चौंर उर्बसी उड़ावै भौंर सावित्री सेवै चरन महिषी महेस की । बरुन धनेस राजराज उडुराज कन्या गांधर्बी किन्नरी कुमारी सेवै सेस की ॥ नवनि नरेसन की दमकै सु दामिनि सी ठाढ़ी आसपास पेस आइ देसदेस की । कन्या तिहुँ लोकन की तिनमें किसोर सूर अद्भुत महरानी बैठी राजमिथिलेस की ॥ १॥
सुंदर रूप त्रिया मन जानकी लोक औ वेद की मेड़[5] न मेटी ।
औधपुरी सुख संपति सों रजधानी सदा लछना सों लपेटी ॥
सूरकिसोर बनाय बिरंचि सनेह की बात न जात है मेटी ।
कोटिक जो सुख है ससुरारि तौ बाप को भौन न भूलत बेटी ॥२॥

१००. कान्हरदास

पद

श्रीबिट्ठलनाथजू के चरन सरनं ।
श्रीबल्लभनंदनं कलिकलुषखंडनं परमं पुरुषं त्रयतापहरनं ॥
सकलदुखदारनं भवसिंधुतारनं जनहितलीलादेहधरनं ।
कान्हरदास प्रभु सब सुखसागरं भूतले दृढ़भक्ति भावकरनं ॥ १ ॥

१०१. काशीराम कवि

हिलिमिलि कीजै मेल दीनो है बिबेक बिधि कहै काशीराम याते

---

१ पूर्व दिशा । २ मिट्टी ३ इंद्राणी । ४ रानी । ५ मर्यादा । ६ पाप ।

जग चाहियतु है । जो न मिलै पौरि[1] दौरि ताके फिरि जाइ कोऊ जाको हियो बोलनि कुबोल दाहियतु है ॥ सुनो हो प्रबीन नर दीनता न भाषि जानै याही ते सुदेसनि बिदेस गाहियतु है । खान चाहिये न एतो पान चाहिये न एतो दान चाहिये न जेतो मान चाहियतु है॥१॥ कुंज की गली में एक नवल अकेली बाल देखी ब्रजराज ऐसी पाइये न चाहे ते । दौरि गही बाँह उन आइबे की बाँह दीन्ही साँची करि मानिबी जू नेह के निबाहे ते॥ कहै कबि कासीराम सुता बृष-भानुजू की अति अतुराई चतुराई चित साहे ते । हा हा करि हारी पतियाने नहीं पाँय परे छाती के छुये ते, कहु छाँड़ि दीन्ही काहे ते ॥ २ ॥ गाढ़े गढ़ ढाहत रहत नहिं ठाढ़े नेकु दिग्गज दुरत मद डारत सुकाइ के । कराचोली कसि झुकि निकसि निजामतखाँ आवत रकाब जब बरजोरी पाइ के ॥ धरनि के चहूँ कोन कासीराम भौन भौन भाजौ भाजौ इहै होत राना राव राइ के । लंक ते लंकेस के पताल हू ते सेस के सुमेर ते सुरेस के मिलैं वकील[2] आइ के ॥ ३ ॥

१०२. कामताप्रसाद (१)

कुंदन से झलकैं खलंक[3] बस करैं मानो पलकैं बुलाइ लेत सहित दगा से हैं । नवल नवीन मन छीन लेत मनसिज पीन जुब टारे ते पियारे खूब खासे हैं ॥ धीरधर घासे मैं नकासे ते उमंग भरे काम रंग रासे सुचि जोहत प्रभा से हैं । कामताप्रसाद उर प्यारी के उरोज सोहैं कोक कोकनद गुमटा से छनदा से हैं॥ १ ॥

आनन अनूप छबि छलक छटा सी होति ज्योति जोन्ह[4] निंदै निसिकर चंद नीको है । देखत चकोर से न मुरत मुनीसमन ममता

---

१ ड्योढ़ी पर । २ प्रतिनिधि । ३ दुनिया । ४ चाँदनी ।

मदादि तम करै खण्ड नीको है ॥ ब्यास सनकादि बेदबिदित बिरंचि हरि संभु से बिबेकी जासु करैं बंदनीको है । कामताप्रसाद कला सोरहौ अखंड मुख चंद हू ते नीको बृषभाननंदनी को है ॥ २ ॥

१०३. कामताप्रसाद (२) कान्यकुब्ज ब्राह्मण लखपुरा ज़िले फ़तेपुर वाले (संस्कृत, प्राकृत, भाषा, फ़ारसी)

या नलिनं मलिनं नयनेन अनेन करोति बिभर्ति करा ।
चंदमुखी मद्दतिज्ज गई पुनि तिक्ष कणकनि बिज्जुहरा ॥
कीरति वाकी बरोबरि को करि ऐसे नये पिय कौन धरा ।
गारद बुर्दंदिलम् हमदोश अजब शुद मस्तम कुश्तपरा ॥ १ ॥

१०४. कबीर कवि

एक दो होइ तो मैं समझाऊँ जग से कहा बसाइ ।
समुझि कबीर रहै घट भीतर को बकि मरै बलाइ ॥१॥
पारस साढ़े तीनि हैं, दीपक भृङ्गी[1] साध ।
आधेः पारस पारखी, कहत कबीर बिसाध ॥२॥
पथरी भीतर अगिनि है, बाँटै पीसै कोइ ।
लाख जतन करि काढ़बी, आगि न परगट होइ ॥ ३ ॥
है है तौ सब कोउ कहै, नाहीं कहै न कोइ ।
कबिरा ऐसा ना मिला, यह बैठा है सोइ ॥ ४ ॥
है जु कहौं तौ नाहिं है, नाहीं कहौं तौ है ।
है नाहीं के बीच में, जो कुछ है सो है ॥ ५ ॥
लखत लखत जब लखि रहै, छकत छकत छकि जाइ ।
ब्रह्म टटोवै आपने, आनँद उर न समाइ ॥ ६ ॥

---

१ यह एक कीड़ा होता है, जो एक दूसरे कीड़े को पकड़ कर अपने घर ले जाता है । दूसरा कीड़ा इसके आगे कुछ देर तक रह कर भयकी तन्मयता से तद्रूप हो जाता है ।

आप छके नयना छके, छके अधर मुसकाइ।
छकी दृष्टि जा पर परै, रोम रोम छकि जाइ ॥ ७ ॥

१०५. किंकरगोविंद कवि

सरि जात संचित असंचित बिसरि जात करि जात भोग भव बंधन कतरि जात। तरि जात कामसरि बरि जात कोप करि कर्म कलिकाल तीनि कंटक भभरि जात ॥ भरि जात भागि भाल किंकरगोबिंद त्योंहीं ज्योंहीं तुलसी की कबिताई पै नजरि जात। जरि जात दंभ दोष दुखन दरारि जात दुरि जात दरिद दुकाल हू निसरि जात ॥ १ ॥ किंकरगोबिंद कलिकाल करतब देखो दीछित परीछित से ईछित छरत है। गो कोरे ज्ञानिन मुख तोरे बकध्यानिन के दानिन कछू ना अघहानिन करत है ॥ हँसै दिविनां[1]-यकन डसै भुवि सायकन कसै मुनिनायकन डाटति फिरत है। छाँड़ि हरिपायकन रामगुनगायकन तुलसी के बायकन बाँचत डरत है ॥ २ ॥

१०६. कलीराम कवि

स्वामी सुनि श्यामहृद आवैगी दया न करि तीनों लोक जाके उर माया एक छन की। ताहि छाँड़ि चोरी कै चबैना तुम चाबि गये क्यों न होइ दारिद तुम्हैं सु एक कन की ॥ वै तौ गुन-औगुन न मानैं कछु कलीराम धाय करैं लाज ब्रजराज लाज जन की। जौ लौं चित चिंता हती तौ लौं देखि दुख पायो चेति चित चिंतामनि चिंता जाइ मन की ॥ १ ॥

बहर बहर आछी पानी की नहर बीच अतर गुलाल फूल फूले गुललाला के। खोर[2]खोर खंजन चकोर मोर पिक धुनि त्रिबिध सुगंध पौनपुंज अलिमाला के ॥ बीच फुहकारी छुटैं बुंद मुकता री फूल

---

१ इंद्र। २ गली-गली।

फूल मनि मंदिर बनायो धूम साला के । ताहि देखि कलीराम मञ्जुल अधूतसिंह लाइ कै भभूत बैठी पीठि मृगछाला के ॥ २ ॥

१०७. कृष्णदास

पद

कंचन मनि मरकत रस ओपी ।
नंदसुवन के संगम सुख बर अधिक विराजत गोपी ॥
करत विधाता गिरिधर पिय हित सुरतध्वजा सुख रोपी ।
बदनकांति कै सुनि री भामिनि सघन चंद-श्री लोपी[1] ॥
प्राननाथ के चित चोरन को भौंह-भुजंगिनि कोपी ।
कृष्णदास स्वामी बस कीने प्रेमपुंज की चोपी ॥ १ ॥

१०८. केशवदास

पद

भोर भये आये हो ललन नीकी भतियाँ ।
जावक[2] के उर चीन्ह नीलपट प्यारी दीने नयन आलसभीने जागे सब रतियाँ ॥ छुटी ग्रीवा बनदाम नख-छत अभिराम कैसे कै दुरत श्याम डगमगी गतियाँ । केसवदास प्रभु नंदसुवन काहे लजात भलेजू साँवरे-गात जानी सब घतियाँ ॥ १ ॥

१०९. खानखाना नवाब रहीम छाप

(मदनाष्टकग्रन्थे)

कलित ललित माला वा जवाहिर जड़ा था ।
चपल चखनवाला चाँदनी में खड़ा था ॥
कटितट बिच मेला पीत सेला नवेला ।
अलि बन अलबेला यार मेरा अकेला ॥ १ ॥

दोहा—आये राम रहीम कबि, किये जती को भेस ।
जाको जो पत परति है, सो कटती तुव देस ॥ १ ॥

---

१ शोभा । २ महावर ।

जाति हुती सखि गोहन में मनमोहन को बहुतै ललचानो।
नागरि नारि नई ब्रज की उनहूँ नँदलाल को रीझिबो जानो॥
जाति भई फिरि कै चितई तब भाव रहीम यहै उर आनो।
ज्यों कमनैत कमान कसे फिरि तीर सों मारि लै जात निसानो॥१॥

सोरठा—दीपक हिये छपाय, नवलबधू घर लै चली।
करविहीन पछिताय, कुच लखि निज सीसै धुनै॥ १॥
तुरुक गुरुक भरपूर, डूबि डूबि सुरगुरु उठै।
चातक जातक दूर, देह दहै बिन देह को॥ २॥

बरवै

लहरत लहर लहरिया लहर बहार।
मोतिन जरी किनरिया बिथुरे बार॥ १॥

दोहा—साधु सराहैं साधुता, जती जोषिता जान।
रहिमन साँचे सूर को, बैरी करै बखान॥ १॥
नैन सलोने अधर मधु, कहि रहीम घटि कौन।
मीठो चहिये लौन पै, मीठे हू पै लौन॥ २॥
रहिमन ओछ प्रसंग ते, नित प्रति लाभ बिकार।
नीर चुरावत संपुटी, मार सहत घरियार॥ ३॥
रहिमन पेटे सों कहै, क्यों न भयो तू पीठि।
भूखे मान बिगार ही, भरे बिगारहि दीठि॥ ४॥
अमी पियावै मान बिन, रहिमन मोहिं न सोहाय।
मानसहित मरिबो भलो, बरु बिष देइ बुलाय॥ ५॥
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥ ६॥
बड़े बड़ाई ना तजैं, लघु रहीम इतराय।
राय करौंदा होत है, कटहर होत न राय॥ ७॥

फरजी साह न ह्वै सकै, गति टेढ़ी तासीर।
रहिमन सीधी चाल ते, प्यादो होत वजीर ॥ ८ ॥
करत निपुनई गुन बिना, रहिमन निपुन हजूर।
मानो टेरत बिटप चढ़ि, यहि प्रकार हम कूर ॥ ९ ॥
रहिमन खोटे संग में, साधु बाँचते नाहिं।
नैना धैना करत हैं, उरज उमेठे जाहिं ॥ १० ॥
कहि रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोइ।
बारे[1] उजियारो करै, बढ़े[2] अँधेरो होइ ॥ ११ ॥

११०. खुमान भाट चरखारी के (लक्ष्मणशतक)

हनुमंत की लपेट दै लँगूर की झपेट दल दुष्ट को दपेट चर पेट पेट चाखलान। बजै नख चटाचट्ट दंत होत खटाखट्ट गिरै सैन घटाघट्ट फूटि फूटि पार जान ॥ कपि कूह किलकार खलजूह झिलकार परी पेट पिलकार करैं राकसनिदान। तहँ तेज को कुपार करि कोप बेसुमार बीर लखन कुँवर झुकि झारी किरपान ॥ १ ॥ प्यारो सीता राम को उज्यारो रघुबंस हू को अनियारो जन पैज महारूरो रन को। रघुकुलमंडल प्रचंड बरिबंड भुजदंडन उमंडन सों खंडन खलन को॥ मान कवि रघु के अपच्छ पच्छ लच्छमन अच्छ मन लच्छ मन कृच्छ दीन जनको। सिंहन को सर्भ गर्बवंतन को गर्ब गंजि अर्भ अवधेस को सगर्ब शत्रुहन को ॥ २ ॥ भूप दसरत्थ को नवेलो अलबेलो रन रेलो रूप झेलो दल राकसनिकर को। मान कवि कीरति उमंडी खल खंडी चंडीपति सों घमंडी कुलकंडी दिनकर को॥इन्द्रगज मंजन को भंजन प्रभंजनतनै ताको मनरंजन निरंजन भरन को। रामगुनज्ञाता मनबांछित को दाता हरिदासन को त्राता धन्य भ्राता रघुबर को॥३॥ हरिहय हैबर सो हंस सो हयानन

१ बालने से और बचपन में। २ बुझने से और बढ़ने से।

सो हरिनी हरा सो हिरन्याच्छ हंस हर सो। हिम सो हराचल सो हर सो हरीस्वर सो हृषीकेसहर्म्य सो हरो सो होमधर सो॥ मान कवि हंस कलहंस सो सुजस हरिदासन के हिय सो हली सो हिमकर सो। हीरक सो हार सो हनूमत की हिम्मत सो हरा सो हेरंब सो हिमाचल सो हर सो॥ ४॥ मित्रकुलमंडन महीप रामजू की महा कीरति मही में मढी मानस मृनाल सी। मान कवि मंजुल मनी सी मल्लिका सी मार ता मनिमहीपति सी मीनकेतुपाल सी॥ मालतीलता सी मोतिया सी जुही माधवी सी माधव महोदधि सी मुदित मयंक सी। मघवा-मतंग[1] ऐसी महिषा महीधर सी महादेवमंदिर[2] सी मोतिन की माल सी॥ ५॥

(नायिकाभेद)

कंकन खनक पग नूपुर ठनक कटि किंकिनी झनक घनी घूम घहरात है। अंक की तचक परजंक की मचक लघु लंककी लचक हिये हार हहरात है॥ भनै कवि मान बिपरीत की झलक डुलै बेसरि अलक छबि छूटि छहरात है। सुंदरि के कानन में पान यों तरफरात मानों पंचबान[3] को निसान फहरात है॥ ६॥

छप्पै

ऊख पुच्छ को नाम नाम बिन पत्र बृच्छ को।
जहँ गनती नहिं मिलै भच्छ को करत मच्छ को॥
का विनती की कहत बृद्ध को नाम कहावै।
दृग सिंगार तहँ राखि नाम उज्ज्वल जस गावै॥
भानुमित्र को गनत को मध्य अंक अभिलाषही।
कवि खुमान यहि छप्पका अर्थ सुद्ध नर भाषही॥ १॥

१११. खंडन कवि

(भूषणदासग्रंथे)

दोहा— इहि बिधि रस सिंगार में, सब रस रहे समाइ।

१ इंद्र का हाथी ऐरावत। २ कैलास पर्वत। ३ कामदेव।

जैसे निर्मल ब्रह्म में, माया रूप रमाइ ॥ १ ॥
सुचि पुनि बीर, करुन है, अद्भुत, हासहि जान ।
सु भयानक, बीभत्स है, रौद्र, शांत नव मान ॥ २ ॥

११२. खूबचंद कवि

मान दस लाख दियो दोहा हरिनाथ के पै हरिनाथ कोटि दै कलंक कबि कैहै को । बीरबर दै छ कोटि केशव कबित्तन में शिवराज हाथी दियो भूपन ते पैहै को ॥ छप्पै में छतीस लाख गंगै खानखाना दियो याते दीन दूनौ दान ईदर में ऐहै को । राजा श्रीगंभीरसिंह छंद खूबचन्द के में बिदा में दगा दई न दीन कोऊ देहै को ॥ १ ॥

११३. खानसुलतान कवि

चातक वजीर बीर बकसी समीर धीर पुरवाई महावीर केकिन को मान है । दादुर दरोगा इन्द्रचाप इतमाम घटा जाली बगजाल ठाढ़ो खानसुलतान है ॥ गरजन अरज कदन जिन मनसिज जिन सब जेर किये देस देस आन है । मेघ आमखास जामें दामिनी तखत यह पावस न होइ पंचबान[1] को दिवान है ॥ १ ॥

११४. खेम कवि

पद

बिलुलित कर पल्लव मृदु बेनु । हर्षित हुंकृत आवत धेनु ॥
कोटि मदन द्युति स्याम सरीर । बिपति कलपतरु जमुनातीर॥
दच्छिन चरन चरन पर धरे । बाम अंस भ्रू कुंडल करे ॥
बरुहचंदवन धातु प्रवाल । मनि मुक्ता गुंजाफल माल ॥
देखन चलहु खेम नँदलाल । ललित त्रिभंगी मदन गुपाल॥१॥

११५. खान कवि

माँगत पपीहा मुँह मैली है उरोजन के करिहाँई दूबरो दुखी न

---

१ कामदेव ।

कोऊ जानिये । दंड है जतीन के कुरंग[1] ही के बनबास मोरन की अँखियाँ सु नीके करि मानिये ॥ नाहीं एक नवलतियान मुख देखियत हाहा एक सुरतसमै ही अनुमानिये । पूछि देखे जाहि ताहि प्रेमपुंज चाहि चाहि एते खान रानाजू को राज पहिचानिये॥१॥

११६. खेम कवि (२)

भूषन सेत महा छबि सुन्दर सानि सुबास रची सब सोनै ।
गोरे से अंग गरूर भरी कबि खेम कहै जो गई तहँ गोनै ॥
चंदमुखी कटि खीन खरी दृग मीनहु ते अति चंचल दोनै ।
ऐसी जो आइ कै अंक लगै तो कलंक लगो अरु होउ सो होनै॥१॥

११७. गंगकवि

छप्पै

दलहि चलत हलहलत भूमि थलथल जिमि चलदल[2] ।
पलपल खल खलभलत त्रिकल बाला कर कुल कल ॥
जब पटहध्वनि[3] जुद्ध धुंधु धुद्धव धुद्धव हुव ।
अरर अरर फटि दरकि गिरत धसमसति धुकन ध्रुव ॥
भनि गंग प्रबल महि चलत दल जहँगीरसाह तुव भारतल ।
फुंफुं फनिंद फन फुंकरत सहस गाल उगिलत गरल[4] ॥ १ ॥

कवित्त । मालती सकुंतला सी को है कामकंदला सी हाजिर हजार चारु नटी नौल नागरै । ऐलफैल फिरत खवास खास आसपास चोवन की चहल गुलाबन की गागरै॥ ऐसी मजिलिसि तेरी देखी राजा बीरबर गंग कहै गूँगी ह्वैकै रही है गिरा[5] गरै[6] । महि रह्यो मागधनि गीत रह्यो ग्वालियर गोरा रह्यो गोर ना अगर रह्यो आगरै ॥ २ ॥

दोहा—गंग गोछ मोछा जमुन, गिरा अधर अनुराग ।
खानखानखानान के, कामद बदन प्रयाग॥ ३ ॥

---

१ मृग । २ पीपल । ३ डंके की आवाज़ । ४ विष । ५ वाणी । ६ गलेमें ।

कवित्त । राजे भाजे राज छोड़ि रन छोड़ि रजपूत रौतौ छोड़ि राउत रनाई छोड़ि राना जू । कहै कवि गंग हूल सागर के चहूँ कूल कियो न करै कबूल निज खसमानाजू ॥ पच्छिम पुरतगाल कासमीर अवताल खक्खर को देस बाढ्यो भक्खर भगाना जू । रूम साम लोमसोम वलख बदखसान खैल फैल खुरासान खीझै खानखाना जू ॥ ४ ॥ कश्यप के तरनि[1] तरनि के करन जैसे उदधिके इंदु जैसे भये यों जिजाना के । दसरथ के राम और स्याम के समर जैसे ईस के गनेस औ कमलपत्र आना के ॥ सिंधु के ज्यों सुरतरु पौन के ज्यों हनुमान चंद के ज्यों बुध अनिरुद्ध सिंहबाना के । तैसेई सपूत खान बैरम के खानखाना वैसई तुराबखाँ सपूत खानखाना के ॥ ५ ॥ अधर मधुर से बदन अधिकानी छबि बिधि मानो बिधु कीन्हो रूप को उदधि कै । कान्ह देखि आवत अचानक मुराछि पर्‌यो बदन छपाइ सखियान लीन्हो मधि कै ॥ मारि गई गंग दृग-सर बेधि गिरिधर आधी चितवनि में अधीन कीन्हो अधिकै । बान बधि[2] बधिक बधे[3] को खोज लेत फेरि बधिक-बधू ना खोजि लीन्हो फेरि बधि कै ॥ ६ ॥

लखि पाँयन पायल पाँय लहे पुनि लंक[4] ते दौरि निसंक गयो ।
तब रूप नदी त्रिबली तरि कै करि कै मति साहस पार भयो ॥
कुच दोऊ सुमेरु के बीच में री मन मेरो मुसाफिर लूटि लियो ।
कबि गंग कहैं बटपार[5] मनोज रुमावली ते ठग संग ठयो ॥ ७ ॥
मृगनैनी की पीठि पै बेनी लसै सुख साज सनेह[6] समोइ रही ।
सुचि चीकनी चारु चुभी चित में भरि भौनभरे खुसबोइ रही ॥
कबि गंग जू या उपमा जो कियो लखि सूरत ता श्रुति गोइ रही ।
मनो कंचन के कदलीदल पै अति साँवरी साँपिन सोइ रही ॥ ८ ॥

---

१ सूर्य । २ मार कर । ३ मारे हुए को । ४ कमर । ५ लुटेरा । ६ तेल ।

चकई बिछुरि मिली तू न मिली पीतम सों गंग कबि कहै एतो कियो मान ठान री। अथये नखत ससि अथई न तेरी रिस तू न परसन परसन भयो भान री॥ तू न खोलो मुख खोलो कंज औ गुलाब मुख चली सीरी वायु तू न चली भो बिहान री। राति सब घटी नाहीं करनी ना घटी तेरी दीपक मलीन ना मलीन तेरो मान री॥ ६॥

११८. गंगाप्रसाद ब्राह्मण सपौलीवाले

बैरी मुरी भटको लिय तू तेहि का कहि गंगहि बारि मिस्यावौं।
कामरखी है अनारपना सुमरू सफरे लहि यादि बतावौं॥
हालिम सागो चहै हरियार ही केलिचरी सोसुखीरहि ध्यावौं।
कायथ कागदी आबिल बेत हैं लै धनियाँ तो पिआजु लै आवौं॥१॥

११९. गंगाधर कवि

कंचनखचित भूमि पन्नन प्रकास चारु राजित अनूप ओप देखिये प्रभा भरै। भानुकुलकमल दिनेस सम सेस राम निमिबंस-कैरव सु सोम से सुधा भरै॥ गंगाधर जुगल किसोर बर आसन पै तेज के मरीचिन[1] के बोयम परा परै। रूप के सड़ाका मुखचंद्र से जलूस जाति छूटि कै छपाकर के ऊपर छरा परै॥ १॥

१२०. गदाधर भट्ट श्रीपद्माकर जू के पौत्र

राधिका के चरन बिराजैं चारु मानिक से भूँगा की फली सी भली आँगुरी सुभापैं हैं। गदाधर कहै करीकर[2] से जुगुल जानु छीन कटि केसरी सो बेस अभिलाषैं हैं॥ पान सो उदर[3] हेमकुंभ से उरोज बर बाहु-लतिका सी खाँसी कामतरुसाखैं हैं। इंदु सो बदन कुरुबिंद से अधर लाल कुंद से रदन[4] अरबिंद सम आँखैं हैं॥१॥

जौलौं जह्नुकन्यका कलानिधि कलानिकर जटिल जटान बिच भाल छबि छंद पै। गदाधर कहै जौ लौं अश्विनीकुमार

१ किरण। २ हाथी की सूँड़। ३ पेट। ४ दाँत।

हनुमान नित गावैं राम सुजस अनंद पै ॥ जौलौं अलकेस बेस महिपा सुरेस सुरसरितासमेत सुर भूतल फनिंद पै । बिजै नृपनंद श्रीभवानी सिंह भूपमनि बखत बलंद तौलौं राजौ मसनंद पै ॥ २ ॥ सारो नाम कुलटा कलंकिनी पुकारि ब्रज चाहौ लोक कुलकानि साँच बीच गारो ना । गारो ना सनेह होत सिकता[1] करोरि बिधि बिधि को बिधान हेरो मेरो कुछ चारो[2] ना ॥ चारो ना चरत घास केहरी उपास परे धरनि गदाधर सों नीकी नेक टारो ना । टारो नात नेही देह गेह को सनेह टूटै छूटै लोग सारो पै अहीर वा बिसारो ना ॥ ३ ॥

१२१. गिरिधारी ब्राह्मण सातनपुर बैसवारे के (१)

जमुना नहात हरि लीन्हो हरि गोपिन के चारु रंग रंग वारे चीर रूपरासी है । कहै गिरिधारी एकै धानी धूरधानी एकै आसमानी कुसुमानी कासनी प्रकासी है ॥ केसरिया काकरेजी कंजई सुनौले एकै चंपई बसंती एकै बैंजनी बिभासी है । एकै गुलेनार गुल-नारँगी गुलाबी एकै गहव अबीरी आब वासी औ गुलासी है ॥ १ ॥ न्यारी होहु नीर ते तौ देहिं चीर ऐसी सुनि न्यारी भई नीरहू ते तीर में कढे कढे । कहै गिरिधारी देत कस[3] न बसन स्याम रसना पिरानी हाहा बिनती पढे पढे ॥ मीत जो मही के बीच नीच करि पावती तौ कौतुक[4] दिखावती बिनोदन बढे बढे । छीनि लेती अंबर पितंबर समेत अब कहौ कान्ह बातैं जू कदंब पै चढे चढे ॥ २ ॥ कदम की डाली चढ़ि कूद्यौ बनमाली कोपि काली-दह भीतर बियोग बीज ब्वै गयो । कहै गिरिधारी धाये नगर के नारी नर भई भीर भारी नीर नैनन ते च्वै गयो ॥ नंद नंदरानी अररानी परैं पानी बीच ओकैओक[5] अरर ससोर बिप ह्वै गयो । जमुना समान्यो आजु ब्रज को सतून[6] हाय जसुमतिसून बिन

---

१ बालू । २ वश । ३ कैसे नहीं । ४ तमाशा । ५ घर घर । ६ स्तंभ ।

सून जग कै गयो ॥ ३ ॥ कुंजन में बाँसुरी बजाई नँदनंदन जू धुनि सुनि सबके हिये को होस हरि गो। कहै गिरिधारी कुलनारिन की भीर भई निपट अधीर पै न धीर नेक करि गो ॥ बिकसी कली सी चलि निकसी निकेतन ते नहीं व्रत नेम को विचार कछू करि गो। लाज को रिसाला तजि दौरीं ब्रजबाला सब आजु कुलमाला को दिवाला सो निकरि गो ॥ ४ ॥ भयो पतिभार पतिभार में उघरि गयो हुतो जौन केलिकुंज कालिंदी किनारा मैं। कहै गिरिधारी सो बिलोकतै बिहाल भई बाल थहरानी मुकताहल ज्यों थारा मैं ॥ छीटदार कंचुकी कलित कुचकोरन में सुखमा बढ़ी यों ताकी उपमा बिचारा मैं। डारे मेघडंबर बघंबर अनूप मानो शंभु के सरूप द्वै अन्हात छिन्न धारा मैं ॥ ५ ॥

१२२. गिरिधारी कवि (२)

बेदन के थाल्हा बीच उपज्यो है पौधा एक वारा हैं सु डारै जाकी ओंकार जर है। तीनि सै पैंतीस साखा दसहू दिसा में फैलीं ज्ञान औ बिराग तोप खगन को घर है ॥ पात जे अठारह हजार छबि छाइ रहे जाकी छाँह बैठि यमदूत को न डर है। एहो बनमाली गिरिधारी कहैं बारबार भागवतरूपी सो कलपतरुवर है ॥ १ ॥

१२३. गिरिधर बंदीजन होलपुर के (१)

दाहिने चरन में बिभूति भूति भूषमान बायें पग जावक जमाति काँति सों भरी। आधे अंग अंबर बघंबर बिराजमान आधे अंग सारी जरतारी छबि सों जरी ॥ आधे गरे ब्याल आधे हीरन के माल लसैं आधे भाल चन्द्रमा औ आधे टीका केसरी। गिरिजा गिरीस यह रूप गिरिधर भनै मो पर महेस जू महेस्वरी कृपा करी ॥ १ ॥

---

१ खिली हुई। २ घर।

१२४. गिरिधर कबिराय (२)
(कुण्डलिया)

प्रान पुत्र दोनों बड़े चारौ जुग परमान।
सो दसरथ दोनों तजे बचन न दीन्हे जान॥
बचन न दीन्हे जान बड़ेन की यही बड़ाई।
बचन रहे सो काज और सरबस किन जाई॥
कहि गिरिधर कबिराय भये दसरथ नृप ऐसे।
प्रान पुत्र परिहरे बचन परिहरे न तैसे॥ १॥
रही न रानी केकई अमर भई यह बात।
काहू पूरब जोगते बन पठये जगतात॥
बन पठये जगतात पिता परलोक सिधारे।
जेहि हित सुत के काज फेरि नहिं बदन निहारे॥
कहि गिरिधर कबिराय लोक में चली कहानी।
अपकीरति रहिगई केकयी रही न रानी॥ २॥
भाषा भूसा छोड़िकै सरी संसकृत डारि।
सब जड़ तू चेतन सदा ब्रह्म यहै उर धारि॥
ब्रह्म यहै उर धारि छाँड़ि सबही सिर दर की।
पर को किस्सा छाँड़ि खबरि ले अपने घर की॥
कहि गिरिधर कबिराय समुझि बेदन की आशा।
सब कलपित तुम माहिं देवबानी नर-भाषा॥ ३॥
नायक अपनी नायका जनम पाइ देखी न।
रूप कुरूप लख्यो नहीं सेज परसपर लीन॥
सेज परसपर लीन इते पर नायक रूठ्यो।
प्यारी लियो मनाइ लिख्यो मजकूर अनूठ्यो॥
कहि गिरिधर कबिराय हुते दोऊ सम लायक।
यह नहिं जानी जाइ कौन बिधि रूठ्यो नायक॥ ४॥

१२५. गदाधर कवि (२)

ध्रुव की घरनि जैसी जैसी कीन्ही पहलाद तैसी करै कौन तहाँ बुद्धि हू धसाई कै। तारी मुनिनारी पतिरूप जो बिगारी सक्र गीध उपकारी तर्‍यो रावनै खँसाई कै॥ तारिबो गदाधर तिहारो तहाँ जेते नाहीं तेते तरे निज पुन्य रावरी रसाइ कै। मोहूँ अबै भाई भाई आपु की दसाई देखि पुरुप दसाई तारे सधन कसाई कै॥ १॥

१२६. गिरिधर बनारसी अर्थात् श्रीमहाधनाधीश बाबू गोपालचंद शाहूकाले हर्षचंद्र के पुत्र श्रीबाबू हरिश्चन्द्र जू के पिता (३)

सोरह कला को चन्द पूरन मुखारबिन्द सोरहू सिंगार किये सोरह बरस की। आभरन बारा सजी कनकबनक बारा बारहौ चरन चुभे चोप कंजरस की॥ आठौ चौक दन्तन के आठौ अंग हार हीरा आठहू बरांगना ते बिधना सरस की। चारि खग चारि मृग चारि फल फूल चारि चारि भुज आरत निकाई या दरस की॥ १॥ रजोगुन रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद उमंग वारी स्वच्छ छवि छाकी है। सौतिगुन भंगवारी सखी सतरंगवारी नवल तरंगवारी अंगवारी ताकी है॥ गिरिधर कहै सोहै संपुट सरोजवारी वसीकर मंत्रवारी यंत्रवारी बाँकी है। पिय-मन-बेड़ी अच्छ लच्छननिबेड़ी वेस उपमा न छेड़ी राजै एड़ी राधिका की है॥ २॥ मानो अधगुंजेका[1] से चंचुक चकोर चखे[2] चाबुक चमक चीज बिद्रुम तमाल के। चेटक के चिह्न कैधौं नाटक के सुन्न कैधौं हाटक के हुन्न देस दच्छिन के चाल के॥ जटित जराय मधि नायक अमोल मोल गोल गोल मोती मानो मनि हेमपाल के। आँगुरी अनी की नीकी कनककनी की कैधौं कामिनी के नख कै

---

१ घुँघची आधी। २ नेत्र।

नगीना काम लाल के ॥ ३ ॥ कंचन के पल्लव में छोभ के वठीक मानो लिख्यो है उचाटमंत्र[1] विधिमोह सो भयो । सुधा को स्रवत मनिमानिक लसत सोहैं आँगुरी किरन ज्यों प्रभाकर उदै भयो ॥ मेहँदी रचित नख कैधौं मैन पंच बान खरसान धरे सोनो पानी तिनको दयो । आँचर के ओट ते अचानक ही डीठि पस्यो तेरो हाथ देखे मन मेरो हाथ ते गयो ॥ ४ ॥ कंज की कली सी उपमान हूँ भली के सोहैं सुखमाथली के लखि सौतिमति छरकी । कोकजुग[2] नीके पी के ही के मोहिबे को करी हेमकुम्भ काम करतूति निज कर की ॥ गिरिधर कहै कुच नीके कामिनी के इभि ता पै मुकतान माल छाजै छबि बर की । मानो सम्भु-सीस ते भगीरथ के साथ काज निकसी अपार जुग धार सुरसरि[3] की ॥ ५ ॥ आजु अलबेली अलबेले संग रंगधाम रति बिपरीत पूरी प्रीति सों करति है । उझकि उझकि झुकि झुकि लचकीली लंक[4] अतिही असंक[5] अंक[6] प्यारे को भरति है ॥ गिरिधरदास उभै[7] उरज उतंग सोहैं उपमा कहत बानी लाजहि धरति है । मानो दुइ तुंब राखि छाती के तरे तरुनि सुरत समुद्र बेप्रयास हि तरति है ॥ ६ ॥

(भारतीभूषण—अलंकारग्रन्थे)

दोहा—मोहन मन मानी सदा, बानी को करि ध्यान ।
अलंकार बर्नन करत, गिरिधरदास सुजान ॥ १ ॥
सुन्दर बरनन गन रचित, भारति-भूषन एहु ।
पढ़हु गुनहु सीखहु सुनहु, सतकबि सहित सनेहु ॥ २ ॥

१२७. गोपाल कवि प्राचीन

केहरी कल्यान मित्र जीत जू के तेरे डर सुत तजि पति तजि बैरिनी बिहाल हैं । कटि लचकति मचकति कचभारन सों गिरे

---

१ उच्चाटन के मंत्र । २ चकई-चकवा । ३ गंगा । ४ कमर । ५ बेधड़क । ६ गोद । ७ दोनों ।

बेसुमार जहाँ सघन तमाल हैं ॥ सुकबि गोपाल तहाँ खगन[1] सतायो आनि गहगहे नैन डारैं अँसुवा बिहाल हैं। मोर खैंचैं बेनी सीस-फूलन चकोर खैंचैं मुक्कन की माल गहे खैंचत मराल हैं ॥ १ ॥

१२८. गुमानजी मिश्र साँड़ी के निवासी (१)

(काव्यकलानिधि अर्थात् भाषा नैषध)

दोहा—संयुत प्रकृति पुरान सैं, सम्बत् सर निरदम्भ।
सुरगुरुसह सित सप्तमी, कर्‍यो ग्रंथ आरम्भ ॥ १ ॥

छप्पै

गान सरस अलि करत परस मुद मोद रंग रचि।
उघ्घत ताल रसाल करन चल चाल चोप सचि ॥
चिन्तामनिमय जटित हेम भूषन गन बज्जत।
चलत लोल[2] गति मृदुल अंग नव तांडव सज्जत ॥
लखि प्रनति समय मुख तात को बिहँसि मातु लिय लाय उर।
जयजय मतंगआनन[3] अमल जय जय जय तिहुँलोकगुर ॥ १ ॥

कबित्त। धरधर हालै धराधर धुधकारन सों धीर न धरत जे धरैया बलबाह के। फूटत पताल ताल सागर सुखात सात जात हैं उड़ात ब्योमैं[4] बिहँग बलाह के ॥ झालरि रुकत झलकत झपी फीलनि पै अली अकबरखाँ के सुभट सराह के। अरिउर रोर सोर परत सँसार घोर बाजत नगारे हैं बरौरनरनाह के ॥ १ ॥

छप्पै

धर्मधुरंधर धीर बीर कलिकालबिहंडन।
तपत तेज बरिबंड साधुगनमंडल-मंडन ॥
पुन्यस्लोक पवित्र चित्रमति मित्रमोहतम।
रूपमनोहर रासि बेद परकासित हरिसम ॥

---

१ पक्षियों ने। २ चंचल। ३ गजानन गणेश। ४ आकाश।

नृपबीर सेन नंदन नवल सोमबंस सब गुन सच्यो।
छिति भाग प्रजा के पुन्यफल नल राजा करता रच्यो ॥ २ ॥

संगर धरावैं जाके रंग सों सुभट निज चातुरी तुरी सौं जसपटानि बुनतु हैं। करि करि बालबेम कोरि कोरि जोरिजोरि चंद ते बिसद जाके गुननि गुनतु हैं ॥ अमल अमोल ओल डोल झलझल होत कबहुँ घटै न जन देवता सुनतु हैं। आठौ दिसि रानी राजधानी के सिंगारिबे को आठै दिगराज जानि चीरानि चुनतु हैं ॥ ३ ॥

तोटक

कबितानि सुमेरुन बाँटि दियो।
जलदानन सिंधुन सोकि लियो ॥
दुहुँओर बँधी जुलफैं सुभली।
नृप मानत औ जस की अवली ॥ ४ ॥

आसवसार[1] सुधाधर मंडल है मद कोमल वा छबि छायो।
देववधू[2] तिहि पीवत छीव छकै सब जीव करै चितु लायो ॥
छूटत सौरभ सोभसने तिहि लोपत तारन बीच बसायो।
प्यालो लग्यो मनि नीलम को उर अंक कलंक न रंक बतायो ॥५॥

१२६. गोविन्द कवि

(कर्णाभरण)

दोहा—लहत मोद मकरंद जहँ, मुनिमन मिलित मिलिंद[3]।
वाही मूरति मंजु के, बंदौं पद अरबिंद ॥ १ ॥
कीन्हो सुकवि गुबिंदजू, कर्नाभरन बिचारि।
साँचो कर्नाभरन कबि, करहिं कृपा उर धारि ॥ २ ॥
(७) (९) (७) (१)
नग निधि ऋषि बिधु बरस मैं, सावन सित तिथि संभु[4]।
कीन्हो सुकबि गुबिंदजू, कर्नाभरन अरंभु ॥ ३ ॥

---

१ श्रेष्ठ अमृत। २ अप्सरा। ३ भ्रमर। ४ चौदस।

१३०. गुनदेव कवि

बैठे चटसार में कुमार हैं हजार जहाँ बेदन को भेद भाँति भाँतिन को रढ़िबो। कहै गुनदेव कोऊ लिखत ललित अंक कोऊ करै बाद कोऊ बैन गुन गढ़िबो॥ तहाँ हरनाकुस को पुत्र मतिधीर जाके दूजो और आखर सपथ मुख कढ़िबो। निरखि असार सब सार सुख जानि एक राममंत्र सार प्रहलाद सीखो पढ़िबो॥ १॥

१३१. गुमान कवि (२)

(कृष्णचन्द्रिका ग्रन्थे)

खग मोहे मृग मोहे नग मोहे नाग मोहे पन्नग पताल मोहे धुनि सुनि जासु[1] री। सुर मोहे नर मोहे सुरनसुरेस मोहे मोहि रहे सुनि कै असुर अरु आसुरी[2]॥ भनत गुमान कहौं मोहिबे की कहा बानि चर औ अचर मोहे उमँगि हुलासु री। गोपिन के बृन्द मोहे आनँद मुनिंद मोहे चंद मोहे चंद के कुरंग मोहे बाँसुरी॥ १॥ झुकि रहो मुकुट रही है झूमि मोतीमाल चूमि रहे कान्ह नैननोक अनियारे री। कलित कपोल छबि है रहे रदन[3] चारु चै रही अधर अरुनाई अनियारे री॥ भनत गुमान नव बीना छहराइ रही कंध फहराइ रहे छोर पट न्यारे री। हेरि रहे मो तन गुबिंद धेनु फेरि रहे कूलनि कलिंदजा[4] कदंब तरे प्यारे री॥ २॥

१३२. गंगाधर कवि (२)

(उपसतसैया)

मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परे स्याम हरित द्युति होइ॥
स्याम हरित द्युति होइ हरत हिय हेरनहारहि।
याही ते सब हरे हरे कहि नाम उचारहि॥

---

१ जिसकी। २ असुरों की स्त्री। ३ दाँत। ४ यमुना।

जिहि झाँईं ते लह्यो हरन गुन हरि सो राधा।
नागर नेक निहारि हरो मेरी भवबाधा ॥ १ ॥
तीरथ तजि हरि राधिका तन द्युति करि अनुराग।
जिहि ब्रज-केलिन कुंज-मग पम पग होत प्रयाग ॥
पग पग होत प्रयाग सितासित जावक[१] लागे।
गंगा जमुना सरस्वती लज्जित तिन आगे ॥
रस अनुराग सिंगार प्रेम के बरन चरन भजि।
ब्रज निकुंजमग लोटि पर्‍यो रज सब तीरथ तजि ॥ २ ॥
तजि तीरथ सब वेदपथ, जुगल चरन-अनुराग।
गंगाधर श्रुति घर लुटत, तिन्ह रज होत सभाग ॥ १ ॥
कर मुरली बनमाल उर, सीस चंद्रिका मोर।
या छबि सों मो मन बसौ, निसिदिन नंदकिसोर ॥ २ ॥

१३३. गुलाल कबि

कोह महकार लोहकार संसिका है कैधौं गंसिका है बिषम बिहंगमइराज की। कारीगर काम की कुदा[२]लिका नबीन कैधौं पालिका प्रवीन सरनागतसमाज की ॥ कहत गुलाल स्वच्छ धारिनी सुधा की मति-हारिनी सुनी है सुनासीरग[३]जराज की। लोहअहिचुंब को प्रसारन प्रकुंच बंदौं देवदुखमुंच उंच बुंच खँगराज की ॥ १ ॥ फुरुहुरु फूलन में फहर फहर होत लहर लहर होत हिये सुरराज के। सहज उठान पव[५]मान की झकोरै जोरै तोरै तरु फोरै गिरिदरन दराज के ॥ कहत गुलाल दीह दिग्गज दपेटे परे बखर खखेटै हैं खेरटे दिनराज के। करत अपच्छ प्रतिपच्छिन तत[६]च्छ प्रभु-पच्छी के सपच्छ बंदौं पच्छ पच्छिराज के ॥ २ ॥ कैसी आलि राजै अलिअवलि अवाजै आजु सुमन सुमन राजै छिन छिन छूकै ये। कहत गुलाल औ‌र सालन

१ महावर। २ कुदार। ३ ऐरावत। ४ गरुड़। ५ हवा। ६ तात्क्षण।

पै सुकजाल बोलत बिसाल ते न भोगत मरूकै ये। धीर को धराती छाती कौन अबला की अब कोक के कला की कोकिला की सुनि कूकै ये। जलथलगंजन सरसरसभंजन सु मान की प्रभंजन[1] प्रभंजन[2] की झूकै ये ॥३॥ गौन इद होन लागे सुखद सुभौन लागे पौन लागे बिषद बियोगिन के हियरान। सुभग सवादिले सु भोजन लगन लागे जगन मनोज लागे जोगिन के जियरान ॥ कहत गुलाल बन फूलन पलास लागे सकल बिलासन के समय सु नियरान। मान लागे मिटन अमान दिन आन लागे भान[3] लागे तपन सु पान लागे पियरान ॥ ४ ॥

१३४. गोपाल कायस्थ रीवाँवाले (१)
(गोपालपच्चीसी ग्रन्थे)

तूरत फूल कलीन नबीन गिरो मुँदरी को कहूँ नग मेरो।
संग की हारीं हेराइ गोपाल गईं अलसाइ डेराइ अँधेरो ॥
साँसति सासु की जाइ सकौं न अहो छिन एक न गैयन फेरो।
कुंजबिहारी तिहारी थली यह जात उज्यारी दया करि हेरो ॥ १ ॥

१३५. गोपाल कवि चरखारी के (२)

छप्पै ॥

प्रथम पढ़िव हरिचंद भूप छतसाल निवासह।
बिय पढ़िव पहलाद भूप जग तेल सुबासह ॥
गुन पढ़ि दानी राम भूप की कीर्ति सुहाई।
नृप खुमान ढिग भानदास बहु काव्य सुनाई ॥
बिक्रम महीप कबि मान पढ़ि सुजस साखिसाखिन बढ़े।
करुनानिधान रतनेस ढिग कबि गोपाल नितप्रति पढ़े ॥ १ ॥

---

१ तोड़नेवाली। २ वायु। ३ भानु = सूर्य। ४ ढूँढ़नेवाला।

१३६. गोपाललालकवि (३)

प्रेम की दुकान में बिचारि मैं न पैठियतु काम की दुकान सों सयान सब हारा है । क्रोध कोतवाल जिन प्यादे को पकरि पाया दाया को दिवान जिन माया फाँस डारा है ॥ मोह के गुमासता जे मिले भले आदर सों मोह छबि गाहक जो बाँचि कै बिचारा है । ऐसे ऐसे बानिज को लादि है गोपाललाल कंचन सहर परपंचन बिगारा है ॥ १ ॥

१३७. गोप कवि

गनंन के आगे पग गुन देखि भाषत हौ जैसे होत कूच के नगाड़े की उघट मैं । बीरी बीच सीरी तेहि रावरे न जानत हौ जानत हौ सोड़ी तुम जोड़ी होत नट मैं ॥ एते पर राधिका की मा को नाम चाहत हौ देखौ नाहीं सुनौ कहूँ अघट उघट मैं । गोप चतुराई की जनावत हौ गूढ़ बात मजनू की रट मैं सु साहब के घट मैं ॥ १ ॥

१३८. ग्वालराय कवि मथुरा निवासी (१)

जाकी खूब खूबी खूब खूबन मैं खूबी खूब ताकी खूब खूबी खूबखूबी अवगाहना । जाकी बदजाती बदजाती इहाँ पंचन मैं ताकी बदजाती बदजाती हाँ उराहना ॥ ग्वाल कबि ये ही परसिद्ध सिद्ध रहैं पर सिद्ध वहै जाकी इहाँ उहाँ की सराहना । जाकी इहाँ चाहना है ताकी उहाँ चाहना है जाकी इहाँ चाह ना है ताकी उहाँ चाह ना ॥ १ ॥ सोहत सजीले सिते[2] असिते[3] सुरंग अंग जीन सुचि अंजन अनूप रुचि हेरे हैं । सील-भरे लसत असील गुन साज दै कै लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं ॥ घूँघुट फरस ताने फिरत फबित फूले लोक कबि ग्वाल अवलोकि भये चेरे हैं । मोरवारे मन के त्यों पन के मरोरवारे त्योरवारे तरुनी तुरंगे[4] दृग तेरे

---

१ गण । २ श्वेत । ३ श्याम । ४ घोड़ा ।

हैं ॥ २ ॥ सोभित सँवारे हैं सनेह सुखमा समूह सुख सर सीले सरसीले सीले थोकदार । चंचल चलाँक चारु चोयन चटक भरे चहँकैं चमकैं चलैं सलज सरोकदार ॥ ग्वाल कबि मधुप मतंग से मजेजन में मैन मतवारे मृग मीनन के सोकदार । नूरभरे नमितें नमूदन न मूद नोने नागरि नवेली के नसीले नैन नोकदार ॥ ३ ॥ फूली कुंज क्यारिन मैं मालती मयंक लसी पानि में लिये ते दुति चंपकनि लीनी क्यों । संग की सहेलिन की कटि जो निहारि देखौ मेरी दिनरात होतजात कटि छीनी क्यों ॥ ग्वाल कबि चुंबक अचानक दबाय हार माल को मिलाय पै सुबास रस भीनी क्यों । देखि नथुनी में रज राजत दुनी में बीर मेरी नथुनी में चुनी तीनि पोहि दीनी क्यों ॥ ४ ॥

(यमुनालहरी)

दोहा—संबत निधि[1] ऋषि सिद्धि[2] ससि, कार्तिकमास सुजान ।
पूरनमासी परमप्रिय, राधा हरि को ध्यान ॥ १ ॥

कबित्त। आनभरी अधिक कृसानभरी पापिन को दानभरी दीरघ प्रमान मान कमु ना । तेजभरी मंजुल मजेजभरी रीझभरी खीझभरी दूतन को दाहै दौरि समुना ॥ ग्वाल कबि सुखद प्रतीतिभरी रीतिभरी परम पुनीतभरी मीतभरी भ्रमु ना । जंगभरी जमते उमंगभरी तारिबे को रंगभरी तरल तरंग तेरी जमुना ॥ १ ॥

दोहा—बासी बृंदा बिपिन के, श्रीमथुरा सुख बास ।
श्रीजगदंब दई हमैं, कबिता बिमल बिकास ॥ १ ॥
बिदित बिप्र बंदी बिसद, बरने ब्यास पुरान ।
ता कुल सेवाराम को, सुत कबि ग्वाल सुजान ॥ २ ॥

कबित्त। भूरिकै[3] भुराई हिय भौन में भरत तऊ भूलत न भामिनि

---

१ शोक देनेवाले । २ झुकेहुए । ३ बहुत ।

भुलाई सुधि पान की। काम ने करेजा रेजा रेजा किये काटि काटि कासों कहौं बेदन बिकलताई प्रान की॥ ग्वाल कबि पीरके न कोऊ अपनो है बीर धीरज धरौं मैं बिधि कौन कबितान की। हाइ परदा में चुरियान की खनक तैसी छनक छलान की झनक बिं-छियान की॥ १॥ कारचोब कीमति के परदा चमकदार चहुँधा लुनाई फैलि रही ज्योति ज्वाला मैं। फरस गलीचन के बीच मसनंद तापै मखमली गादी गोल गुलगुली गाला मैं॥ ग्वाल-कबि आला सेजबंद सेज सुंदर पै आला में मसाला धरे गरम रसाला मैं। चिपटि लला ते चित्रसाला में सु बाला आजु सौतिन दुसाला दिये लपटि दुसाला मैं॥ २॥

१३९. गुनसिंधु कवि

जमुना समीर तीर भरै गई नीर बीर मीन मन मोद मोहि दपटि दपेटि जात। फैले हैं सुकेस आसपास ते सुबेस लखि बिरही भु-जंग जानि आनि आनि मेटि जात॥ भनै गुनसिंधु राजै कंजन स-रोज भरे सहसा समेटि माँझधार गरगेटि जात। जहाँ जहाँ कंज रहैं दिन को प्रकास भरे मेरो मुखचंद जानि संपुटी समेटि जात॥ १॥

१४०. गोसाँई कवि

दोहा—सींग बड़ो डाँड़ो बड़ो, खर चरि रहे मोटाय।
गोसाँई घूरा खनै, राँभत राख उड़ाय॥ १॥
गोसाँई गहि जोतिये, नाकनि मोटी नाथ।
आगे पगही खैंचिये, पाछे पैनी हाथ॥ २॥

१४१. गणेश कवीश्वर बनारसी

चंद सम फैलो तेज प्रबल प्रचंड देखि दंड दै अरिंदैबृंद खंड खंड धावते। थाप उमराय देस देस के झराप आवैं ताप की त-राप ड्योढी नाँघन न पावते॥ भनत गनेस केते अदब दबे से

१ हमदर्द। २ बहुमूल्य। ३ बंद होजाते हैं। ४ शत्रुओं के समूह।

ठाढ़े उदितनरायन की नजरि न पावते। भूप औ उजीरन के कहे को इरादे ज्यादे जहाँ साहिजादे पाँय प्यादे चले आवते ॥ १ ॥ ऊँचे भूरि कद के समूचे बिन्दुहद के थट्टावत समुद्र के समुद्र के नहर के। तोरैं तरिवर के बिथोरैं गिरिवर के न जोरैं परवर के समर के सबर के ॥ भनत गनेस कासि केस के गजेस बेस खैंचैं दिनकर के सु कर के निकर के। काँपैं थरथर के न थिर के रहत थाके कुंजर कुतर के कुतर के कुतर के ॥ २ ॥ नाभी सर बीच मन बूड़त अनंद होत ऊबत न नेक यों उदोत कर खूबी है। त्रोनें पलै[3] भौंह नैन बान जे सुजान मारै देखी बिन चैन है न चित गति ऊबी है ॥ भनत गनेस ब्याज आइ कै उरोज ईस कंठ स्याम-ताई सीस पाई हूबहूबी है। बदन तरीफ बैन कहतै न हद होत प्यारी के बदन बीच एतनी अजूबी है ॥ ३ ॥ सीसा के महल बीच कहल हिमाचल की पहल तुलाई बर्फ चहल कसाला में। चंदन सो लागत कुरंगसार अंगन में अगिनि अँगीठी जिमि बारि हौज-साला में ॥ राजत गलीचा ऊन सीतल सेवारतूल[5] दीपक नछत्र से गनेस रतिथाला में। बाला उर बीच सीत माला सी जुड़ाति जाति पाला सम लागत दुसाला सीतकाला में ॥ ४ ॥ छोड़त न पच्छ स्वच्छ लपटीं लता जे बृच्छ छोड़त न पच्छी पच्छ पच्छ पच्छ दोए हैं। छोड़त न नारी नर छोड़त न नारी नर अंग अंग जोरत जुराफा साफ जोए हैं ॥ भनत गनेस कासमीर कासमीरन ते पीरन बितीत सीत भीत सबै भोए हैं। या ते संक मानिकै हेमंत में अनंत अंत प्यारी परजंक लै इकंत कंत सोए हैं ॥ ५ ॥

१४२. गोकुलनाथ कवि बनारसी

(चेतचंद्रिका ग्रन्थे)

बारिज सो मुख मीन से नैन सेवार से बारन की सुखदासी।

---

१ बड़े। २ तरकस। ३ पलक। ४ कस्तूरी। ५ सेवार के तुल्य।

कंबु सो कंठ लसैं कुच कोक से भौंर सी नाभि भरी भ्रम भासी॥
गोकुल धार सी रोमावली लहरी सी लसै त्रिवली छबिरासी।
लाल बिहार करौ रस में वह बाल बनी सुख की सरिता सी॥१॥
जो तन चेत[1] महीप चितै मन बैरिन के धरै धीरज धंधन।
गोकुल साधु रहैं सुख सों खल के कुल भागि बसें गिरिरंधन[2]॥
सेवक फूल भरै अनुकूल भए प्रतिकूल ते कौन से अंधन।
छूटि परैं धनु बीरन के तरुनीन के टूटि परैं कटिबंधन॥२॥

१४३. गोपीनाथ बनारसी

देखि पावती तौ उन्हैं उतही बनाइ नीके दोषहि दुरावती जु देखे दोष धारैगी। पीकलीक लेखति न कहा कहौं एरी बीर सील सील सों मैं है असील रोष धारैगी॥ बिनै बितरे हू कर जोरि गोपीनाथजू के लेखिये न सरस पतीक हिये वारैगी। आली मैं न जानी सुखदानी पिय प्यारे सों सयानी प्रेमसानी सो नदानी है बिगारैगी॥१॥ गुलजार बाग बीच बँगला कनकमई मनिमई खंभ जागै जोति चटकीली सों। मोतिन की झालरैं झलकदार छतिपोस झिलिमिलि झाँप झमै झारि झलकीली सों॥ जटित जवाहिर सों जेबदार परजंक गोपीनाथ रमैं तामैं रमनी रसीली सों। मोद मन दपटे सनेह रस लपटे सो लपटे सुगंध सों सु छपटे छबीली सों॥२॥

१४४. गीध कवि

छप्पै

ससि कलंकि रावन बिरोध हनुमत सो बनचर।
कामधेनु ते पसू जाय चिंतामनि पाथर॥
अतिरूपा तिय बाँझ गुनी को निरधन कहिये।
अति समुद्र सो खार कमल बिष कंटक लहिये॥

---

१ महाराज चेतसिंह। २ पर्वत कंदराओं में।

जाये जु व्यास खेवट्टिनी दुर्वासा आसन डिग्यो।
कबि गीध कहैं सुनु रे गुनी कोउ न कृष्ण निर्मल गढ्यो ॥ १ ॥

१४५. गड्डु कबि

छप्पै

हंसहि गज चढ़ि चल्यो, करी पर सिंह बिरज्जै।
सिंहहि सागर धर्‌यो, सिंधु पर गिरि द्वै सज्जै ॥
गिरिबर पर इक कमल, कमल पर कोयल बोलै।
कोयल पर इक कीर, कीर पर मृग हू डोलै ॥
ता ऊपर सिसु नाग के सुनि सुदिन फनिय धारे रहै।
कबि गडडु कहै गुनिजनन सों सु हंस भार केतो सहै ॥ १ ॥
मरै बैल गरियार[1], मरै वह कट्टर टट्टू।
मरै हठीली नारि, मरै वह पुरुष निखट्टू[2] ॥
सेवक मरै सु तौन, जौन कछु समै न सुज्झै।
स्वामी मरै जु कौन, जौन सेवा नहिं बुज्झै ॥
जजमान सूम मरि जाय तौ काहि सुमिरि दुख रोइये।
कबि गडडु कहै मरि जाय सो, जाहि मुए सुख सोइये ॥ २ ॥

१४६. गुरदीनराय कवि पैंतेपुरवाले

कल गुंजत कुंजन पुंज मलिंद पियैं मकरंद अनंद भरे।
द्रुम बौरत कैलिया कूकै करै बहै सौरभ सीरी समीर हरे ॥
वहि तंत बसंत को भावै नहीं गुरदीन जऊ लसै कंत गरे।
निसिबासर नींद औ भूख हरी मुख पीरी परी दल पीरे परे ॥ १ ॥

१४७. श्रीगुरुगोविंदसिंह शोढ़ी शिष्यमत के कर्त्ता
आनंदपुर पटना निवासी
(ग्रन्थ साहब नाम ग्रन्थ)

छप्पै

चक्र चिन्ह अरु बरन जाति अरु पाँति पाप जेहि।

---

१ मार खाकर भी न चलनेवाला; हरामज़ादा। २ उद्योगधंधा न करनेवाला।

रूप रंग अरु रेखभेष कोउ कहि न सकत कहि ॥
अचलमूर्ति अनुभव प्रकास अमितो कहि सज्जै ।
कोटि इन्द्र इन्द्रानि साह-साहान भनिज्जै ॥
त्रिभुवनमहीप सुर नर असुर नेति नेति बेदन कहत ।
तब सर्ब नाम कथये कवन करम नाम बरनत सुमत ॥ १ ॥

सवैया

स्रावग सुद्ध समूह सिधानक देखि फिस्यो धरि जोग जती के ।
सूर सुरादन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥
सारही देस को देखि रह्यो मत कोउ न देखत प्रानपती के ।
श्रीभगवान की भाय कृपाहु ते एक रती बिन एक रती के ॥ २ ॥
माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सँवारे ।
कोटि तुरंग कुरंगहु सोहत पौन के गौन को जात निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली बिधि नावत सीसन जात बिचारे ।
एते भये तौ कहा भये भूपति अंत को नाँगे ही पाँय सिधारे ॥ ३ ॥

१४८. गुलामराम कवि

सोम जो कहौं तौ कलानिधि को कलंकी सुन्यो कंजसम कहौं कैसे पंक को न नद है । कामपुख सरिस बखानिये जु रामपुख सोऊ न बनत देहरहित मदन है ॥ अमल अनूप आधिव्याधि ते बिहीन सदा बानी के बिलास कोटिकलुषकदन है । बदत गुलामराम एकरस आठौजाम सोभा को सदन रामचंद्र को बदन है ॥ १ ॥
धरा धन धाम बाम[1] सोदर[2] सुहृद सखा सेवक समूह आप पुरुष प्रमाथी है । बाजी[3] बर बारन[4] है बल[5] हू हजारन है गाढ़े गढ़बासी बीर महारथी माथी है ॥ लवा[6] ज्यों अचानक सचानक गहैगो बाज प्रान की परैगी तोहिं लेत हाथी हाथी है । बदत गुलामराम कोऊ तौ न आवै काम राखा जौन हाथी तौन साँकरे को साथी है ॥ २ ॥

---

१ स्त्री । २ सगा भाई । ३ घोड़ा । ४ हाथी । ५ सेना । ६ बटेर ।

१४६. गुलामी कवि

ठारह पुरान चारि बेद मत सास्त्रन को ग्रंथनि सहस्र मत राम जस वै गये। पाप को समूह कोटि कोटिन सिराने धर्मराज समुहान के कपाट द्वार दै गये ॥ भनत गुलामी धन्य तुलसी तिहारी बानी प्रेमसानी भक्ति मुक्ति जीवन सु कै गये। जोगसुख ब्रह्मसुख लोकसुख भोगसुख एते सुख सुकृत गोसाईं[1] लूटि लै गये ॥ १ ॥

१५०. गुरुदत्त कवि प्राचीन (१)

बाजत नगारे बीर गाजत निसान गहे गुरुदत्त तेज को अगारो तेखियतु है। कापै कोप कीन्हो रावसिंहजू को नंद आजु नैंन अरु कान लाल रंग लेखियतु है ॥ सिंह सो समर पैठि सत्रुन की सेना पर राव सिवासिंह बीररूप पेखियतु है। सनमुख आई सो तिरोही की फिरोही रन भेदी जा सिरोही सो गिरो ही देखियतु है ॥ १ ॥ कबहूँ तौ सांख्य औ पतंजलि में ठिठुकत थाँभत मिमांसा की बिसेष बिधिवत की। कबहूँ तौ न्याय गहि द्विबिधै[2] बतावै अरु कबहूँ तौ गावै एक सत्ता ततसत की ॥ कैसे करि पावैं तोहिं ऐसे तुम दुरलभ कही गुरुदत्त याते गति है भनत की। थकि थकि जात व्यास हू की पैनी मति जहाँ उतराति चढ़ति निसेनी[3] षट मत की ॥ २ ॥ बावों भौंर कठिन परोसी मच्छ कच्छन को गुरुदत्त मन बनमाली सों लहत है। नैनन के बान बैन झंकन झकोरन सों तोरो सील बादवान जोरो ना रहत है ॥ कहाँ लौं छिपाऊँ आली मृदुल छमाहू तापै केवट पतिब्रत सो धीर ना धरत है। स्याम-छबि-सागर में लोभ की लहरि बीच लाज को जहाज आज बूड़न चहत है ॥ ३ ॥

---

१ तुलसीदास। २ दो तरह। ३ सीढ़ी।

१५१. गुरुदत्त कवि, मकरंदपुरवाले (२)

यह बंधु अहै बड़वानल को नथमोती यों ज्वाल से जागत है ।
यह सीस के फूलहु ताप करै तन नागर मो बिष पागत है ॥
मृदु हार हिये कसकै गुरुदत्त कठोर उरोजन लागत है ।
यह दाग कपोलन में सितलान को दाग करेजे मो दागत है ॥१॥

१५२. गजराज कवि उपाध्याय बनारसी
(वृत्तहारपिंगल)

सूने अवास[1] में पाइ कै बालम बाल बिनोद के बृंद बढ़ावै ।
छंद कबित्त पढ़ै बहुतै गजराज भनै सुर पंचम गावै ॥
कंज बिलोकनि कोरन सों मुसकानि महा छबि छाक छकावै ।
ह्वै निरसंक भरो चहै अंक मैं बालम बंक पै अंक न आवै ॥ १ ॥

१५३. ग्वाल प्राचीन (२)

कारी घटा कामरूप काम को दमामो बाज्यो गाज्यो कबि ग्वाल देखि दामिनि दफेर सी । लपकि झपकि आयो दादुर सुनायो सुर हमैं हू बिरह सखि मदन की रेर सी ॥ बालम बिदेस बसे चातक के बोल कसे ज्यों ज्यों तन दहै त्यों त्यों औरै हरि बेर सी । बूँदन को दुन्द सुनि आँखैं मूँदि मूँदि लेत आयो सखी सावन सँवारे समसेर सी ॥ १ ॥

१५४. गोविन्द अटल (१)

छप्पै

समय मेघ बरषंत समय सिरै[2] होइँ सबै फल ।
तरुनी पावै समय समयई जाति देइ बल ॥
समय सिद्धि हू मिलै समय पंडित हू चूकै ।
समय प्रीति चित घटै समय सरवर हू सूकै[3] ॥
कोउ द्वार जु आवै समय सिर समय पाय गिरिवरहि गिर ।
गोबिन्द अटल कबि नंद कहि जो कीजै सो समय सिर ॥ १ ॥

---

१ घर । २ अनुसार । ३ सूखता है ।

१५५. गोविन्दजी कवि (२)

रँग भरि भरि भिजवत मोरि अँगिया दुइ कर लिहिसि कनक-पिचकरवा । हम सन [1]ठनगन करत डरत नहिं मुख सन लगवत अतर अगरवा ॥ अस कस बसियत सुनि ननँदी हो फगुन के दिन इहि गोकुल नगरवा । मुहि तन तकत बकत पुनि मुसिकन रसिक गोविन्द अभिराम लँगरवा[2] ॥ १ ॥

१५६. गोपनाथ कवि

कहा लिखि पठवों सँदेसो आली ऊधो हाथ उन के तौ मन माँझ वहै बसी खूब री । बारे के बहेवा कान्ह कारे अति अंग ही के कारी कारी बातैं सुनि होत है अजूब री ॥ कहै गोपनाथ प्राननाथ जिय ऐसी ठानी जो पै जिय आनी ऐसी गही दाँत दूब री । कहिबे के सरमी हैं देखिबे के नरमी हैं बड़ेई सुकरमी हैं कूबरी न ऊँबरी[3] ॥ १ ॥

१५७. गंगापति कवि

इत हरि फेरि पीठि उत करि टेढ़ी डीठि तब ही सों पंचसर बैठ्यो बाँधि बरकस । छिन छिन छीन भई विथा नित नित नई दुख माँझ नई नई कौन धरै धरकस ॥ गंगापति यहै उर बढ़त अँदेसो एक पठयो सँदेस हू न ऐसे हरि करकस[4] । इतने पै घाउ करि लोन भुरकावत हौ हम को भभूति ऊधो कुबिजा को जरकस[5] ॥ १ ॥

१५८. गंगादयाल कवि निसगरवाले

हाला सी ललाई तरवान में सहज जाकी चारु चिकनाई है समान घृतनिधि के । छीर से धवल नख नीर सी बिमल दुति कोमल प्रपद की गोराई सम दधि के ॥ इच्छुरस हू ते है सरस चरनामृत औ लवनसमुद्र है लोनाई निरवधि के । लागे दिन रात मेरे पद जलजात तेरे बैभव दिखात मात सातऊ उदधि के ॥ १ ॥

---

१ नखरे । २ लंपट । ३ बची । ४ कर्कश । ५ कामदार पोशाक ।

१५६. गोपालराय कवि

सजे दुरद्द मद्द के बजे निसान सद्द के भजे समुद्द हद्द के लगे तिलंक दौरिया। चढ़े ति सूर सारसी बने ति बीर साहसी बिलोकि कालिका हँसी धरै न धीर गौरिया ॥ अरिंदनारि कंत सों भनै दुचैन मंत सों कहै गोपाल छंद सों गहै त्रिदेव गौरिया। मिलो तुरंत ताहि को जहान तेज जाहि को नरिंदलाल साहि को समूह सैन दौरिया ॥ १ ॥ उठी जु रेनु रंग मों बिछोह मों रथंग मों लख्यो न नीर गंग मों फुली कुमुद्द की कली। सरोज फूल संकुले उलूकनैन हैं खुले फनिंद भार सों भुले उमंडि कै चमू चली ॥ ठथ्यो प्रताप भानु को जसद्द के निसान को चढ़्यो पहार खान को इदिल्ल खाँ मसन्दली। गोपालराय यों कहै न कोट बैर हू गहै ते भाजि कन्दरा रहै सम्हारि सुन्दरीन ली ॥ २ ॥

१६०. गदाधरराम कवि

बस है मुरलीसुरलीन[1] किधौं किधौं कूल कलिन्दी के टोहन गो।
किधौं पीतपटा लखि या लकुटी किधौं मोरपखा छबि गोहन गो ॥
किधौं लालकमाल के मध्य फँस्यो किधौं कामकमान सी भौंहन गो।
हम का सों गदाधर जोग करैं मन तौ मनमोहन गोहन गो ॥ १ ॥

१६१. गुणाकर त्रिपाठी काँथानिवासी

फूले हैं रसाल नव पल्लव बिसाल बन जूही औ पलास मल्ली आदि बहु को गनै। कूजत बिहंग पिक कोकिलादि एकसंग गुंजत मलिंद बन बीथिकान में घनै ॥ वहत समीर मंद सीतल सुरभि धीर रहत न जोगजुत मुनिगन के मनै। एरे ब्रजरंग ऐसे समै देहु संग नतु दहन अनंग मिसु गोपिकान के तनै ॥ १ ॥

होत प्रभाकर के से उदै दुख राति अराति[2] तमोगुन त्यागत।
मीत सरोज बिकासि रहे द्विजराज सबै मुद मानस भ्राजत ॥

---

१ मुरली के स्वरों में लीन। २ शत्रु।

बोधित है बुध बेद भनैं बर बारतिया[1] नित गानहिं गाजत ।
श्रीरनजीत की देखि प्रभा सब भूमि को भूषन काँथा बिराजत ॥ २ ॥

१६२. गोकुलविहारी कवि

झूमत झुकत मतवारो अति भारो गज गरजन गरजत महा प्रलै काल की । कोमल कमल उत गोकुलबिहारीलाल जैसी कोऊ कुंज में फिरन कंज नाल की ॥ देखादाखी भई सूँड़ि चापि कै द्विरद दौरयो केहरि सों सरस गरूर नंदलाल की । कंस के अखारे की सी दौर नाहिं बिसरत बारन की धावन औ आवन गुपाल की ॥ १ ॥

१६३. गंगाराम कवि

गंग सीस पै धरे अंग अरधंग भवानी ।
बाहन बृष मखेरेखरेख भैरव अगवानी ॥
सिध चौरासी खरे सोइ सब सीसनवावैं ।
चौंसठि जोगिनि खरीं भूत ताथेइ मचावैं ॥
गंगराम कहु सिवासिव सकल सभा आनँद हिये ।
सरबंगी को ध्यान धरु अरधंगी आसन किये ॥ १ ॥

१६४. गुरुदीन पाँड़े कवि
(बाकमनोहरपिंगल)

दोहा—कहत चतुरमुख[2] पंचपति, नाय सीस तिन तीन ।
बाकमनोरथ ग्रंथ मति, प्रगटति कबि गुरुदीन ॥ १ ॥
बहु ग्रंथन को बिबिध मत, अति बिस्तार न पार ।
कहत सुकबि गुरुदीन निज, मति मन रुचि अनुसार ॥ २ ॥
सिसिर सुखद ऋतु मानिये, माह महीना जन्म ।
संबत नभ रस बसु ससी, बाकमनोहर जन्म ॥ ३ ॥

---

१ वेश्या । २ ब्रह्म ।

देश वर्णन, अनुष्टुपछंद

रस खानि पससद्धी बस्त्र गंध नदी सुभ।
देस नग्र गाडी खाई षटमाया विभूषित ॥
धर्म कोट नदी दाया सुख सोभा विहंगम।
राम कृष्ण महारत्न मध्य देस मनोहर ॥

सवैया

दीन सबै बिधि सील सुभाव सुरूप सबै सुख ओदन दासन।
हेम पतंग परे अस नाहिं उदै रवि पंकज कोप प्रकासन ॥
घाम उड़ै रजनी गुरुदीन दिया दुति धूम धरै छबि पासन।
मोहन भृंग तजे तुव अंग कहै जग चम्पकरङ्ग सुबासन ॥ १ ॥

१६५. राजा गोपालशरण

पद

सोभित भामिनि मुकुलित केस। मानों संभु कंठ ते रिंगि कै ससि सँग मधु पीवत जनु सेस ॥ भृकुटि[1] चाँप[2] मनमथ कर इहि बिधि साजत प्रथम प्रबेस। ता मधि नयन बिसाल चपल अति तीच्छन बान लरने पिय सेस ॥ नासा कीर अधर बिद्रुमछबि हँसि बोलत मानों तड़ित लसेस। कंठ कपोल मृनाल भुजा कर कमलन मानों इन्द्र धनेस ॥ कुच निसोत कटि छीन जंघ जुग कदलि बियत मनु उलटि धँसेस। गज गति चाल चलत गोहन दुति नृप गोपाल पिय सदा बिसेस ॥ १ ॥

१६६. गोविंददास (२)

पद

आवत ललन पिया रँग-भीने। सिथिल अंग डगमगत चरनगति मोतिनहार उर चीने ॥ पारिजात-मन्दारमाल लपटात मधुप मधु पीने। गोबिंद प्रभु पिय तहीं जाहु जहँ अधर दसन छत[3] कीने ॥ १ ॥

---

१ भौंह। २ धनुष। ३ घाव।

१६७. गोपालदास

पद

भोर अंगअंग सोभा स्याम के भली। मानहुँ विकसित बिचित्र नीलकमल की कली॥ प्रिया[1]उरसि लग्न[2] रागसरत छुरित छबि पराग पवन परसि मन्द लै सुगन्ध को चली। करि प्रवेस घ्रान-द्वार[3] हरति जुवतिचित्तसार मरम बेधि समरबान काम ते बली॥ पलटि बसन सुखनिधान मत्त मधुर करत गान सुरतसमय सुजस सुनो स्रवन दै अली। गोपालदास मदनमोहन कुञ्जभवन बलित रंग मुदित अवनि भावनी सुमानि के रली॥ १॥

१६८. गदाधरदास

पद

जयति श्रीराधिके सकल सुखसाधिके तरुनिमनि नित्य नव तन किसोरी। कृष्णतन नीलघन रूप की चातकी कृष्णमुख हिमकिरन की चकोरी॥ कृष्णदृग भृंग[4] बिसरामहित पद्मिनी कृष्णदृग मृगज बन्धन सु डोरी। कृष्णअनुराग मकरंद की मधुकरी कृष्णगुनगानरससिंधु बोरी॥ परमअद्भुत अलौकिक मेरी गति लखि मन सु साँवरे रंग अंग गोरी। और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौंसठि कला तदपि भोरी॥ बिमुख पराचित्त ते चित्त जाको सदा करत निजनाह की चित्तचोरी। प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी॥ १॥

१६९. घनश्याम कवि असनीवाले ब्राह्मण

अटै औनि अम्बर छुटै सुमेरु मन्दर से घटै मरजादा बीर बारिधि के बेला की। कहै घनश्याम घोर घन की घमंडै गज मंडै ध्वज मंडै उमड़े जे रबिरेला की॥ धारा बरछीन की बिदारैं तन दैत्यन के मन्द सी कुठारैं परैं संकर के चेला की। दब्बै दिगपीलबल

---

१ प्रिया की छाती में। २ लगे। ३ नाक के द्वार से। ४ भ्रमर।

फब्बै ना सुरेससेन जा दिन जुनब्बैं कढ़ैं बाँधवी बघेला की ॥ १ ॥

बाजैं जीति सुजस बिभाजैं दल बैरिन के रैयति को रंजै गढ़ गंजै अलकेस के। कहै घनस्याम रस दूसरो[1] सुरू कै गर्जि गुरू गार्जै तोकै कैधौं डमरू महेस के ॥ इड़ाबान हारैं तड़ितान को गरब गारैं आसमान फारैं मन मारैं अमरेस[2] के। पारावार धार में धसी है गंगधार कैधौं झुकत नगारे बारानसी के नरेस के ॥ २ ॥

आजु राधे रावरे को आनन बिलोक्यो घनस्याम तुव प्रेम की घुमारी सी धरा धरै। रति की रमा की उरबसी की तिलोत्तमा की दीपति दमा की धाम राखी है धरा धरै ॥ दीप को दबाइ कै सरोज सकुचाइ कै सु आरसी निकाई ताकी बाँधी है बराबरै। छाइ रतनाकर छपाइ कै प्रभाकर को छूटि कै छपाकर[3] के ऊपर हरा परै ॥ ३ ॥

बैठी चढ़ि चाँदनी में चन्द्रमा बिलोकन को उन्नत उरोजन ते उछरे हरा परै। दमा छमा केतक तिलोत्तमा है घनस्याम रमा रति रूप देखि धसके धरा परै ॥ जेवर जड़ाऊ मौर जगमगे अंगन ते नेवर जड़ाऊ तेज तरुन तरा परै। राधे-मुखमंडलमयूँखन[4] ते महाराज छूटि कै छपाकर के ऊपर छरा परै ॥ ४ ॥

उमड़ि घुमड़ि घन आवत अटान चोट छनघ्रा जोतिछटा छटकि छटकि जात। सोर करैं चातक चकोर पिक चहूँ ओर मोर ग्रीव मोरि मोरि मटकि मटकि जात ॥ सावन लौं आवन सुनो है घनस्याम-जू को आँगन लौं आय पाँय पटकि पटकि जात। हिये बिरहानल की तपनि अपार उर हार गजमोतिन को चटकि चटकि जात ॥ ५ ॥

चंद अरबिंद बिंब बिद्रुम फनिन्द सुक कुन्दन गयन्द कुन्दकली निदरति है। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनस्याम कहाँ कुंकुम को अंगराग अंग ना करति है ॥ केहरी कपोत पिक पल्लव क-

---

१ दूसरा रस=वीररस। २ इन्द्र। ३ चंद्रमा। ४ किरणों से।

लिन्दी घन दरके निरखि दारयो छतियाँ बरति है। मेरे इन अंगन की नकल बनाई बिधि नकल बिलोके मोहिं न कल परति है॥६॥

१७०. घनआनन्द कवि

गाइहौं देवी गनेस महेस दिनेसहि पूजत ही फल पाइहौं।
पाइहौं पावन तीरथनीर सु नेकु जहीं हरि को चित लाइहौं॥
लाइहौं आछे द्विजातिन को अरु गोधन दान करौं चरचाइहौं।
चाइ अनेकन सों सजनी घनआनँद मीतहि कंठ लगाइहौं॥ १॥

१७१. घासीराम कवि

कीधौं उन बन घन घेरि न घुमंड आवैं कीधौं कीच भूतल में मगरी नहीं नई। कीधौं दबि दादुर रहे दुराइ ब्यालन[2] सों कीधौं पापी पपिहा पिया की टेर ना रई॥ घासीराम कीधौं बक बाजन की त्रास मान्यो कीधौं वहि देस बीर पावस नहीं ठई। कीधौं काम स्यामजू के त। से निकसि गयो कीधौं मेघ जूझे कीधौं बीजुरी सती भई॥ १॥ बिच्छू साँप बेमटा छिछूदा गिरगिटौ ताकि दिपेड़ा गुहेरा गोहछौना निर धारिये। दुरकुच्छी दुमुही दिनाई हरतार बिष सुंमल अफीम निरबसी भौंर भारिये॥ घासीराम करइ कनैर किरकिचया हू ताके मुख ऊपर सो बरजर डारिये। कालकूट कुटकी स मेत जेजहर होत चुगुल की जीभ पर एते बिष वारिये॥ २॥ सुख की नदी में किधौं परत गँभीर भौंर धरा को तखत पिय लोचन अरथ की। कैधौं बरषा में रोमराजी रहै पन्नग की कैधौं खान खुली है जवाहिर के गथ[3] की॥ घासीराम कैधौं सोंति सुखन की भाकॅसी सी मान भई खिरकी उरज-गढ़-पथ की। एरी मेरी बीर तेरी नाभि रसभरी कैधौं दोतें[5] करता की कै मथानी मनमथ की॥ ३॥

---

१ अनार। २ साँप। ३ समूह। ४ भट्टी। ५ दावात।

१७२ चन्द कवि प्राचीन (१)

मंडन मही के अरि खंडे पृथीराज बीर तेरे डर बैरीबधू डगडग डगे हैं। देस देस के नरेस सेवत सुरेस जिमि काँपत फनेस सुनि बीररस पगे हैं॥ तेरे स्रुति-मंडलन कुंडल बिराजत हैं कहै कबि चन्द यहि भाँति जेब जगे हैं। सिन्धु के वकील संग मेरु के वकीलहि लै मानहुँ कहत कछु कान आनि लगे हैं॥ १॥ महाराज तेरी सब कीरति बखानैं कबि चन्द यह केवल अकीरति बखाने हैं। आँधरे ने देखी देखि हमको बताइ दई बहिरे ने सुनी जैसी हमहूँ पिछाने हैं॥ कच्छपी के दूध ही के सागर पै ताकी गीत बाँझसुत गूँगे मिलि गावत यों जाने हैं। तामें केते बड़े सससींग के धनुषवारे रीझि रीझि तिन्हें मौज दै कै सनमाने हैं॥ २॥

दोहा—सींक बान पृथिराज की, तीन बाँस गज चारि।
लगत चोट चौहान की, उड़त तीस मन गारि॥ १॥
धर पलट्यो पलटी धरा, पलट्यो हाथ कमान।
चन्द कहै पृथिराज सों, जिन पलटै चौहान॥ २॥
बारह बाँस बतीस गज, अंगुल चारि प्रमान।
इतने धर पर साह है, मति चूकौ चौहान॥ ३॥
फेरि न जननी जनमिहै, फेरि न खैंचि कमान।
सात बार तुम चूकियो, अब न चूक चौहान॥ ४॥

(पृथ्वीराजरायसा पद्मावतीखंड)

छप्पै

पिय पृथिराज नरेस जोग लिखि कागद दिन्नेंउ[३]।
लगन बार गुरु चौथि चैत बदि द्रस सु तिन्नेंव[४]॥
हरि हंसै दस बीस साखि सम्बत प्रामानह।

---

१ कानों में। २ कछुई के दूध नहीं होता। ३ दिया। ४ उन्होंने।

जो छत्री कुल सुद्ध बरनि यर राखेहु प्रानह ॥
देखत दिखिवत धरिव पलछनक बिलंब न अब करिय ।
पल गारि रैनि दिन पंच महँ ज्यों रुकुमिनि कान्हर बरिय ॥
दोहा—ग्यारह सै चालीस यक, जुद्ध अतुल भरि रोह ।
कातिक सुदि बुध त्रयोदसि, समर सामिली लोह ॥ १ ॥

छप्पै

समुद सिखर गढ़ परनि राउ डिल्ली दिसि चल्लिव ।
बादसाह सुनि खबरि धाय बीचहि रन झिल्लिव ॥
सकल सिमिटि सामंत चंद कैमास बुद्धिबर ।
लहेउ जुद्ध चौहान गह्यो पृथिराज साहु कर ॥
रजपूत टूटि पचास रन लूटि जबर सैना हनिय ।
पट्ठान सात हज्जार पर जीति चल्यो संभरि-धनिय ॥ १ ॥

(आल्हखंड)

छप्पै

हाँके पील[1] पृथिराज चल्यो चंदेल सनम्मुख ।
इस मंत्र उच्चारि बीरबर धारि जंत्र रुख ॥
नरपति आपु सँभारि बान सन्धानि[2] पानि किय ।
खैंचि राज कोदंड[3] कान लगि बान पिंड दिय ॥
बेधंत हीक छेदंत तन फुटि सनाह[4] हैबर मिल्यो ।
सायक बाहि संभरि धनी-खरग खोलि डीलन पिल्यो ॥ १ ॥
हनि तालन पट्ठान कन्ह काढे सु प्रान रन ।
सेंगर सो निगराय भान चंदेल परे तन ॥
जालन्ह केसवदास पास परिहाँस हाँस भव ।
और गिरे बहु बीर धीर आये जे पुंगव ॥

---

१ फ़ील=हाथी । २ चढ़ाया । ३ धनुष । ४ जिरहबक्तर ।

बारह हजार रजपूत कटि हाथी तीस सुबेस दल ।
जैचंद फौज मुरकी चली परी फौज सामंततल ॥ २ ॥

(दिल्लीखण्ड दिल्ली की प्रशंसा)

भर हट्ट सुलक्खनयं भरयं । धरि बस्तु अमोल नयं नरयं ॥
तिन बीच महल्ल सुलक्खनयं । लख कोटि धजी सुकवी गनयं ॥
नरसागर तागर सुद्ध परै । परि राति सुरायन बाद खरै ॥
मचिकीच उगौलन हट्ट मझे । दिखिदेव कलासन दाव दझे ॥
रचि तारबितारन मंति नवी । परि जानि हुतासन लच्छबी ॥
मनु सावक पावक मद्द किये । बिन तार अतारन भार लिये ॥
इन रूपटगं मग चाहनयं । मनु सूर सबै ग्रह राहनयं ॥
तिन तट्ट कलिंदयतट्ट सजं । धरमज्झन तार अनेक सजं ॥
तिन अग्ग सुपंतसुमग्गनयं । लखि लक्खचौरासिय उद्धनयं ॥
पचि चल्लिय नीलियमानिकयं । रतनं जतनं मनितेजकयं ॥
सभ दिल्लिय हट्ट सुनेर सुझे । करिदंत मिलंत गिरंत सुझे ॥
द्वै सामतदामित रूपकला । बर बीर उठै घटि मत्तकला ॥

१७३. चंद कवि (२)

लोचन मैन के बान बने धनुही भृकुटी[2] मुख चंद चही ।
ओठनि में उपमा प्रतिबिंब की दंत कि पंगति कुंद सही ॥
चंद कहै नव नीरद से कच[3] अंग सु हेमकी गौरि गही ।
नाजुक हीन नई मुख की उपमा नहिं एकहु जाति कही ॥ १ ॥

आसपास पुहमी प्रकास के पगारें सूझै बनन अगार डीठि ह्वै रही निबरते । पारावार[5] पारद अपार दसौ दिसि बूड़ी चंद ब्रह्मंड उतरात बिधुबर ते ॥ सरद जुन्हाई जह्नुधार सहसा सुधाई सोभासिंधु नव सुभ्र नव गिरिवर ते । उमड़ो परत जोतिमंडल अखंड सुधामंडल मही ते बिधुमंडल-विवर ते ॥ २ ॥

---

१ लौटी । २ भौंह । ३ बाल । ४ दीवार । ५ पारे का समुद्र । ६ चंद्रके छिद्र से ।

१७४. चंद कवि (३)

मद के भिखारी मीनमांस के अहारी रहैं सदा अनाचारी चारी लिखते लिखावते। नारी कुल धाम की न प्यारी परनारी आगे विद्या पढ़ि पढ़ि हू कुविद्या मति धावते॥ आँखिन को काजर कलम से चोराय लेत ऐसे काम करैं नेक संकहु न लावते। जोपै सिंह-बाहनी निबाहनी न होती चंद कायथ कलंकी काके द्वारे गति पावते॥ १॥

१७५ चंद कवि (४)

सोरठा—सुलतान महम्मदसाह नाम नवाब बखानिये।
कबिताई अति चाह करत रहत गढ़ नगर में॥ १॥
देस मालवा माँहिं कुंडलिया करि सतसई।
हरिगुन अधिक सराहि चंद कबीसुर तेहि सभा॥ २॥

१७६. चोखे कवि

अमिली[1] रहति काहे बर[2] सों हमेस आली पीपर की डार गहे जोत नेम तेरो री। साजनो बताऊँ साख जा की आमनामा घनी एते पर करत करार जो घनेरो री॥ चोखे कहै बारबार जा मुनि न पावै पार महुवा सों रिसात आली ऊमर तरु हेरो री। एरी कचनार तू बारबार कहर करै माहुली लगाय जात आँवरी बहेरो री॥ १॥

१७७. चतुरविहारी कवि

पद

उनींदी आँखैं रंगभरी दुरत नहीं पट ओट।
मीन खंजन मृगहीन भये हैं और कमलदल वारि डारौं लखकोट॥
दुरत मुरत झपकत अनियारी चंचल करति हैं चोट।
चतुरबिहारी प्यारी की छबि निरखत बाँधत सुख की पोट॥१॥

---

१ न मिली, पक्षांतर में इसी नामका वृक्ष। २ बर्गद और बर।

१७८. चैन कवि

आपु को बाहन बैल बली बनिता हू को बाहन सिंहहि पोखि कै।
मूषक बाहन है मत एक सु दूजो मयूर के पच्छ बिसेखि कै ॥
भूषन है कबि चैन फनिंद के बैर परे सब ते सब लेखि कै।
तीनिहु लोक के ईस गिरीस सुजोगी भये घर की गति देखि कै ॥ १ ॥

१७९. चैनसिंह खत्री लखनऊ। उपनाम हरचरण।

(भारतदीपिका ग्रन्थ)

स्वेत रथ स्वेत बस्त्र स्वेत ध्वजा स्वेत छत्र स्वेत ही तुरंग लाखि भूप लागे लरजन[2]। ज्ञान में गनेस अस्त्र सस्त्र में महेससम पौरुष में राम कोऊ कहि न सकत तन ॥ कहै हरचर्न मारतंड के समान तेज जाकी हाँक सुने मुख फेरि लेत अरिजन। रोदा के बजत सूरबीर संगराम तजैं गंगा के तनै की सुनि सिंह की सी गरजन ॥ १ ॥

(शृंगारसारावली ग्रन्थ)

ससी उर बसी सी गोरे पहिरे उरबसी सी पिया उर बसी सी छबि देखे दुख सरकि जात। कंचुकी कसीसी बहु उपमा लसी सी रूप सुन्दर घसी सी परजंक पै थरकि जात ॥ कहै हरचर्न रही चमकि बतीसी प्यारी जामें लगी मीसी हिये सौतिन दरकि-जात। भुज में कसी सी सिन्धु गंग ज्यों धसी सी जाके सीसी करिबे में सुधासीसी सी ढरकि जात ॥ २ ॥

१८०. चिन्तामणि त्रिपाठी, टिकमापुर अंतर्वेद के (१)

(छंदबिचारपिंगल)

दोहा—सूरजबंसी भोसला, लसत साह मकरंद।
महाराज दिगपाल जिमि, भाल समुद सुभ चंद ॥ १ ॥

छप्पै

मुकुतमाल उत माँग इतहि सो मंग गंग गनि।

---

१ पत्नी=पार्वती। २ काँपने।

उत सित[1] चन्दन अंग इतहि सितकर[2] लिलार भनि ॥
उतहि भाल मनि लाल इतहि दृग अनल बिराजत ।
उत कपूर तन लेप भसम इत अति छवि छाजत ॥
कहि चिन्तामनि सम बेष धरि अति अनूप सोभा सहित ।
जय साजहिं सरजा साहि कहँ गिरिजा हर अरधंग नित॥२॥
सिर ससिधर धर गौरि अरधंगधर जटाजूट गंगधर नर-मुंडमालधर।
बिपतिनिरासकर दीह दिसाबासकर खलउरसूलकर डमरुत्रिसूलकर॥
सेवत अमरबर पग-सुरतरुवर देत हरबर चिन्तामनि को अभय बर ।
देह लसै बिषहर मदनगरबहर त्रिपुर के मदहर जय जय देव हर॥३॥

(काव्यविवेक)

इक आजु मैं कुन्दनबेलि लखी मनमन्दिर की सुचि बृन्द भरै ।
कुरबिंद के पल्लव इंदु तहाँ अरबिंदन ते मकरंद झरै ॥
उन बुन्दन ते मुकतागन ह्वै फल सुंदर द्वै पर आनि परै ।
लखि यों करुनाद्युति कंदकला नँदनंद सिलाद्रव[3] रूप धरै ॥१॥

चिंतामनि कच कुच भार लंक लचकति सोहै तन तनक बनक छबिखान की । चपल बिलास मद आलसवलित नैन ललित बिलोकनि लसति मृदु बान की ॥ नाक मुकताहल अधर रंग संग लीन्ही रुचि संध्याराग नखतन के प्रभान की । बदनकमल पर अलि ज्यों अलक लोल अमल कपोलन झलक मुसकान की ॥ २ ॥

सूधी चितौनि चितै न सकै औ सकै न तिरीछी चितौनि चितै ।
गुड़ियान को खेलिबो फीको लगै अरु कामकला को बिलास कितै ॥
लरिकापन जोबन संधि भई दुहुँ बैस[4] को भाव मिलै न हितै ।
बिवि चुंबक बीच को लोहो भयो मन जाइ सकै न इतै न उतै ॥ ३ ॥
राति रहे मनिलाल कहूँ रमि ह्याँ दुख बाल बियोग लहे हैं ।

१ श्वेत । २ चंद्रमा । ३ चंद्रकांत मणि । ४ अवस्था ।

आये घरै अरुनोदय होत सरोष[1] तिया इमि बैन कहे हैं ॥
लाल भये दृग कोरन आनि कै यों अँसुवा नव बूँद रहे हैं ।
चोंचन चापि मनों सिथिलै बिबि खंजन दाड़िमबीज गहे हैं ॥ ४ ॥

(रामायणग्रन्थे)

जा के हेत जोगी जोग जुगुति अनेक करैं जाकी महिमा न मन बचन के पथ की । औरन की कहा जाहि हेरि हर हारे जाहि जानिबे को कहा बिधि हू की बुधि न थकी ॥ ताहि लै खेलावै गोद अवधनरेसनारी अवधि कहा है ताके आनँद अकथ की । जाके मायागुनन भुलायो सब जग ताहि पलना मैं ललना झुलावै दसरथ की ॥ १ ॥ हंसन के छौनों[2] स्वच्छ सोहत बिछौना बीच होत गति मोतिन की जोति जोन्ह जामिनी । सत्य कैसी ताग सीता पूरन सुहाग भरी चली जयमाल लै मरालमंदगामिनी[3] ॥ जोई उरबसी सोई मूरति प्रतच्छ लसी चिंतामनि देखि हँसी संकर की भामिनी । मानौ सर्दचन्द चन्द मध्य अरबिन्द अरबिन्द मध्य बिद्रुम बिदारि कढ़ी दामिनी ॥ २ ॥

(कविकुलकल्पतरुग्रन्थे)

स्वामि दरसन चंद सिंधु ते निकारि बुन्द मीन हम तपत महीतल में डारी हैं । पल पल बीतत कलप कोटि हरि बिन हहरि हहरि हाइ हाइ करि हारी हैं ॥ चिन्तामनि बिहँसि बिलोकि चितचोर की वै चलनि चितौनि बिसरत ना बिसारी हैं । सदाई अनंद अरबिन्द नैन इन्दु मुख कबही गोबिन्द सुधि करत हमारी हैं ॥ १ ॥ साहेब सुलंकी सिरताज बाबू रुद्रसाह तोसों रन रचत बचत खल कत हैं । काढ़ी करवाल काढ़ी कटत दुवन दल सोनित समुद्र छीर पर छलकत हैं ॥ चिन्तामनि भनत भखत भूतगन मांस मेद गूद

१ क्रोध से युक्त । २ बच्चे । ३ हंस के समान मंदगतिवाली ।

गीदर औ गीध गलकत हैं। फारे करि-कुंभन में मोती दमकत मानों कारे लाल बादर में तारे झलकत हैं ॥ २ ॥

१८१. चिन्तामणि (२)

आसा बाँधि मन में तमासा यह देखा हम कीजिये भरोसा ज्यों ज्यों त्यों त्यों तन छीजिये। चिन्तामनि मन में बिचारि करि देखा हम आपने दिनन की जबूनी मानि लीजिये ॥ मंत्री जानि पूरो अब पूछिहै सुजान तुम्हें जाई किधौं रहैं कहौ सोऊ हम कीजिये। दीबे अन-दीबे की फिकिरि मति कीजै आप और जौ न दीजै तौ सिखापन तौ दीजिये ॥ १ ॥

१८२. चूड़ामणि कवि

कैयो भाँति नजरि अजीतसिंह भूपति की चूड़ामनि कहै पाप पुंज को अभाव सी। आनँद की कंद ऐसी तापहर चंद ऐसी तेज में तरनि[2] ऐसी प्रभुता उपाव सी ॥ संभ्रम को संभु ऐसी करम कसौटी ऐसी सरम को सिंधु ऐसी धरम को नाव सी। दीन दया-बारिधि सी दानबेलि-बारिद सी बैरिन को दारिद सी दारिद को दाव सी ॥ १ ॥ भगत के काज करै मेटि मरजाद हू को भीषम-प्रतिज्ञा राखी ऐसो समरथ को। पारथ के सारथ है आपु महाभारथ में ता पै लाज तजि कै सजैया गजरथ को ॥ चूड़ामनि कहै लहै सुख को समूह महा जाको नाम कहे ते कटैया अनरथ को। नील छबिवारो जग-सिंधु को नैवारो[3] सोई मेरो देनवारो है दुलारो दसरथ को ॥ २ ॥ सधना कसाई ब्याध केवट कबीरदास इन के समीप प्रेमरस भीजियतु है। सेना नाऊ नामदेव नानक अजामिल से रैदसा[4] चमार सो गनाइ दीजियतु है ॥ चूड़ामनि ऐसे ऐसे पावत परम धाम जिन ही सो तेरो नाम नाम लीजियतु है। मेरी नहीं लाज तोहिं धरमजहाज कहा राज नीच जाति ही के काज

१ हाथी का मस्तक। २ सूर्य। ३ नाव। ४ रैदास भक्त।

कीजियतु है ॥ ३ ॥ भूपति गुमानसिंह रावरे समान आप गुरुपग ध्यान में न हरिगुनगान मैं । रन के सयान में न बीरताभिमान में सु जाके जसथान हैं दिसान बिदिसान मैं ॥ चूड़ामनि जान ज्ञान कहाँ लौं बखान करै कान रहैं जाके सदा पुन्यकथा-पान मैं । गुनपहिचान में न राखो है जहान मैं न दान मैं कृपान मैं न साधु-सनमान मैं ॥ ४ ॥

१८३. चंदनराय कवि माहिलवासी

(पथिकबोधग्रन्थे)

नाराच छंद

लसै ससोभ एक दंत दंतितुंड[1] सोभई ।
बिचित्र चारु चंदभाल देखि चित्त लोभई ॥
मनोसबाचकाय[2] ते समोद कै जपै जदा ।
अनेक भाँति भाँति के गनेशबेस सिद्धिदा ॥ १ ॥

(काव्याभरणग्रन्थे)

दोहा—भ्रमरी मुखरीकृत[3] तदा, भ्रमरी कबरी भार ।
गौरीपदपंकज दुरित, दूरीकरन बिचार ॥ १ ॥

(चंदनसतसईग्रन्थे)

दोहा—सुरी आसुरी किन्नरी, नगी पन्नगी देखि ।
ब्रजबनितन के सँग नचे, मनमाना सु बिसेखि ॥ १ ॥
बेसरिमोती में झलक, बरन चतुष्ट[5] प्रकार ।
मनु सुरगुरु भृगु भूमिसुत, सनिसमेत नृपद्वार ॥ २ ॥
ललित लाल मालागरे, सखियन दई सँवारि ।
निर्धूमागिनि मंडले, साधैं तप त्रिपुरारि ॥ ३ ॥
गुही ललितगुन लाल लट, मोतिन लर सुखदेनि ।

१ हाथी का मुख । २ मन, वाणी और काया से । ३ गूँजरहा । ४ देवतों की स्त्रियाँ । ५ चार प्रकार ।

सबिता दुजपति मधि मनौ, धसी सुआइ त्रिबेनि ॥ ४ ॥
ताहि बिलोकति मुकुर लै, आरस सारस नैन ।
हरिसोभा दरसै दुरै, कहि न सकै मुख बैन ॥ ५ ॥
बाल कालिह को आजु लौं, नहिं सम्हरत तन देह ।
तुम्हरी बंक बिलोक में, बिषु है बीस बिसेह ॥ ६ ॥

(केशरीप्रकाश)

कबित । अमल कमल वारौं चंदन सुकबि आगे कमलाकी पाँइन की मृदु अरुनई के । छीनी भई कटि अति निकसि नितंब आये छवि गई छाती बड़े कुच तरुनई के ॥ आनन प्रकास सोभ-सूनो सो निहारियत सौतिन को जोम गयो भई करुनई के । गई लरिकई दबि घुमड़े मनोजओज उमड़े परत अंग तंग तरुनई के॥ १॥
आजु गई हुती हौं जमुनाजल लेन धरे सिर गागरि खाली ।
देख्यो जु कौतुक[1] मैं तट जाइ कै सो अब तोसों कहौं सुनु आली॥
गुंफित पल्लव फूलन की बनमाल हिये यों लसै बनमाली ।
नील पहार के मध्य बिहार करै मिलि कै मनौ हंस सु ब्याली[2]॥२॥
जाको देखि दोखि करि बाढ़े चित चाउ हरि आओ नेकु पाँइ धरि देखौ बाल भाग सी । कोमल कमल अरु चरन बिराजत हैं लचकै लचत लोनी लंक सोने-ताग सी ॥ श्रीफल[3] से सुंदर करेरे कुच चंदन हैं खंजन त्यों नैन ऐन बेनी सीस नाग सी । कौन कौन बात की बड़ाई सुखदीन करौं दीपति अँधेरे भौन चमकै चिराग सी ॥ ३ ॥

(कल्लोलतरंगिणी)

दोहा—क्वाँर सुदी दसमी सु तिथि, बिजै चंद सुभ बार ।
संबत ठारह सौ जहाँ, छालिस ग्रंथवतार ॥ १ ॥
अंबुज अंक[4] प्रफुल्लित जुग्म निसंक महातम को तट धारै ।

१ तमाशा । २ नागिन । ३ बेल के फल । ४ गोद में ।

काम सरासन सोभित ता महँ हीन कलंक कला सब सारै ॥
तारासमूह लसै तिहि संगन भोग कहूँ मन मोद सँचारै ।
को यह चंद बिना निसि चन्दन जोन्ह सो जोति के जाल बगारै ॥१॥

(शृंगारसार)

छिति परजंक में निसंक अंक सोभित है अम्बरई[1] अम्बर[2] बिराजत अनूपा को । बलयाँ[3] जलधिजाल कज्जल जलदमाल बिपिन बिसाल चै बिलास थल रूपा को ॥ कलाधर तरनि तरौना पौन बीजन है पावक को जावक जरबदार दूँपा[4] को । चंदन नखतभार मोतिन के हार सब बिस्वतत्त्वसार है सिंगार बिस्वरूपा को ॥ १ ॥

यह सरबरी[5] सरबरी न निठुर नेकु गई अरबरी सी उगरि भानु भीत मै । नखत बखत बदछीन भये छिन छिन मोतीमाल चन्दन दुराय जात सीत मै ॥ बंद कै कपाट छलछन्द सों अँधेरे भौन गौन को दुरायो जब गायो काम-गीत मै । रोवौं कहा क्रूर कुकुरा के दुखरा को तौलौं कूकि कै निगोड़े ने जगायो प्रानपीतमै ॥ २ ॥

सुघर छबीले छकि सुरत छबीली साथ करत हरत दन्द आनँद के नद मैं । हँसि हँसि बिहँसि बिहँसि कसि कसि कोरे कोरे कोरे गातन को धरत बिसद मैं ॥ चुम्बन चतुर चारु तारन हजारन के चन्दन किये हैं रद छद रदछद मैं । हद हद मदन मचत कद कद सद गदगद बचन रचत मोद मद मैं ॥ ३ ॥

१८४. चन्द्रसखी

पद

मोरमुकुट कुण्डल झलकन अलकन उर मन मेरो जु हरो ।
मुरलीधुनि स्रवनन सुनि सजनी कामधाम सब को बिसरो ॥
काहे को लोकलाज आवै सखि काहू को काहू से काज सरो ।
चंदसखी सोई बड़भागिनि बालकृष्ण प्रभु बारो बरो ॥ १ ॥

---

१ अंबरी रंग का । २ वस्त्र । ३ करधनी । ४ दोनों पैरों का । ५ रात ।

१८५. चिरंजीवगोसाईं
(भारत भाषा)

छप्पै

बैसवार सुभ देस मनो रतनाकर सागर।
सुरगुरुसम कबि लसै जहाँ बहु गुन के आगर॥
तहाँ गोसाईंखेर सबै गोस्वामिन को घर।
रामनाथ तहँ बैद्य जाहि जाहिर सब भू पर॥
तिनके सुबंस प्रकट्यो सुकबि नाम चिरंजूलाल कहि।
सुभ भारत को भाषा करत सब पुरान को सार लहि॥ १॥

१८६. चेतनचन्द कवि
(अश्वविनोदी)

दोहा—सम्बत सोरह सौ अधिक, चार चौगुने जान।
ग्रन्थ कह्यो कुसलेस हित, रच्छक श्रीभगवान॥ १॥
श्रीमहराजधिराज गुरु, सेंगर बंस नरेस।
गुनगाँहक गुनिजनन के, जगत बिदित कुसलेस॥ २॥
जाके नाम प्रताप को, चाहत जगत उदोत।
नर नारी मुख मुख कहैं, कुसल कुसल कुसगोत॥ ३॥
बाजी सों राजी रहै, ताजी सुभट समर्थ।
रन सूरे पूरे पुरुष, लहै कामना अर्थ॥ ४॥

१८७. चतुरसिंह राना

काहे को तू घर छोड़ा काहे को घरनि छोड़ी काहे को तू इज्जति खोई दरवेस बाने की। काहे को तू नंगा हुआ काहे को बिभूति लाई किन रे सीख दई तुझे जंगल के जाने की॥ आदति को छोड़ि देता परेसान मति होता लिखि सुनि लेता एक चतुरसिंह

---

१ बृहस्पति २ शुक्र और कवि।

राने की। गोसा जाइ एक लेता खाने को खुदाइ देता जो पै फिकिर ना मिटी रे फकीर खाने-दाने की ॥ १ ॥

१८८. चैनराय कवि

साजि कै सिंगार हार जाल गजमोतिन के सुन्दरि छबीली छबि जैसे कछु रति है न। मन के मनोरथ के रथ पै गमन करि पहुँची निकुंज जहाँ है न नन्दनन्द ऐन ॥ चैनराय वाके उर मैन के मरोरा उठे मीन ज्यों बिना ही नीर लाज ते न बोलै बैन। फूलत गुलाब सी गई थी पिय पास अब लागो चमकावन[1] गुलाब चुटकी सी दैन ॥ १ ॥

१८९. चतुर कवि

कैधौं मित्र[2] मित्र मैं बसाई है किरन ताते फूल्योई रहत अनुमान यह पायो है। कैधौं ससिमण्डल में भाँई उडुमण्डल[3] की कैधौं हासरस निज नगर बसायो है ॥ दसन की पाँति कुन्दकलिन की भाँति आछी सोहत है गति गन कोबिदन गायो है। मानहुँ बिरंचि तेरी बानी को चतुर रागी दोलर कै मोतिन को हार पहिरायो है ॥ १ ॥

१९०. चतुरबिहारी कवि

चतुरबिहारी पै मिलन आई बाला साथ माँगत है आजु कछु हम पै देवाइये। गोद लेहु फूल देहु नीके पहिराय मोती पानन की पातरी हुतासन[4] लै आइये ॥ ऊँचे से अवास कै झरोखे चढ़ि बैठिये जू सेज स्याम चलिये सु रतिपति ध्याइये। ग्वाल समुझाइबे को उत्तर जु दीन्हे एक उकुति बिसेष भाँति बारी नहिं पाइये ॥ १ ॥

१९१. चतुरभुज कवि

कबहूँ सुचि दीपकली सी लगै कबहूँ बर चम्पकमाल नवीनी।
भौंहन में सब सौंह करै पुनि नैनन खंजन की छबि छीनी ॥

---

१ विद्रूप करने। २ सूर्य। ३ नक्षत्रमंडल। ४ आग।

ओठ निछावर विद्रुम है री चतुर्भुज या उपमा लखि लीनी।
केसर की रुचि कंचन रंग सिंगार के रूप की मंजरी कीनी ॥ १ ॥

१६२. चंडीदत्त कवि

बिरह बिहारी के बिकल बिलखत बाल बौरी सी लगति दुख अतिसै मलान की। चंडीदत्त आहि कै धरै है पग इत उत घूमिकै गिरी है क्यों धरी है देह आन की॥ साँस ना भरत पै सिथिल सी दिखाई देत होनी ना मिटाये मिटै बिधि बलवान की। अतर-लपेटी काल्हि कुंजन मैं भेटी आजु धूरि मैं धुरेटी लेटी बेटी बृष-भान की॥ १ ॥

१६३. चरणदास ब्राह्मण पण्डितपुरवाले
(ज्ञानस्वरोदय)

दोहा—चारि बेद को भेद है, गीता को है जीव।
चरनदास लखु आप में, तोमैं तेरा पीव ॥ १ ॥
सब जोगन को जोग है, सर्ब ज्ञान को ज्ञान॥
सर्ब सिद्धि की सिद्धि है, तत्त्व स्वरन को ध्यान॥२॥

१६४. चतुरभुजदास

पद

प्रानपति बिहरत जमुना कूले।
लुब्ध मकरंद के बस भये भ्रमर जे रबि उदय देखि मानो कमल फूले॥
करत गुंजार मुरली लैकै साँवरो ब्रजबधू सुनत तन-सुधि जु भूले।
चतुर्भुजदास जमुना प्रेमसिंधु में लाल गिरिधरन अब हरषि भूले॥१॥

१६५. चोवा कवि (हरिप्रसाद बंदीजन डलमऊवाले)

पालत ये निगमागम सेतु अनीत कै पीतन दंडन हारे।
धर्मधुरंधर दानिसिरोमनि बैरिन के मद खंडनहारे॥

---

१ वेद और शास्त्र।

सुद्ध मनोकुल कीरति मंजु दसौ दिसि देसन मंडन हारे।
बीर बली सिवसिंह नरेस उदंड दोऊ भुज दंड तिहारे ॥ १ ॥

१९६. छत्तन कवि

छप्पै

मधु पताल मोती मराल मृगराज श्याल मृग।
भृकुटि उरज रद चलन लंक बेनी बिसाल दृग ॥
गुंजत कंचन बिमल तरुन सिसु स्याम बिभुंकिय।
नलिन न बिय गजगौन क्षुधित क्रुद्धित बिछोह तिय ॥
नरवर अछिद्र अनबेध सर चकित मलै चहुँघा फिरै।
कहि छत्तन छवि स्यामा निरखि क्यों न लाल पाँयन परै ॥१॥

१९७. छत्रसाल राजा पन्ना के

सुदामा तन हेर्‍यो तब रंकहू ते राव कीन्हो बिदुर तन हेर्‍यो तब राजा कियो चेरे ते। कूबरी तन हेर्‍यो तब सुन्दर स्वरूप दीन्हो द्रौपदी तन हेर्‍यो तब चीर बढ़ो टेरे ते ॥ कहै छत्रसाल प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी हरनाकसिपु मार्‍यो है नेक नजरि फेरे ते। एरे अभिमानी गुरुज्ञानी भये कहा होत नामी नर होत गरुड़गामी के हेरे ते ॥ १ ॥

१९८. छत्रपति कवि

मोरपखा सासि सीस धरे स्रुति[2] में मकराकृत-कुंडल-धारी।
काछ कछे पट पीत मनोहर कोटि मनोजन की छबि वारी ॥
छत्रपती भनि लै मुरली कर आइ गये तहँ कुंजबिहारी।
देखतही चखलाल के बाल प्रबाल की माल गरे बिच डारी ॥ १॥

१९९ छितिपाल राजा माधवसिंह अमेठी

(मनोजलतिकाग्रन्थे)

झूकि[1] उठीं कोकिलान गूँजि उठी भौंरभीर डोलि उठे सौरभ[3]

---

१ झुके। २ कान। ३ सुगंधित।

समीर सरसावने। फूलि उठीं लतिका लवंगन की लोनी लोनी झूलि उठीं डालियाँ कदंब सुख पावने ॥ चहकि चकोर उठे कीर[1] करि सोर उठे टेरि उठीं सारिका बिनोद उपजावने। चटकि गुलाब उठे लटकि सरोजपुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनि आवने ॥ १ ॥

(देवीचरित्रसरोजग्रन्थे)

दनुज[2] दराज बल सुनि सुनि हालै छलबल की नकल होत नकल न कल भौन। सोई सुनि सु रन सुरन कैसी जाति लागै कसर न एक अंग आवत अनोखी तौन ॥ याते छितिपाल कबिताई की न चाल चलैं भूलि जात बुद्धि बल कैसो सब जाल जौन। अकथ कहानी जानी जानी जुगयो न याते मति बिलखानी बानी बानी की बखानै कौन ॥ १ ॥

(त्रिदीपग्रन्थे)

दोहा—बिधि नारद सारद हरी, भृंगी ऋषिबर धाम।
बामदेव मन खाम करि, बाम बाम के काम ॥ १ ॥

कबित्त। ग्रन्थ ज्ञान ध्यान बानी मधुर उचार दान बिद्या के बिधान मान चहत घनो घरी। सुजस बढ़ावै भूरि भावते महीपन में तप की लता से बेलि सुकृत महा फरी ॥ ऐसे छितिपाल कबि कोबिद बिपति सहैं राजा न प्रबीन जानो काहू मति कै छरी। रतनलरी को मोल घटि करि भाखै ताको छोहरी बिचारि कहैं जौहरीन सौं हरी ॥ २ ॥

बरवै

कटि कृस उच कुच मृग दृग करि तिय गान।
धन्य पुरुष जा उर अस लगत न बान ॥ ३ ॥
कमल बिबेक बिकासत तब लौं मंद।
जब लौं नयनन देखत तिय मुख चंद ॥ ४ ॥

---

१ तोते। २ दैत्य।

कवित्त । छितिपाल न कौन तके जिन को कुचकुंभन घोर घटा न करै । बिधि बेद बखानत कौन जिन्है मुनि तानत भाम रटा न करै ॥ सुर सेवक को फुर है जिनके उर काम कृसान मटा न करै । अस को जुत अच्छर है जिनको तिय मारि कटाच्छ कटा न करै ॥ ५ ॥

जाहि कहैं सब बेद पुकारि ऋषीसुर होहि धरे मद ऊरन ।
जा करनी मन माहिं बिचारि सदासिव आपु चबात धतूरन ॥
बंदत है छितिपाल तिन्हैं सब काल सबै दिसि ते दुरि दूरन ।
पावक में जल में महि में ससि में रबि में सबमें परिपूरन ॥ ६ ॥

बरवै

पके केस मुख रद[1] बिन सिकुरे अंग ।
गये अनंग न तृष्णा तजी तरंग ॥ ७ ॥
भूमि सयन फल भोजन बलकल चीर ।
को धनपति के आगे रहै अधीर ॥ ८ ॥

२००. छेम कवि (१)

ऊँचो कर करै ताहि ऊँचो करतार करै ऊनी[2] मन आनै दूनी होत हरकति है । ज्यों ज्यों धन धरै सैंतै त्यों त्यों बिधि खरो खचैं लाख भाँति धरै कोटि भाँति सरकति है ॥ दौलति दुनी में थिर काहू के न रही छेम पाछे नेकनामी बदनामी खरकति है । राजा होइ राइ होइ साह उमराइ होइ जैसी होति [3]नेति तैसी होति बरकति है ॥ १ ॥

रंग है आनँद को सहजै निहचै करि जानौ कि खात न भंग है ।
भंग है दारिद को तेहि के छन में जिन काम को कीन्हों अनंग है ॥
नंग है अंग बिभूति सों हेतु औ जोग सों नेतु कँपर्द[4] पिसंग[5] है ।
संग है अंबिका छेम सदा औ जटा में बिराजत गंग-तरंग है ॥ २ ॥

---

१ दाँत । २ कमी । ३ नियत । ४ जटाजूट । ५ मटमैले रंग का ।

२०१. छेमकरण ब्राह्मण (२)

ज्ञानी उपासक ध्यानी बड़े नित नेम निबाहि सुदान दये हैं।
जानै सुनै गुन ज्ञानै गुनै गुनगाहक साधक सिद्ध भये हैं॥
जोग बिचार बिराग हैं छेम सु केतिक तीरथ पंथ गये हैं।
संत पुरातन हैं तो भले पर जौलौं नये नहिं तौलौं नये हैं॥ १॥
अंबुज कंज से सोहत हैं अरु कंचन कुंभ थपे से थये हैं।
गोरे खरे गदकारे महा बटपारे लसे अरु मैन छये हैं॥
ऊँचे उजागर नागर हैं अरु पीय के चित्त के मित्त भये हैं।
हैं तो नये कुच ये सजनी पर जौलौं नये नहिं तौलौं नये हैं॥ २॥

२०२. छबीले कवि

पद

मुकुट माथे धरे खौर चंदन करे माल-मुक्ता गरे कृष्ण हेरे।
पीतपट कटि कसे कान कुंडल लसे निसि दिना उर बसे प्रान मेरे॥
मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी लै कनक दोहनी खरिक नेरे।
लाल लोचन बने ललित रस में सने मैन से अनगने ग्वाल टेरे॥
किंकिनी काञ्चनी देत सोभा घनी देखि कौस्तुभ मनी सुर छकेरे।
प्रभु छबीलो रँगीलो रसीलो अली सो लगन की मगन में बसेरे॥ १॥

२०३. छैल कवि

जमुना के तीर कौन पावत नहान चीर चुप ही चोराइ लेइ रूखनि धरत हौ। कहै कवि छैल केते जानत हौ छंदबंद संद कहा कहौ नंदहू को निदरत हौ॥ हम वै न होहिं एती बात की सहनवारी बिना फल पाये तुम कैसे गुदरत हौ। पाइ खोरि भीरी चट छोरि लेहिं बीरी अब इहाँ कारी-पीरी आँखैं कौन पै करत हौ॥ १॥

२०४. छीत कवि (१)

तारे भये कारे तेरे नैना भये रतनारे मोती भये सीरे तू न सीरी[१]

---

१ लाल। २ ठंढी।

अजहूँ भई । छीत कहै पीतमै चकैया मिली तू न मिली गैया तरु छूटीं तेरी टेंव ना छुटी दई ॥ अरुनई नई तेरी अरुनई नई भई चहचही बोली आली तू न बोली एवई । मंद-छवि भये चंद फूले अरबिंदबृंद गई री बिभावरी[1] न रिस रावरी गई ॥ १ ॥

२०५. छीत स्वामी (२) गोकुलस्थ

पद

रूपस्वरूप श्रीबिट्ठलराय ।
बेदबिदित पूरन पुरुषोत्तम श्रीबल्लभ गृह प्रकटे आय ॥
लटपटी पाग महारस भीने अति सुंदर मन सहज सुभाय ।
छीतस्वामि गिरिधरन श्रीबिट्ठल अगनित महिमा कही न जाय ॥ १ ॥

२०६ छेमकरन कवि ब्राह्मण धनौलीवाले

नरिन्द छन्द

भै जिवनार तयार तरह ते रघुवर करत बियारी ।
अनुज समेत मनुजपति-मन्दिर सुर-नर-मुनि-मन-हारी ॥
बैठि बरासन[2] आसन पासन बासन की अधिकारी ।
गेडुआ थार कटोर कटोरी पंचपात्र अरु झारी ॥ १ ॥

२०७. छेदीराम कवि

(कविनेह पिंगल)

दोहा—कमलज कमलज[3] कमलजा[4], जाये तिय तिय[5] बंद ।
गोज गोज कह गोज भव, करु भव करु भव छंद ॥ १ ॥
पद हिय सिय पिय पिय पिया, मंगल मंगलगेह ।
तामें रत छेदी रहत, कबिहित कृत कबिनेह ॥ २ ॥
मकर महीना पच्छ सित, संवत सर हर केह ।
जुग ग्रह बसुजिव कुज दिवस, जन्म लियो कबिनेह ॥ ३ ॥

२०८. छेम कवि बंदीजन डलमऊवाले

थरनि थरनि थरहरत डरनि रथ तरनि पलट्टहु ।

---

१ रात्रि । २ श्रेष्ठ आसन । ३ कमल से पैदा । ४ ब्रह्मा । ५ लक्ष्मी ।

धूमधाम ध्रुवलोक सोक सुरपति अतिपट्टहु ॥
गवन रहित सम्मीर नीर नदनदी निघट्टहु ।
करिनिकर डिकरि चिकरि कहरि खैबर पर चट्टहु ॥
हिमगिरि सुमेर कैलास डिगि जब हहरि हहरि संकरहस्यो ।
छेम कोपि हजरतअली जब जुल्फकार कम्मर कस्यो ॥ १ ॥

२०९. जगतसिंह बिसेन देउतवाले
(पिंगल)

मोरपखानि बनो सिर मौर लसै अति केसरि भाल अनूप ।
छुटे झलकैं स्रुति कुंडल मोतिन माल गरे लखिये सुरभूप ॥
पीतपटी तन अंगद बाहु कलानिधि सों मुख है अनुरूप ।
सुबेनु बजावत आवत साँझ गये गड़ि नैनन लीन न रूप ॥ १ ॥
सीस लसै ससि सी नखरेख खरी उपटी उर पै नगमालै ।
पेंच खुले पगरी के बने जनु गंग-तरंग बनी छबिजालै ॥
जागत रैनिहु के अलसाय कियो बिषपान रहे दृग लालै ।
देखहु अंग सखी हरि को हर[2] को धरि आवत रूप रसालै ॥ २ ॥
तन सोहत नील दुकूल[3] गरे अरु त्यों मनिमाल बिराजत सुंदर ।
बिबि कुंडल कानन हीरा जरे अरु फैलि रहे कच आनन ऊपर ॥
नवरत्न भुजान भरी छबिपुंज बने कल कंकन कंचन के कर ।
बिन अंजन रंजन कंजन-भंजन खंजन-गंजन नैन मनोहर ॥ ३ ॥

(साहित्यसुधानिधिग्रन्थे)

बरवै

श्री सरजू के उत्तर गोंड़ा ग्राम ।
तेहि पुर बसत कबिनगन आठौ जाम ॥ १ ॥
तिन महँ एक अलप कबि अतिमतिमंद ।
जगतसिंह सो बरनत बरवै छंद ॥ २ ॥

---

१ भमरी । २ शिव । ३ वस्त्र।

सासु एक सो आँधरि पिय परदेस ।
बिन कपाट घर सूनो रैनि अँदेस ॥ ३ ॥
गरजत सिंह सति इहि बन में आय ।
रेवाकूल सुन्यो है स्रवन बनाय ॥ ४ ॥
स्वस्थ अचल पुरइनि पै बक ठहरात ।
जनु पन्नाभाजन में दर दरसात ॥ ५ ॥
बिद्या बिबिध बिराजत सील न हीन ।
नृप तुव सभा बढ़त छबि खल बिन कीन ॥ ६ ॥
बिरति[1] जहाँ द्वादस पै पुनि मुनि[2] अंत ।
रीति यहै बरवै की कहै अनंत ॥ ७ ॥

कबित्त । हालि हालि हुलसि हुलसि हँसि हँसि देखै बदन बतीसी मीसी दीसी दिनराति है । जामा पायजामा सब सामा की चलावै कौन जगत जनानन की सीखी सब घात है ॥ लोक की न लाज परलोक को करै न काज ठाकुर कहाइ कहा चोरी उतपात है । गनिका ज्यों डोली पर बैठत खटोली पर चालु पर चोली पर बोली पर मात है ॥ ८ ॥

२१०. जवाहिर भाट (१) बिलग्रामी

गोपी अन्हाइ चलीं गृह को रहे गोप सबै तकि श्रीनँदनंदहि ।
मारग में चलि राधे कह्यो गिरी बेसरि मेरी कियो छलछंदहि ॥
ढूँढ़न को गई लौटि जवाहिर जानै नहीं कछु या फरफंदहि ।
सीस नवाइ कै हेरै जले तले हेरै लगी हँसि श्रीब्रजचंदहि ॥ १ ॥

२११. जवाहिर भाट (२) श्रीनगर बुंदेलखण्डी

चंचल तुरंग मन रथ अभिलाष चढ़ि चलहु सधीर गज सजि

---

१ बिश्राम । २ सात पर ।

सब साज सों । कहत जवाहिर सनेह की कवच कासि सोच पोच नाखि हठ रोपै पग लाज सों ॥ नूपुर नगारे आनि पहरैं निसान भान उदै लौं भिरौंही कुच भटन दराज सों । धारि पल ढाल करबाल कै कटाच्छन को रतिरन जीतौ आजु बीर ब्रजराज सों ॥ १ ॥ कंचन भूमि के बीच विराजत मानौ अभूत जराय जरो है । स्याम सपूल कलिंदजाकूल सु पत्र सुपेद जु फूल हरो है ॥ आजुलौं ऐसो न देख्यो सुन्यो ब्रज में जिहि आनि प्रकास करो है । कौतुक एक बिलोकिये आनि कै अंब कदंब की डार फरो है ॥ २ ॥

२१२. जगन कवि

अंग अंग औघट न घाट है बनाइबे को लालन को तृषा है अधर-रस-पान की । भौंह की मरोरनि में भौंर से परत जात त्यौरी की तरंग से निठुरता निदान की ॥ जगन गहत सौं न उतरन थाह किहूँ ऐसी गरबीली है हठीली बृषभान की । रिस के प्रवाह रस-कूलन बिदारे जात नदी सी उमड़ि चली मानिनी के मान की ॥ १ ॥

२१३. जनकेश भाट मऊ बुन्देलखण्डी

सरद के इंदु सम आनन अमंद अति बपु अरबिंद पै मलिंद मन नाह को । दृगन दराज छबि छाज छकि रहौ छैल छाजत छटान छेम छिति पर छाह को ॥ कहै जनकेस कबि जाहिर जहान बीच जालिम जरूर जौन गहत गुनाह को । मनमथमंदिर पुरंदर तिया ते सुचि सुंदर सरूप सो न करै गलबाँह को ॥ १ ॥ राजत बिभूतिमान गंगाजल-प्रिय सदा सोहत नगन भाव भावत गनेस को । राखै द्विजराज सान दान में प्रसिद्ध बड़े जाँचिबे को तामें मन चाहै सब देस को ॥ आनन के आगे आनि गावत अलीसगन पावत दरस सबै बरनौ सुदेस को । कीनो है कबित्त हम राजा रतनेसजू को करि को कहत कोऊ कहत गनेस को ॥ २ ॥

२१४. युगुलकिशोर कवि (१)

राधा ठकुरानी पास बानी लिये पानी खरी आस पास घेरी चौंर ढारैं देवदार सी। अंगराग अंगन लगाइबे को ल्याई रति अंबर अमल लिये फूलन के हार सी ॥ जुगुलकिसोर कहै नन्द के किसोर जहाँ जोरे कर जोहै जोति जोबन की चार सी। मोद के बढाइबे को हर को हरा है लिये एक हाथ फूल-गेंद एक हाथ आरसी ॥ १ ॥

२१५. राजा युगुलकिशोर भट्ट (२) कैथलवासी

(अलंकारनिधिग्रंथे)

दोहा—ब्रह्मभट्ट हौं जाति मैं, निपट अधीन निदान।
राजा-पद मोको दियो, महमदसाह सुजान ॥ १ ॥

तेरो मुख चन्दसम जोति सों उजागर है तेरे नैन सम तेरे नैन लहियतु है। कमल से कर लाल कर से कमल सोहैं भौंह-सी कमान नैन बान कहियतु है ॥ देखत नखन कंज लोचन सरोज अलि मृगन उरंग काम हय चहियतु है। मुकता सहित बैन नखतनजुत चन्द मानौ ससि देखि मुख-सुधि गहियतु है ॥ १ ॥

नैन नहीं कमल हैं जानि कै चकैं[2] चकोर चन्द चाहि रहै तेरो मुख है कि चन्द है। सोहत बिराजमान माँग टीको ससि सम राति माँह रबि लखे बाढ़त अनन्द है ॥ ओसभरे कंज पर अलि मँड़रात देखु चाहत मिलन लोभि सुख रसकन्द है। फूलत कमलनैन कंजनैनी कुंजन में फूले देखु तरु जहाँ भर्‍यो मकरन्द है ॥ २ ॥

चाँदनी के राजै चन्दमुख छबि करि छाजै सोहत है स्याम और स्यामघन साँझ में। धन्य है भ्रमर जो सरोजरस लीबो करै ओठ-रस जोई सोई सुधा इन्दुमाँझ में ॥ नैन तौ कमल से पै सरस

---

१ आनन्द। २ चकित होते हैं।

कटाच्छन सों तीखी चितवनि संग प्यारे लगैं झाँझ[1] में। रूप गुन सुन्दर औ चातुर अनेक भाँति बिनु कोखि सीरी कब लागै मन बाँझ में ॥ ३ ॥

२१६. जनार्द्दन कवि

जेते छन्द जानत हौ तेते सब जानत हौं नये नये छन्द-बन्द कहाँ लौं बनाइहौ। सुकबि जनारदन बाहिर ना कढ़ौंगी तौ जोरावरी दौरि कहा घर ही में आइहौ ॥ हारि मानि लेहौ तौ बनैगी बात मोहनजू चतुरन आगे चतुराई का चलाइहौ। छल सों छली है तैसे मोहूँ को छलन चाहौ छलन छबीले छाँह छुवन न पाइहौ ॥ १ ॥

२१७. जैनुद्दीनअहमद कवि

ऐसी निसि औसर के बीच में जु आवै कोई तासों को दुरावै दीठि ऐसो को कठोर है। हाथऊ धरैंगे अंक मालऊ भरैंगे हमैं भावै सो करैंगे तुम्हैं यामें का मरोर है ॥ जैनदीन अहमद पीठि है तिहारी तो पै राखो वहि डर जो चलै न कछु जोर है। पीठि है तिहारी पै हमारी है हमारे जान काहे ते कि रूठे में हमारी होत ओर है ॥ १ ॥

२१८. जयदेव (१) कम्पिलानिवासी

कौन बुधि दई निरदई ऐसे दई उन्हैं फाजिलअली सों जाइ जंग जुरो रन में। केहरि के सनमुख जयदेव करी[2] कहा करी तैसी पाई पिय खोइ गये खन में ॥ साँपन सकाती पग डाके भुव ताती वै तो पीटि पीटि छाती पछिताती सो वे मन में। रह्यो नाहिं गोती मिलि बैरिबधू ओती करि कन्दर करोती ऐसी रोती जाती बन में ॥१॥

२१९. जयदेव कवि (२)

बिद्या बिन द्विज औ बगीचा बिन आमन को पानी बिन सा-

---

१ गुस्से में। २ हाथी।

वन सुहावन न जानी है। राजा बिन राजकाज राजनीति सोचे बिन पुन्य की बसीठी कहौ कैसे धौं बखानी है॥ कहै जयदेव बिन हित को हितू है जैसे साधु बिन संगति कलंक की निसानी है। पानी बिन सर जैसे दान बिन कर जैसे सील बिन नर जैसे मोती बिन पानी है॥ १॥

२२०. जैतराम कवि

रहे राम रौना न श्रीकृष्ण बौना सबै जन्म लै लै कहाँ धौं सिराने। रहे पंडवा कौरवा जादवा ना कहाँ धौं गये ते नहीं जात जाने॥ कहै जैतरामै अनेकै गनै को लखौ रे सबै ये जिमी काल खाने। धरा के किनारे यहै जो सुनो रे फरे ते झरे औ बरे ते बुताने॥ १॥

२२१. जानकीप्रसाद पँवार (१)

(नीतिविलास)

बन्दउँ अनन्दकन्द कीरति अमन्द चन्द दरन कुफंद दुन्द घायक कुमति के। सिद्धि-बुद्धिदायक बिनायक सकल लोक सोहैं सब लायक औ नायक सुमति के॥ कोमल अमल अति अरुन सरोज ओज लज्जित मनोज लखि दानी सुभ गति के। बिघ्नहरन मुदमंगलकरन वारे असरन सरन चरन गनपति के॥

२२२. जानकीप्रसाद (२) कवि

दुसह दराज सीत जोर कै समाज करै अंग को कसाला ताकी बिपति बिदारिये। साहसी समर दानी दया-धर्म-वीर चारो नाम प्रतिपाल जानि पाँचो चित्त धारिये॥ लायक लवनि है न जानकीप्रसाद दूजो बिद्या के निधान जाकी जुगुति बिचारिये। राजा सिरताजसिंह राज-मौज माँगत है तीनौ तुक[1] आदि एक बरन सँभारिये॥ १॥

---

१ कवि तीनों चरणों के प्रथम अक्षर बतलाकर दुशाला माँगता है।

२२३. जानकीप्रसाद कवि बनारसी (३)

(रामचन्द्रिकातिलक)

जिन को अवलोकत ही मनरंजन कंजन की रुचि दूरि बहैये ।
मधुपालिन मालिन की दुति सालिन आलिन दासन के मन ठैये ॥
निधि सिद्धि असेस के धाम सदा सुख पूरन पूरन पुन्यन पैये ।
पग बंदन कै गिरिजापति के रघुनंदन राम की कीरति गैये ॥ १ ॥

२२४. जयकृष्ण कवि

(छंदसारपिंगल ग्रन्थे)

संकर छन्द

सारंग दोधक छंद कहिये और मोतीदाम ।
तोटकौ तारलनैन जानहु फिरि भुजंगी नाम ॥
कामिनी मोहन जानिये मैनावली सुन राज ।
बरवानिका मौक्तिका सोहै संखनारी आज ॥
मालती तिलका बिमोहा दोहरा गानि आन ।
सोरठा माहा उगाहा भानि चुल्लिका पहिचान ॥
चौपई और अरिल्ल तोमर देखिये मधुभार ।
अनुकूल हाकलि चित्रपादै औ पवंगम धार ॥
आसावरी पद्धरी कहिये फिरि कुवैया जान ।
संकर त्रिभंगी द्विपदृठा मरहठा फेरि बखान ॥
लीलावती उपमावली गीया सु पंडी होय ।
रोला कुँडलिया कुंडली भानि रंगिका गनि सोय ॥
रंगी घनाक्षर दूमला यो मत्तगयंद गनेव ।
करखा बखानौ झूलना जैसे सवैया लेव ॥
छप्पै बतायो फेरि तोटक छंद बावन पाय ।
सबै रूप बखानि ग्रंथन दियो द्विव्य दिखाय ॥ ५२ ॥

२२५. जमाल कवि

दोहा—बायस[1] राहु भुजंग हर[2], लिखति बाल ततकाल ।
फिरि फिरि मेटत फिरि लिखत, कारन कौन जमाल ॥ १ ॥
आजु अमावस सर्बघट, ससि भीतर नँदलाल ।
बीचहि परिवा है रहो, कारन कौन जमाल ॥ २ ॥
तृषावन्त भइ कामिनी, गई सरोवर बाल ।
सर सूख्यो आनँद भयो, कारन कौन जमाल ॥ ३ ॥
सजि सोरह[3] बारह पहिरि, चढ़ी अटा यक बाल ।
उतरी कोयल बोल सुनि, कारन कौन जमाल ॥ ४ ॥
मालिनि बेंचत कमलको, काहे बदन छपाइ ।
या को अचरज कौन है, कहु जमाल समुझाइ ॥ ५ ॥
नयन किलकिला पंखपल, थिरकि तरुनि तन ताल ।
निरखि परे बिबि मीन तकि, फिरि निकसे न जमाल ॥ ६ ॥
मन के मनसूबा सबै, मनहीं माहिं बिलाहिं ।
ज्यों पानी के बुलबुला, उठि उठि बुझि बुझि जाहिं ॥ ७ ॥

२२६. राजा यशवन्तसिंह बघेले राजा-तिरवा

(शृंगारशिरोमणिग्रन्थे)

लै सपने अपने मन की दुलही उलही छबि भाग-भरी सी ।
अंक निसंक सो लै परयंक लला मुख चूमि सु चारु धरी सी ॥
यों लपटी चपटी हिय सों जसवंत बिसाल प्रमूर्न-छरी सी ।
नैनन के खुलतै वह मूरति पास परी उड़ि जात परी सी ॥ १ ॥
छूटी लटैं लटकैं मुख पै जलबिंदु लसै मनो पोहत मोती ।
बोलत बोल तमोल बिराजत राजत हैं नथ में ससि-गोती ॥
ओज सरोज उरोज कली सु भली त्रिबली-तट आनँद ओती ।

---

१ कौआ । २ शिव । ३ सोलह शृंगार । ४ फूलों की छड़ी ।

जोरति नेह मरोरति भौंह सु चोरति चित्त निचोरति धोती ॥ २॥
हेरो तौ हेरो न जात भटू हरि हेरे बिना नहिं लागत नीको।
नैन जुरैं न मुरैं न भली बिधि कौतुक का सों कहौं यह जी को॥
को समुझाइ कहै जसवंत हौं ताको करौं बलि पौरि जनी को।
जीव कली कहे लाज तुरंग कहौ कहिबो करौ लाज कै जी को ॥३॥

लाँबी लाँबी लटैं लोनी लटकत लंक लौं लौं लोक लागि लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूटि गये सकल सिंगार हार टूटि गये लूटि गये लपटि भुअंग अंग कोरि कोरि॥ सकुचि सयानी अँगरानी प्रानप्यारी बाल प्यारे जसवंत के निकट तन तोरि तोरि। तोरि तोरि चित हित जोरि जोरि लाड़िले सों छोरि छोरि कंचुकी जम्हात मुख मोरि मोरि ॥ ४ ॥

(शालिहोत्रग्रन्थे)

जंघै जमाय दुवौ घुटुवान लौं पीडुरी ढीली दुहूँ दिसि चालै।
कानन मध्य में दीठि रहै थिरता करि कै कटि नेकु न हालै॥
जानै तुरंगम के मन की गति चाहिये ता बिधि चाबुक घालै।
सोई सवार कहै जसवंत बचाये चलै जो तमाल दिवालै ॥ १ ॥

(भाषाभूषणग्रन्थे)

दोहा—बिघनहरन तुम हौ सदा, गनपति होहु सहाइ।
बिनती कर जोरे करौं, दीजै ग्रन्थ बनाइ॥

२२७. जीवनाथ भाट नवलगंजवासी

(वसंतपचीसी)

दोहा—अली मान तजि सेइये, हिलिमिलि प्यारे कंत।
सब जग मनभायो भयो, हाकिम नयो बसंत ॥ १ ॥

कबित्त—मैन महराज करि दीन्हो है बिहाल हाल तेई तरु नाथ कुलदल जैतवार है। कोकिल है कानोगोह चौधरी चवाई चंदा भौंरन बिसंदा केते पैगत न पार है॥ टेसू कोतवाल जाको

रूप है अराल काजी पौन इनसाफ है सुगन्ध को अधार है । आली मिलु बालम अजौं न तोहिं मालम सु आयो जंग आलम बसंत फौजदार है ॥ १ ॥

२२८. जीवन कवि (१)

छैल ब्रजचंद एतो छल करि रहे गैल राधिका नवेली बनी चंपे की कली नई । वाही खोरि[1] आवै हरि हरखि निरखि फूले आजु भेंट ह्वै है कवि जीवन भली भई ॥ ताही मग आवत अचानक ही परी दीठि मुरि मुसक्याइ उन दाहिनी गली लई । कहि रहे कान्ह नेक ठाढ़ी होहु सुने जाहु सुनी है जू सूनी है जू कहति चली गई ॥ १ ॥

२२९. जय कवि भाट लखनऊ के

जब तक है परदा ख़्वाब ग़फ़लत का आँखों पर तभी तक लज्जत बादशाही औ वज़ीरी है । किसी वक़्त चौंक जावै भूलि परदे को उठावै रंग लाल नज़र आवै होत रोशन दिल भँभीरी है ॥ जय कहत जहान बीच निगह सान फीकी कछु भावै नहिं नीकी धुनि नौबत नफीरी है । तब आप हुआ मीरी क्या पश्म है अमीरी जिन्हें मुसाहबी न भावै तिन्हें साहिबी फ़क़ीरी है ॥ १ ॥

२३०. युगराज कवि

सरस लगाई लाख लाइ लाइ पीरन सों ताइ ताइ नेह सों जतन करि जोरा मैं । एक एक चूरी चतुराई की बनाइ करि भली भाँति बहुरि गहीरे रंग बोरा मैं ॥ लीजिये पहिरि आपु चोप सों बलाइ लेउँ लागिहै निपट जुगराज अंग गोरा मैं । जाहि मनभाई सब चाहती लुगाई सोई लाई हौं तिहारे हेतु आछे लाल जोरा मैं ॥ १ ॥

---

[1] गली ।

२३१. जगदेव कवि

बैस तरुनाई रूप राजै अरुनाई तैसी सुन्दरता पाई सोभा सची सम सचकी। रति तो रती सी रंभा लंक को न संक जाके कहै जगदेवजू रहै सो देखि भँचकी[1]॥ सावन सुहाए मनभावन के संग पटपदुली पै पग दै कै लेन लागी मचकी। झूला को झुकाय दई झोंक एकबारन सो बारन के भार कैयो बार लंक लचकी॥ १॥

२३२. जगन्नाथ कवि (१)

भव-भय-खेदन की बेदन मिटाइबे को हरि चारो बेदन को सार काढ़ि लीता है। महामोहभीता भये त्रिगुनअतीता जाके सुनत ही होत ब्रह्मभान को उजीता है॥ कहै जगन्नाथ पाइ निजरूपमीता होत भूत-भ्रम रीता लागै ज्ञान को पलीता है। यहै जग जीता करै कुलन पुनीता मोख प्रीति उपजीता ते अधीता जिन गीता है॥ १॥

२३३. जगन्नाथ (२) अवस्थी सुमेरपुरवाले

तार्‍यो है निषाद पहलाद को उबार्‍यो सुद्ध सादर अहल्या करी पादरज लायकै। कहै जगन्नाथ हाथ धरि गिरि ब्रजनाथ पाल्यो ब्रज पथ तैं पुरंदरै[2] लजाय कै॥ बार न करी है नेकु बारनै[3] के तारन मैं कारन कहा है जगतारन कहाय कै। जोवँत[4] इतै हौ नहीं सोवत कितै हौ प्रभु ऐसही बितैहौ की चितैहौ चित्त लाय कै॥ १॥

२३४. जगनन्द कवि

जौ लौं तेरी आवँ[5] तौ लौं हरि की शरन आव करि लै उपाव कृष्णनाम में अटकि जा। बन्यो तेरो दाँव चितचाव अति भाव ही सों गोबर्धननाथ-रूप-माधुरी गटकि जा॥ ममता बहायँ काम क्रोध को

---

१ मौचकी। २ पढ़ी। ३ हाथी। ४ देखते। ५ आयु। ६ कूर कर।

दहाँय प्रेमपंथ ही में आय दुखदुन्द को पटकि जा। कहै जगनन्द काहे होत मतिमंद अब छाँड़ि सब फंद ब्रजभूमि को सटकि जा॥ १॥

२३५ जोइसी कवि

रुचि पाँइ झवाँइ दई मिहँदी जिहि को रँग होत मनो नग है।
अब ऐसे में स्याम बुलावैं सखी कहि क्यों चलौं पंक[2] भयो मग है॥
अधराति अँधेरी न सूझै कछू भनि जोइसी दूतिन को सँग है।
अब जाउँ तौ जात धुयो रँग है रँग राखौं तौ जात सबै रँग है॥ १॥

२३६. जीवन कवि (२)

सटकी सभा की मति लटकी कुल की गति हटकी न काहू सब ही की जीह हटकी। झटकी दुसासन सु सबकी कटा सी भई चटकी सी है कै तिय देखिये सुभट की॥ तू ही तू ही रट की सु तू ही जानै घट की पै मटकी सी है कै आस चरननतट की। जीवन निपट कीनी पट की न दीनानाथ पति लाज पटकी[3] तौ तुम्हैं लाज पट की॥ १॥

२३७. जसवन्त (२) कवि प्राचीन

भादौं मास सघन अकास के प्रकासन को घोक-निरँघोकनि को झंझापौन झोंक को। पुरुष पुरान आन प्रगट्यो निदान कान्ह सोखन कलेस तात-मात-उर सोक को॥ बेदन बखान्यो जसवंत उर आन्यो जग दुखन घटान्यो नरदेवन के थोक[5] को। जनसुख-दायक भो भूतल को नायक भो घायक[6] भो कंस को सहायक त्रिलोक को॥ १॥

२३८. जगजीवन कवि

बैठी हुती सबिलास बिलास में हास ही सों हलरावत[7] जी को।
ईस के सीस में डीठि परी सु सखी है डरी मनो देखत पी को॥

---

१ जलाकर। २ चहला। ३ त्यागी। ४ घोष (ब्रज) में निर्घोष यानी शब्द। ५ समूह। ६ मारनेवाला। ७ बहलाती।

श्रीजगजीवन गंगहि जानि मिली अरधंग हिली हर ही को ।
सौति को संग बिचारि मनों पिय की परतीति न पारबती को ॥१॥
खेलत एक समै ब्रजबाल सों नन्दलला रस माहँ रुसाई ।
गै थकि आवत जात सखी पर एकहु भाँति न जात मनाई ॥
आपुनही पिय आतुर ह्वै हँसि कै जगजीवन कंठ लगाई ।
आधिक बात कही तुतरात पै आधिक में अँखियाँ भरिआई ॥ २ ॥

२३६. जदुनाथ कवि

बेर बेर गये ते अधिक गहराति जाति राति तौ सिराति नाहीं भारी भये रहौ जू । पल के बियोग पिघलाने जात मोम के ज्यों धीरे धीरे पीर परै पीर नेक सहौ जू ॥ जो न पतियाउ जदुनाथ मेरे साथ चलौ बोलत न बनि ऐहै ओझिल[2] ह्वै रहौ जू । पाँय ना गहन देति पास ना रहन देति बात ना कहन देति कहा करौं कहौ जू ॥ १ ॥

२४०. जगदीश कवि

कुंडलरूप सरूप बिराजत औ बिच मोती की जोति प्रकासी ।
श्रीजगदीस बिलोकत आपु गड़ी हिय में नहिं जाति निकासी ॥
जाके लखे ते फँसे सनकादिक एक बच्यो सबमें अबिनासी ।
छाजत प्यारी की नासिका में अली नत्थ किधौं मनमत्थ की फाँसी ॥ १॥

२४१. जलालुद्दीन कवि

आदि के अंक बिना जग जीवत मध्य बिना जग हीन कहावै ।
अंत बिना सगरो जग है बस जाहिर जोति सु यों छबि छावै ॥
अंक जिते जग लोक जलालदी जो मनसा तिय को अति भावै ।
स्याम के अंग में रंग प्रसिद्ध है पण्डित होय सो अर्थ बतावै * ॥१॥

२४२. जयसिंह कवि

कीधौं मोर सोर तजि गये री अनेक भाँति कीधौं उत दादुर[3]

---

१ कम होती है । २ ओट में छिपकर । * यह पहेली है—काजल ।
३ मेढ़क ।

न बोलत नये दई । कीधौं पिक[1] चातक चकोर कोऊ मारि डारे कीधौं बकपाँति कहूँ अंतगत है गई ॥ झींगुर झिगारैं नाहिं कोकिला उचारैं[2] नाहिं बैन कहै जयसिंह दसौ दिसा स्वै गई । जारि डारे मदन मरोरि डारे मोर सब जूझि गये मेघ कीधौं दामिनी सती भई ॥ १ ॥

२४३. जुगुल कवि

पद

दोऊ गल बहियाँ धरे हैं ॥

रति रतिपति[3] मति मोह-दलित करि ललित कदंब तरे हैं ।
घन दामिनि जामिनिकर[4] की दुति तन महँ मंजु अरे हैं ॥
कमल मीन मद अंजन खंजन छबि चख चारु भरे हैं ।
नील पीत पट मीत अलौकिक सकल सिंगार करे हैं ॥
मंद मंद मुसकात परसपर प्रेम के फंद परे हैं ।
छतियाँ जुगुल[5] जुगुल सियरावत[6] बतियाँ करत खरे[7] हैं ॥ १ ॥

२४४. जगन्नाथदास

पद

पिय औचक मूँदेरी पाछे ते नैन ।

हौं जु निभरमी[8] बैठी अछन[9] अछन पग धरत धरनि पर आवत जाने मैं न ॥ हौं इतने ही चौंकि परी आली छतियाँ धीर धरै न । जगन्नाथ कबिराय के प्रभु रीझि हँसे तब हौं हूँ हँसी वह सुख कहत बनै न ॥ १ ॥

२४५. जैत कवि

तीर कमान गही बलमंडक मार मची घमसान मचायो ।
जोगिनी रज्जकै भारी भई सिव संकर मुंड की माल लै आयो ॥

---

१ कोयल । २ उच्चारण करती । ३ कामदेव । ४ चंद्र । ५ दोनों । ६ ठंडी करते । ७ खड़े । ८ बेभरम । ९ धीरे-धीरे ।

भीम समान को जुद्ध कियो कबि जैत कैह जग में जस पायो ।
साह के काज पै सूर लस्यो सिर टूटि पस्यो धड़ धाँरु को धायो॥ १ ॥

२४६. जलील सैयद अब्दुलजलील बिलग्रामी

बरवै

अधमउधारन नमवा सुनि करि तोर ।
अधम काम की बटिअँ[2] गहि मन मोर ॥ १ ॥
मन बच कायक निसिदिन अधमी काज ।
करत करत मनु भरिगा हो महराज ॥ २ ॥
बिलगराम कर बासी मीर जलील ।
तुम्हरि सरन गहि गाढ़े ए निधिसील ॥ ३ ॥

२४७. जशोदानंदन कवि

(बरवै-नायिका-भेद)

मैं लिखि लीनो चैतहि तेरसि पाइ ।
संबत हय बिबि कर कै ब्रह्म मिलाइ ॥
बरवै छंदहि बरनन नवला-भेद ।
कृत्त जसोदानंदन कबि को सबद अभेद ॥
बालमु हेरि हियरवा उपजै लाज ।
पाख मास मों जानि न परि है गाज ॥
तुरुकिनि जाति हुरुकिनी अति इतराय ।
छुवन न देइ इजरँवा[3] मुरि मुरि जाइ ॥
पिय से अस मन मिलयो जस पँय[4] पानि ।
हंसिनि भई सवतिया लै बिलगानि ॥
पीतम तुम कचलोहिया हम गजबेलि ।
सारस कै अस जोरिया फिरहुँ अकेलि ॥

---

१ रण को। २ राह । ३ इज़ार बंद । ४ दूध ।

२४८. जुगुलप्रसाद चौबे

(दोहावली)

पट भूषन अनुराग सहज सिंगार जुगुल बर।
रसनिधि रूप अनूप बैस ऐस्वर्य्य गुनन गुर[1] ॥
लीला षटऋतु दान मान मंजुल मनमोदी।
भोजन सयन बिहार करै ललिता की गोदी ॥ १ ॥

२४९. जनार्दन भट्ट

(वैद्यरत्न)

दोहा—नारदादि सेवत जिन्हैं, पारद[2] बिसद प्रकास।
नारद बुध बंदन करैं, हिये सारदा बास ॥ १ ॥

२५०. टोडर कवि राजा टोडरमल खत्री

गुन बिन कमान जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे मान बिन दान जैसे जल बिन सर है। कंठ बिन गीत जैसे हेत बिन प्रीति जैसे बेस्या रस-रीति जैसे फल बिन तर[3] है ॥ तार बिन जंत्र जैसे स्याने बिन मंत्र जैसे पुरुष बिन नारि जैसे पुत्र बिन घर है। टोडर सुकबि जैसे मन में बिचारि देखौ धर्म बिन धन जैसे पंछी बिन पर है ॥ १ ॥ जार को बिचार कहा गनिका को लाज कहा गदहा को पाँन[4] कहा आँधरे को आरसी। निर्गुनी को गुन कहा दान कहा दालिद्री को सेवा कहा सूम की अरंड की सी डार सी ॥ मद्यपी[5] को सुचा[6] कहा साँचु कहा लंपट को नीच को बचन कहा स्यार की पुकार सी। टोडर सुकबि ऐसे हठी तें न टारयो टरै भावै कहौ सूधी बात भावै कहौ पारसी ॥ २ ॥

२५१. ठाकुर प्राचीन—असनीवाले अथवा बुंदेलखंडी

बरुनीन[7] में नैन झुकैं उझकैं मनो खंजन मीन के जाले परे।

---

१ भारी। २ पारे के समान। ३ वृक्ष। ४ बीड़ा। ५ शराबी। ६ पवित्रता। ७ पलकें।

दिन औधि के कैसे गिनौं सजनी अँगुरीन के पोरन छाले परे ॥
कबि ठाकुर कासों बिथा कहिये हमैं प्रीति किये के कसाले परे ।
जिन लाल की चाह करी इतनी तिन्हैं देखन को अब लाले परे ॥१॥
एक ही सों चित चाहिये और लौं बीच दगा को परै नहीं टाँको ।
मानिक सो चित बेंचि कै जू अब फेरि कहा परखावनो ताको ॥
ठाकुर काम नहीं सबको इक लाखन में परबीन[1] है जाको ।
प्रीति कहा करिबे में लगै करि कै इक ओर निबाहनो वाको ॥ २ ॥
वह कंज सो कोमल अंग गुपाल को सोऊ सबै तुम जानती हौ ।
बलि नेकु रुखाई धरे कुम्हिलात इतौऊ नहीं पहिचानती हौ ॥
कबि ठाकुर या कर जोरि कहै इतने पै बिनै नहीं मानती हौ ।
दृग बान औ भौंहैं कमान कहौ अजू कान लौं कौन पै तानती हौ ॥३॥
सजि सूहे[2] दुकूलन[3] बिज्जुछटा-सी अटान चढ़ी घटा जोवती हैं ।
सुचती हैं सुने धुनि मोरन की रसमाते सँजोग सँजोवती हैं ॥
कबि ठाकुर वे पिय दूरि बसैं अँसुवान सों ह्याँ तन धोवती हैं ।
धनि वै धनि पावस की रतियाँ पति की छतियाँ लगि सोवती हैं ॥ ४ ॥

सामिल में पीर में सरीर में न भेद राखि हिंमति कपाट जो उघारै तौ उघरि जाइ । ऐसो ठान ठानै तौ बिना हू जंत्र मंत्र किये साँप को जहर जो उतारै तौ उतरि जाइ ॥ ठाकुर कहत कछू कठिन न जानौ अब हिंमति किये ते कहौ कहा ना सुधरि जाइ । चारि जने चारिहू दिसा ते चारौ कोने गहि मेरु को हलाय कै उखारैं तौ उखरि जाइ ॥ ५ ॥ बैर प्रीति करिबे की मन में न संक राखैं राजा रंक देखि कै न छाती धकधकरी । आपनी उमंग की निबाह की है चाह जिन्हैं एक सो दिखात तिन्हैं बाघ और बकरी ॥ ठाकुर कहत मैं बिचारि कै बिचार देख्यो यहै मरदानन की टेक बात

---

१ चतुर । २ एक रंग । ३ वस्त्र ।

अकरी। गही तौन गही फेरि छोड़ी तौन छोड़ि दई करी तौन करी जौन ना करी सो न करी ॥ ६ ॥

कहिबे सुनिबे की कछू न हियाँ न कही सुनी को दुख पावनो है।
इनकी सबकी मरजी करिकै अपने जिय को समुझावनो है ॥
कहि ठाकुर लाल के देखिबे को निज मंत्र यही ठहरावनो है।
इन चौचँदहाइन[1] में परि कै समयो यह बीर बरावनो है ॥ ७ ॥
कैसे सुचित्त भये निकसे बिहँसो-है हँसैं सबसे गलबाहीं।
ये छलछिद्रन की छलिता छलि कै जो चलीं छलता अवगाहीं ॥
ठाकुर ते जुरि एक भईं परपंच कछू रचि हैं ब्रज माहीं।
हाल चवाइन के दहचाल[2] सो लाल तुम्हैं ये दिखात हैं नाहीं ॥ ८ ॥

कोमलता कंज ते सुगन्ध लै गुलाबन ते चन्द ते अकास कीनो उदित उजेरो है। रूप रति-आनन ते चातुरी सुजानन ते नीर नीरबानन ते कौतुक निबेरो है ॥ ठाकुर कहत यों मसाला बिधि कारीगर रचना निहारि क्यों न होत चित चेरो है। कंचन को रंग लै सवाद लै सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है ॥ ९ ॥

२५२. ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुरवाले (१)

अरिदल दलिबे को फरकि फरकि उठैं करकि करकि करी[3] करकैं सनाहैं हैं। थरकि थरकि थिर थाँभे ना रहत केहूँ किरबान[4] गहिबे को अति ही उमाहैं हैं ॥ ठाकुरप्रसाद भनै महाबलसिन्धु दोऊ उठती तरंगैं भरी जुद्ध की उछाहैं हैं। कलपलता हैं कबि पंडित को छाँहैं करैं जगतपनाहैं भूप माधौसिंह-बाँहैं हैं ॥ १ ॥

२५३. ठाकुरराम कवि

ज्यों घनदामिनी कौंधे अचानक त्यों हरि संकर-चाप उठायो।

---

१ प्रपंच करनेवाली। २ हलचल। ३ कड़ियाँ। ४ तलवार।

ज्यों मुनि रोखि सरासन कानहि पूछन दाहिन हाथ पठायो ॥
बाम कहै कस भागि चल्यो तब दाहिने उत्तर देत सुहायो ।
ठाकुरराम कहै यह बूझहुँ तोरहिं की धरि देहिं चढायो ॥१॥

२५४. ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी अलीगंज (२)

कला करवाल विभूषित माल विभूषित भूँति[1] मनोहर अंग ।
अनङ्ग[2]अपाकृत ब्याकृत[3] बेष लसै छबि सों सिर गङ्गतरंग ॥
तरङ्ग न रूप न रेख असेख बिलोकत होत महामद भंग ।
भले हित लागि तमोगुन त्यागि रमौ मन पारबतीपति संग ॥ १॥

२५५. ढाखन कवि

ऊधो चले कहँ जोग को आँखन कान्हहि आँखन जी दुखिया हैं ।
छूटे सबै दधि माखन चाखन दाखन[4] खात सुने सुखिया हैं ॥
सोवत सो धवले[5] मनिताखन भूलिगे ढाखन की रुखियाँ[6] हैं ।
खोंसत जे सिर मोर के पाँखन ते अब लाखन के मुखिया हैं ॥१॥

बोलि गयो काग बड़े भोर आजु आँगन में अंगन उमँगि अनुराग सरसत है । बाँहन बहाली बड़े बाजूबंद टूटि जात फूटि जात जोरा सिर सारी सरकत है ॥ नीबी निबुकाइ अधिकाइ सुख ढाखन त्यों आतुर अनङ्ग के उरोज थरकत है । आनन अनंद की ललाई आनि छाई चाही आवै आजु साईं आँखि बाईं फरकत है ॥ २ ॥

२५६. श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी

(रामायण)

चौपाई

बन्दौं गुरु-पद-पदुम-परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
अमियमूरिमय चूरन चारू । समन सकल भवरुज-परिवारू ॥

---

१ ऐश्वर्य । २ कामनाशक । ३ विकृत । ४ अंगूर । ५ श्वेत । ६ रूखे ।

(दोहावली रामायण)

दोहा—रामनाम मनिदीप धरु, जीह-देहरी-द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरहु, जो चाहसि उजियार ॥ १ ॥
रामनाम अवलंब बिन, परमारथ की आस ।
बरषत बारिदबूँद गहि, चाहत चढ़न अकास ॥ २ ॥

(छंदावलीरामायण)

सुंदरी छंद

राजत मेचक[1] अंग महाछबि । गावत हैं स्रुति सेस सबै कबि ॥
बालबिनोदक देव करैं कल । जो सुनतै जरि जाहि महामल ॥

(बरवैरामायण)

बरवै

वंदे चरणसरोजं तव रघुवीर ।
मुनिललना इव नावं मा कुरु धीर ॥
सियमुख सरदकमल जिमि किमि कहि जाय ।
निसि मलीन वह निसिदिन यह बिकसाय[2] ॥

(गीतावलीरामायण)

रघुबर सेतु बँधायो सागर ।
बालि सपूत दूत पठयो लखि बल-बुधि-नीति-उजागर ।
को कहि अंगद क्यों आयो हितु पितु तव ही को गागर ॥
सुनत हँस्यो न सह्यो पग रोप्यो टरयो न गो लघुतागर ।
रावनसभा तेज लै तुलसी आइ जुहारयो नागर ॥

(कवितावलीरामायण)

करकंजन मंजु बनी पहुँची धनुही सर पंकज-पानि लिये ।
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरजूतट चौहट हार हिये ॥
तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप जोग समाधि लिये ।

---

१ श्याम । २ प्रफुल्लित होता है ।

नर सो खर सूकर स्वान समान कहो जग में फल कौन जिये ॥ १ ॥

(सतसैया)

दोहा—अहि रस नाथन धेनु रस, गनपति द्विज गुरु बार ।
माधव सित सियजनम-निसि, सतसैया अवतार ॥१॥
भरन हरन अति अमित बिधि, तत्त्वअर्थ कबिरीति ।
संकेतिक सिद्धांतमत, तुलसी बदन बिनीति ॥२॥
बिमल बोध कारन सुमति, सतसैया सुखधाम ।
गुरुमुख पढ़ि गति पाइ हैं, बिरति भक्ति अभिराम ॥३॥

(हनुमद्बाहुक)

झूलना

जयति हनुमान बलवान पिंगाच्छ सुचि कनकगिरिसरिस तनु रुचिरधीरं । अंजनीसुवन सियरामप्रिय कीसपति दलन निसिचर-कटक बिकट बीरं ॥ दहन सकारिबन महाबुध ज्ञानघन सुजस कहि निगम सब सुमति थीरं । समुझि भुजजोर कर जोरि तुलसी कहै हरहु दुख दुसह भवबिषमपीरं ॥ १ ॥

(रामशलाका)

दोहा—राम-राज राजत सकल, धर्मनिरत नर नारि ।
राग न रोप न दोप दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ १ ॥

(विनयपत्रिका)

राग बिलावल

माता लै उछंग गोविंद-मुख बार बार निरखै ।
पुलकित तन आनँदघन छनछन मन हरखै ॥
पूछत तुतरात बात मातहि जदुराई ।
अतिसय सुख जाते तोहिं मोहिं कहु समुझाई ॥
देखत तव बदन-कमल मन अनंद होई ।

१ पिंगलनेत्र । २ रावण का बाग । ३ वेद । ४ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । ५ अत्यंत ।

कहै कौन सुर नर मुनि जानै कोइ कोई ॥
सुंदर मुख मोहिं देखाउ इच्छा अति मोरे ।
मम समान पुन्यपुंज बालक नहिं तोरे ॥
तुलसी प्रभु प्रेम-बिबस मनुजरूपधारी ।
बालकेलि लीलारस ब्रजजन हितकारी ॥ १ ॥

दीनदयाल दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ।
हिम-तम-करि-केहरि कर-माली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली[1] ॥
कोक-कोकनद-लोक-प्रकासी । तेज-प्रताप-रूप-रस-रासी ।
सारथि पंगु[2] दिव्यरथ गामी । हरि-संकर-बिधि-मूरतिस्वामी ॥
बेद पुरान प्रगट जस गावैं । तुलसी राम भक्ति बर पावैं ॥ २ ॥

२५७. तुलसी (२)

खायो कालकूट भयो अजर अमर तन भवन मसान ग्रंथि गाठरी गरद की । डमरू कपाल कर भूषन कराल ब्याल बावरे बड़े की रीझि बाहन बरद की ॥ तुलसी बिसाल गोरे गात बिलसत भूति[3] मानो हिमगिरि चारु चाँदनी सरद की । धर्म अर्थ काम मोच्छ बसत बिलोकनि में ऐसी करामाति जोगी जागता मरद की ॥ १ ॥

२५८. तुलसी (३) श्रीओझाजी जोधपुरवाले

नेकहु मानै न सीख अली भली भाँति सिखावति धाय सुजान री । खेलति है गुड़ियान को खेल लिए सँग मैं सजनी सुखदान री ॥ पै तुलसी तिय के अँग में झलकी तरुनाई इतै उतै आन री । नैन लगे कछु पैने से होन गही अधरान कछू मुसकान री ॥ १ ॥

---

१ पाप का समूह २ मतिहीन । ३ भस्म ।

२५९. तुलसी (४) तुलसीदास कवि यदुराय के पुत्र
(संग्रहमाला)

दोहा—सत्रह सौ बारह बरस, सुदि असाढ़ बुध बार ।
तिथि अनंग को सिद्ध यह, भई जु सुख को सार ॥ १ ॥

कवित्त—एक समै लाल बाल बृन्दाबन माँझ गये सुघर सरूप जो बनायो है नवेली को । फूलन के हार जे उतारि देत गोपिन को सबै पहिराइ जस गायो है सहेली को ॥ तुलसी बखानै कुंज कुंज के फिरत माँझ बदन मलीन एक देख्यो है अकेली को । औसर के चूके अब हार देत मोतिन को जब क्यों न दीन्हो लाल चौलरा चमेली को ॥ १ ॥

२६०. तारापति कवि

इंदिरा[1] के मंदिर अमंद दुति कंदुक[2] से बंधुर[3] बिनोद-भरे जुग धौं बिरद के । तारापति ललित लता के स्वच्छ गुच्छ कीधौं श्रीफल सुफल भये आनि अनहद के ॥ कीधौं चक्रवाक आय बैठो ऊँची भूमि पर तुम्ब के परन तीर बासी नाभि-नद के । सुभग सरोज से उरोज तेरे ओज भरे कीधौं मीरफरस मनोज-मसनद के ॥ १ ॥

२६१. तारा कवि

गुंजों गिले खंजन की भौंर भये कंजन की बारि बिधु मंजन औ अंजन समेत हैं । नेहभरे सागर सनेहभरे[5] दीपक से मेहभरे बादर सलोने लखि खेत हैं ॥ तरल त्रिबेनी के तरंगन मैं तारा कबि मानों सालिग्राम असनान के निकेत हैं । मृगमद लागे साखामृग दृग दागे मैन छाजन में पागे नैन ऐसे सोभा देत हैं ॥ १ ॥

---

१ लक्ष्मी । २ गेंद । ३ कठिन । ४ घुँघर्वा । ५ तेल ।

२६२. तत्त्ववेत्ता कवि

छप्पै

प्रथम द्वितिय दोउ चरन तृतिय चातुर्थ दोउ उर ।
पंचम नाभि गँभीर षष्ठहै हृदय सुगनपुर ॥
सप्तम अष्टम दोऊ भुजा नव कंठ बिराजै ।
दसम बदन सुखसदन भाल एकादस राजै ॥
द्वादस सिर सोभित सदा भगवतरूपी सुमिरि मन ।
तत्वबेत्ता तिहुँ लोक मैं कीरतिरूपी कृष्ण-तन ॥ १ ॥

२६३. तेगपाणि कवि

मेरी पीछे ते बेनी मरोरि लई उर हार खसोटि लियो गरका ।
पुनि हौं हँसि कै मुख चाहि रही मुँदरी मनि तोरि तनी तरका ॥
भनि तेगपानि मटुकी दइ डारि लई भरि अंक अली दरका ।
सु उराहनो देति जसोमति पास लड़ाइते लोगन के लरका ॥ १ ॥

२६४. तोख कवि

(सुधानिधिग्रन्थे)

भूषन-भूषित दूषन-हीन प्रबीन महारस मैं छबि छाई ।
पूरी अनेक पदारथ ते जिहि मैं परमारथ स्वारथ पाई ॥
औ उकतैं[1] जुकतैं[2] उलही कवि तोख अनोख भरी चतुराई ।
होति सबै सुख की जनितौ[3] बनि आवत जो बनिता कबिताई ॥ १ ॥

सुमन अनन्त फूले बिपिन लसन्त पौन सौरभ बहन्त भौंर गुंजै रसमन्त है । सुतरु फलन्त कूक कोकिल कलन्त तजैं ध्यान मुनि-सन्त जहँ केलि को अगन्त है ॥ सबै रसवन्त औ बियोगिन को गन्त जहँ रति ही को तन्त तोख सुकबि भनन्त है । बेधे रतिकन्त पाइ तरुनी इकन्त अब जाहु कित कन्त ऋतु-भूपति बसन्त है ॥ २ ॥

---

१ उक्ति । २ युक्ति । ३ उत्पन्न करनेवाली ।

आगे बीच दै कै कहा दारु गल दिये जात बारि बीच दै कै कहा मीन छीजियतु है। भोग आदि दै कै कहूँ बाम सों बिरोध होत जोग आदि दै कै कहूँ भोग लीजियतु है॥ कहै कबि तोख तू तौ मान हू न करै जान्यो या बिधि को मान कहौ कैसे कीजियतु है। पीठि दै दै पौढ़ती हौ पीठि पै है बेनी तेरी बेनी बीच दै कै कहा पीठि दीजियतु है॥ ३॥

आवत मेरे लजात कहा अलि जान्यो न जात महा भय-भीनी।
मो पति सों कहि तोख कहूँ न लह्यो[1] प्रेमदै पति काहू प्रबीनी॥
मेरी न देखि सक्यो घटती तब तौ उनकी बढ़ती ह्वै दीनी।
एक तौ मोहिं करी तिय तीसरी तीसरी ते उन्हैं दूसरी कीनी॥ ४॥
सीस धुन्यो निज अंत गुन्यो जु सुन्यो चलिबो नँदनंदनजू को।
कै मिसु आवत जात अटा चढ़ि झाँकि झरोखनि लावत ढूको॥
सैन करै रहिबे की किती कबि तोख चितै बिथकै चित चूको।
ज्यों ज्यों पटूको[2] कसै निरदै हिरदै तकि होत भटू को छटूको[3]॥ ५॥

सुथरी सुसीली सुजसीली सु रसीली अति लंक लचकीली कामधनुषहलाका सी। कहै कबि तोख होती सारी ते नियारी जब कारी बदरी ते बढ़ै चन्द की कलाका सी॥ लोने लोने लोयन पै खंजन-झमक वारौं दन्तनचमक चारु चंचला चलाका सी। साँवरे सुजान कान्ह तुम से छिपाऊँ कहा सेज पै सोवाऊँ आनि सोने की सलाका सी॥ ६॥

अरुन अनार ऐसे नारंगी सुढार ऐसे उलटे नगार ऐसे कंचन के तार से। त्रिपुरारिबार ऐसे चकवा जुरार ऐसे श्रीफल सुढार ऐसे मार-प्रतिहार से॥ कंज के कुमार हार सरि के करार कबि तोख

---

१ स्त्री। २ पटका। ३ छः टुकड़े।

को उदार अति सुखद अपार से । भूधर-अकार तेरे उरज गरार मेरे मोहन के यार खरबूजा टोपीदार से ॥ ७ ॥

ऊख उखरत दुख-रत अभुआनी बाल चित्त अनुमानी हाय होत हितहानि है । कहै कबि तोख बानतान आनि पानि गही मुरि मुसक्याय पान दीन्हो गहि पानि है ॥ ऊख अरहरि सन-बन ऐसो राखि है जो ताहि हम राखि हैं सकलसुखदानि है । भानि है जो कोऊ ताहि हेरि हेरि भानि हौं री हुकुम भवानी को न मानि है सो जानि है ॥ ८ ॥

२६५. तोखनिधि कवि कम्पिलावासी

अरी जाको लगी तन सों सोइ भोगै, न जानै प्रसूति बिथा[1] बझरी[2] ।
हरनी होइ भूमि में क्यों न गिरी सर सादर सार भई मझरी ॥
निधि-तोख तू क्यों समुहे भई री न बचाई कटाच्छन की नजरी ।
बरजोरी बिहारी के नैनन सों करवाई करै कहिकै झगरी ॥ १ ॥

(व्यंग्यशतकग्रन्थे)

दोहा—कितिक दूरि ते सुनि लई, द्रुपदसुता की टेर ।
कानन कान्ह रुई दई, दैया मेरी बेर ॥ १ ॥
भरुही[3] भारथभीर में, राखी घंटा तोरि ।
तेई तुम अब क्यों रहे, मोहीं सों मुख मोरि ॥ २ ॥
बिस्वंभर नामै नहीं, कि मैं बिस्व मैं नाहिं ।
इन द्वै में झूठो कवन, यह संसय मन माहिं ॥ ३ ॥
ऊसर तजि बरखै न घन, लख्यो न पावस माहिं ।
मंगन के गुन-अवगुनन, दाता निरखत नाहिं ॥ ४ ॥

(नखशिख)

देखे अरुनाई करुनाई लगै कंजन को मृगन गुमान तजि लाज गहिबे परी । तोखनिधि कहै अलिछौननहू दीनताई मीनन

---

१ जच्चा की पीड़ा । २ बाँझ । ३ एक पक्षी—भारत युद्ध में रणभूमि में भरुही के अंडों पर घंटा टूट पड़ा, जिससे उनकी रक्षा हुई ।

अधीन ह्वैकै हारि सहिबे परी ॥ चरचा चकोरन की कोरि डारी कोरन सों कबिन कबीसन गरीबी गहिबे परी । आई बीर चंचलाई राधिका के नैनन में खाँसे खंजरीटन खराबी सहिबे परी ॥ १ ॥

२६६. तीखी कवि

सिंह पै खवाओ चाहौ जल में डुबाओ चाहौ सूली पै चढ़ाओ घोरि गरल[1] पियाइबी । बीछी सों डसाओ चाहौ साँप पै लिटाओ हाथी-आगे डरवाओ एती भीति उपजाइबी ॥ आगि में जराओ चाहौ भूमि में गड़ाओ तीखी अनी बेधवाओ मोहिं दुख नहीं पाइबी । ब्रजजन-प्यारे कान्ह कान्ह यह बात करौ तुमसों बिमुख ताको मुख ना दिखाइबी ॥ १ ॥

२६७. तेही कवि

कोऊ कहै पिता और कोऊ कहै सुत कोऊ कहै नाना बाबा तन तीनों ताप तयो है । कोऊ प्रभु कहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम अब कहौ मोहिं काहि काहि दयो है ॥ तेही भनै जित तित चालि चालि होइ रही सुख नहीं कहूँ वह हाथ गेंद भयो है । कियो हू तिहारो अरु पालो हू तिहारो ही हौं बीच के लोगन इन बाँटो बाँटि लयो है ॥ १ ॥

२६८. तानसेन कलावंत ग्वालियरवासी

पद

तेरे नैन लोने री जिन मोहे स्याम सलोने ।
अति ही दीर्घ बिसाल बिलोकि कारे भारे पिय रस-रिझए कोने ॥
बदन-ज्योति चंदहु ते निर्मल कुच कठोर अति होने बोने ।
तानसेन प्रभु सों रति मानी कंचन कसोटी कसोने ॥ १ ॥

२६९. तीर्थराज कवि बैसवारेके

(भाषासमरसार)

बीर बलवान बालेपन ते अरिन्दन[2] को पठये पताल पाय तम

---

१ विष । २ शत्रुओं को ।

को न लेस है । जाको राज राजत सुमन सब साधु जन सुमन सरोज कैसे सरस सुबेस है ॥ सुन्दर बलंद भाल पूरन प्रताप जाको जाकी ओर देखे और सूझत न बेस है । फूल्यो चहुँ ओर देस-देसन में तेज पुंज अचल नरेस मानों दूसरो दिनेस है ॥ १ ॥

२७०. ताज कवि

बलबीर कहा बल एतो कियो अबला ते कियो बल हौं बलिहारी ।
ताज कहै चलि केलि के कुंजन आवत ही बृषभानदुलारी ॥
करि केलि जो एतिक मैन के जोर परी बेसँभार न साँस सँभारी ।
मनों काढ़ि बाल-कुमोदिनी ताल सों नाल सों मंजुल मीड़ि कै डारी॥१॥

२७१. तालिबशाह कवि

महबूब बागे सुहागे बने हैं सु मोहन-गरे माल फूलों हिये हैं ।
महा रंग माने अमाते मदन के बिलोकत बदन खौर चंदन दिये हैं ॥
यही भेष हरिदेव भृकुटी तुम्हारे सु लकुटी भँवर लेख या लख लिये हैं ।
दिवाना हुआ है निमाना दरस का सु तालिब वही श्याम गिरिवर लिये हैं १

२७२. द्विजदेव, महाराज मानसिंह बहादुर, शाकद्वीपी, अवधनरेश
(शृंगारलतिका)

प्रथमै बिकसे बन बैरी बसंत के बातन ते मुरझाई हुती ।
द्विजदेवजू ताहू पै देह सबै बिरहानल-ज्वाल जराई हुती ॥
यह साँवरे रावरे नेह सों अंगन प्यारी न जो सरसाई हुती ।
तो पै दीपसिखा सी नई दुलही अब लौं कब की न बुझाई हुती ॥ १ ॥
चाहि है चित्त-चकोर दवा स्रुति आपनो दोष परोसिनै लैहैं ।
ये दृग अंबुज से अकुलाइ कला बिधुबंधु[1] की हाइ अचैहैं ॥
ऐसी कसामसी मैं द्विजदेव अली अलि के गन गाइ सुनैहैं ।
ह्वैहै सु कौन दसा तन की जुपै भौन बसंत लौं कंत न ऐहैं ॥ २ ॥

---

१ चंद्रमा ।

चाले सु आई नई दुलही लखिबे को जबै कोउ चाव बढ़ावति ।
सूही सजी सिर सारी जबै तब नाइन आपने हाथ ओढ़ावति ॥
भीतर भौन ते बाहर लौं द्विजदेव जुन्हाई कि धार सी धावति ।
साँझ समै ससि की सी कला उदयाचल ते मनों घेरत आवति॥३॥
लहि जीवनमूरि को लाहु अली वे भली जुग चारि लौं जीबो करैं ।
द्विजदेवजू त्यों हरषाय हिये वर बैन-सुधा-मधु पीबो करैं ॥
कछु घूँघुट खोलि चितै हरि ओरन चौथि-ससी-दुति लीबो करैं ।
हम तौ ब्रज को बसिबोई तजो अब चाउ चवाइनै कीबो करैं ॥४॥

(फुटकर)

आवत चली ही यह बिषम बयारि देखु दबे दबे पाँयन कँवारन लरजि दे । कैलिया कसाइनि को दे री समुझाय मधुमाती मधुपालिनि कुचालिनि तरजि दे ॥ आजु ब्रजरानी के बियोग को दिवस ताते हरे हरे कीर बकवादिन बरजि दे । पी-पी कै पुकारिबे की खोलैं ज्यों न जीहैं ये पपीहन के जूहन त्यों बावरी बरजि दे ॥ ५ ॥ अब मति दे री कान कान्ह की बसीठिन पै झूठीमूठी प्रेम-पतियान हू को फेरि दे । उरझि रही री जो अनेक पुरिखा ते तौन नाते की गिरह मूँदि नैनन निबेरि[2] दे ॥ मरन चहत काहू छैल पै छबीली कोऊ हाथन उचाय ब्रजबीथिन में टेरि दे । नेह री कहाँ को जरि खेह री भई तौ मेरी देह री उठाय वाकी देहरी पै गेरि दे ॥ ६ ॥

२७३. द्विज कवि, पण्डित मन्नालाल बनारसी

मदमाती रसाल की डारन पै चढ़ि आनँद सों यों बिराजती हैं ।
कुल जान की कानि करैं न कछू मन हाथ परायेहि पारती हैं ॥
कोउ कैसी करै द्विज तू ही कहै नहिं नेकु दया उर धारती हैं ।
अरी कैलिया कूकि करेजन की किरचैं किरचैं किये डारती हैं ॥ १ ॥

---

१ चाँदनी । २ खोलदे ।

२७४. दयादेव कवि

कौंल की सी बेली ये सहेली कुँभिलाय गई फूली सी फिरत ते चलावैं दाम चाम के। कहै दयादेव अन अनमाने अंचल ते अंग कोरे लगि रहे चित्र से हैं धाम के॥ इतै तू अनोखी अनखाइल तो अनखात जोन्ह है जनावत है कहे घट धाम के। हा-हा हाँसि बोलै बलि आँड़ि दे अनोखो मान मान अरु बान बिनु छूटे कौन काम के॥ १॥

२७५. दामोदर कवि

पंकज चंपक बेलि गुलाब की माल बनावति आनँद पावै।
आंछे अँगोछे से अंग अँगौछि गुलाब फुलेल ऽरु सोंधो लगावै॥
भूषन बास सँवारि दमोदर आछे से केस में फूल भरावै।
यों पिय को मग जोवति है इठि द्वार त्यों चित्र अलीको दिखावै॥

२७६. दिलदार कवि

दया करि चितै चित हित कै चोराय लियो फिरि हित चितए न यहै सोच नित है। दिलदार जन परबस में जे बसे तिन्हैं नेसुक न चाव निसि बासर चकित है॥ देखे टक लागै अनदेखे पलकौ न लागै देखे अनदेखे नैना निमिषरहित है। सुखी हौ जू कान्ह तुम्हैं काहू की न चिंता वह देखे हू दुखित अनदेखे हू दुखित है॥ १॥

२७७. दास कवि वेणीमाधवदास पसकावाले
(गोसाईंचरित्र)

तोटक छंद

यहि भाँति कछू दिन बीति गये। अपने अपने रसरंग रये॥
मुखिया इक जूथ[1] माँझ रहै। हरिदासन को अपमान गहै॥

---

१ झुंडे। २ जरा।

२७८. दीनानाथ कवि

जानत हौं जोतिस पुरान और बैदक को जोरि जोरि अच्छर कबित्तनको उचरौं। बैठि जानौं सभा माँझ राजा को रिझाइ जानौं सस्त्र बाँधि खेत[1] माँझ सत्रुन सों हौं लरौं॥ राग धरि गाऊँ औ कुदाऊँ घोरे बाग धरि कूप ताल बावरी नेवारन में हौं तरौं। दीनबन्धु दीनानाथ एते गुन लिये फिरौं करम न यारी देत ताको मैं कहा करौं॥ १॥

२७९. राजा दलसिंह कवि

दोऊ तिरभंगी दोऊ मुरली अधर धरे दोऊ तन एक से निरंजन निरंजनी। दोऊ बनमाली दोऊ मोर के मुकुट दीन्हे दोऊ दृग आँजे मानौ खंजन औ खंजनी॥ दोऊ प्रेम पढ़े दोऊ मन ही के साँचे गढ़े दोऊ काम रति मदभंजन औ भंजनी। भनै दलसिंह बृंदाबन के बिनोदी दोऊ दुहुँन के दोऊ मनरंजन औ रंजनी॥ १॥ मेरो तन मन स्याम रंग ही सों राँगि रह्यो और रंग देखे होत नैन मन साल है। नील पट नील मनि भूषन सुखद लागै नील जल जमुना के अति सुखपाल है॥ भनै दलसिंह नृप नील बन सहज ही तामें सुठि प्रिय लागै बिपिनै तमाल है। नील तरु नील फूल नील गिरि नीलकंठ नील घन देखे दृग आनत निहाल है॥ २॥

२८०. दास, भिखारीदास कायस्थ, प्रतापगढ़वाले

आनन है अरबिंद न फूले अलीगनैं[4] भूले कहा मड़रात हौ। कीर[5] कहा तोहिं बाइ[6] भई भ्रम बिंबै[7] के ओठन को ललचात हौ॥ दासजू ब्याली न बेनी बनी यह पापी कलाँपी[8] कहा इतरात हौ।

---

१ रण के मैदान। २ निपट। ३ वन। ४ भौंरे। ५ तोता। ६ पागलपन। ७ कुँदुरू। ८ मोर।

बाजत बीन न बोलत बाल कहा सिगरे मृग घेरत जात हीं ॥ १॥
पाँय बिहीन के पाँय पलोट्यो अकेले है जाइ घने बन रोयो ।
आरसी अंध के आगे धस्यो बहिरे सों मतो करि उत्तर जोयो ॥
ऊसर में बरस्यो बहु बारि पखान के ऊपर पंकज बोयो ।
दास बृथा जिन साहेब सूम के सेवन में अपने दिन खोयो ॥ २ ॥

कैसी कामधेनु कामना की देन ऐन जैसी चिंतामनि चारु चित्त चैन को मुकर है । कैसी चारु चिन्तामनि चैन की मुकर जैसी कामतरु-साखा कामना की बिधि बर है ॥ कैसी कामसाखा कामना की बिधि बर जैसी दास पै महेस की हमेस दानभर है । कैसी है महेस की हमेस दानभर जैसी बेस बीरविक्रम नरेस की नजर है ॥ ३ ॥

कंज सकोच रहे गड़ि कीच में मीनन बोरि दियो दह-नीरन ।
दास कहै मृग हू को उदास कै बास दियो है अरन्य गँभीरन ॥
आपस में उपमा-उपमेय है नैन ये निंदत हैं कबि धीरन ।
खंजन हू को उड़ाय दियो हलुके करि दीन्हे अनंग के तीरन॥ ४॥

(छन्दार्णवपिंगल)

करि बदन बिमंडित ओज अखंडित पूरन पण्डित ज्ञानपरं ।
गिरिनन्दिनिनंदन असुरनिकंदन सुरउरचंदन कीर्त्तिकरं ॥
भूषन मृगलच्छन बीर बिचच्छन जनमनरच्छन पासधरं ।
जय जय गननायक खलगनघायक दास सहायक बिघ्नहरं ॥ १ ॥

दोहा—सत्रह सौ निआनबे, मधुबदि नव इक बिन्दु ।
दास कियोछन्दोर्नव, सुमिरि साँवरो इन्दु ॥ १ ॥

(काव्यनिर्णय)

आजु चंद्रभागा वहि चंद्रवदनी के तीर निरत करत आई मोर के परत को । तब वै कहा धौं कह्यो बेनी गहि रही तब वोहू दर-

सायो री बँधूक के दरन को ॥ तब वै कहा धौं परस्यो धौं उरजात इहि परस्यो कहा धौं कहा आपने करन को । नागरि गुनागरि चलत भई ताही बन गागरि लै रीती जमुनाजल भरन को ॥ १ ॥

(शृंगारनिर्णय)

कैसी अनियारी एरी अजब निकाई भरी छामोदरी पातरी उदर तेरो पान सो । सकल सुहस्य अंग बिरह थकित है कै पीवे को त्रिमल तेरे मन की कमान सो ॥ उरज सुमेरु आगे त्रिबली बिमल सीढ़ी सोभा-सर नाभि-सिंधु तीरथ समान सो । हारन की पाँति आवागवन की बँधी है ही मुकुत सुमन बृंद करत अन्हान सो ॥ १ ॥

(रससारांश)

भूल्यो खान पान भूल्यो पट-परिधान सबै लोगन को भूलि गयो बासु औ निबासु री । चकि रहीं गैयाँ चारो चोंचन चिरैयाँ दाबि चितवनि चल चख चेत चितु नासु री ॥ द्वै घरी मरी सी है परी सी बृषभानु जाई जीवत जनावै टुक आवै दृग आँसु री । कान्हर सों कैसे कै छुड़ाय ले री मेरी बीर कब की बिसासिनि बगारै बिष बाँसुरी ॥ १ ॥

(प्रेमरत्नाकरग्रन्थे)

दोहा—संबत सत्रह सौ बरस, बयालीस निरधार ।
आस्विन सुदि तेरसि कियो, सुभ दिन ग्रंथ-बिचार ॥ १ ॥
को रजपूतानी जन्यो, ऐसो और सपूत ।
ना ऐसो दाता कहूँ, ना ऐसो रजपूत ॥ २ ॥
ऐसे अगनित गुनन करि, जगमगात रतनेस ।
जाके दावन सों लग्यो, जदुमंडल को देस ॥ ३ ॥
रजधानी जदुपतिन की, नगर करौरी राज ।
जहँ पंडित अरु कबिन को, राजत बड़ो समाज ॥ ४ ॥

२८१. देवीदास कवि बुंदेलखण्डी

दीबे को करन दुख आपदाहरन असरन को सरन मन मानहुँ सुरेस है । उदित उदार साहिदल को सिंगार कैयो जंग जितवार लग्यो दावन सों देस है ॥ गुनन को भारो जदुबंस में उजारो और रूठत अकारो यह दूसरो महेस है । गाजी गंज-बकस गरीबन निवाजन को देबीदास ऐसो आजु भैया रतनेस है ॥ १ ॥ बासी बर उर के उदासी भये मोरगते पाली गति अनत ही पीतम पियार में । परनाम लीजे मो सुहागपुर देबीदास काबिल के दिली हो गुनागरे बिचार में ॥ बिजैपुर कीन्हे भाग नागर हमारे आजु कासमीर तिलक दै लालित लिलार में । असनाके लागे लाल औध में मिले हो मोहिं पटना सपात उर उमागि बिहार में ॥ २ ॥ छोटे छोटे पेड़न को सूरन कियारी करौ पतरे से पौधा तिन्हैं पानी प्रतिपारिबो । नीचे गिरि गये तिन्हैं दै दै टेक ऊँचे करौ ऊँचे बढ़ि गये ते जरूर काटि डारिबो ॥ फूले फूले फूल सब बीनि एक ठौरी करौ घने घने रूख एक ठौर ते उखारिबो । राजन को मालिन को नित प्रति देबीदास चारि घरी राति रहे इतनो बिचारिबो ॥ ३ ॥ नट के न धाम ना नपुंसक के काम नाहीं अनी के अराम बाम बिस्वा ना सहेलरी । जुआ के न सोच मांसहारी के न दया होत कामी के न नातो गोत छाया न सहेलरी ॥ देबीदास बसुधा में बनिक न सुनो साधु कूकर के धीरज न माया है सहेलरी । चोर के न यार बटपार के न प्रीति होत लाबर न मीत होत सौति ना सहेलरी ॥ ४ ॥ एरे गुनी गुन पाइ चातुरी निपुन पाइ कीजिये न मैलो मन काहू जो कछू करी । बीरन बिराने द्वार गये को यही सुभाव मान अपमान काहू रे करी कि जू करी ॥ कूर और कबि चले जात हैं सभा के मध्य तोसों तौ हटकि देबी-

दास पलटू करी । दरवाजे गज ठाढ़े कूकरी सभा के मध्य कूकरी सो कूकरी औ तू करी सो तू करी ॥ ५ ॥ एकै पाँय दाबैं एकै हाथ सहरावैं एकै अंगन अँगोछि कै सुगंध सिर नाखे हैं । एकै नहवावैं एकै भोजन करावैं एकै बीरी सरसावैं सैन बैन अभिलाखे हैं ॥ देवीदास एकै कर जोरे दिन-रैनि जब जैसो रुख पावैं तब तैसोई सुभाखे हैं । ताही के सु तन ते तनक स्वास कढ़े तेई घर ही के घर में घरी भरि न राखे हैं ॥ ६ ॥

२८२. दलपतिराय-बंशीधर श्रीमाली ब्राह्मण, अमदाबादवाले
(अलंकार-रत्नाकर)

दोहा—नवत सुरासुर मुकुट महि, प्रतिबिम्बित अलिमाल ।
किये रतन सब नीलमनि, सो गनेस रछपाल ॥ १ ॥
भाषाभूषन अलंकृत, कहुँ यक लच्छन हीन ।
स्रम करि ताहि सुधारि सो, दलपतिराय प्रवीन ॥ २ ॥
अर्थ कुबलयानंद को, बाँध्यो दलपतिराय ।
बंसीधर कवि ने धरे, कहूँ कवित्त बनाय ॥ ३ ॥
मेदपाट श्रीमाल कुल, बिप्र महाजन काइ ।
बासी अमदाबाद के, बंसी दलपतिराइ ॥ ४ ॥
भौंहैं कुटिल कमान सी, सर से पैने नैन ।
बेधत ब्रज-अबलान हिय, बंसीधर दिन-रैन ॥ ५ ॥

२८३. दुर्गा कवि

एक कर खड्ग बिराजै सूल एक कर एक में धनुष एक कर में कृपानी है । लीन्हें सर एक कर उग्र सेल एक कर अंकुस कर एक चर्म एक में प्रमानी है ॥ दुरगा भनत ऐसी उग्रता प्रसिद्ध जाहि रति लोक-सुख देनि भक्त बरदानी है । कीजै ना बिलम्ब जगदम्ब अवलम्ब तुही रच्छा करु मात अष्टभुजा सम्भुरानी है ॥ १ ॥

२८४. देवीदत्त कवि

बड़े बड़े गुनी पुरुषारथी अपार फिरैं केते द्वार द्वार कवि पंडित सिपाही हैं। व जे मतिमंद सबै जानत बजिंद तौन बखत बलंद हू अमंद उतसाही हैं॥ देवीदत्त होत कहा कीन्हें करतूति दई दई की विभूति सो न मानत थराही हैं। सेतिमेति आपनी बनाई गुमराई मूढ़ मद के उदोत होत हरि के गुनाही हैं॥ १॥ दाया दिल राखैं सब ही सों मृदु भाखैं नित काम क्रोध लोभ मोह मति सों दबावैं जू। काहू मैं न तेखैं ब्रह्म सबही में देखैं आपु ही को लघु लेखैं करि नेम तन तावैं जू॥ देवीदत्त जानैं हरि ही को एक मीत और जगत की रीति में न प्रीति सरसावैं जू। दुखित है आपु दुख और को मिटावैं ऐसो सांत पद पावैं तब भगत कहावैं जू॥ २॥

२८५. देवी कवि

मोहन से हम से हित है घर सासु ननंद बँधी फरजी री।
बैठि कहे गुरुलोग दुवार पुछी तब से कुल की सबरी री॥
डाटने लागी परोसिनि दंडिनि देवी कहा करिये जु सखी री।
यों कहि कै पलकै दबकै पल्न मा बजमा गल मा लपटी री॥ १॥

कीजै नाहिं देरी तुम एरी सुनु मेरी बात जामिनी अँधेरी मग हेरी लाल तेरी री। चलिये री हेरी रसना कौ धरेरी जाइ कुंजन मग लेरी छर तेरी दर्स देरी री॥ देवी कहत जुरी जेरी रंधी सब संग के री करते मजे री तुम देरी इत एरी री। ह्वै है उजेरी रैनि छिपि है री न मेरी नैन करि कहै चैन तू कुचैन गेह मेरी री॥ २॥

२८६. देवी दास भाट कवि अंतर्वेदवाले (१)

गोबरु को गूजरु गरेहु गोबरौरन को गोहन को गोड़ा गोसा गंजु गुजरीन को। छपकी छछूँदरी छराये जहाँ छाई रहैं ख्याली ख्याल बैरैं झुंड झाबर भारीन को॥ माछिन को मुलुक मिलिक मूसे मच्छन को भूतल को भौन तहाँ मैंको मकारीन को।

ऐसो डेरा दीन्हों देबीदास जयदेव जू को छानी चुवै पानी जैसे चापु चलनीन को ॥ १ ॥

२८७. दान कवि

नए नए खसन सों खासे खसखाने छाय चंदन लिपाय जौं जमाय जल ढारती। घोरि घोरि घने घनसारन सों सींचै लै गुलाबन उलीचै कीचै अतर की पारती॥ दान कवि लूटत अनेक जल-जंत तऊ ताप को न अंत कंत सखी सब हारती। मोहन भला कै सुनि लीजै अभिलाषै जाकी कोटिन कला कै ये जला-कै जारि डारती ॥ १ ॥

२८८. दिनेस कवि

(नखशिख)

राधे की ठोढ़ी को बिंदु दिनेस किधौं बिसराम गोबिंद के जी को।
चारु चुभ्यो कनको मनि नील को कैधौं जमाव जम्यो रजनी को॥
कैधौं अनंग सिंगार के रंग लख्यो बर बीच बस्यो कर पी को।
फूले सरोज में भौंरी बसी किधौं फूल समी में लग्यो अरसी को॥ १ ॥

२८९. दयाराम (१)

(अनेकार्थ)

दोहा—बार बार प्रतिबार री, आवत हैं मो बार।
बार बार सुख देत हैं, धरे सीस सिखिबार॥ १ ॥
गोधर गो गो काम के, बिकल होति गो हेरि।
गो ते गो स्रम बहत है, गो गो सुनत न फेरि॥ २ ॥
जलज रूप कुण्डल स्रवन, कण्ठ जलज की माल।
जलजबदन बाजत जलज, जलज लये नँदलाल॥ ३ ॥

२९०. दिलाराम कवि

कंचनसम्पुट गोल उरोज सुधाकर सो मुख जोति लही।
कंचुकि लाल बनात मढ़े जनु दुंदुभि मैन महीप सही॥
भौंह-कमान हनै दृग बान गिरैं नर घूमि हवास नहीं।
कान हिये लहरैं मुकता दिलराम सदा-सिव पूजि रही॥१॥

२९१. दयाराम कवि त्रिपाठी (२)

हाथी के दाँत के खिलौना बने भाँति भाँति बाघन की खाल तपी सिन मन भाई है। मृगन की खालन को ओढ़त हैं जोगी जती छेरी[1] की खाल थोरा पानी भरि लाई है॥ साबर की खालन को बाँधत सिपाही लोग गैंड़न की खाल राजा रायन सुहाई है। कहै कवि दयाराम राम के भजन बिन मानुस की खाल कछू काम नहिं आई है॥ १॥

२९२. दयानिधि कवि बैसवारे के (१)

(शालिहोत्र)

दोहा—सुकबि दयानिधि सों कह्यो, अचलसिंह सुख मानि।
सालिहोत्र को ग्रंथ यह, भाषा करहु बखानि॥ १॥
अचलसिंह के हुकुम ते, जानि संसकृत-पंथ।
भाषा-भूषित करत हौं, सालिहोत्र को ग्रंथ॥ २॥

२९३. दयानिधिकवि (२)

सहज बनाइबो न ये है कबिताई कभू सुकबिन मारग की दीठ की दसाले सों। रस धुनि अलंकार जुत जतिभंग बिन अरथ प्रगट कोऊ दूषन न साले सों॥ बरनत दयानिधि बिधि बिधि तापन सों सरस्वती कृपा छाप हिय में धसाले सों। करि कै कसाले हित बरन गसाले कबितन के मसाले लावै रस के रसाले सों॥ १॥ नखअग्रभाग स्यामताई जमुना है सोई मध्य सुपेदाई दरसाई गंग तन में। अंत अरुनाई मेंहदी की कहि दी है अति उपमा सरसुती की परसत तन में॥ अँगुरी अँगूठा सृंगे[2] मेरु से दिखात ताते कढ़ी बढ़ी मढ़ी दयानिधि उकतन[3] में। बसुधा ते न्यारी रसधारा बहै जामें ऐसी ईसधा[4] त्रिबेनी प्रियापदपदमन में॥ २॥

---

१ बकरी। २ शिखर, चोटी। ३ उक्ति। ४ इस तरह की।

२६४. दयानिधि (३) ब्राह्मण पटनानिवासी

कुंद की कली सी दंत-पँ ति कौमुदी सी दीसी बिच बिच मीसी रेख अमी सी गरकि जात । बीरी त्यों रची सी बिरची सी लखैं तिरछी सी रीसी अँखियाँ वै सफरी सी फरकिजात ॥ रस की नदी सी दयानिधि को न दीसी थाह चकित अरी सी रति डरी सी सरकिजात । फन्द में फसी सी भरि भुज में कसी सी जा के सीसी करिबे में सुधासीसी सी ढरकि जात ॥ १ ॥

२६५. द्विजराम कवि

जस को सवाद जो पै सुनो कबि-आनन सों रस को सवाद जो पै और को पियाइये । जीभ को सवाद बुरो बोलिये न काहू कहूँ देह को सवाद जो निरोग देह पाइये ॥ घर को सवाद घरनी को मन लिये रहै धन को सवाद सीस नीचे को नवाइये । कहै द्विजराम नर जानि कै अजान होत खैबे को सवाद जो पै और को खवाइये ॥ १ ॥

२६६. द्विज नंद कवि

गौन की नवेली तू भवन ते न बाहिर हो कुच तेरे कंचन मनोजदुति हरिहै । फूल ऐसी माल औ दुकूल ऐसी चपला सी लाजितन देखे चिलकौन सी नजरि है ॥ कहै द्विज नन्द प्यारी पूतरी छपाये चलौ अब तौं ये तेरे नैन री पखान फारि है । ऐसी करसँ-बाती तू तौ नेक ना डराती काहू छाती ना दिखाउ कोऊ छाती फारि मरि है ॥ १ ॥

२६७ दीनदयालगिरि काशीवाले

बीर कलिंदी के तीर नीर बीच निरख्यो मैं नीरद नवल एक करत कलोल री । करत बिहाल चित्त चोरि लेत दीनदयाल चमकै

---

१ क्रोध से भरी । २ मछली । ३ चमक । ४ वेश्या । ५ मेघ ।

चहूँघा चारु चपला अडोल री ॥ जागि रही चहूँ ओर चन्द की अमन्द कला तामें चलै खंजन द्वै नाचत अमोल री । रही ना निचोलैसुधि जब ते वे सुने बोल सोभा बरसाय मति कीनी अति लोल री ॥ १ ॥ चपला अडोलैं पै अमोल पिक बोलै बोल राजति भुअंगन में कंजन की लाली री । सरसी गँभीर भीर हंसन की जासु तीर तहाँ उदै द्वै रही बिचित्र नखताली री ॥ कुहूरैनि राकापति संग सजै दीनद्याल तामें उभैभानु लोल नचैं चारु चाली री । एक ही तमाल पर मिले एक काल आजु अजब तमासा लख्यों कुंज बीच आली री ॥ २ ॥

(अन्योक्ति-कल्पद्रुम)

दोहा—कैर छिति निधि ससि साल में, माघ मास सित पच्छ ।
तिथि बसंत जुत पंचमी, रवि बासर सुभ स्वच्छ ॥ १ ॥
सोभित तेहि अवसर बिषे, बसि कासी सुखधाम ।
बिरच्यो दीनदयालगिरि, कलपद्रुम अभिराम ॥ २ ॥

२६८. देवा कवि

छप्पै

बिबि गयन्द जहँ लगे लोह लागो तिहि ठाहर ।
कमठ पीठि दै चक्रह करन कीन्हे तहँ बाहर ॥
सीत हरन के काज राज द्वै जुद्धन कीन्ही ।
मैं मैं जुरि जुरि लरैं पीठि काहू नहिं दीन्ही ॥
झरो सार अंतर परो रन जीते दोनों सही ।
देवा कहत बिचारि कै न भारत न रामायन कही ॥ १ ॥

नोट-यह कूट है अँगरखे का ।

२६६. देवकीनंदन शुक्ल मकरंदपुरवाले

प्रेम हंस लीने छाँह चित्तऊ हरष पायो जाग्यो पंचबान जिहि

---

१ चंचल । २ कपड़े की सुध । ३ चंचल । ४ स्थिर । ५ अमावस ।

लागि छबि छाई है। देवकीनँदन कहै सारँग गुनीन गायो पाहरू पुकार्‍यो धुनि चटक लगाई है ॥ दृग मुख अधर बिलोकिहौ तौ रीझो लाल ऐसी एक बाल देखि कुंजन में आई है। दुपहर कैसो कंज इंदु अधराति कैसो प्रात जैसो रबिबिंब तैसी अरुनाई है ॥ १ ॥ वै छगुनी के छुये ससकैं कर बार सी पातरी जो मैं चढ़ावों। दंतन दाबतीं जीभ इतै उतै लाल की आँखिरुखाई बचावों ॥ देवकीनंदन मोको महा दुख कासों कहौं इत काहि लखावों। छोड़िहौं गाँव बबा कि सौं कान्ह चुरी पहिरावन मैं नहिं आवों ॥ २ ॥

सासु मेरी राधिका की सौति सो न जानै कछू पाँचै ज्ञानइन्द्रिन सों ज्ञान ना बताई है। देवकीनँदन कहै सुनौ हो बिहारीलाल पथिक तिहारे भाग ही ते रैनि आई है ॥ तीनि मेरी दूती ते प्रबीन परमेस्वर ने रची बिधि एकै करि हमैं कठिनाई है। एक सुरदास दासी एक जगन्नाथदासी एक भृगुदासदासी ताकी एक आई है ॥ ३ ॥ नखत से मोती नथ बेंदिया जराइ जरी तरल तरौनन की आभा मुख फूटी है। देवकीनँदन कहै तैसी चारु चंपकली पँचलरी मंत्र मोहनी की गति लूटी है ॥ चूनरी कुसुंभी रंग ऊनरी परत तन कलित किनारी सों ललित रस लूटी है। बाल तेरी छाती में हमेल छबि छूटी मानों लाल दरियाई बीच बेलदार बूटी है ॥ ४ ॥ कुंजन ते आवत नवेली अलबेली चली सोभा अंग-अंगन की जागत उदै भई। देवकीनँदन मुख-छबि की निकाई लसै चारो ओर चाँदनी प्रकास करि है गई ॥ स्याम मुख भाखी तुम को हौ कित जैहौ सुनि बैन मग थाकी फिरि वाही ठौर ठै गई। लालन की ओर दृग जोरि कसि कोरि तन तोरि झकझोरि चित चोरि करि लै गई ॥ ५ ॥ कैधौं स्याम बरनी सिंगार रस रूप धारे ललित कपोल पर जागो सुख मूल है। कैधौं काम खेह है कै ऊगो छबि नेह

बीज देवकीनँदन कैधौं सौतिन को सूल है ॥ कैधौं चंदमंडल में भीम के गयंदन को बाल मत भ्रमर रहोई भ्रम भूल है । प्यारी तेरे सरबसुहाग भरे मुखपर वारियत तीनों लोक तिल के न तूल है ॥ ६ ॥ चाँदी के चबूतरा पै बैठी चारु चंदमुखी जोतिन के जाल छबिजाल में जुरे परैं । देवकीनँदन तैसी चाँदनी सुहात ऊगी आनँद बढ़त कोटि दुख हू दुरे परैं ॥ राजत चँदोवा स्वेत हीरा पुहे आसपास झुकि झुकि झबा सोने रूपे के सुरे परैं । होती जोति बिमल उज्यारे जल भरे छूटैं चारो ओर मोती से फुहारे बिथुरे परैं ॥ ७ ॥ गुड़हर गेंदा गुलसब्बो सी बिसाल छबि लाल कचनार सी अनार सम मानी है । सूरजमुखी सी गुलपेंचा सी जपा सी सोहै देवकीनँदन गुलेलाला सम जानी है ॥ चंपा सी चमेली सी जुही सी सोनजूहीसम सेवती गुलाब गुलदाउदी समानी है । कलपतरोवर से फूल लसैं नंदलाल चारो ओर ललना लता सी लपटानी है ॥ ८ ॥ ल्याई गूँधि हार चारु चंपककली के चारि दीबे को बिचारि गई लालन निहारई । देवकीनँदन पहिरावत मगन भई ठगन ठगी सी ठाढ़ी वाही ठौर ही ठई ॥ स्याम कर गही सोई वाके सुधि रही भई मूरछा नई सी हेरि फेरि उर में लई । कीनी केलि जौलौं भरि अंक बनमाली तौलौं छाड़ी कर कर कर मालिनि कहे गई ॥ ९ ॥

३००. देव कवि काष्ठजिह्वा स्वामी बनारसी

(विनयामृत)

पद

जग मंगल सिय जू के पद हैं ।

जस तिरकोन जंत्र मंगल के अस तरवन के कद हैं ॥

मलहिं गलावहिं जे तन मन के जिन की अटक बिरद हैं ।

मंगल हू के मंगल हरि जहँ सदा बसे ये हद हैं ॥

ऊपर गौर राजहंसन से मोती नखर अदद हैं।
पदुम मनहुँ जामी मानस के मधुलिह विगलित मद हैं॥
काल-सरप के डसे जीव ये विषय निरत बड़ बद हैं।
देव सुधा सम बिनय अमृत ही संजीवन औषद हैं॥ १॥

३०१. दूलह त्रिवेदी बनपुरावाले
(कविकुलकंठाभरण)

आये री पीव परोसिनि के सु भई सुनि मो मन मोदमई है।
हौं कबि दूलह वाकी दसा लखि जाति जरी तन तापतई है॥
मोहिं बकावैं सबै घर की ये कहौ बहू बेदन कौन भई है।
और के आनँद आनँद होत जरै जिय की यह रीति नई है॥ १॥

आली फूलबाग में अरेखा अनुराग भरी देखे तहाँ ऐसी भाँति चरित बिहारी के। कहै कबि दूलह कहे न बनै मो पै कछू लहलहे लोचन ललित सुकुमारी के॥ फूले अंग-अंग बाढ़े उरज उतंग फैले छबि के तरंग मुख चंद उजियारी के। ज्यों ज्यों लेत पिय परनारी भरि गोद त्यों त्यों हिये होत आनँद प्रमोद प्रानप्यारी के॥ २॥ सुन्दर सुबेस मध्य मूठी में समात जाको प्रगटो न गात बेस बंदन सँवारी है। कहै कबि दूलह सु रमनी निआज औ छटाँक भरी तौल मानों साँचे कीसी ढारी है॥ पेटी है नरम कर लीजिये गुबिंद गहि निपट नबेली पै समर सरदारी है। रीझै गुन मान गोसे गोसे सों मिलैगी मुलतान की कमान के समान प्रानप्यारी है॥ ३॥ पौढ़ी परजंक पर कोमल कनकलता लागे द्वै कनक गिरि बनक बिसाल है। कहै कबि दूलह सु अंगन सहित तामें तरुन तमाल छबि झलकत जाल है॥ कमल के नाल पर राजत जुगल रंभा रंभा पै कमल जुग सोभित सनाल है। कमल पै कुरबिंद कुरबिंद पर चंद चंद पर चढ़े चारु बोलत मराल है॥ ४॥

२०२. देव कवि प्राचीन समाना ज़िला मैनपुरवाले

बनि साहब आजम साह के साथ छकी बनिता छबि छावति है।
अँगिरात उठी रति मन्दिर ते मुसक्याय जम्हाय रिझावति है॥
चख जोरि कै देव मरोरि यहै उपमा हिय मैं उमँगावति है।
रस-रंग अनंग अथाह भरो सु मनो सुख सिंधु-थहावति है॥१॥

(काव्यरसायन ग्रन्थे अद्भुत रस को उदाहरण)

आई बरसाने ते बुलाई बृषभानसुता निरखि प्रभान प्रभा भान की अथै गई। चकि चकवान के चुकाये चकचोटन सों चकृत चकोर चकचौंधी सी चकै गई॥ देव नंदनंदन के नैनन अनंदमई नंदजू के मंदिरन चंदमई ह्वै गई। कंजन कलिनमई कुंजन अलिनमई गोकुल की गलिन नलिनमई कै गई॥२॥

(अष्टयामग्रन्थे)

सूरजमुखी सो चंदमुखी को बिराजै मुख कुंदकली दंत नासा किंसुक सुधारी सी। मधुप से लोचन बँधूकदल ऐसे ओठ श्रीफल से कुच कचबेलि तिमिरारी सी॥ मोती बेल कैसी फूली मोतिनमैं भूषन सु चीर गुलचाँदनी सी चंपक की डारी सी। केलि के महल फूलि रही फुलवारी देव ताही में उज्यारी प्यारी फूली फुलवारी सी॥३॥

(षट्ऋतु)

डार द्रुम पालन बिछौना नव पल्लव के सुमन झँगूला सोहै तन छबि भारी दै। पवन झुलावै केकी कीर बतरावै देव कोकिल हलावै हुलसावै करतारी दै॥ पूरित पराग सो उतारा करै राईनोन कंजकली नाइका लतानि सिर सारी दै। मदन महीपजू को बालक बसंत ताहि प्रात हलरावत गुलाब चटकारी दै॥४॥

(फुटकर)

नील पट तन पै घटान सी घुमाइ राखौ दन्त की चमक सों

छटा सी बिचरति हौं। हीरन की किरन लगाइ राखौं जुगुनू सी कोकिला पपीहा पिक बानी सों ठरति हौं॥ कीच अँसुवान की मचाऊँ कबि देव कहै पीतम बिदेस को सिधारिबो हरति हौं। इन्द्र कैसो धनु साजि बेसरि कसति आजु रहु रे बसन्त तोहिं पावस करति हौं॥ ५॥

बसि बर्ष हजार पयोनिधि में बहु भाँतिन सीत की भीति सही। कबि देवजू त्यों चित चाह घनी सतसंगति हुक्म हू की लही॥ इन भाँतिन कीनो सबै तप जाल सु रीति कछूक न बाकी रही। अजहूँ लौं इते पर सीप सबै उन कानन की समता न लही॥ ६॥

गोरे मुख गोल हरे हँसत कपोल लोने लोचन बिलोल लोभ लीन्हें लोक-लाज पर। लोभा लखि लाल मन सोभा कबि देव कहै गोभा से उठत रूप सोभा की समाज पर॥ बादले की सारी जगमग जरतारीदार कंचन किनारी भीनी झालरि के साज पर। मोती-गुहे छोरन चमक चहुँ ओरन ज्यों तोरन तरैयन की तानी द्विजराज पर॥ ७॥ घूँघुट खुलत अभै उलट ह्वै जैहै देव उद्धत मनोज जग जुद्ध जूटि परैगो। को कहै अलोक बात सोकहै अलोक तिय लोक तिहूँ लोक की लुनाई लूटि परैगो॥ दैयन दुरात्र मुख नतरु तरैयन ते मंडल औ मटक चटाक टूटि परैगो। तो चितै सकोचि सोचि मोह मद मूरछा ह्वै छोर सों छपाकर छता सो छूटि परैगो॥ ८॥

चोट लगी इन नैनन की दिनहू इन खोरिन सों कढती हौ। देखत में मन मोहि लियो छिपि ओट झरोखन के झँकती हौ॥ देव कहै तुम हौ कपटी तिरछी अँखियाँ करि कै तकती हौ। जानि परै न कछू मन की मिलिहौ कबहूँ कि हमैं ठगती हौ॥ ९॥

देस बिदेस के देखे नरेस न रीझि कै कोऊ जु बूझि करैगो।

ताके तिन्है तानि जाति गिने गुने औगुन सौगुनो गाँठि धरैगो ॥ बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है देवजू नेक सुढार ढरैगो। छोहरा छैल वही जो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो ॥ १० ॥

का सों कहौं मोह मोहिं मोही की परी है देव मोहन से मोह महामाया में मिलाइगे। मनु से मनुस मन मन से मुनीस मन मानी मानधाता मानो मैन पघिलाइगे ॥ बावन से रावन से रामजू से खेलि खेलि खलन की खालनि खेलौना ज्यों खेलाइगे। काटे काल ब्याल ऐसे बली बलभद्र ऐसे बलि ऐसे बालि से बबूला से बिलाइगे ॥ ११ ॥ बैठी सीसामन्दिर में सुन्दरि सवार ही ते मूँदि कै किंवार देव छबि सों छकति है। पीतपट लकुट मुकुट बनमाल धरि करि बेष पीको प्रतिबिम्ब में तकति है ॥ ह्वै कै निरसंक अति अंक भरि भेंटिबे को भुजन पसारति समेटति जकति है। चौंकति चकति चितवति उझकति उर झूमि लचकति मुख चूमि ना सकति है ॥ १२ ॥

३०३. दत्त कवि देवदत्त ब्राह्मण साढ़ि ज़िले कानपुरवाले

अंबर अतर तर चंदक चहल तन चंदमुखी चन्दन महल मैन साला से। खासे खसखाने तहखाने तर ताने तने ऊजरे बितान छुये लागत हैं पाला से ॥ दत्त कहै ग्रीषम गरम की भरम कौन जिनके गुलाब आब हौज़ भरे ताला से। झाला सों झरत झर झापन सों नारा बाँधि धारा बाँधि छूटत फुहारा मेघमाला से ॥ १ ॥ डोलै पौन परसि परसि जल बूँदन सों बोलै मोर चातक चकित उठी डरि मैं। कहाँ लौं बराऊँ दईमारे मैन बानन सों थकि रही केतिकौ उपाइ करि करि मैं ॥ दत्त कवि प्यारे मनमोहन न पाऊँ कहौ मन समुझाऊँ री कहाँ लौं धीर धरि मैं। आये मेघ मगन सुहाये

१ एक राजा। २ कालरूपा सर्प। ३ बँदावा। ४ डर।

नभमण्डल में आये मनभावन न सावन की झरि मैं ॥ २ ॥
कीन्हे द्विज-द्रोह गये सकुल[1] सहसबाहु नहुष भुजंग[2] भये सिबिका[3]
धराये ते । भूपति परीछित को तच्छक प्रसिद्ध डस्यो जूझि गये
जादव कुमति उर आये ते ॥ सगर की संतति अनेक जरि छार
भई इंद्र के सहस भग मुनि साँप[4] पाये ते । कहै कवि दत्त कोऊ
भूलि हू न बैरै करौ पाला से बिलाइ जात बिप्रन सताये ते ॥ ३ ॥
जटाके जमाये कहा नदी नद न्हाये कहा कंद मूल खाये कहा
बनोबास के किये । मूड़ के मुड़ाये कहा द्वारका के जाये कहा
छाप के लगाये कहा माला तुलसी लिये ॥ तिलक चढ़ाये कहा
माला के फिराये कहा तीरथनि न्हाये कहा दान दत्त के दिये ।
एतो सब किये कहा कोटि नाम लिये कहा जानकीजीवन जो पै
केवल नहीं हिये ॥ ४ ॥ ल्याई हौं ललन कोटि कोटि छलबलन
सों जाकी जोति देखे मैनका[5] न मन भाइये । सुखमा की सींव
सुकुमारता की कहा कहौं दत्त कवि पूरे पुन्नि ऐसी बाल पाइये ॥
दूरि ह्वैहै दृगन को दाग याके देखत ही कलानिधि कांति कामकला
सरसाइये । उर ते उतारि उरबसी[6] को मुरारि उरबसी के समान
उरबसी सी लगाइये ॥ ५ ॥ चन्दन चढ़ावै ना लगावै अंगराग
कछू चौसरा चँबेली को नवेली भार क्यों सहै । पैन्है ना जवाहिर
जवाहिर से अंग दत्त भौंरन के भय भाजि भौन भीतरै गहै ॥
रातिहू दिवस छबि छटा छहराती चारु अंगना अनंगौ[7] की न
ऐसी छबि को लहै । कैसे वह चंदमुखी आवै नंदनंद बंधु बधुन
चकोरन के नैनन घिरी रहै ॥ ६ ॥
लाऊँ कहा कछु हाथ लिये ही हौं भोर ते लाल यहै जक लागी ।

---

१ मय खानदानके । २ सर्प । ३ पालकी । ४ गौतम ऋषि का शाप । ५ एक अप्सरा । ६ एक गहना । ७ कामदेव ।

जानत हौ न कछू नँदनंद कहावत क्यों ब्रजराज सभागी ॥
ग्वारि गँवारि महा गरबीली है नेसुक नेह की जोति सी जागी ।
बूझै लगी रसरीति की बात सु कामकथा न कछू अनुरागी ॥ ७ ॥

३०४. दयानाथ दुबे

(आनंदरस नायिकाभेद)

संबत ग्रह बसु गज मही, कह्यो यहै निरधार ।
सावन सुदि पूनो सनी, भयो ग्रंथ परचार ॥ १ ॥
रति मति की अति चातुरी, सरती मन्त्र बिचार ।
ताही सों सब कहत हैं, कबि कोबिद सिंगार ॥ २ ॥
सब रचना करता रची, करता रचना माहिं ।
साँस साँस भूलै नहीं, तू क्यों भूल्यो ताहि ॥ ३ ॥
जे सुख तेरी नाहिं में, आन हाँहिं में नाहिं ।
हाँहि नाहिं बिन रस सरस, नाहिं हाँहिं जुत माहिं ॥ ४ ॥
दुलही हिय उलही सुरति, फूली अंग न माति ।
मोद बढ़ै त्यों त्यों खरो, ज्यों ज्यों आवति राति ॥ ५ ॥

३०५. देवदत्त कवि (१)

सूने केलिमंदिर में नायक नबीने साथ नायिका रसीली रसबात को छुवा गई । देवदत्त कौन हू प्रसंग ते सुने ते नाउँ सौति सों रिसाइ प्यारी पिय को बिदा दई ॥ ताही समै पापी पपिहा की धुनि कान परी आँसुई अनंग ऋतु पावस की ह्वै गई । छूटे केस छटा देखि देखि मेघ-घटा बाल फिरै अटा अटा बाजीगर को बटा भई ॥ १ ॥

३०६. देवदत्त कवि (२)

(योगतत्त्वग्रन्थे)

दोहा—सर्बरूप बिन रूप जो, निरगुन सब गुन धाम ।
नामी नाम बिना जु प्रभु, ताको करत प्रनाम ॥ १ ॥

छप्पै

पुहुमी पवन अकास बारि पावक ससि दिनमनि ।
अरु कपोत अजगर समुद्र मृग ते मतंग गनि ॥
लखि पतंग अरु मीन भ्रमर जुग बिधि मधुमाछी ।
कै पिंगला निरास बाल लीला रुचि आछी ॥
द्विजकुमार कार्मुक बिरंचि मनिधर गुन लीन्हो ।
मकरी भृङ्गी जोग जान अपनो तनु चीन्हो ॥
चौबिस गुरु सिच्छा प्रगट भेदु-बाद सब परिहरौ ।
मध्य सच्चिदानन्द-घन देवदत्त हरि पगु धरौ ॥ १ ॥

३०७. द्विजचन्द्र कवि

कोपि करबर गह्यो खगु लै खरगमानि भूतल खसाई मीर जेते सरदार हैं । कहै द्विजचन्द्र रुण्डमुण्डन पटित महिभुण्डन चमुण्डा लेत आमिष अहार है ॥ सोनित सलिल तीर गौरा को गोसाईं टेरै धौरा बहि चल्यो तहाँ पाउँ थिर ना रहै । काहे रे कुमार करै हाहे रे हिरंब करै होहो कहै जती पारबती कहै पार है ॥ १ ॥

३०८. दामोदरदास

पद

नागरि नव लाल संग रंगभरी राजै । स्याम-अंसे बाहु दिये कुँवरि पुलकि पुलकि हिये मंद मंद हँसनि पिया कोटि मदन लाजै ॥ तरु तमाल स्याम लाल लपटी अँगअंग बेलि निरखि सखी छबि सकेलि नूपुर कल बाजै । दामोदर हित सुबेस सोभित सखि सुख सुदेस नव निकुंज भँवर गुंज कोकिल कल गाजै ॥ १ ॥

३०९. देवीराम कवि

जोग अरु जज्ञ जप तप सब आप में उलटि कै पौन की राह ले कै ।
ज्ञान दरम्यान में ध्यान पैदा हुआ दान सन्मान की टेक टेकै ॥
ऋद्धि औ सिद्धि नौ निद्धि बीचारि कै दुःख औ सुःख को दूरि फेकै ।

---

१ छोड़ दो । २ कंधे ।

देवीराम माशूक को हिर्द में डारि कै गिर्द कै देखु चौगिर्द एकै॥ १ ॥

३१०. दयाल कवि, दीनदयाल बंदीजन बैती के महापात्र भौनजू के पुत्र

गोरे गात गेंद से गँसे हैं गदकारे गोल गजब गुजारत वै गोरी के उरोज द्वै। सफरी सुमेर-सिंग सीफर सरीफा कैधौं संपुट सरोज रोज दूनी दुति रहे छ्वै ॥ भनत दयाल की गुरिद गोला गालिब हैं कनककलस नीलमनि ते जड़े हैं कै। कामचक्रवै कै कसे कंचुकी नगारे की कुँदेरे के सिंधौरा की सुघर नट बटा वै ॥ १ ॥

३११. धनसिंह कवि

तोही सों बनारस बिहार करा जौन पुर तेरोई सुहाग पुर पुरवा बखानिये। अवधि तिहारी करि बिजै पुर आवत है तेरो परनामै जैतिपुर अनुमानिये ॥ आवै बिजनौर बातैं भावै तू दिली के बीच आगरे गुनिन धनसिंह जग जानिये। कासमीर डोलै बर उर पट नाहिं खोलै मानिये सलोनी मति मैनपुरी ठानिये ॥ १ ॥ भोर ही चलत परदेस प्रानप्यारे सुनि मेरे दुख धाइ कै गगन घन छाये हैं। बूँदऊ न छूटै लाल चलिबे को ऊटै त्यों त्यों मेरो मान हूँटै अब क्यों न झरि लाये हैं ॥ कहै धनसिंह महा बारिद से देखियत बारि तन देत तौ क्यों बारिद कहाये हैं। संकट सहाये काम एकऊ न आये हाइ गरजन आये मेरी गरज न आये हैं ॥ २ ॥

३१२. धीरजनरिंद, श्रीराजा इंद्रजीतसिंह गहरवार उड़छा बुंदेलखंडी

कुक्कुट-कुटुंबिनी को कोठरी में डारि राखो चिक दै चिरैयन की रोकि राखी गलियो। सारँगी में सारँग सुनाइ कै प्रबीन बीना सारँग दै सारँग की ज्योति करी मलियो ॥ बैठी परजंक में निसंक है कै अंक भरौं करौंगी अधरपान मैनमद मिलियो। मोहिं मिलै प्रानप्यारे धीरजनरिंद आजु एहो बलि चंद नेकु मंद गति चलियो॥ १॥

३१३. धनीराम कवि

एक पग ठाढ़े कै कै जल अधिकारे बीच सकुल ठिहारे गति भागै ताप घन की। बदन उघारि सूर ओर ही निहारै अनसन ब्रत धारै ना बिचारै रीति पन की॥ आजु लौं न ऐसी भई कैसी करौं धनीराम औसर बिचारि साध पूरी भई मन की। संग की बधूटी रहीं संग महँ जूटी आजु कमलन लूटी छबि बाल के बदन की॥ १॥ बदन बिसूरै सुधारस अवलोकै कंज बिकच निहारै नैन चारु समता ठये। चाँदनी की तेरी हाँसी सम कहि गानै बिंब ओठन बखानै बैन कहत नये नये॥ धनीराम अंग उपमान यों बिलोकि लाल होत है निहाल बाल बावरे से ह्वै गये। दूती के बचन सुनि चातुरी सों साने कछू मरम न जाने नैना अरुन कहा भये॥ २॥

३१४. धुरंधर कवि

मदन महीप के बिचच्छन नजरबाज पीछे लगे आवत छपद करै सोर हैं। सुकबि धुरंधर भनत अरबिंदबन चौकी भरै चंपक चमेली चहुँओर हैं॥ सब ही के स्वारथ के सकल सुगंध सियराई सरबस के हरैया बरजोर हैं। कहाँ के समीर ये जु कंजन लगाये चले जात मलयाचल ते चंदन के चोर हैं॥ १॥

३१५. धीर कवि

कढ्यो सेल गहि साहि आलम समत्थ साहि पत्थ से सुभट्ट ठट्ट अरैं भारी भर को। धौंसा की धुकार धसकत धराधर धरै धीर धराधीस को धरकि तजै धर को॥ ब्रह्मंडमंडल में दंड दै अदंड बचैं खंडन के मंडलीक मिलैं तजि घर को। छीरनिधि छलकि उछलि छीटैं छिति छाई मानो तापहीन तारागन टूटैं तर को॥ १॥

प्रबल प्रचण्ड मारतण्ड ते उदण्ड तेज चढ्यो बरिबण्ड साहि

आलम महाबलै । धोरे मुख होत धराधीसन के धाक सुनि धुव-धाम धूरि सों धुरैं सुरलोक लै ॥ दिव्य दल चलैं दलैं दिग्गज दिगंतन में दौरे दरबरक करेरे दरिया हलै । फनी फन फूटैं फुंकरत यों रुधिर-फुही रंग ज्यों फुहार जावकानि उरधै चलै ॥ २ ॥

३१६. धौंकलसिंह बैस न्यावाँवाले

(रमलप्रश्न)

दोहा—गुरु गनपति रघुपति सिया, चरन-कमल उर आनि ।
रमलप्रश्न निज मति जथा, धौंकलसिंह बखानि ॥१॥
प्रश्न चतुर षट उमा सों, बरने सम्भु सप्रीति ।
सो अब भाषा मैं कहौं, करि दोहा की रीति ॥ २ ॥

३१७. धोंधे कवि ब्रजवासी

पद

तेरे मुख की निकाई मोपै बरनि न जाई अंग अंग छबि छाई । नयनन लगत सुहाई ऐसी रचि पचि बिधि बिधि कै बनाई ॥ भौंहन की कुटिलाई नैनन अरुनताई नासिका सुचन बनी अधर सुघाई । धोंधे प्रभु के मन ऐसी भाई कहत न कछु बनि आई और सोहैं की सोहैं तेरिये दुहाई ॥ १ ॥

३१८. नरहरि कवि असनीवाले

नाम नरहरि है प्रसंसा सब लोग करैं हंस हू से उज्ज्वल सकल जग व्यापे हैं । गंगा के तीर ग्राम असनी गोपालपुर मन्दिर गोपालजी को करत मंत्र जापे हैं ॥ कबि बादसाही मौज पावै बादसाही ओज गावै बादसाही जाते अरिगन काँपे हैं । जब्बर गनीमन के तोरिबे को गब्बर हैं हुमायूँ के बब्बर अकब्बर के थापे हैं॥ १॥

छप्पै

सर सर हंस न होत बाजि गजराज न घर घर ।
तरु तरु सुफर न होत नारि पतिब्रता न नर नर ॥

तन तन सुमति न होत मलयगिरि होत न बन बन।
फनि फनि मनि नहिं होत मुक्त जल होत न घन घन॥
रन रन सूर न होत हैं जन जन होत न भक्त हरि।
नरहरि निरखि कबित्त कहि सब नर होइँ न एकसरि॥ २॥

३१९. निहाल ब्राह्मण निगोहाँवाले

दोष करि पावक प्रदोष ते करत सोर चातक चकोर मोर चोर अहि चोटी के। सिलीमिली झींगुर झरोखे के नगीच नीच बीच बीच सारस सतावैं जोर जोटी के॥ सुकबि निहाल ताप तड़िता तड़पि ताप अंग अंग अखिल अनंग अंग गोटी के। रैनि रही छोटी नींद आँखिन अगोटी तामें लागे करै खोटी ये पखेरू लाल चोटी के॥ १॥

३२०. नोने कवि हरिलाल कवि बाँदावाले के पुत्र

तारागन तापै तापै छौना कलहंसन के मुरवा सु तापै तापै कदली जुगबि है। केहरि सु तापै तापै कुन्दन को कुंड तापै लसत त्रिबेनी मनौ छबि ही की छबि है॥ नोने कबि कहै नेही नागर छबीले स्याम दरस निहारे देत चारौ फल सबि है। कनकलता पै तापै श्रीफल सु तापै कम्बु कंज जुग तापै चंद तापै लसो रबि है॥ १॥ पाँयन ते पींडुरी मँझावत गो जंघन में जंघन नितम्ब कटि खीन में थिरानो है। त्रिबली तरंगिनी को तरि फेरि चढ़त भो कुच गिरि-संधि में न तनक डेरानो है॥ नोने कबि कहै ग्रीव सरल तरौनन के चिबुक कपोल केसपास में घिरानो है। फेरि ना लखा री जरतारी की किनारिन ते प्यारी स्याम सारी की सरौटें में हेरानो है॥ २॥ छूटी रतिरंग में अनंग की उमंगभरी आनि मुखचंद पै अनन्दित परै दिये। कछू सटकारी कछू अधिक मकरवारी

१ घिरगया। २ शिकन=चुनट। ३ खोगया।

कछू अनियारी स्याम सारी सों लरै दिये ॥ नोने कवि कहै बाल लाल मदमाती कछू आनि करि छाती जो सुहाइ सो भरै दिये । सौरभ वलकवारी झलकैं कपोलन पै अलकैं तिहारी प्यारी जुलुम करै दिये ॥३॥ सरसिज-सेज पै बिराजै सरसिजनैनी देखि छबि ऐनी मैनका सी लजि जाती हैं । लचकत लंक लचकीली भार बारन के मोतिन के हारन की सोभा अधिकाती हैं ॥ नोने कवि कहै सारी जरद किनारीदार ढीली ढीली चाहनि लजीली मुसकाती हैं । अबला अलीगन की आती चली जाती हाल कहै लाल लाती पै न नेक मन लाती हैं ॥ ४ ॥

३२१. नरायनराइ कवि बनारसी

नायक नवल नीको नेह ते सु आयो गेह ताहि तकि तेहं किये मो मति उतावरी । हाहा कै नरायन निहोरि कर जोरि हारे तऊ मो कठोर हिये दरद न आव री ॥ हाय अब मोते गयो हितू जो हमारो वह सोचन मरति नैन आँसू बहि आव री । कौन सुनै कासों कहौं अब न हमारो कोऊ मेरी भटू मोहिं घनस्यामहि मिलाव री ॥ १ ॥

इन आई कहाँ ते न पाये पिया अरी हाय हिये में दुसाले भरे ।
मन-मोहन मो मन काढ़ि लियो भई चाहति ब्याकुल लागै गरे ॥
किहि कारन आये नरायन ना किन गायन गोल हवाले करे ।
घरबार बिलोकि बिलोकत ही छन ही छन पाँयन छाले परे ॥२॥

३२२. निवाज कवि जोलाहा बिलग्रामवासी (१)

तोको तौ चाहती वै चित में अरु तू तो उन्हीं को हियो ललचावै ।
मैं ही अकेली न जानति हौं यह भेद सबै ब्रजमंडली गावै ॥
कौन सकोच रह्यो री निवाज जो तू तरसै औ उन्हैं तरसावै ।

---

१ क्रोध ।

बावरी जो पै कलंक लग्यो तौ निसंक है काहे न अंक लगावै ॥१॥
पीठि दै पौढी दुराय कपोल को मानै न कोटि पिया जऊ जोटत ।
बाँहन बीच दिए कुच दोऊ गहे रसना मनही मन ओटत ॥
सोवत जानि निवाज पिया कर सों कर दै निज ओर करोटत ।
नीबी[1] बिमोचत चौंकि परी मृगछौना सी बाल बिछौना पै लोटत ॥२॥

३२३. गुरु नानकसाहजी पंजाबवाले

दोहा—गुन गोबिंद गायो नहीं, जन्म अकारथ कीन ।
नानक भजु रे हरि मना, जेहि बिधि जल को मीन ॥१॥
बिषयन सों काहे रच्यो, निमिष न होइ उदास ।
कहि नानक भजु हरि मना, परै न जम की फाँस ॥२॥

चौपाई

सुमिरो सुमिरि सुमिरि सुख पावो । कलिकलेस छन माहिं मिटावो ॥
सुमिरौ जासु बिसंभर एकै । नाम जपत अगनित हि अनेकै ॥
बेद पुरान समृति सुचि आखर । कीन्हे राम नाम एकाखर ॥
किन कायक जिस जिया बसावै । ताही महिमा गनि नहिं आवै ॥
कापी एकै दरस तिहारो । नानक उन सँग मोहिं उधारो ॥
सुखमनी सुख अमृत प्रभु नाम । भक्तजना के मन बिसराम ॥

३२४. नवनिधि कवि

मुख सूखि गये रसना घर मंजुल कंज से लोचन चारु चितै ।
कहै नौनिधि कन्त तुरन्त कह्यो किती दूरि महाबन भूरि अवै ॥
सरसीरुहलोचन नीर चितै रघुनाथ कही सिय सों जु तबै ।
अब ही बन भामिनि पूछति हौ तजि कोसलराजपुरी दिन द्वै ॥ १ ॥

३२५. नेवाज कवि ब्राह्मण प्राचीन (२)

दारी के रखैयन की दाढ़ी-सी रहति छाती बाढ़ी मरजाद

---

१ नारे की गाँठ । २ जलती ।

अब हद हिन्दुआने की। मिटि गई रैयति के मन की कसक अरु कढ़ि गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥ भनत नेवाज दिल्लीपति दल धकधक हाँक सुनि राजा छत्रसाल मरदाने की। मोटी भई चण्डी बिन चोटी के सिरन खाय खोटी भई सम्पति चकत्ता के घराने की ॥ १ ॥

३२६. नेवाज ब्राह्मण (३)

पारथ[2] समान कीन्हो भारथ मही में आनि बानि सिर बाना ठान्यो समर सपूती को। कोर कटि गयो हटि कै न पग पाछे दयो लयो रन जीति करि मान मजबूती को ॥ भनत नेवाज दिल्लीपति सों सआदतखाँ करत बखान एती मान मजबूती को। कतल मरद नद सोनित सों भरि गयो करि गयो हद भगवन्त रजपूती को ॥ १ ॥

३२७. नरवाहन कवि भोगाँववाले

पद

मंजुल कल कुंज देस राधा हरि बिसद वेस राका नभ कुमुद-बंधु सरदजामिनी। साँवल दुति कनक अंग बिहरत लखि एक-संग नीरद मनि नील मध्य लसत दामिनी ॥ अरुन पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग-मूल सौरभजुत सीस अनिल[3] मंदगामिनी। किसलय दल चित्त सैन बोलत पिय चाटु बैन मान-सहित गति पद अनुकूल कामिनी॥ मोहन मन मथत मार[4] परसत कुच नीबि हार बेपथुजुत नेति नेति कहत भामिनी। नरबाहन प्रभु सु केलि बहुबिधि भरभरति झेलि सुरतिरसरूपनदी जगत जामिनी ॥ १ ॥ चलहि राधिके सुजान तेरे हित सुखनिधान रास रच्यो स्याम तट कालि-न्दनन्दिनी। निरतत जुवतीसमूह रागरंग अति कुतूह बाजत रस-

---

१ मुगलों की अक्ल। २ अर्जुन। ३ हवा। ४ कामदेव।

मूल मुरालिका अनन्दिनी ॥ बंसीवट निकट जहाँ परिरंभन भूमि तहाँ सकल सुखद बहै मलयवायु मन्दिनी । जाती ईषदविकास कानन अतिसै सुबास राका निसि सरद मास बिमल चन्दिनी ॥ नरबाहन प्रभु निहारि लोचन भरि घोषनारि नखसिख सौंदर्य कान्त दुखनिकन्दिनी । किसलय भुज ग्रीव मेलि भामिनि सुखसिंधु झेलि नव निकुंज स्याम-केलि जगतबन्दिनी ॥ २ ॥

३२८. नन्दलाल कवि

कैसी खुली अलकैं पियूषभरी पलकैं सरस नैन झलकैं कमल छबि तूलि गे । तेरी देखि बानी सुनि कोकिला लजानी तैं सुगंध अंध पुष्पगंध भौंर भौर भूलि गे ॥ तैं तौ चली बाहर बिहार संग मोहन के मोहिं पच्छिम पौन पट जोगिन के खूलि गे । सौतिन के सूल नंदलाल रूप फूलैं आजु तोहिं देखे राधा अनफूले बन फूलि गे ॥ १ ॥

३२९. नारायणदास कवि

पद

आइये जू भले आये कत सकुचत हो । सुरत-संग्राम करि सौतिन को सुख दीने याही रस भीने होय मोको तो रुचत हो ॥ तुम देखे रिस गई उपजी है प्रीति नई भई सो तो भई अब काहे धौं सुचत हो । नारायन मोहिं जानो वहै चेरी करि मानो कही जीय एती अभिलाष जू सुचत हो ॥ १ ॥

३३०. नीलसखी जैतपुर बुंदेलखंडी

पद

जय जय बिसद ब्यास की बानी ।
मूलाधार इष्ट रसमय उतकर्ष भक्ति रससानी ॥
लोक बेद भेदन ते न्यारी प्यारी मधुर कहानी ।

स्वादिल सुचि रुचि उपजै पावत मृदु मनसा न अघानी ॥
सकति अमोघ बिमुख भंजन की प्रगट प्रभाव बखानी ।
मत्त मधुप रसिकन के मन की रसरंजित रजधानी ॥
सखी रूप नवनीत उपासन अमृत निकास्यो आनी ।
नीलसखी मनभामि नित्यमह अद्भुत कथन मथानी ॥ १ ॥

३३१. नेही कवि

टूटे फूटे घन गज घेरि घेरि रोंकैं बाट उडुगन संग सैना अनगन लीनी है । जोगिनी लुटेरे दिया बारि घर घर पैठे घट घट माँझ आगि फूँकि फूँकि दीनी है ॥ झिल्लीगन चातक बिरह झनकार नेही तुम बिन गोपिन की सुधि-बुधि छीनी है । सूनो जानि सदन सिधारे स्याम द्वारका को ससि आनि ब्रज पर रतिवाह कीनी है ॥ १ ॥

छप्पै

लघु मध्यम गुरु कहौ कहा तन बंधन कहिये ।
चाह तृषित को कहा कहा अलि को भख्र चहिये ॥
सुमति न बोवत कहा कहा बिन जनक कहावत ।
उत्तम तन कहि कौन कौन षट रसहि बतावत ॥
कहु कहा सिंह भोजन करत का सुनि कायर प्रान डर ।
कहि नेही हंस बसत कहाँ चतुर कह्यौ की मानसर ॥ २ ॥

उड़नि गुलाल की घमंडि घन छाइ रह्यो पिचकी चलत धार रस बरसाई है । चाँदनी सरद बुक्का चंद मुख छबि फबी काँपत हिमंत भीजे दोऊ सुखदाई है ॥ धाइकै धरत पिय सिसकै सिसिर चीर केसरि सरीर ते बसंत दरसाई है । ग्रीषम गरूर बोल पिय सों कहत नेही फागु की समाज कै धौं छओ ऋतु छाई है ॥ ३ ॥

३३२. मैन कवि

प्रबल प्रचंड चंडकर की किरन देखो बैहर उदंड नव खंड घुमि-

लत है। अवनि कराही को-सो तेल रतनाकर सो नैन कवि ज्वाल की जहर उगिलत है ॥ ग्रीषम की ज्वाल जाल कठिन कराल यह काल ज्वालामुखि हू की देह पघिलत है। लूका भयो आसमानं भूधर भभूका भयो भभाकि भभाकि भूमि दावा उगि-लत है ॥ १ ॥

३३३. निधान कवि (१)

लागी सु लगाइ लंक खेहनि खराब करौं मारि करौं मोरन अहार मारजारे को। सुकबि निधान कान आँगुरीन मूँदि मूँदि सुनिहौं न घोर सोर झिल्ली झनकारे को ॥ भेकन की भीर सह-सानन मिटाइ डारौं मेटि डारौं गरब गरूर घन कारे को। पाऊँ जो पकरि कहूँ जाल सों जकरि तन फीहा फीहा करौं या पपीहा दईमारे को ॥ १ ॥

३३४. निधान कवि (२)

(शालिहोत्र)

छप्पै

सदर जहाँ जगजनित सुजस भुव बीज समप्यो।
बली मुरतजाखान दान करि थालर थप्यो ॥
फिरि सैयद महमूद खींचि तरवारि बरी करि।
मुकुत अरिन के घात पत्र कीन्हे सवाब धरि ॥
खुर्रम सुसैद साखा सघन वादुल्लाखाँ सुमन हुव।
देत सकल मनकामना अलि अकबर फल प्रगट तुव ॥ १ ॥

३३५. निपटनिरंजन कवि

(शान्तिसरसी वेदान्त)

है जग भूत औ आपहू भूत है भूत ही के सँग भूतन लागा।
सेज में भूत खटोली में भूत है भूत के संग में भूत ही जागा ॥
एक अभूत निपटनिरंजन भूत के बास में भूत ही पागा।

तात को मूत औ मात को मूत औ नारि को मूत लै मूँबनलागा ॥ १ ॥

मरन न मन मनोरथ कीन उतपत मन गत नाहीं उन मन मनसा दुरी । बाचा को न लेस बाच्यारथ को न परबेस बचन को कोऊ महामुनि नाहिं की पुरी ॥ चित्रित बिचित्र चतुरा न कोऊ महामुनि नाहिंन मुनीसुर अनीसुर को ता पुरी । चित्रित चतुर चतुरातमा न मानियत तुरिया-अतीत ताहि कहत तुरी-तुरी ॥ २ ॥

जागत है कि न सोइबो लोक जु सोवत है जग जोबन सोहै ।
आपनी हारि बिसारि कै आपु सु आपु बिसारि न खोवन सोहै ॥
सो निपटा निरंजन जैसे को तैसो हुओ नहीं होवन सोहै ।
काहे को रोवत है बिन काज सो तेरो सरूप न रोवन सोहै ॥ ३ ॥

३३६. नंदन कवि

बीर बिरदैत बाँके बेदन बिदित सुने सोभा सुखसिंधु सींव बानक बनक को । कैसे तुम ताड़का सँहारी सुत-सेना-जुत-छूटत न डोरा गाँठि कंकन-कनक को ॥ नंदन यों रावल के भीतर नवेली अली करती बिनोद अंग धरि कै जनक को । छोरी कै निहोरौ कर जोरी कहौ हारे हम, यह तौ न होय लाल तोरिबो धनक को ॥१॥

३३७. नंद कवि

बोरी है पिचक झकझोरी है झटकि पट फोरी है कलस इहाँ बसै कोऊ कोरी है । जानौ जनि भोरी है कहूँ की कोऊ छोरी है न थोरी है ढिठाई जाकी बहियाँ मरोरी है ॥ नंदजू कहत कवि गोरी है तौ काको कहा जानत हौ कछू काके कुल की किशोरी है । गोपशन[1]ओरी है जनक[2] जाको एहो कान्ह, प्यारे हरि होरी है तौ कहा बरजोरी है ॥ १ ॥ निपट असित[3] गात याही मग आवै प्रात कौन कहौ बात जात गौवन के पाछै री । कोटिन अनंग के अनँग[4]

---

[1] गोपों में श्रेष्ठ । २ पिता । ३ काला । ४ अंग-रहित ।

होत देखे अंग बालक प्रसंग स्वच्छ काछनी को काछै री ॥ कहै कवि नंद देखि आनँद को कंद रूप को न फँसि जात मंद हास-फंद आछै री। मोहतीं ततच्छन जगी सी जंत्रलच्छन वै आछी आछी आछन की कुटिल कटाछै री ॥ २ ॥

३३८. नंदलाल कवि

हीरा मोती लाल नीले हरित जरद मनि मूँगा हेम बैदुरज रूप गाय छीर की। भूपन बसन धाम हाथी हय रथ भूमि दासी दास रानी दान करैं धनी पीर की ॥ नैन-बान मारि रूप-फाँसी करि बाँधि गरो नंदलाल मन चोरै तहाँ बिना सीर की। जमुना के तीर महाबारुनी परब माहिं ऐसी महा चोरटी तैं गोरटी अहीर की ॥ १ ॥ चारि फल चारि फूल चारि घन घूमि रहे चारि फल जाचत पियत बुंद माला के। चारि सुत अंबुज के दाबे कीर चंगुल सों सोहै चारि चंद पति मूरति बिसाला के॥ चारि अलि गुंजत सरोवर के फूलन में अरथ करो कबीस सोभा बिंदुसाला के। चारि ओर कहरै चकोर और नंदलाल लोचन अघाने छबि देखि नंदलाला के ॥ २ ॥ अमित सिखंडिन[१] की मंडी धुनि मंडल में झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापै री। चंचल है चपला चमंकै चंड चारों ओर चातक चुनौती पीव-पीवहि अलापै री ॥ कहै नंदलाल गाढ़ अगम असाढ़ आयो दादुर दरेरन की दरत दरापै री। एरी उर काँपै प्राननाथ कुबिजा पै अब कौन सहै दापै धुरवान की धरा पै री ॥ ३ ॥

३३९ नंदराम कवि

त्यागि इतमामै[२] नर जाँमै[३] पाइ रामै भजु मूढ़ धन धामै है बेकामै सब सामै[४] रे। लोभ रसरा मैं मन पर्‌यो फसरा मैं जमराज खसरा मैं लिखि जैहै तू नकामै[५] रे ॥ और बसुधा मैं कहूँ पैहै न अरामै

१ मोरों की। २ छाई ३ मनुष्य का शरीर। ४ सामान। ५ नाकाम=असफल।

नंदरामै कामदामै मिलौ संतन सभा मैं रे। दामै जोरि चामै चिक-नामै नारि जामै धौं न जानै को कहा मैं फिरि जैहौं धौं कहाँ मैं रे॥ १॥

३४० नाथ कवि (१)

मदनतुका-सी किधौं राधे कुंदका-सी मनों कंजकलिका-सी कुच जोरी ही बिकासी है। गाँसी भरी हाँसी मुख भासी मोह-फाँसी मद जोबन उजासी नेह दिया की सिखा-सी है॥ जाकी रति दासी रसरासी है रमा-सी कौन है तिलोतमा-सी रूपसदन बिकासी है। काम की कला-सी चपला-सी कबि नाथ कि धौं चंपकलता-सी चारु चंद्रिका प्रकासी है॥ १॥

३४१ नाथ कवि (२)

दीरघ दँतारे भारे जासों जलधर बारे काजर-से कारे जग जैतेबार[2] जंग हैं। घंटा घननाते भूल-भंपित सुहाते भौंरभीर भन-नाते और तजत न संग हैं॥ नवल नवाब श्रीफ़ज़लअलीखान बली कबि नाथ भली भाँति करैं बहुरंग हैं। बिंध्य सों बलंदवारे इंद्र के गयंद ऐसे हिम्मति के कंद मोहिं दीजिये मतंग हैं॥ १॥

३४२. नाथ कवि (३)

समर के सागर उजागर धरम ही में नागर रसीले चितचोर बनितान के। चतुर चकोर मृग खंजन सरोजन के नाथ हैं जसीले ये बखाने कबितान के॥ सूबन को मान महाराजन को सान बैरी-बृंदन बिराजै ऐसो मान मघवान[3] के। दबि जात देखत दबकि जात हहरात ईछन नरेसचंद मानिक सुजान के॥ १॥ जस दस दिसन मैं छाइ रह्यो महाराज मानिक प्रचड रिपुदल के दलन ते। बड़े बलवत्ता जे मवाँसीं कलकत्ता भरे लीने लूटि मत्ता सबै

---

१ चिकनाता है। २ जीतनेवाले। ३ इंद्र। ४ गढ़।

कत्ता के बलन ते ॥ प्रबल फिरंगी ऐसो तोप रामचंगी करैं घातैं बहुरंगी भरे हिम्मति छलन ते। फ़ौज चतुरंगी तब चढ़त अभंगी नेक लागी नारिरंगी छोड़ि संगी के चलन ते ॥ २ ॥

३४३. नाथ कवि (४)

दिल्ली के अमीर दिल्लीपति सों कहत बीर दक्खिन सों दंड लैकै सिंहल दबाइहैं। जगती जलेसर की जोर लै सुमेर हू लौं संपति कुबेर के घराने की कढ़ाइहैं ॥ कहै कवि नाथ लंकपति हू के भौन जाइ जम हू सों जंग जुरे लोह को चबाइहैं। आगि में जरैंगे कूदि कूप में परैंगे एक रूपभगवंत की मुहीम[1] को न जाइहैं ॥ १ ॥

३४४. नाथ (५) हरिनाथ गुजराती ब्राह्मण काशीवासी

(अलंकारदर्पण)

दोहा—रस भुज बसु अरु रूपदे[2], सम्बत कियो प्रकास।
चंदबार सुभ सत्तमी, माधैव[3] पच्छ उजास[4] ॥

चंद सो आनन पूरो प्रकासऽरु नैन से नैन कहावत तेरे।
देखी सुधा तुव बैन-सी भामिनि है परतच्छ रती राति मेरे ॥
नाथ भनै इन कुंदकली ते भये हिय दारक दंत घनेरे।
यों कर-कंजन ते बिधि जू पुनि तोहिं सँवारी किते रँग दे रे[5] ॥ १ ॥

३४५. नाथ कवि (६)

सुंभ-निसुंभ-बिनासिनि पासिनि बासिनि बिन्ध्य गिरीस की रानी।
संकर संग बिलासिनि अंग हुलासिनि श्रीकमलासिनि दानी ॥
जाहि सदासिव ध्यान धरैं अरु मान करैं मुनि चातुर ज्ञानी।
नाथ कहै सोइ सैलकुमारी हमारी करैं रखवारी भवानी ॥ १ ॥

---

१ एक शब्द। २ सामना। ३ वैशाख। ४ शुक्ल-पक्ष। ५ पाठ्य लिप।

३४६. नाथ (७) कवि ब्रजवासी

सुभीते अचल कन्दरा बारि कुंजै सदन फूल फल चारु हरिये बसुन्धर। बरस मेह बूँदै छुटैं जंत्र जल ज्यों पुहुप चुन्यहर नीर सारँग पुरंदर॥ गरज खग भँवर नाद बाजै बधू इन्द्रबामा लसै ज्यों सुमन को धनुर्धर। पिया लै तड़ित साथ यों स्याम घन नाथ सावन बनो है मदन-बाग सुन्दर॥ १॥

३४७. नरोत्तम कवि

भोरही सों वह कौन सी पाहुनी आई तिहारे ही न्योति बुलाये।
छोटी-सी छाती छरा[1]नि लौं बेनी नरोत्तम रूप की लूटि-सी पाये॥
सारी हरी अँगिया घनबेलि[2] की घूमत सो लहँगा थिरकाये।
कंज-सो आनन खंज सो नैनन एँड़िन ईंगुर सो लपिटाये॥ १॥

३४८. नरोत्तमदास कवि

(सुदामाचरित्र)

सीस पगा[3] न झँगा तन में प्रभु, जानै को वाहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी यक पाँय उपानह की नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल जानि रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम बतावत अपनो नाम सुदामा॥ १॥

३४९. नैसुक कवि

होरी लगी अबही ते तुम इतरान लागे ऐसो जरि जाय ख्याल जामें लाज जायगी। परिहै जो रंग तो तिहारी सौं बिगरि जैहै नई जरतारी नेक सारी भरि जायगी॥ नैसुक निहारत हौ मूठी फेरि झारत हौ गैयन चरैया हो बलैया डरि जायगी। परिहै गुलाल मेरी आँखिन में लाल, तौ गोपाल यहि ब्रज मैं जवाल[5] परि जायगी॥ १॥

---

१ एँड़ियों तक। २ एक प्रकार का वस्त्र। ३ पगड़ी। ४ जामा। ५ अनर्थ हो जायगा।

३५०. नीलकंठ त्रिपाठी, टिकमापुर के

खरी डर-भरी भरभरी उर परी रहै भरी भरी जाति ज्यों ज्यों राति नियराति है। सुख रसरीति प्रीति सखिन सों राखत पै तन-कौ न तन में प्रतीति अधिकाति है॥ नीलकण्ठ सोहति सकुच-भरे गातन सों सुरति की बात न सुनति, अनखाति है। हिये तन ताकि कसि बाँधै अँगिया की तनी पिय तन ताकि प्यारी पीरी परि जाति है॥ १॥ तन पर भारती न तन पर भार तीन तन पर भारती न तन पर भार हैं। पूजैं देवदार तीन पूजैं देवदार तीन पूजैं देवदारती न पूजैं देवदार हैं॥ नीलकंठ दारुन दलेलखाँ, तिहारी धाक नाकती न द्वार ते वै नाकती पहार हैं। आँधरे न कर गहे बहिरे न संग रहे बार छूटे बार छूटे बार छूटे बार हैं॥ २॥

३५१. नवलकिशोर कवि

सखी-बेलि-बृंदन के सुख को बलाहक[1] भो भाँति भाँति दाहक[2] भो सौतिन की छाती को। नवलकिसोर नेह नाह को निबाहक भो ज्ञान को उमाहक भो गौरभ गुरु जाती को॥ एरी प्रियबादिनी अमोल बोल तेरो इतो एक ही बिलोक्यो रीति जैसे बुंद स्वाती को। ब्यालन को बिष भो पियूष भो पपीहन को सीपिन को मुकुता कपूर केर[3]-पाती को॥ १॥

३५२. नवल कवि

सूझत न वारापार लिख्यो प्रेम है अपार मिलन अथाह देखि धीरज उड़ात है। पाती को अधार पाइ परत सनेह-सिंधु बिरह-लहरि माँझ हियरा हिरात है॥ तौल गुनी नौल बँधी ढूँढ़त रतन औधि मूरति मराजि वाकी नेकु ना थिरात है। एक बेर बाँचि पुनि फेरि खोलि फेरि बाँचि बाँचि-बाँचि प्रानप्यारी बूड़ि-बूड़ि जात है॥१॥

---

१ बादल। २ जलाने वाला। ३ केले को।

३५३. नवलसिंह (२) कायस्थ, झाँसीवाले

छप्पै

सुभग सिद्धि सुभ बृद्धि सकल संतन सुखकारिनि ।
दुर्गति दुर्ग दुरंत दुःख दारुन दर दारिनि ॥
सरनागत नैपुन्य पुन्य कारुन्य बिहारिनि ।
जगत निरूपित रूप दुष्ट दैत्यन संहारिनि ॥
निर्मर्ष मर्ष हर्षित वचन सुरनर्षिनर्षि हरिहरनुते ।
सुमति विभ्रमय तव विभो जय जय जय गिरिवरसुते ॥ १ ॥
सुखद जु गुरु लघु बरन बसत जिहि तनु सुकुमारा ।
जिहि के दच्छिन बाम भाग द्वै बिधि प्रस्तारा ॥
उभय मेरु कुच गद्य-पद्य रचना में बोलनि ।
द्विबिध मरकटी मकरकादि-रचना सु कपोलनि ॥
जिहि अग्र सदा कल बरन की बिमल पताका फरहरहि ।
सो सरस्वती बिधि-भवन[1] सग सुखद बास मम उर करहि ॥ २ ॥

३५४. नंदकिशोर कवि

(रामकृष्णगुणमाल)

पाजो झँगा दुपटा पटुका रँग राजत कुंकुम के चटकारे ।
माल गरे मनि कुंडल भूपन जोति जगै भुज भूषन न्यारे ॥
तीर कमान लिए सरजू नदी तीर खड़े रघुवीर निहारे ।
नील नए घन से तन के जन के मन के पन के रखवारे ॥ १ ॥

३५५. नायक कवि

सूरताई आँधरे में दृढ़ताई पाहन में नासिका चनान मध्य नौन रही हाट में । धर्म रहो पोथिन बड़ाई रही बृच्छन बँधेज परापाँतिन में पानी रह्यो घाट में ॥ यहि कलिकाल ने बिहाल कीन्हो सबै जग

१ ब्रह्मलोक ।

नायक सुकवि कैसी बनी है कुठाट में। रजं रही पंथन रजाई रही सीतकाल राई रही राई ते रनाँई रही भाट में॥ १॥

३५६. नबी कवि

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रबीन कैसे अंजनसहित सितँ-अँसित जलद से। चर से चकोर से कि चोखे कंडकोर से कि मदनमरोर से कि माते राते मद से॥ नबी कबि नैना से की और नैन बैना से कि सीपड़े सलोना मध्य राखे मृगमद से। पय से पयोधि से कि और सोंधे सौध से कि कारे भौंर के से अनियारे कोकनद से॥ १॥

३५७. नागर कवि

भादौं कि कारी अँध्यारी निसा लखि बादर मन्द फुही बरसावै।
स्यामाजी आपनी ऊँची अटा पै छकी रसरीति मलारहि गावै॥
ता समै नागर के दृग दूरि ते चातक स्वाति की मौजहि पावै।
पौन मया करि घूँघुट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै॥ १॥
गाँस गँसीली ये बातैं छिपाइये इश्क ना गाइये गाइये होलियाँ।
गेंद बहाने न बीर चलाइये सूधे गुलाल उड़ाइये झोलियाँ॥
लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहौ दिल प्रीति कलोलियाँ।
पाँइ परौं जी डरो टुक नागर हाइ करो जिन बोलियाँ-ठोलियाँ २॥
देवन की औ रमापति की दोउ धाम की बेदन कौन बड़ाई।
संखऽरु चक्र गदा पुनि पद्म सरूप चतुर्भुज की अधिकाई॥
अमृत-पान बिमानन बैठिबो नागर के जिय नेकु न भाई।
स्वर्ग बैकुंठ में होरी जु नाहिं तौ कोरी कहा लै करैं ठकुराई॥ ३॥

---

१ धूल। २ मतलब यह कि भाट को ही अब राना कहते हैं, असल में राना कोई नहीं रहा। ३ सफ़ेद। ४ काले।

३५८. नरेश कवि

झूरि से कौने लिए बन बाग ये कौने जु आँबन की हरिआई।
कोयल काहे कराहति है बन कौने चहूँ दिसि धूरि उड़ाई॥
कैसी नरेस बयारि बहै यह कौन धौं कौने सो माहुर नाई।
हाय न कोऊ तलास करै ये पलासन कौने दवारि लगाई॥ १॥

३५९. नवीन कवि

भेटत ही सपने में भटू चख चंचल चारु अरे के अरे रहे।
त्यों हँसि कै अधरानहु पै अधरान धरे ते धरे के धरे रहे॥
चौंकी नवीन चकी उझकी मुख स्वेद के बुंद ढरे के ढरे रहे।
हाय खुलीं पलकैं पल मैं दिल के अभिलाष भरे के भरे रहे॥१॥

३६०. क्षत्रिय नवलदास कवि, गूढ़वाले
(ज्ञानसरोवर)

दोहा—भक्त एक ते एक जग, जनि कोउ करै गुमान।
कोउ प्रगट कोउ गुप्त है, जानि रहे भगवान॥ १॥
कोउ शुक्र कोउ बृहस्पति, कोउ मंगल की भाँति।
कोउ कचपचियन्ह उदय घन, सुमन अनेकन जाति॥ २॥

३६१. नरिंद कवि, महाराजा नरिंद सिंह, पटियालानरेश

चंदन की चरचा न रही न रही अरी आड़ जो भाल दई ही।
मोतिन की लरकी लर है दरकी अँगिया पहिरी जु नई ही॥
झाँकत हौं पठई जु हती सु तौ तैं न सुनी सुनि हौं ही लई ही।
आयो न आयो बलाय त्यों तेरी तु काहे लरी लरिबे को गई ही॥१॥

३६२. नरोत्तम कवि (३)

आये मनमोहन बिताइ रैनि और ही सों काहू सौतिजन पग

१ और।

जावक[1] लै भाल को। सुकबि नरोतम सरोजनैनी सील करि बलि बलि आगे उठि मिली है गुपाल को ॥ अंचल सों पोंछि बेगि चंचल बिसाल नैन असन बसन करि दसन रसाल को। पाछे है कै कह्यो जाइ, अरी सहचरी[2] धाँइ[3] आरसी के महल बिछौना करु लाल को ॥ १ ॥

३६३. नीलकंठ मिश्र

जाके तन जोर आयो सर औ सराप हू को सो तो सहि सकै कैसे तेज अरितमा को। कहै नीलकंठ जब पंडव कुबुद्धि भयो भावी[4] के भरोसे रिस राखी उर जमा को ॥ पीछे भयो भारथ तौ स्वारथ कहाँ को भयो मिटि गयो पानी जब रानी[5] आनी सभा को। छत्रीतन पाइ तियताड़न दृगन देखैं फूटै क्यों न हिया छत्री छिया[6] ऐसी छमा को ॥ १ ॥ जोति सी जगी रहै जो सौतिऊ जगी रहै जो मेरे जान पाइ रूप भूपति जगी रहै। नीलकंठ निरखि लजानी पन्नगी रहै सराह तनगी रहै समान ता न गीर है ॥ ऐसी कछू हेरि हरि लेत हरि नीकी छबि हरिनी की छबि जाहि देखत ठगी रहै। लाल से रिझत है री लाल सकबार फार लाल से अधर लखि लालसै लगी रहै ॥ २ ॥

३६४. नारायणदास

दोहा—अजर अमर की रीति सों, बिद्या-धनहि बढ़ाव।
मनहु मीचु चोटी गहे, देत बार नहिं लाव ॥ १ ॥
जासों सब संसय मिटै, अनदेखा सो देखु।
पढ़िबो पोढ़ी आँखि है, अपढ़ अंध करि लेखु ॥ २ ॥

---

१ महावर। २ सखी। ३ दौड़। ४ होनी। ५ द्रौपदी। ६ छी-छी।

३६५. नाभादास कवि, अग्रदासजी के शिष्य
(भक्तमाल)

छप्पै

संकर सुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना।
बिषकसेन पहलाद बलिऽरु भीषम जग जाना॥
अर्जुन ध्रुव अँबरीष बिभीषन महिमा भारी।
अनुरागी अक्रूर सदा ऊधो अधिकारी॥
भगवन्त भक्ति अवासिष्ट की कीरति कहत सुजान हैं।
हरिप्रसाद रस स्वाद के भक्त इते परमान हैं॥ १॥

३६६. नरसी कवि

पद

ध्यान धरि ध्यान धरि नंदनी कुँअर नू जे थाकि अखिल आनंद पाम्ये। अष्ट महा सिद्धि ते द्वारऊ मो रहे देह ना दुकृत ते दूर बाम्ये॥ बृंदाबन महामुरलिका धुनि सुनि गोपिका केरँडा बृंद आवे। नरसैयाँ ने मने आनंद अति घणो पुष्प मुक्ताफल लेइ बधावे॥ १॥

३६७. नारायणदास वैष्णव
(छन्दसार पिंगल)

दोहा—श्रीगुरु हरि-पद-कमल को, बंदि मनोज्ञ प्रकास।
छंदसार यह ग्रंथ सुभ, किय नारायनदास॥ १॥
पिंगल छंद अनेक हैं, कहे भुजंगम-ईस[1]।
तिन ते लिए निकारि मैं, द्वादस अरु चालीस[2]॥ २॥

धीर समीर सु बै मुरली तट औ जमुना छबि तुंग तरंगित।
फूलि रहे द्रुम कुंजन-कुंज करैं अलिपुंज पराग सने हित॥
श्रीवृषभानसुता, नँदनन्दन के गुनगान सुने जित ही तित।
कौन सुनै सु कहौं किहि सों ब्रज की छबि मो मन में खटकै नित॥१॥

---

१ शेष भाग। २ बावन छंद उनमें से चुनकर कहता हूँ।

३६८. नरिंद कवि प्राचीन

फूलि रही माधुरी रसाल लता साधु री पलासन धुराधुरी अनेक रंग घेरे हैं। सीतल सुगंध मंद दच्छिन के पौन मान-मोचन नरिंद हरिनाच्छिन केरेरे हैं॥ प्रफुलित कुंजै वै गुलाब अलि गुंजै वोहिं जोहन को मोहन परत पाँय मेरे हैं। हेरै क्यों न बन ततलाय कहा ऐसी रही तन हू में अनमन ठनगेन तेरे हैं॥ १॥

३६९. नवखानि कवि

प्यारी को बुलाइ चित्रसारी देखिबे के मिस लाई वह सखी जहाँ सोइबे को धाम है। प्यारे को निहारि परजंक में मयंकमुखी संक मानि भाँजी[3] राजी लंकै[4] अति छाम[5] है॥ बेनी मृगनैनी[1] की कुँवर कान्ह गहि लई ऐसी भाँति भई नवखानि अभिराम है। भौंरन की चारु चटकीली परतंचा खैंचि तमक्यो चढ़ावत कमान मानो काम है॥ १॥

३७०. नंददास ब्रजवासी

पद

राम-कृष्ण कहिये निसि-भोर।
अवधईस वे धनुष धरे, वे ब्रजजीवन माखन-चोर॥
उनके छत्र-चँवर-सिंहासन भरत, सत्रुहन, लछिमन जोर।
उनके लकुट, मुकुट, पीतांबर गायन के सँग नन्दकिसोर॥
उन सागर में सिला तराई, उन राख्यो गिरि नख की कोर।
नन्ददास प्रभु सब तजि भजिये जैसे निरतत चंद चकोर॥ १॥

३७१. परसाद कवि

बड़ी पातसाही ज्यों ही सलिल मलै के बड़े बूड़े राजा-राव पै न कीन्हे तेग खरको। देन लागे नवल दुलहिया नवरोजन

---

१ मृगलोचनियों के। २ नखरे। ३ भागी। ४ कमर। ५ पतली।

मैं नीठि-नीठि पीछे मुख हेरै आनि घर को ॥ वाही तरवारि बादसाहन सों कीन्ही रारि भनै परसाद अवतार साँचो हर को । दुहूँ दीन जाना जस अकह कहा ना ऐसे ऊँचे रहे राना जैसे पात अछैबर[1] को ॥ १ ॥ आये कान्ह द्वार आली बेगि उठि देखौ धाइ, काहू यह बात कही आनँद सुधामई । केतिकौ दिना की हिये तपनि बुझाइबे को हौं हूँ परसाद प्यारे देखन तहाँ गई ॥ झूठो सुख सापने हू करन न पाई ऐसी एहो निरदई स्याम तुरत दगा दई । जौलों भरि नैन वह मूरति निहारि देखौं तौलौं नैन छोड़ि नींद बैरिनि बिदा भई ॥ २ ॥

३७२. पद्माकर भट्ट बाँदावाले

भट्ट तिलगाने को बुँदेलखण्ड-बासी कबि सुजस-प्रकासी पद्माकर सुनामा हौं । जोरत कबित्त छंद छप्पय अनेक भाँति संसकृत प्राकृत पढे जु गुनग्रामा हौं ॥ हय रथ पालकी गयंद गृह ग्राम चारु आखर लगाइ लेत लाखन की सामा हौं । मेरे जान मेरे तुम कान्ह हौ जगतसिंह, तेरे जान तेरो वह बिप्र मैं सुदामा हौं ॥ १ ॥ सम्पति सुमेर की, कुबेर की जु पावै कहूँ तुरत लुटावत बिलंब उर धारै ना । कहै पदमाकर सु हेम हय हाथिन के हलके[2] हजारन को बितर बिचारै ना । गंज-गज-बकस[3] महीप रघुनाथराव याही गज धोखे कहूँ तोहूँ देइ डारै ना । याही डर गिरिजा गजानन को गोई[4] रही गिरि ते गरे ते निज गोद ते उतारै ना ॥ २ ॥

(जगद्विनोद)

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंरभीर औरै भाँति बौरन के भौरन के ह्वै गये । कहै पदमाकर सु औरै भाँति गलियान छलिया

---

१ अक्षयवट प्रलयकाल के सागर में नहीं डूबता—ऊपर ही रहता है। २ देने में । ३ हाथियों के झुंड के झुंड दान करने वाले । ४ छिपाय रही ।

छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये ॥ औरै भाँति बिहँग-समाज में अवाज होति अबै ऋतुराज के न आजु दिन द्वै गये । औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये ॥ ३ ॥ कूलन में केलिन कछारन में कुंजन में क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है । कहै पदमाकर पराग हू में पौन हू में पातिन में पिकन पलासन[2] पगंत है ॥ द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में देखौ दीपदीपन[3] में दिपत दिगंत है । बीथिन में ब्रज में नबेलिन में बेलिन में बनन में बागन में बगर्‌यो बसंत है ॥ ४ ॥ गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चाँदनी हैं चिकै हैं चिरागन की माला हैं । कहै पदमाकर ह्वाँ गजक गिजा हैं सजी सेज हैं सुरा हैं औ सुराहिन के प्याला हैं ॥ सिसिर के सीत को न ब्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित[4] मसाला हैं । तान तुकताला हैं बिनोद के रसाला हैं सुबाला हैं दुसाला हैं बिसाला चित्रसाला हैं ॥ ५ ॥ एकै संग धाइ नंदलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गये री उर आनँद मढ़ै नहीं । धोइ धोइ हारी पदमाकर तिहारी सौंह अब तौ उपाइ कछु चित्त में चढ़ै नहीं ॥ कासों कहौं कैसी करौं कैसे धरौं धीर हाय कोऊ तौ बताओ जा सों दरद बढ़ै नहीं । एरी मेरी बीर जैसे-तैसे इन आँखिन ते कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥ ६ ॥

३७३. परतापसाहि कवि
(काव्यविलास)

चंदन छूटि गयो कुंचकुंभन, जात रही अधरान की लाली ।
अंजन धोइ गयो दृग खंजन देखि परै मुख की न बहाली ॥
कंपित गात ससंकित अंकित सेद[5] के बुंद लसैं छबिसाली ।
कीनो अरी मन मेरो निरास पी पापी के पास गई किन आली ॥१॥

---

१ पक्षिसमूह । २ टेसू । ३ द्वीप-द्वीप । ४ कहे हुए । ५ पसीना ।

द्वारका छाप लगै भुजमूल, कह्यो फल बेद पुरानन तौन है।
कागद ऊपर छाप सुनी, जिहि को सिगरे जग जाहिर गौन है॥
आपु लगाई जु कुंकुम की, सु सुहाई लगै छबि सों उर-भौन है।
छाती की छाप को प्यारे पिया कहिये हँसि याको महातम कौन है॥२॥
कंध सहेलिन के भुज मेलत खेलत खेल खरी इक जाम की।
अंगन अंगन भूषित भूषन जात कही न प्रभा बर बाम की॥
तौ लगि कुंज ते नंदकिसोर बिलोकि बढ़ी दसा आतुर काम की।
सुंदरी रूप की मंजरी बाल सु मंजरी देखत मंजरी आम की॥३॥

गंजन असुर मनरंजन मुनीसन के भंजन धरा को भार भूमि-भरतार हैं। भारे भुजदंडन महेसधनुखंडन उदंडन के दंडन अखंड बलसार हैं॥ कहै परताप खलखंडन उदंड महिमंडल के मारतंड जगत-अधार हैं। प्रबल प्रमत्थ हत्थ समर समत्थ जुत गत्थ यों अकत्थ दसरत्थ के कुमार हैं॥ ४॥

३७४. पजनेश कवि पन्नावाले

(मधुप्रिया)

स्याम सरूप में सोहै बुलाकसखी सतमोल सुहाग ज्यों लीजै।
ढीली हगैं मुख मोरि जुटीं गिरीं जंघनि मैन मरूर मरीजै॥
हा लगी होत बुरी पजनेस पयान हू लौं जु यही तजबीजै।
या जमैजाम या सीसा सिकंदरी, यों दुरबीन लौं देखिबो कीजै॥१॥
बिल्लौर की बारादरी जगी जोति जमुर्रुद की कुरसी बजै बीन।
गनै पहिली प्रतिदीपन दीपति दीपति ते पजनेस प्रबीन॥
प्रसेद के रूप दिठौना परी लट लागि रही जनु लोयन लीन।
मनो रतनाकर में रतिनाथ लिए छबि-बंसी बझावत मीन॥ २॥

दिन तो घरीको घन घेरि घहरान लागे आवति अँधेरी है है आभा इंदरन की। पथिक थोरी ही थोरी उमिरि अकेली

बीर अकुलाइ नाहीं गहौ गैल कंदरन की ॥ प्रुमन लतान में दिखाती यैनजीक ही सों दूरि दूरि ताईं सेतताइ मंदरन की । कहै पजनेस कोसे दाहिने दुबोसे कोसे डगर नगीच बीच बाधा बंदरन की ॥ ३ ॥ चोवा चौक चाँदनी चँदोवा चिकै चौकी चौक चंपक चँपावली चमेली चारु चोज है । खासे खस फरस उसीर खसखानन में पजन कपूर चंदनादि करि चोज है ॥ लाली लखि ललित लली के लाल लोयन में अमल गुलाबदल मलत उरोज है । अवनि असीतल पै ग्रीषम तपी तल पै पिय हाथ हीतल पै सीतल सरोज है ॥ ४ ॥ निंदित गयंद केसरीन खंजनीन हंस दीन यों प्रवीन कीन आतुर अनंग चाल । मानों सब प्रभा को प्रकास सुद्ध जाल हैकै कैधौं पर्ब पाइ कै प्रमान बारि गंग पाल ॥ कैधौं चलो कांति-रूप अंगन अनंग साजि कैधों अभ्रकंदुक प्रपाल प्रद प्रति ब्याल । लच्छ लच्छ भाँति को प्रकास में प्रकास भास मानों सप्त द्वीप प्रभाजाल जातरूपजाल ॥ ५ ॥ मुनि मन मंजु मौज मिस्रित मजे-जदार पजन प्रतच्छ देत दुति माहताबी ये । रद-छद-छिद्रधर अधर तमोल-दाग चुंबन सरस रोस रासिक किताबी ये ॥ बिधुमुखबरन सुबर्ने पीक पानन की भाषित जिन्हीं में बिधि निधि दिखलाबी ये । झलक झलान झला झलझल झलकत अमल कपोल गोल गहब गुलाबी ये ॥ ६ ॥ जलज सुकाकृति उतारि नथ नासिका सों करन कृतस्थल सुगच्छ प्रतिसुच्छवान । पजन प्रमस्थल है मिसिल नछत्रन की प्रथम नछत्रपति डीठि प्रति मोदमान ॥ सनीकृत कुंडली में सुभ्रित बिराजै बुद्ध सुभ्रित बिराजै बिधु बोधवत दिब्यवान । पछितात पूनो आजु अरबिन्द ऊनो देखि सूनो बिन नथ मुख दूनो दूनो दीप्तिमान ॥ ७ ॥ तमतम तामद रसादि पद तोयद सी नीलक जटान घाट जटा प्रकुटी सी है । पजनेस कंदरप दीपति

छटा सी छूटी हाटक फटिक ओट घटक फटी सी है॥ कच कुच दुविध विचित्राकृतिवत बक्र छूटी लट पाटी घट तट लै पटी सी है। विरह असुअ पच्छ प्रिय तौ प्रदोष पाइ पन्नगी पिनाकी-पद पूजि पलटी सी है ॥ ८॥ अलबेली अली पै धरे भुज को अँगरानी जँभाइ चितै त्रिबली। सरक्यो सिर चीर गिस्यो कटि ह्वै पजनेस प्रभा की जमी अवली॥ परवै जड़ी बाल की बेनी बँधी झलकै मुकुताली कपोलथली। बिधु के रथ चक्रित चक्र मनो कल केंचुली नागिनि छोड़ि चली॥ ९॥

बैठी बिधुकीराति कृसोदरी दरीची बीच खींचि पी निसंक परजंक पर लै गयो। पजन सुजान कवि लपटि लला के गरे झपटि सु नीवी कर जंघन सम्वै गयो॥ गोरो गोरो भोरो मुख सोहै रतिभीत पीत अंतसमै रक्त ह्वैकै अंत सो रजै गयो। मानो पोखराज ते पिरोजा भयो मानिक भो मानिक भये ही नीलमनि-नग ह्वै गयो॥ १०॥ ल्याई केलिभवन भुराइ भोरी भामिनी को फूलगंध कै फरस कीनो पौनरुख ते। कंचनकलित कृसतन रतिरमनीय लीनी गहि पीतम प्रसूनसेज सुख ते॥ कवि पजनेस अंक भरत हहा कै हरे सीबी कै समेटि साँस नीवी दाबि दुख ते। आहि करि उछरि सचोट पन्नगी-सी ऐंठि उमठि अरी री मैं मरी री कढ़ी मुख ते॥ ११॥ कवि पजनेस मनमथ के स्रवन पर संबुल झुलत भाल वृषभाननंदिनी। मुख दै सुधास्यो बिधि बुध बिधु अंक बंक दसगुनी दीपति प्रकासी जगवंदिनी॥ सेदकन मध्य दीठि रच्छक डिठौना ता पै छूटी लट डुलत कला जनु कालिंदिनी। मुखअरबिंद ते समेटि मकरंदबुंद मानों निज नंदनि चुनावति मलिंदिनी॥ १२॥

३७५. परमेश कवि प्राचीन (१)

आवती जाती किती बट पूजन बाल वा काहू के संग लगै नहिं।
जाको रहै उत लालची लाल सनेह सों वाहू से बात बनै नहिं॥

बीति गई तिथि यों परमेस सु और तियान की कांति मनै नहिं ।
साँवरी सूरति सों अटकी बट की भटू भाँवरी देत गनै नहिं ॥१॥
घन की घमक औ बनक बकपाँतिन की बीजुरी-चमक करवाल सी दिखात री । ललित लतान लखियत है नदान और कहै परमेस त्यों बहुत बेस बात री ॥ मोरन को सोर चहूँ ओर होत ठौर ठौर दादुर की दूँदि घोर करै तन घात री । सुखसरसावन लगे री लोग गावन को बिना मनभावन न सावन सुहात री ॥ २ ॥

३७६, परमेश भाट सताँववाले (२)

कोयन की कुरसी में करिकै कुमाच बैठीं बरुनी बरीख बीर बिलसनि बेरे हैं । पूतरी प्रबीन तेई पातुरैं बिलोकियत पलकन प्यादन के पेखियत फेरे हैं ॥ चारु चञ्चलाई चोपदार हैं हमेस बेस कहै परमेस डीठि भौंहन के डेरे हैं । आव माहताब भरे किम्मति किताब भरे मानत न दाब ये नवाब नैन तेरे हैं ॥ १ ॥
बागन बागन ह्वै कै पराग लै ज्यों ज्यों बहै यह बैहरि झूकन ।
त्यों त्यों परी परचण्ड महा परमेस उठै बिरहागि भभूकन ॥
कन्त बिदेस बसन्त समै हियरा हहरान लग्यो अब हूकन ।
नेह-भरो सिगरो तन जारिकै कैला किये यहि कैलिया कूकन ॥ २ ॥

३७७. प्रेमसखी कवि

कौसलकुमार सुकुमार अति मार हू ते आली घिरि आई जिन्हैं सोभा त्रिभुवन की । फूल फुलवाई में चुनत दोऊ भाई प्रेमसखी लखि आई गहे लतिका द्रुमन की ॥ चरन-लुनाई दृग देखे बनि आई जिन जीती कोमलाई औ ललाई पदुमन की । चलत सुभाई मेरो हियरा डराई हाय गड़ि मति जाँय पाँय पाँखुरी सुमन की ॥ १ ॥ छोटे छोटे कैसे तृन अंकुरित भूमि भये जहाँ तहाँ फैलीं इंद्रबधू बसुधान में । लहकि लहकि सीरी डोलत बयारि

और बोलत मयूर माते सघन लतान में ॥ धुरवा धुकारैं पिक दादुर पुकारैं बक बाँधि कै कतारैं उड़ैं कारे बदरान में । अंस भुज डारे खरे सरजू-किनारे प्रेमसखी वारि डारे देखि पावस-बितान में ॥ २ ॥

३७८. पुण्डरीक कवि

कहै पुंडरीक वै निसान फहरान लागे तोरन गुमान देखि धावनि कपीस की । अजहूँ तौ चेत क्यों अचेत तोहिं प्रेत लाग्यो सीता सुखदेनी लायो देवन तेंतीस की ॥ ताहि लै अँकोर कर जोरि मिलु राघव सों ना तो दस दिसा गेंद खेलैं दस सीस की । लंका-पति मूढ़ तेरी आई दसा दसमी रे दसमी बिजै की आई औधपुर-ईस की ॥ १ ॥

३७६. परशुराम कवि

पद

सेवा श्रीगोपाल की मेरे मन भावै ।
मनसा बाचा कर्मना उर आन न आवै ॥
करि दण्डवत सनेह सों सनमुख सिर नावै ।
लोचन भरि भरि भाव सों हरि-दर्सन पावै ॥
प्रेम-नेम निहचै करि हरि के गुन गावै ।
यह प्रताप फल परसुराम हरिभक्ति दृढ़ावै ॥ १ ॥

३८०. प्रवीणराय पातुर ओड़छा

दोहा—जुबन चलत तियदेह ते, चटकि चलत किहि हेत ।
मनमथ बारि मसाल को, सैंति सिहारे लेत ॥ १ ॥
ऊँचे है सुर बस किये, सम है नर बस कीन ।
अब पताल बस करन को, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥
बिनती राय प्रबीन की, सुनिये साह सुजान ।
जूठी पतरी भखत हैं, बारी बायस स्वान ॥ ३ ॥

दोहा लाल कह्यो सुनौ, चित दै नारि नवीन।
ताको आधो बिंदुजुत, उत्तर दियो प्रबीन ॥ ४ ॥

आई हौं बूझन मंत्र तुम्हें निज सासन सौं सिगरी मति गोई।
देह तजौं कि तजौं कुलकानि अजौं न लजौं लजि है सब कोई॥
हाथ रहै परमारथ स्वारथ चित्त बिचारि कहौ पुनि सोई।
जामें रहै प्रभु की प्रभुता अरु मेरो पतिव्रत भंग न होई॥ १ ॥

छप्पै

कमल कोक[1] स्रीफल मँजीर कलधौतकलस[2] हर[3]।
उच्च मिलन अति कठिन दमक बहु स्वल्प नीलधर ॥
सरवर सरबन हेममेरु कैलास प्रकासन।
निसि-बासर तरुबरहि कास कुंदन दृढ़ आसन ॥
इमि कहि प्रबीन जल थल अपक अबिध भजत तिय गौरि सँग।
कालि खलित उरज उलटे सलिल इंदु सीस इमि उरज ढँग ॥ २ ॥

छूटी लटैं अलबेली सी चाल भरे मुख पान खरी कटि छीनी।
चोरि नगारा उघारे उरोजन मो तन हेरि रही जो प्रबीनी ॥
बात निसंक कहै अति मोहिं सौं मोहिं सौं प्रीति निरंतर कीनी।
छाँड़ि महानिधि लोगन की हित मेरे सों क्यों बिसरै रसभीनी ॥ १ ॥

३८१. प्रवीन कविराय

कुंडलिया

यहि संसार असार में सारवी एक न काम।
सारे को सार्यो जन्यो सारी सौं बिसराम ॥
सारी सौं बिसराम राम सपने नहिं जान्यो।
दया धरम उपकार कबहुँ नहिं उर में आन्यो ॥
कहि प्रबीन कबिराय करौ केहि की समता तिहि।
स्रुतिमारग[4] को छोड़ि रहत अपमारग[5] मन जिहि ॥ १ ॥

---

१ चकवा। २ सोने के कलश। ३ महादेव। ४ वेद का मार्ग। ५ कुमार्ग।

नरक धाम जो तियन को रमत सदा नर नीच।
धमधूसर मूसर परी द्वै नितंब के बीच॥
द्वै नितंब के बीच कबहुँ निकसी नहिं काढ़े।
दिनदिन रहत तन्यान मनौ डोली के डाँड़े॥
कहि प्रबीन कबिराय बात मानो नहिं तरकै।
साँची कहत बनाय कुगति ह्वै परिहौ नरकै॥ २॥

कवित्त। कूर भये कुँअर मँजूर भये मालदार सूर भये गुपत अमूर भये जबरे। दाता भये कृपन अदाता कहैं दाता हम धनी भये निधन निधन भये गबरे॥ साँचेन की बात न पत्यात कोऊ जग माँझ राजदरबारन बुलैये लोग लबरे। भनत प्रबीन अब छीन भई हिम्मति सो कलिजुग अदलि-बदलि डारे सबरे॥ ३॥

३८२. परम कवि महोबेवाले

राजत अमी के मद छाके कालकूट किधौं चंचल तुरंग की समाए नहिं काके हैं। पी के हियरा के मृग मीनन के थाके किधौं सौतिसाल है कै सुखमा के ऐन काके हैं॥ परम कहत देखि खंजन हू थाके किधौं स्याम सेत ताके लाल आभा साधिका के हैं। छत्र छपाकर के भूपाल के छलाके चारु चंचल चलाँके नैन बाँके राधिका के हैं॥ १॥ दुरि दुरि दुरे बेनी बिपुल नितंबन पै घेरि घेरि घुमड़त घाँघरो घनेरो है। फेरि फेरि फिरत निपट लचकीलो लंक फेरि फेरि दृग फेरि फेरि मुख फेरो है॥ भुज की डुलनि औ खुलनि कुचकोरन की चाहि चाहि परमेस भयो चित्त चेरो है। झुकि झुकि झूकनि भरत घटै ज्यों ज्यों त्यों त्यों मैन के भभूकनि भरत घटै मेरो है॥ २॥

---

१ गुप्त। २ शूर नहीं। ३ न देने वाले। ४ भारी। ५ घड़ा। ६ शरीर।

३८३. प्रेमी यमन कवि

(अनेकार्थनाममाला—रामशब्दार्थ)

ईस नभ अस मृग मेरु धनु अरजुन संगी देव सिंह अन्थ सिंह गुच्छ आनिये। दुन्दुभी[1] भँवर सठ अग्नि सूर सस अस्व जम के कौतुक कला गीत चित्र ठानिये॥ जीव बासुदेव रिस गरुड़ गनेस काल त्रिबली औ मोती माल जलजन्तु जानिये। गजगति हंसगति नरगति त्रिया नदी सित सीतगुरु ऊँट रहिमान मानिये॥ १॥

३८४. परमानन्द लल्लापौराणिक, अजयगढ़वासी

सम्भु से सुढार तालफल से उदार बीजपूर[2] से अपूरब कठोरता ढरत हैं। कंजकलिका से नारिकेरफलिका से गुच्छ फूलन के भासे कंदुका[3] से उघरत हैं॥ पर्मानन्द गहब गुराई पीनताई भरे खासे काम नट के बटा से सुधरत हैं। रोज रोज बाढ़त उरोज कामिनी के जाँतरूप[4] के से कुम्भ गजकुम्भ निदरत हैं॥ १॥

३८५. प्राणनाथ बैसवारे के

संबत ब्योम नराच बसु, मही महिज[5] ऊर्ज[6] मास।
सुक्ल पच्छ तिथि नवमि लिखि, चक्राब्यूह-इतिहास॥ १॥

मोदकछन्द

नमामि स्यामसुंदरं। गुमानकंधिमंदिरं॥
कराल काल काल के। बिरंचि लोकपाल के॥
अभाग-नाग-केसरी। अपूत पूतना तरी॥

छन्द

पांडव प्रबोधि मुरारि करि द्वारावती बिचरत सही।
कबि प्रान किमि स्रीपति-कथा नहिं जात पसुपति सों कही॥
गोपाललालचरित्र पावन कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
जन प्राननाथ सनाथ ते फल[7] चारि मंजुल पावहीं॥ १॥

---

१ नगाड़े। २ नींबू। ३ गेंद। ४ सुवर्ण। ५ मंगलवार। ६ कार्त्तिक का महीना। ७ चार फल—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

३८६. पद्मेश कवि

छप्पै

ब्रह्म बिष्णु सिव लिंग पद्म अस्कंद सुहावन।
बामन मीन बराह अग्नि पुनि कूरम पावन॥
नारद गरुड़ भविष्य ब्रह्मवैवर्तक नीको।
मार्कंडे ब्रह्मांड भागवत सबको टीको॥
पद्मेस पुरान अठारहौ समुझि लेहु बुधिमान सब।
सब भुक्तिमुक्तिदातार ये गावत हैं पण्डित सुकबि॥ १॥

आयो आमखास में तमाम उमराय देखे कहीं खोजा काम को कछूक बात मान में। ताही समै ताही के सरकि संग तेग हिन्दी सहमत भागे जेते तुरुक बिवान में॥ पीरन मनाइ मीर मीरन सौं कहैं केहू बीर लै सिधारे मढ़ि रहे न अठान में। राजा करनेस के करेरे पद्मेस बीर तेरे कर करिकला राखी मुगलान में॥ २॥

३८७. पूषी कवि मैनपुरीसमीपवासी

फूले अनारन किंसुक-डारन देखत मोद महा उर माँचै।
माधुरी-झौरन आँब के बौरन भौंरन के गन मंत्र से बाँचै॥
लागि रही बिरहीजन के कचनारन बीच अचानक आँचै।
साँचे हुँकारै पुकारै पुखी कहि नाचै बनैगी बसंत की पाँचै॥ १॥

संगमरवर की सुधारी सरवरपारि[1] फूले तरवर सब बिपिन सँवार्‌यो है। ठाढ़ी तहाँ प्यारी संग बिहरि बिहारी पुखी रैनि उजियारी इत बदन उज्यार्‌यो है॥ कान को तर्‌यौना छूटि परसि पयोधरै[2] को धरनी परत कनी झरि झनकार्‌यो है। रोस भरपूर जिय जानि कै कलंकी क्रूर मानौ चन्दचूर[3] चन्द चूर करि डार्‌यो है॥ २॥

पीनस[4] सँवारो प्रवीन मिलै तौ कहाँ लौं सुगंधी सुगंध सुँघावै।

---

१ तालाब का किनारा। २ स्तन। ३ शिव। ४ पीनस एक रोगका नाम है।

कायर कोपि चढ़ै रन में तो कहाँ लगि चारन चाव चढ़ावै ॥
जो पै गुनी को मिलै निगुनी तौ पुखी कहु क्योंकरि ताहि रिझावै ।
जैसे नपुंसकनाह मिलै तौ कहाँ लगि नारि सिंगार बनावै ॥ ३ ॥

३८८. पर्वत कवि

फैलि रहो बिरहा चहुँ ओर ते भाजिबे को कोउ पार न पावै ।
जानत हौ परबत्त सबै तुम जाल को मीन कहाँ लगि धावै ॥
चाहै कछूक सँदेसो कह्यो सु तो जी महँ आवत जीभ न आवै ।
ऊधोजू वा मधुसूदन सों कहियो जो कछू तुम्हैं राम कहावै ॥ १ ॥

३८९. पृथ्वीराज कवि

कै पृथीराज छिप्यो अलि को गन कै घन की उमड़ी ठटियाँ ।
कै नग सों मखतूल सिंहासन कै सनि मंदिर की टटियाँ ॥
कै बिबि[1] ब्याल[2] जुरे फन सों फन आनन-चंद अमी डटियाँ ।
कै दल काम को रोकन को तिय की पटियाँ तमकी घटियाँ ॥ १ ॥

३९०. पद्मनाभ

पद

हेली[3] नव निकुंज लीला रस पूरित स्रीवल्लभ बन मोरे ।
अँग रबिपुन छिप न घन दामिनि दुति फल फल पति दोरे ॥
करत अबेस बिरह बिरहिनि स्रुति भूतल बहुतक थोरे ।
पद्मनाभ मथुरेस बिचारत स्रीलछिमन भट सुत ओरे ॥ १ ॥

३९१. पारस कवि

लाग री ना इन बातन में हरि आये हैं जानु बड़े निसि भाग री ।
भाग री बैरिन की चरचा ते तजै गुरु[4] मान पियारस पाग री ॥
[5]पागरी सोहै न पाँयन में कबि पारस तू तो है बुद्धि की आगरी ।
आग री लागै तिहारे हठै मनमोहन के उठि कंठ सों लाग री ॥ १ ॥

---

१ दो । २ सांप । ३ सखी । ४ भारी । ५ पगड़ी ।

३६२ प्रेम कवि

यह मानदसा कित चातुरी चाह हरें-हरे नाहिं कहैं हँस कै।
झिझकारनि पानि-निवारनि वा मुसकानि रही हिय मैं बस कै॥
मुखचुंबन हेत दुरावन की भनै प्रेम हियें लगिबो मसकै।
रति के रस के कुच के मसके जे लई सिसके ते अजौं कसकै॥१॥

३६३. पुरान कवि

बाँसुरी के बीच एक भौंर डारि ल्याई सखी ढाँपि पटपल्लव सों महा बुद्धि भारी सों। भनत पुरान यामें आपु ही ते धुनि होत कान दै कै कह्यो सुनो राधा सुकुमारी सों॥ रीझि रीझि वारी ताहि आप ही मगन भई नभ तन चितै मुख मूँद्यो स्याम सारी सों। आँचर में गाँठि दै बिहँसि उठि चली आली प्यारी कही आज ह्याँ ही रहो न हमारी सों॥ १॥

३६४. परबीनै कवि

दोहा—कहै परोसिनि सों तिया, निरखि सखी सुखदैनि।
चारि दिना की चाँदनी, फिरि अँधियारी रैनि॥१॥
गई न बदि संकेत को, बिलखै व्याकुल बाल।
औसर चूकी डोमनी, गावै तालबेताल॥ २॥
लग्यो डंक मुख जाइये, जहाँ कुटिल अलि जान।
ज्यों मधि काजर-कोठरी, लागै रेख निदान॥ ३॥
फेरि मिलो नहिं देहि दुख, चहे जु नंदकुमार।
जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार॥ ४॥
सुंदरताई अंकह तन, बतियाँ सुख सरसात।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात॥ ५॥

३६५. परशुराम कवि

जपा के कुसुम ताकी आँब के चतुर चोर मानिका के मीत

१ धीरे-धीरे। २ हाथ को हटाना। ३ अकथनीय। ४ दुपहरी का फूल।

अतिरोचक कलीब के। बिद्रुम के दल द्वै बिराजैं हेमसंपुट में राजत अनूप बहु जन के नसीब के ॥ भावती के अधर पियूष के धरनहार कहै पर्सुराम रसदानी प्रानपीव के। बिबन के बादी अनुराग के से प्रतिबिंब रजोगुननायक कि बंधु बंधुजीव के ॥ १ ॥

३६६. पतिराम कवि

एक समै सब गोपकुमारि पै खेलत आधिक राति बिहानी।
हौं हूँ गई दुरिबे को जहाँ सु दुरयो तहाँ मोहन हो अभिमानी॥
ये पतिराम लखे जब ते तब ते पल एक नहीं ठहरानी।
भागि अटा ते गई सगरी यों घटा से मनो बिजुरी बिझुकानी ॥१॥

३६७. प्रह्लाद कवि

आजु आली माथे ते सु बेंदी गिरै बारबार मुख पर मोतिन की लरी लरकति है। धरत ही पग कील चूरे की निकसि जाति जब तब गाँठि जूरे हू की टरकति है ॥ जानि ना परत पहलाद परदेस पिय उससि उरोजन सों आँगी दरकति है। तनी तरकाति कर चूरी चरकति अंग सारी सरकति आँखि बाईं फरकति है ॥ १ ॥

३६८. पंडितप्रबीन ठाकुरप्रसाद मिश्र, पयासी के

भाजे भुजदण्ड के प्रचण्ड चोट बाजे बीर सुन्दरी समेत सोवैं मन्दर की कन्दरी। मुगल पठान सेख सैयद असेषै धीर आवत हजारन बजार के से चौधरी ॥ पण्डितप्रबीन कहै मानसिंह भूपति कमान पै अरोपैत यों काम की सी कैबरी। सिंह के ससेटे गज बाज के लपेटे लवा तैसे भाजि भूतल चकत्तन की चौकरी ॥ १ ॥

पावस अमावस की अधिक अँधेरी राति सासु है प्रबासै मेरी ननँद नदान जू। सूनो सुखभौन है परोस को भरोस कौन पाहरू न जागत पुकार परे कान जू ॥ पण्डितप्रबीन प्यारो बसत बिदेस

१ मूँगा। २ अनार। ३ सब। ४ चकता। ५ बाहर गई।

पति कौन को अँदेस अब रसिकसुजान जू। एहो ब्रजराज-राज सुनिकै अरज मेरी आजु बसि जैये बसि जैये तौं बिहान जू ॥ २ ॥ आयो ऋतुराज आज देखत बनै री आली छायो महामोद सो प्रमोद बन भूमि भूमि। नाचत मयूर मद उन्मद मयूरनी को मधुर मनोज सुख चाखैं मुख चूमि चूमि ॥ पण्डितप्रबीन मधुलंपट मधुप-पुंज कुंजन में मंजरी को लेत रस घूमि घूमि। हेली पौन प्रेरित नबेली सी द्रुमनबेलि फैली फूलडोलनि में झूलि रही झूमि झूमि ॥ ३ ॥ जादूगर साँवरो न जानीं कस जादू करी पंडित-प्रबीन हौं बिकानी प्रानप्यारे पै। आँगन सों जात अटा नट की बटा सी गैल छैल की छटा सी छबि देखत हौं द्वारे पै ॥ घूँघुट के ओट चोट लागी इन नैनन में ऐसी लोटपोट भई पीतपटवारे पै। आई पनिघट पै न घर की न घाट की हौं मोखो री नवल नट अटको हमारे पै ॥ ४ ॥ उझकि झुकाय नेक लचकि लचाय लंक[3] रसना कसकि दाबि दसन अमोल जू। बदन बिसाल स्रम-सेद को ललित जाल डोलत कलित कच कुण्डल कपोल जू ॥ पंडितप्रबीन हार हलत उरोजभार चंचल है अंचल को उघरि निचोल[4] जू। धन्य धन्य गेंद तोहिं गहते गुलाब-कर खेलत नबेली करि केलि को कलोल जू ॥ ५ ॥ द्वार दक किल्ली देत दिल्ली को जनाबआली रूस की रियासति मसूसि कै त्रसत है। काबुल औ जाबुल जनाब में न ताब रही अरबी अरब्बिन पै काठी ना कसत है ॥ पण्डितप्रबीन हठजंगी पै फिरंगी लोग गाढे गढ़धारिन को राहु सो ग्रसत है। आकिल अकूत बर महाराज मानसिंह बाजे बादसाह तेरी बाँह लौं बसत है ॥ ६ ॥ बेल्ली[5] को बितान मल्ली-दल को बिछौना मंजु महल निकुंज है प्रमोद बनराज को। भारी

१ सुबह। २ मकरंद-लोभी। ३ कमर। ४ वस्त्र। ५ बेलोंका चँदोवा।

दरबार सिरी औरन की भीर बैठो मदन दिवान इतमाम कामकाज को ॥ पंडितप्रबीन तजि मानिनी गुमान-गढ़ हाजिर हुजूर सुनि कोकिल अवाज को । चोपदार चातक बिरद बदि बोलैं दरदौलत-मद्दराज महराज ऋतुराज को ॥ ७ ॥ हिन्दूपति ह्वैगो हिन्दुवान को निसान हाठे हिम्मति में कीरति हमीर प्रभुताई को । दान औ कृपान रुद्रदेव सों न आन गढ़ पन्ना में अमान है प्रमान बीरताई को ॥ भूषन बखानी सूरताई सिवराज ही की पंडितप्रबीन करै और की बड़ाई को । बाँध्यो सालिबाहन जो साका को पताका सही राख्यो मानसिंह करि दाबा मरदाई को ॥ ८ ॥ पारथ प्रसिद्ध पुरुषारथ है भारथ में भीम को असीम बल बिदित लराई को । पंडितप्रबीन कौन कीरति नबीन कहै गोरी औ पिथौरा की न थोरी बीरताई को ॥ सरजा सतारा साह दारा की कहै को कियो बाजी बात गाजी सिवराज सूरताई को । जावी चली साथ सालिबाहन औ बिक्रम के राखी मानसिंह मरजाद मरदाई को ॥ ९ ॥ एरी मतिमंद स्यामसुन्दर के सोहै सीस बीस बिसे गोपिन को चोपि चित्त मोहै प्रान । पंडितप्रबीन है नबीन अनुराग तेरो तेरोई सुहाग साँचो तेरे को समान आनै ॥ मोरवारे मुकुट मरोर की कलंगी पर चारु चाँदे चंद्रिका करत कित अभिमान । पाँय पर लोटति पलोटति लखौंगी आजु गरब गुमान साधे सुनि-यत राधे मान ॥ १० ॥ सानी सिवराज की न मानी महराज भयो दानी रुद्रदेव सो न सूरति सतारा लौं । दाना मवलाना रूम साहिबी में अब्बैरलौं आकिल अकब्बर सखावत बुखारा लौं ॥ पंडितप्रबीन खानखाना लौं नवाब नवसेरवाँ लौ आदिल इराक-

---

१ इहतमाम = प्रबंध । २ भौर । ३ बाबर शाह । ४ बुद्धिमान ।

दिल दारा लौं । विक्रम समान मानसिंह सम साँची कहौं प्राची दिसि भूप है न पारावार धारा लौं ॥ ११ ॥ कूना ठेर भूनागढ़ पूना में पुकार परै माँगत पनाह जाँपनाह फिरँगाने का । कासी कासमीर सिंध सूरत हिसार हाँसी हाँक सुनि जात झुकि मौलिं मुगलाने का ॥ पंडितप्रबीन कहै हिम्मति कहाँ लौं भूप दर्सन को लाल भयो ढाल हिन्दुवाने का । अंग बंग कुल्लू कहिलूर में जहूर जंग जानत जहान मानसिंह मरदाने का ॥ १२ ॥ कैसे हू न बिक्रम को बिक्रम घटन देतो कैसे निज साको सालिबाहन चलावतो । कैसे महमूद बिजैपाल को बिगारि देतो लेतो छीनि हिन्द और गदर मचावतो ॥ गोरी के गरूर ते न गारद पिथौरा होतो अहमद दुरानी की कहानी कौन गावतो । नंदन पुरंदर के दर्सननरेन्द्र बीर तो सो कहूँ नायब जो दिल्लीपति पावतो ॥ १३ ॥

३६६. प्रियादास ब्राह्मण वृंदावनवासी

(नाभा के भक्तमाल का तिलक बनाया उसी का यह कवित्त है)

मेरे तो जनमभूमि भूमि हित नैन लगे पगे गिरिधारीलाल पिता ही के धाम में । राना की सगाई भई करी ब्याहसामा बई गई मति बूड़ि वा रँगीले घनस्याम में ॥ भाँवरे परत मन साँवरे सरूप माँझ ताँवरे सी आवैं चलिबे को पतिग्राम में । पूछैं पितु मातु पट आभरन लीजिये जू लोचन भरत नीर कहा काम दाम में ॥ १ ॥

४००. पुरुषोत्तम कवि बुंदेलखण्डी

कवि परसोतम तमासे लगि रहे मान बीर छत्रसाल अद्भुत जुद्ध ठाटे हैं । नादर नरेस के सवाद रजपूत लड़ैं मारैं तरवारैं गज बादर से फाटे हैं ॥ सिंधु लोहू-कुंडन गगन झुंड-झुंडन सों रिपु-रुंड-मुंडन सों खंड सबै पाटे हैं । चरबी चखैयन के परबी समर बीच गरबी मगरबी से करबी से काटे हैं ॥ १ ॥

---

१ पूर्वदिशा में । २ समुद्र तक । ३ सिर ।

४०१ पंचम कवि प्राचीन (१)

कीबे को समान ढूँढि देखे प्रभु आन ये निदान दान जूझ में न कोऊ ठहरात हैं। पंचम प्रचण्ड भुजदण्ड के बखान सुनि भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं ॥ संका मानि काँपत अमीर दिल्लीवाले जब चंपति के नंद के नगारे घहरात हैं। चहूँ ओर कत्ता के चकत्ता दल ऊपर सु छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं ॥ १ ॥

४०२. पंचम कवि बंदीजन डलमऊवाले (२)

उज्ज्वल उदारताई गावत पुराने लोग जोग करिबे को जोगी बसत महिन्द्र है। रत्नाकर की फनिंद देत ना अबेर राख्यो भाष्यो पार पावत न महिमा फनिन्द्र है ॥ पंचम सुकबि धरा धरे उपकार हेत चित्त कथा राम की बसत कहा इन्द्र है। सम्भु के बसे ते देवगन के लसे ते आजु सिवगिरि सोहै गिरिगन को गिरिन्द्र है ॥ १ ॥

४०३. पंचम कवि अजयगढ़वाले (३)

पण्डित कबिन्दन के बृन्द बैठे एक ओर एक ओर बाघ से बुँदेला हैं अपार में। राना राव और कछवाहे हाड़ा एक ओर एक ओर कर्चुली पँवार परिहार में ॥ एक ओर पायक धँधेरे औ बघेले कौन सहै भटभेरे कहा कहौं निरधार में। पंचम गुमानसिंह हिन्द के पनाह ठकुराइसि को टीको यार तेरे दरबार में ॥ १ ॥

४०४. प्रधान केशवराय कवि
(शालिहोत्र)

दुहुँ कानन बिच भवँरी देखो। अहिमुसली ता नाम बिसेखो[१] ॥

४०५. प्रधान कवि

रोगिन कान सुनै जो कहूँ सहसा निज डीलन ही उठि धावैं।
जाइ कै ताहि भरोसो दै भूरि सु नारी निहारि कै रोग मिलावैं ॥
देत सुधा सम ते रस हैं मुरदै मुख में परे प्रान जियावैं।
भाषै प्रधान ये बैद सुजान जे कालहु के घर ते धरि लावैं ॥ १ ॥

---

१ यह अकबर के कुल की जाति थी।

आक धतूर धमोइ भरे कँखरी फटकी जग बैद कहावै।
जानैं नहीं कछु लच्छन रोग के सीत भये पर छाँछे पियावै॥
हाँसी बदैं महाब्राम्रन सों गुन ताके प्रधान कहाँ लगि गावै।
कुत्सित बैदन की करनी यह बैतरनी गऊ लै घर आवै॥२॥

४०६. प्राणनाथ कवि

चंद बिन रजनी सरोज बिन सरवर तेज बिन तुरँग मतंग बिना दको। बिन सुत सदन नितंबिनी सुपति बिन बिन धन धरम नृपति बिना पद को॥ बिन हरिभजन जगत सोहै जन कौन नोन बिन भोजन बिटपे बिना छदै को। प्राननाथ सरस सभा न सोहै कबि बिन बिद्या बिन बात न नगर बिना नद को॥१॥

४०७. पुष्कर कवि

जल जोर महा घनघोर घटा ब्रज ऊपर कोप पुरंदर को।
कबि पुष्कर गोकुल गोप सबै निरखैं मुख श्रीमुरलीधर को॥
धर तैं धरिबो धरनीधर को धरक्यो न हियो धरनीधर को।
कर लै जनु काँकर को कर को करुनाकर को करुनाकर को॥१॥

४०८. प्रसिद्ध कवि

गाजी खानखाना तेरे धौंसा की धुकार सुनि सुत तजि पति तजि भाजी बैरी बाल हैं। कटि लचकत बार भार ना सँभारि जात परी बिकराल जहँ सघन तमाल हैं॥ कबि परसिद्ध तहाँ खगन खिझायो आनि जल भरि भरि लेती द्दगन बिसाल हैं। बेनी खैंचै मोर सीसफूल को चकोर खैंचै मुकुता की माल ऐंचि खैंचत मराल हैं॥१॥ तातो होत तन और सूखि जात मुख-जोति अंग अकुलात चित्त अधिकौ भँवतु है। जैयत उसीरभौन लागत न

१ मदार। २ मट्ठा। ३ हिस्सा लेना तय करता है। ४ निन्दित।
५ शाखा ६ पत्ती ७ खसखाने में।

नीको पौन ओला घनसार घश्यो चंदन अमितु है ॥ सीरेहू जतन याते कीन्हे हैं अनेक भाँति तापर तिहारी सौंह दुख ना घटतु है । जानत हौं ब्याप्यो तोहिं बिरहा प्रसिद्ध आलो, नायक है कोऊ, नाहीं ग्रीषम की ऋतु है ॥ २ ॥

४०९. परमानंददास कवि

पद

परमेस्वरि देवी मुनि बंदे पावन देवी मंगे ।
बामन-चरन-कमलनखराजित सीतल बारि-तरंगे ॥
मज्जन पान करत जे प्रानी त्रिबिध ताप दुख भंगे ।
तीरथराज प्रयाग प्रगट भो जब बनि जमुना बेनी संगे ॥
भगीरथ राज सगर कुल-तारन बालमीकि जस गायो ।
तुव प्रताप हरिभक्ति प्रेमरस जन परमानँद पायो ॥ १ ॥

४१०. पराग कवि

रजत-पहार घनसार मालती को हार छीर-पारावार गंगधार धराधर सो । सत्य सो सतोगुन सो सारदा सो संकर सो संख सक्र मुक्ता सो सुधा सो सुरतरु सो ॥ भनत पराग कामधेनु सो कुमोदिनी सो कंज कुन्दफूल सो पुनीत पुन्य फर सो । कासीसुर विक्रम नरेस देसदेसन में तेरो जस राजत छबीलो छपाकर सो ॥ १ ॥

४११. फेरन कवि

अमल अनार अरविन्दन को बृन्दवार बिम्बाफल बिद्रुम निहारि रहे तूलि तूलि । गेंदा औ गुलाब गुललाला गुलाबास आब जामें जीव जावक जपाको जात भूलि भूलि ॥ फेरन कवत तैसी पाँयन ललाई लमेल ईंगुर भरे से डोल उमड़त झूलि झूलि । चाँदनी-सी चन्द्रमुखी देखो ब्रजचन्द उठै चाँदनी बिछौना गुलचाँदनी-सी फूलि फूलि ॥ १ ॥ पुहिम बियोग मुहत्यागिन बिभूति

१ ठंढे । २ कैलाश । ३ क्षीरसागर । ४ महादेव ।

दीनी जोगिनि प्रमोद पुन्यवंतन छलो गयो । ग्रहन ग्रहेस कियो सनि को सुचित्त लघु ब्यालन अनंद से सँभारति दलो गयो ॥ फेरन फिरावत गुनिन ग्रह नीच द्वार गुनन बिहीन घर बैठे ही भलो गयो । कौन कौन बातैं तेरी कहौं एक आनन ते नाम चतुराननपै चूकते चलो गयो ॥ २ ॥ जनमसमै में ब्रजरच्छन समै में साजि समर समै में ज्ञान जप जज्ञ जूट में । देव देवनाथ रघुनाथ बिस्वनाथ कीन्हो फूल जल दान बान बरषा अटूट में ॥ फेरन बिचात्यो सुभ बृष्टि को बिचारु चारु चारिहू जनेन को प्रसिद्ध चवौं कूट में । अवधि अकूट में सु गोवर्द्धन कूट में सु तरल त्रिकूट में बिचित्र चित्रकूट में ॥ ३ ॥ चंदन चहल चोवा चाँदनी चँदोवा चारु घनो घनसार घेरि सींच महबूबी के । अतर उसीर सीर सौरभ गुलाब-नीर गजब गुजारैं अंग अजब अजूबी के ॥ फेरन फबत फैलि फूलन फरस तामें फूल-सी फबी है बाल सुंदर सुखूबी के । बिसद बिताने ताने तामें तहखाने बीच बैठी खसखाने में खजाने खोलि खूबी के ॥ ४ ॥

४१२. फूलचंद (१) कवि

ससि सी सरोज सी नारि मनोज की सी आनन ओज सी पूरन परायनि । मंजुल मती सी स्वसुचि सोभा की रासि सी सूध्यो विलोकनि मन लेति लरायनि ॥ एक हू न अवगुन गुन अमित बिचारे सब फूलचंद जाहि लखत सहज तरायनि । कमला सी चपला सी बरसाने अबला सी स्री सी ईश्वरी सी बिराजै ठकुरायनि ॥ १ ॥

४१३. फूलचंद (२) ब्राह्मण भोजपुर

संभु समान उदार है फूल स्वरूप में मानो मनोज सों ओज है ।
धीर धरा सों गँभीर में सागर नागर सेस दिनेस सरोज है ॥
साहिबी बास बसी रनजीत की दारिद को नित खोवत खोज है ।

तीरथराज है पापिन को कुलनारिन मैन भिखारिन भोज है ॥ १ ॥

४१४. बिहारीलाल चौबे ब्रजवासी

(सतसई)

दोहा—मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाईं परे, स्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यह बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल ॥२॥
नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास यहि काल ।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल ॥ ३ ॥
डारत ठोढ़ी गाड़ गहि, नैन बटोही मारि ।
चिलक चौंध में रूप ठग, हाँसी फाँसी डारि ॥४॥
कीनी भली अनाकनी, फीकी परी गोहार ।
तज्यो मनो तारन बिरद, बारक बारन तार ॥ ५ ॥

४१५. बालकृष्ण त्रिपाठी बलभद्र जू के पुत्र (१)

(रसचन्द्रिका पिंगल)

छप्पै

मूढ़बुद्धि परिहरिय होइ परदुःख-दयामय ।
रमित जोग रस माहिं दमित मन बच क्रम निरभय ॥
भक्ति हेत निज राम रचेउ जे परम सुखद नर ।
खिसि न होइ जनु कबहि तिहूँ पुर ऊपर सुन्दर ॥
सुभ ज्ञान ध्यान बैराग रत तोष जोर तृष्णाहिं सिखित ।
तिन तीन पाँच षट बस करिय सुभ मूरति नरमग लिखित ॥ १ ॥
पंडित चित लखि दौर करत वर भरम सफर भर ।
जगत बसीकर अजिर दमित रतिपति करगत सर ॥
ललित खंजगति सुढर सहित अंजन पियमनहर ।

मरमभेद कहँ सदर नहिंन त्रिभुवन समता कर ॥
अति रूपरासि गुन सकल घर नर मोहनमय मंत्र पर।
बदत बाल कबि रसिकबर पंकजदल सम नयन बर ॥ २ ॥

४१६ बालकृष्णकवि (२)

सम्पति सुमति नीकी बिपति सुधीर नीकी गंगातीर मुक्ति नीकी नीकी टेक नाम की। पतिब्रता नारि नीकी परहित बात नीकी चाँदनी सु राति नीकी नीकी जीति काम की ॥ बालकृष्ण बेदविद उग्र नीकी भूसुर की भक्ति नीकी नीकी है रहनि हरिधाम की। अगन की हानि नीकी तात की मिलनि नीकी सुर मिली तान नीकी प्रीति नीकी राम की ॥ १ ॥ हरि कर दीपक बजावैं संख सुरपति गनपति झाँझ भैरौं झालर झरत हैं। नारद के कर बीन सारद जपत जस चारि मुख चारि बेद बिधि उच्चरत हैं ॥ षटमुख रटत सहस्रमुख सिव सिव सनक सनंदन सु पायँन परत हैं। बालकृष्ण तीनि लोक तीस और तीनि कोटि एते सिवसंकर की आरती करत हैं ॥ २ ॥

४१७. ब्रजेश कवि

छैल मनमोहन की छबि में छकी हौं छिन एक हू न भूलत लगाई प्रेम-डोरी हौं। भनत ब्रजेस साँची सरल सुभाय भरी चाय भरी बृंदाबनचंद की चकोरी हौं ॥ गोकुल में बसत न गोकुल ते काम कछू गोकुलेस ही के बस गोप की किसोरी हौं। गोरी देह देखि कोऊ गोरी ना कहौ री मोहिं हौं तो सराबोर स्याम रंग ही में बोरी हौं ॥ १ ॥

४१८. बिजयाभिनंदन कवि

आगम की बात जो बखानी ब्यास बेदन में सोई सो करत कहे सुनत अपूबा[1] है। बिजयाभिनंदन प्रगट पुहमी[2] में साईं मन-

---

१ भविष्य की। २ पृथ्वी।

सूबा जानि साह सूबा मन ऊबा है ॥ स्याम सखा सखिन समान कौन और बानी गैब की अवाज महमद कहि तूबा है। एक छत्र छत्ता छितिपाल होइ छत्रिन में वहै छबि छाजी त्याग तेग के अजूबा है ॥ १ ॥ कटक कटीले काटे कोटिन करिंद वारे देत गढ़ गढ़ी ढाहि नेक ही की हाँकरे । जिन की सलावत लखे ते और राजा राइ ऐसे लग लागन लगे हैं जनु फाँकरे ॥ किये ऐसे जाहिर जहान जहाँ तहाँ जिम दान की अहाव सों कहाँ न करी घाँकरे । रचे करतार अवतार भू के भरतार मही मेंह हवा बाल तेग त्याग आँकरे ॥ २ ॥

४१९. बिजय कवि, राजा विजयबहादुर टेवरी

लखि कै दृग मीन छिपे बन में मन में अरबिंद सकाने रहैं।
बड़ी बेनी भुजंगिनि देखि फरवैं कटि केहरि चाहि लजाने रहैं ॥
उकसौंहे उरोजन देखि बिजै मन देवन के ललचाने रहैं।
मुखचंद की पेखि प्रभा दिन में दिल में चकवा चकवाने रहैं ॥ १ ॥

४२०. बिक्रम, राजा विजयबहादुर चरखारी

(बिक्रमबिरदावली)

दोहा—हौं चेरो तेरो भयो, तापर पेखो कर्म ।
कहा दास की दासता, कह प्रभुता को धर्म ॥ १ ॥
चारि जुगन मुनि चारि भुज, लगी न एती देर ।
अब प्रभु कीजतु है कहा, मेरी बेर अबेर ॥ २ ॥

(बिक्रमसतसई)

दोहा—जय जय जय असरनसरन, हरन सकल भवपीर ।
जन बिक्रम मंगलकरन, जय जय श्रीरघुबीर ॥ १ ॥
हरि राधे राधे सु हरि, कर निसिदिन करि ध्यान ।
राधे रट राधे लगी, रट कान्हर मुख कान ॥ २ ॥
जे उरझैं सुरझैं सखी, लखी नवल अवरेच ।

मुरझाये सुरभै नहीं, परपंची के पेंच ॥ १ ॥

४२१. बंशरूप कवि काशीवासी

सुरतसमै में मोहै किन्नरी नरी हैं रास रस में भरी हैं की करी हैं कोककाज की। बंसरूप चाहैं जंग रंग की उमाहैं नाचि उठती उमाहैं लखि गाहैं सुखसाज की ॥ दीनन को छाहैं दावादारन को दाहैं सुचि सुजस उमाहैं हैं पनाहैं लोकलाज की। पुन्य अवगाहैं ये भुवनपरदा हैं बाहैं साहन निबाहैं कासिराज महाराज की ॥ १ ॥ कैधौं काहू मंत्र सों बिलोप करि दीन्हो बान देखत हिरानो हिये चेटक[1] लख्यो नयो। ईठ को देखाय हो बिलोकि निज डीठ हू सों मैं ही धौं भुलानी कैधौं भ्रम सब को भयो ॥ कबि बंसरूप स्यामसुन्दर सरूप ऐसो छन में न जान्यो यह कौतुक कहा भयो। जाय सर तीर है अधीर मुसकाइ कह्यो यह अरबिंद सों मलिंद धौं कितै गयो ॥ २ ॥ कंचन के पलँग बिछाये सीसमहल में चहल सुपेदी सनी सौरभ रसाला मैं। ओढ़े ऊनअंबर सकल नखसिख तऊ नेकहू न मानै मन रहत कसाला मैं ॥ कबि बंसरूप साजे दीपगन माला स्वच्छ अधिक उमंग त्यों अनंग चित्रसाला मैं। महत मसाला हैं बिसाला जे दुसाला आला पालासम लागैं बाला बिन सीतकाला मैं ॥ ३ ॥ लहरि लोनाई[2] में झपत फेरि ऊबत है बार बार चकित निहारि वारपारा मैं। चंचल प्रबल चख झख[3] सो उरत फेरि धीरज धरत बिधिगति यों बिचारा मैं ॥ कबि बंसरूप पायो गिरि सों अराम नेक रामराम कहि केसपास जाय ठारा मैं। बूड़त है मेरो मन पावत न थाह केहूँ तेरी सुचि अंगनप्रभा की बारिधारा मैं ॥ ४ ॥

४२२. बंशगोपाल कवि

खाय कै पान बिदोरत ओठ हैं बैठि सभा में बने अलबैला।

---

१ दृष्टिबंध का तमाशा। २ सलोनेपन में। ३ मछली।

धोती किनारी की सारी सी ओढ़त पेट बढ़ाय कियो जस थैला ।।
बंसगोपाल बखानत है सुनौ भूप कहाय बने फिरैं छैला ।
सान करैं बड़ी साहिबी की फिरि दान में देत हैं एक अधेला ।।१।।

४२३. बोधा कवि

एकै लिये चौंरी कर छत्र लिये एकै हाथ एकै छाँहगीर एकै दावन सकेलतीं । एकै लिये पानदान पीकदान सीसा सीसी एकै लै गुलावन की सीसी सीस मेलतीं ।। बोधा कबि कोऊ बीन बाँसुरी सितार लिये लाड़िली लड़ावैं फूल गेंदन की झेलतीं । छोटे ब्रजराज छोटी रावटी रँगीन तामें छोटी छोटी छोहरी[1] अहीरन की खेलतीं ।। १ ।।

४२४. बोध कवि

परम प्रसिद्ध की सुमृति सतबुद्धि की सदाई रिद्धि सिद्धि की घमेंस[2] मचिबो करै । पूरन पसार पसरत पुन्यवारे भारे गुनिन के बृंद बेदबानी बचिबो करै ।। भनै बोध कबि छबि देखत छकित होत एकौ छन मन न जुदाई खचिबो करै । देवतटिनी[3] के तट अगन तरंग संग रातो-दिन मुकुति नटी सी नचिबो करै ।। १ ।।

४२५. बोधीराम कवि

ऐसे अनियारे मानो समुद करारे भारे मानौ मच्छधारे सोये मैन मतवारे हैं । काजर से कारे खरसान से उतारे कारीगर के सँवारे सो बिरहबान मारे हैं ।। घूँघुट जवनिका से निकसि कै चोट करैं कहै कबि बोधी ये बिरहज्वाल जारे हैं । ऐसे अति तीखे नैन बानन छिपाइ राखौ भौंह की मरोर सौं करोर मारि डारे हैं ।। १ ।।

४२६. बुद्धिसेन कवि

बारी औ खँगार नाऊ धीमर कुम्हार काछी खटिक दसौंधी[4] ये हजूर को सुहात हैं । कोल गोंड़ गूजर अहीर तेली नीच सबै पास

---

१ लड़कियाँ । २ घमासान । ३ गंगा । ४ भाट ।

के रहे से कहा ऊँचे भये जात हैं ॥ बुद्धिसेन राजन के निकट हमेस बसैं कूकर बिलार कहा गुन अधिकात हैं । दूर ही गयंद बाँधे दूर गुनवान ठाढ़े गज औ गुनी के कहा मोल घटि जात हैं ॥ १ ॥

४२७. बुद्धराज कवि, राव बुद्ध हाड़ा बूँदीवाले

कीनो तुम मान, मैं कियो है कब मान, अब कीजै सनमान, अपमान कीनो कब मैं । प्यारी हँसि बोलु, और बोलैं कैसे बुद्धिराज, हँसि हँसि बोलु, हँसि बोलिहौं जु अब मैं ॥ दृग करि सौंहैं, को रिसौंहैं करि जानत है, अब करि सौंहैं, अनसौंहैं कीने कब मैं । लीजै भरि अंक, जहाँ आये भरि अंक हौ, न काहू भरि अंक, उर अंक देखे अब मैं ॥ १ ॥ ऐसी ना करी है काहू आजु लौं अनैसी जैसी सैयद करी है ये कलंक काहि चढ़ैंगे । दूजे को नगाड़े बाजैं दिल्ली में दिलीस आगे हम सुनि भागैं तो कबिंद कहा पढ़ैंगे ॥ कहै राव बुद्ध हमैं करने हैं जुद्ध स्वामिधर्म्म में प्रसुद्ध जे जहान जस मढ़ैंगे । हाड़ा कहवाय कहा हारि करि कढ़ै ताते झारि समसेर आजु रारि करि कढ़ैंगे ॥ २ ॥

४२८. बृंदावन कवि

ओज करि आपनो पयोज पृथिवी पै रोज रोज हू सरोजन के ओज हरिबो करै । बारिनिधि बसि कै कपाली सीस लसि कै प्रदच्छिना सुमेरु आसपास भरिबो करै ॥ छोटो छोटो ह्वैकै फेरि षोड़स कला लौं बढ़ै नीके बुंद अमल अमीके झरिबो करै । बृन्दाबनचंद-नखचंद समता के हेत चंद यह मंद कोटि छंद करिबो करै ॥ १ ॥

४२९. बिंदादत्त कवि

चाँदनी चटक चारु चौतरा में चंदमुखी चाँदनी बिलोकिबे को बैठी सुकुमार है । फैलि रही चाँदनी चटक तैसी अंगन की चहूँओर चंदन सुगंधन को सार है ॥ बिंदादत्त कहै है हुहारे मनिवारे न्यारे सोभा सों सँवारे जल सुघर सुढार है । मोतिन की

माल धरे सुमन बिसाल हाल लाल चलि देखौ आजु बाल की बहार है ॥ १ ॥ उतै उयो तारन समेत तारापति इतै मोतिन जटित लट आनन पै अरी है । उतै अंक सोहत कलंक दिन पूनम के इतै आड़ अंजन की वैसी छबि करी है ॥ बिंदादत्त कहै उतै लखत चकोर इतै चहूँओर सखिन की डीठि सुख भरी है । आजु नंदलाल पास प्यारी को बिलोकौ चलि चन्द्रमुखी चन्द्रमा सों कैसी होड़ परी है ॥ २ ॥

४३०. बदन कवि

रस अनुकूल गुन जामें धुनि झलकत नाहीं जतिभंग है रुचिर अति छंदगति । जाको पान करत बदन कवि सुधा कौन कामिनी अधर मधु माधुरी हू ना रुचति ॥ जो पै ऐसे बचन की रचना कै जानै तौ निसंक सुख भूप को कवित्त कहि पैहै पति । नाहीं तो सभा में आइ आगे सुकविन के तू आपने कलुष से करेजे सों निकासै मति ॥ १ ॥

४३१. बंदन पाठक कासीवासी
(मानसशंकावली)

दोहा—श्रीसीता श्रीराम-पद, पदुम बन्दि त्रयभाँत ।
धाम नाम लीला ललित, श्रीहनुमत अदवात ॥ १ ॥
श्रीगिरजापति-पुत्र के, बन्दौं पद अभिराम ।
तुलसी तुलसीदास पद, करि कै बिबिध प्रनाम ॥२॥
श्रीकासीपति ईस्वरीनारायण नृपराज ।
तिहि के सुभग सनेह ते, प्रगट ग्रंथ द्विजराज ॥ ३ ॥
श्रीमानससंका सकल, रही बिस्व में छाइ ।
ताके उत्तर-बोध हित, ग्रंथोद्भव सुखदाइ ॥ ४ ॥

४३२. बिश्वेश्वर कवि

नीरधि चंद बधून के आनन नाग के लोक अमृत्त जो होई ।

तौ कत छार औ छीन मरै पति औ गर की अधिकार न सोई ॥
पंडित देव प्रबीन कबीन जो आपनी भूल कहै सब कोई।
जान्यो बिसेसर ईसरदास के कंठ में बास पियूष को होई ॥ १ ॥
जानै निदान निघंट बिधान सो नारी को लच्छन रोग अपार है।
औषधि रूप सवाद बिबेक सो पानी औ पौन को भूमि बिचार है॥
चूरन पाग औ पाक घृतादिक जंत्र रसादिक को मत सार है।
होइ जसी जु धनन्तर के सम जानौ बिसेसर बैद उदार है ॥ २ ॥

४३३. बिदुष कवि

कुन्ती पांचाली दमयन्ती तारा सकुन्तला की अहिल्या हू मन्दोदरी पहिले सुधारे हैं। मैनका घृताची रंभा मंजुघोषा उर्बसी तिलोत्तमा को तिल हू ते हलुकी निहारे हैं ॥ बिदुष सुकबि भनै गिरा रमा उमा राधा मोहिनी हू रचि फिरि मन में बिचारे हैं। सिया को बनाय बिधि धोयो हाथ जामो रंग ताको भयो चन्द कर झारे भये तारे हैं ॥ १ ॥ राधा सों सिंगार हास रस चोरी माखन की मोहन को गोपी गही भयो ताको पति है। जननी के बन्धन में करुना करी है बहु रिस करि काली को कचरि मान हति है ॥ बिदुष कहत बीर करिकै पछारन में भीत कंस हिये घिन पूतना में अति है। अदभुत बछरा औ बालक बने हैं आप सबसों बिराग करि कही अंत गति है ॥ २ ॥

४३४. बेनी प्राचीन (१) असनीवाले

बियंत[1] बिलोकत ही मुनिमन डोलि उठे बोलि उठे बर्हि[3]ही बिनोदभरे बन बन। भकल बिकल है बिकाने रे पाथिक जन उर्द्धमुख चातक अधोमुख[4] मरालगन[5] ॥ बेनी कबि कहत मही के महा भाग भये सुखद सँजोगिन बियोगिन के ताप तन। कंजपुंज-

१ सरस्वती। २ आकाश। ३ मोर। ४ नीचे को मुख किये। ५ हंससमूह।

गुंजन कपीदल के रंजन सो आये मानभंजन ये अंजनबरन घन ॥ १ ॥ आँवा सी अवनि धुँधी धूपरूप धूमकेतु आँधी अंधकूप डारे लोचन अनैसे कै । जमक जलाकन की नाकन की लोहू चलै ब्याकुल जगत साँझ पावै जैसे-तैसे कै ॥ लोकपति लूक से उलूक से लुकत बेनी कुंजछाया जहाँ-तहाँ छाइ रही ऐसे कै । कोठरी तखाने खसखाने जलखाने बिन ग्रीषम के बासर बितीत होत कैसे कै ॥ २ ॥ खोलिबे को फाग देवदारा सी उतरि आई दीरघ छगन देखि लागतीं न पलकैं । खुलत दुकूल भुजमूल दरसत बर उन्नत उरोज हार हीरन के झलकैं ॥ बेनी कबि भू पर धरत पाँव मन्द मन्द आनन के ऊपर अनूप छबि छलकैं । लाल लाल रंग-भरी मदन तरंग-भरी बाल भरी आनँद गुलाल भरी पलकैं ॥ ३ ॥ नारी बिन होत नर नारी बिन होत नर राति सियराति उर लाये पयोधर में । बेनी कबि सीतल समीर को सनाका सुनि सोवैं सब साँझ ते कपाट दै सहर में ॥ पच्छी पच्छ जोरे रहैं फूल फल थोरे रहैं पाला के प्रकास आसपास धराधर में । बसन लपेटे रहैं उरू जानु फेटे रहैं सीत के ससेटे लोग लेटे रहैं घर में ॥ ४ ॥ घन मतवारे गज पौन हरकारे बक बीर निरधारे मोर ढाढ़िन की तान पर । बिज्जु बरछीन की चमक चहुँओरन ते त्यौं नकीब चातक पुकारन प्रमान पर ॥ देखि देखि काँपत बियोगी जन कातर सु बेनी कबि कहै इन्द्रधनुष निसान पर । कोकिल की कुहुक दुहाई फिरी ठौर-ठौर पावस प्रबल दल आयो महिमान पर ॥ ५ ॥ कैरि की चुराई चाल सिंह की चुराई लंक ससि को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की । पिक को चुरायो बैन मृग को चुरायो नैन दसन अनार हाँसी गुजरी गँभीर की ॥ कहै कबि बेनी

१ अप्सरा । २ हवा । ३ हाथी ।

बेनी ब्याल की चुराइ लीनी रती रती सोभा सब रति के सरीर की। अब तौ कन्हैयाजू को चित्त हू चुराइ लीनो छोरटी है गोरटी या छोरटी अहीर की ॥ ६ ॥ गेह देह मेह को न छोभ लोभ मान लघु लाज परलोक लीक तीनों क्यों नगन में। उमत उरोज भार चपल चमक चारु लपटि लपटि जात नाग हू पगन में ॥ बेनी कबि कहै कछू कहत न बनै ऐसी लगनि लगाई हाइ कौन सी लगन में। भूमि हरियारी हरियारी से सिधारी प्यारी निसि अँधियारी अँधियारी सी दृगन में ॥ ७ ॥ पृथु नल जनक जजाति मानधाता ऐसे जेते भूप भये जस छिति पर छाइ गे। काल-चक्र परे सक्र सैकरन होत जात कहाँ लौं गनाओं बिधि बासर बिताइ गे ॥ बेनी साज सम्पति समाज साज सेना कहाँ पाँयन पसारि हाथ खोले मुख बाइ गे। छुद्र छितिपालन की गनती गनावै कौन रावन से बली ते बबूला से बिलाइ गे ॥ ८ ॥ बेदमत सोधि सोधि देखि कै पुरान सबै संतन असंतन को भेद को बतावतो। कपटी कपूत कूर कलि के कुचाली लोग कौन राम-नाम हू की चरचा चलावतो ॥ बेनी कबि कहै मानौ मानौ रे प्रमान यही पाहन से हिये कौन प्रेम उपजावतो। भारी भवसागर में कैसे जीव होतो पार जो पै नहीं रामायन तुलसी बनावतो ॥ ९ ॥ देखत ही दृगन दुरे हैं दौरि बारि मीन कानन कुरंग दिये खंजन सकान है। बेनी मखतूल सी बिलोके बलि बार-बार छकिगे भुजंग छोड़ि दियो खान-पान है ॥ सोहैं कुच गहब गुलाबी गोल गुम्बज से गेंदा गजकुंभन को गंजत गुमान है। चित दै चकोर चितै चौंकत न चीन्हि परै चोखो मुखचन्द चारु चन्द के समान है ॥ १० ॥

झूमि रहे घन घूमि घने तल बोरत भूमि मनो चहुँघा घिरि।

है अपसोस न रोस करो बिन हौस लता रहि रूखन सों भिरि ॥ बेनी पपीहन मोरन हू हहरान न ढूँढि करैं बहुते फिरि । ज्यों डरपै तरपै बिजुरी परै काहू बियोगिनी पै न कहूँ गिरि ॥११॥

बाँधे द्वार का करी चतुर चित्त का करी सो उमिरि वृथा करी न राम की कथा करी । पाप को पिनाक री न जानै नाक नां करी सो हारिल की लाकरी निरंतर ही ना करी ॥ ऐसी सूमता करी न कोऊ समता करी सो बेनी कबिता करी प्रकासतासता करी । न देव-अरचा करी न ज्ञान चरचा करी न दीन पै दया करी न बाप की गया करी ॥ १२ ॥ बदनसुधाकरै उघारत सुधाकरै प्रकास बसुधा करै सुधाकरै सुधा करै । चरन धरा धरै मृनालऊ धराधरै सु ऐसे अधरा धरै ये बिंब अधराधरै ॥ बेनी दृग हा करै निहारत कहा करै सु बेनी कबिता करै त्रिबेनी-समता करै । सुरत में सी करै सु मोहनै बसी करै बिरंचि हू जसी करै सु सौतिन मसी करै ॥ १३ ॥

४३५. बेनी कवि (२) बैंतीवाले भाट

सुन्दर सुगन्धदार रेसा को न लेस कहूँ स्वाद सरसाये हैं सदाई सुखसाज के । अमृत भरे हैं पीत अरुन हरे हैं जब कर में करे हैं और सेवा कौन काज के ॥ बेनी कबि कहै जौन दीन्हो तौन पावै सदा गुनन को गावै जे टिकैत सिरताज के । धरे धरि पाल हैं सो भेजे महिपाल हैं सो निपट रसाल हैं रसाल महराज के ॥ १ ॥ दंडत अदंड खल खंडत अखंड औ उदंड भुजदंड बर बीरता के बाने के । गब्बर गनीमन के गरब बिलाइ गये छाइ गये प्रबल प्रताप मरदाने के ॥ बेनी कबि कहै खुसी खलक खुदाय जासों हिम्मति की हद सब बातन बखाने के । गाजुदीनहैदर बहादुर नवाब देखो होत या जमाने को सतून हिंदुवाने के ॥ २ ॥ बाजी

के सु पीठि पै चढ़ायो पीठि आपनी दै कवि हरिनाथ को कछोह मान सादरै । चकवै दिली के जे अथक अकबर सोऊ नरहरि पालकी को आपने काँधा धरै ॥ बेनी कवि देनी औ न देनी की न मोको सोच नावै नैन नीचे लखि बीरन को कादरै । राजन को दीबो कविराजन को काज अब राजन को काज कबिराजन को आदरै ॥ ३ ॥ सुरसरि[1] सेंदुर जटाकलाप बेनी बर उपमा अनूप ऐसी सुखमा लहित है । बारन चरम चीर भूषन भुजंग अंग अंजन अनल दृग संग समुचित है ॥ बेनी कवि जाको भेद बेदहू न जानत है हावभाव निरवेद अदभुत हित है । नर वहै नारी वहै नर है न नारी वह जानै को अनारी अर्धनारीस्वर चित है ॥ ४ ॥

४३९. बेनीप्रबीन (२) बेनीप्रसाद वाजपेयी लखनऊवासी

सूर सदा रति में ससि सो मुख मंगल रूप धरे बुध नायक ।
जीव तियान के सुक्रनिधान फबी रति मन्द अनन्द के दायक ॥
राहु के खेद प्रसेद भरो तन केतु मनोहर के छवि छायक ।
आये प्रभात कृपा करि कै किहि के गृह ते हमरे गृह लायक ॥ १ ॥
कालि ही गूँथि बबा कि सौं मैं गजमोतिन की पहिरी अति आला ।
आई कहाँ ते कहाँ पुखराज की संग यई जमुनातट बाला ॥
न्हात उतारी मैं बेनीप्रबीन हँसैं सिगरी सुनि बैन रसाला ।
जानत ना अँग की बदली सब सों बदली[2] बदली कहै माला ॥२॥

रैनि में जगाई कल करन न पाई इमि ललन सताई परजंक अंक महियाँ । ससकि ससकि करहत ही बितीति निसा मसकि प्रबीन बेनी कीन्ही छितचहियाँ ॥ भोर भये भौन के सकोन लागि गई सोय सखिन जगाइबे को आनि गही बहियाँ । चौंकि परी चकि परी औचकि उचकि परी जकि परी सकि परी बकि परी नहिं-

---

१ गंगा । २ खफ़ा हुई ।

मों ॥ ३ ॥ मानव बनाये देव दानव बनाये जच्छ किन्नर बनाये पसु पच्छी नाग कारे हैं। दुरंद बनाये लघु दीरघ बनाये केते सागर उजागर बनाये नदी नारे हैं॥ रचना सकल लोक लोकन बनाय ऐसी जुगुति में बेनी परबीनन के प्यारे हैं। राधा को बनाय विधि[2] धोयो हाथ जाम्यो रंग ता को भयो चंद कर झारे भये तारे हैं ॥४॥

कंकन कैरन[3] कल किंकिनी कलित कटि कंचन कँगूर कुच केस कारी जॉमिनी। कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबु[5]क कपोतग्रीव कोकिल कलामिनी॥ केसरि कुसुम्भ कलधौत की कछू न कांति कोबिद प्रबीन बेनी करिबरगामिनी । कोकनकारिका सी किन्नरीक कन्यका सी कैधौं काम की कला सी कमला सी कोई कामिनी ॥५॥

छहरत छबि छिति छोरन लौं छूटी छटा बस किये छैलन छकाये ही रलति है। छीरद की छोहरी सी छपा सी प्रबीन बेनी छपा में छपाकर की छाती में लसति है॥ छला छाप छाजत छरा के छोर छिटकत छवनि छुवत छ[6]नदुति सी चलति है। छीन कटि छोटी सी छबीली में छटाँक भरि छाई छलछंद छितिपालन छलति है ॥६॥

४१७. बेनी प्रगट (४) नरवलवासी

जल से सु थल पर थल ते सु जल थल महाबल भल जुद्ध कुद्ध उनमाथी को। बरस कितेक बीती जुगुति चलै न कछू बिना दीन-बन्धु होत साँकरे में साथी को॥ मन बच करम पुकारत प्रगट बेनी नाथन के नाथ औ अनाथन-सनाथी को। बल करि हारे हाथा-हाथी सब हाथी तब हाथीहाथा हरषि उबारयो हरि हाथी को॥ १॥

४१८. बलदेव कवि देवरा नगर बघेलखंडवासी

(सत्कविगिराविलास)

चारिहुँ ओर लसैं बन बाग तड़ाग अनेकन की छबि छाजत।

---

१ हाथी। २ ब्रह्मा। ३ हाथों में। ४ रात। ५ शंख। ६ बिजली।

सीतल स्वच्छ गँभीर भरे जल गंग ज्यों त्यों सतरंगिनि साजत ॥
सील सरूप सुहाये गुनी रति काम लौं नारि सबै नर छाजत ।
पूरन पाँइ चलै जहँ पुन्य सु भूमि को भूषन देवरा राजत ॥ १ ॥
चाँदनी सी लसै चाँदनी चारु चँदोवा में चंद की सोभा बितानी ।
तानन लेती ते बारबधू लगैं तूल न तौल तिलोतमा बानी ॥
बैठि सिंहासन राजत आपु लसैं कबि कोबिद बीर खुमानी ।
देखि सभा बर बिक्रम भूप की नीकी लगै न सुरेसकहानी ॥ २ ॥
आई न जोति अबै तरुनाई की छाई न प्यारे की प्रीति अछेहै ।
बात सुनै रस की बलदेवजू बूझै न रीझै करै नहीं तेहै[1] ॥
छोड़यो न खेल अजौं गुड़ियान को चौसरु तें लगी देखन देहै ।
कान्है बिलोकि बिलोकि रहै कछू बोलै न डोलै न खोलै सनेहै ॥ ३ ॥
जाकी निकाई न पाई कहूँ तिय मैनका मैन की जोई सी लागै ।
कानन लागै लसै वह नैन कहै मृदु बैन सुधारस पागै ॥
नाद सँगीत कलान प्रबीन लखे तन-दीपति के तम भागै ।
चौस लगै घर कंचन लीपो सो राति जुन्हाई कि जोति न जागै ॥ ४ ॥
भौंहैं बिलोके रहै सदा सासु की जोई कहै सो करै परि पाँइनि ।
नंद-जिठानी रहै सुख पाये सु देखत ही करै चौगुने चाइनि ॥
सूधिय रीति सदा बलदेवजू जानै नहीं कछु भाइउपाइनि ।
केती तिया सुकिया सुनी-देखी न देखी-सुनी कहूँ ऐसे सुभाइनि ॥ ५ ॥
आरसीभौन भरी छबि सों बनी देखै बनी अपनी परछाहीं ।
जाकी रतीक रती न लहै रति क्यों कहिये तिय औरन माहीं ॥
ताही समै बलदेवजू आइ गही ललना की लला कर बाहीं ।
लाज-मनोजमयी मनु है गयो हाँ न कही न कही मुख नाहीं ॥ ६ ॥

---

१ तेहा । २ पैदा की हुई ।

४३९. बलदेव कवि (२) चरखारी के

सुचि सरबज्ञ है कृतज्ञ पंचजज्ञकारी बैन-अनुसारी उपकारी गुन-सिंधु है। परम सपूत सानदार[1]न धरमधुर परम प्रसंस निज-बंस-अर-बिंद है। कहै बलदेव जो कहत निबहत सोई सहित समुद्र माँह भरत मुनिंद है। रामपदभक्ति माँह आठौ जाम राचो रहै साँचो द्विजमोहन कबिन में कबिंद है॥ १॥

४४०. बीर कवि (१), दाऊदादा बाजपेयी मंडिलावाले

(प्रेमदीपिका)

तिय झूमति झूम लौं आवति है गुन गावति है मन भावन के।
ऊँचे अटान के बिज्जुछटान के ठाट ठटै दधि भावन के॥
घूमि रही मथुरा नँदगाँव मनों घुमड़े घन सावन के।
कहै बीर मनोरथ कैयो करै मग हेरति है पिय आवन के॥ १॥

तेरी यह बानि देखी निपट कठिन खोटी जौन तू सिखावै बीर भावै मोहिं नाहिने। हैं तौ सिद्धिदायक सकल पुरबासिन के इनको जहान पूजै मोहिं परवाहि ने॥ जाको धरि ध्यान पीव रह्यो ना छनक एक पूजने की कहा नाम लीजै अब नाहिने। सुचि करि गौरि को न पूजन करन पाऊँ बार बार कहत गनेस देखौ दाहिने॥ २॥

४४१. बीर कवि (२) कायस्थ दिल्लीवाले

(कृष्णचंद्रिका)

घुमड़ि घुमड़ि आये बादर उमड़ि धाये साँवरे बिदेस छाये औसर करारे में। दादुर पपीहा मोर सोर चहूँ ओर करैं मारत मरोर उठि काम[2]जर जारे में॥ धूम जलधारैं करैं उमँग सलिल सरैं गाज की गजब मरैं बैस मतवारे में। झूँकै झुकि जाती चढी झूलि झूलि गाती देखि फाटै बीर छाती हा कुठौर भय भारे में॥१॥

---

१ आदत। २ काम का ज्वर।

कुंजगलीन अलीगन में चली आवत श्रीवृषभानुदुलारी।
ताहि बिलोकि कै रंगभरे छल सों छिपि कै रहे कुंजबिहारी॥
कुंकुमा घाल्यो उरोजन को तकि पानि-सरोज सों ताहि निवारी।
जानि है बीर दसा उर आनि बजी वह एक ही हाथ की तारी॥२॥
मेरो तुम्हारो मिल्यो जियरा सु चढ्यो रसरंग अनंग के जागे।
गाउँ निगोड़ो चवाई बुरो है कहाँ लगि छूटिये बातन भागे॥
फैलि परै कहुँ बात सगेन में जाइ चुकै तिय पाँयन माँगे।
काह हमैं औ तुम्हैं बिगरैगी जु टोकैंगे भूलि हू काहू के आगे॥३॥

दोहा—कायथकुल श्रीबासतव, उत्तम उत्तिमचंद।
रामप्रसाद भयो तनय, तासु महामतिमंद॥१॥
चंद्र बार अंषे निधि सहित, लिखि संबतसर जानि।
चन्द्रबार एकादसी, माघबदी उर आनि॥२॥
निगमबोध सुभ छेत्र जहँ, कालिंदी के तीर।
इंद्रप्रस्थ पुर बसत लखि, इंद्रपुरी मनि बीर॥३॥
कर्‌यो जथा मति आपनी, कृष्णचन्द्रिका ग्रन्थ।
जैसो कछू बताइगे, पूरब पंडित पंथ॥४॥

४४२. ब्रजचंद कवि

कैला भई कोयल कुरंग[1] बार कारे किये कूटि कूटि केहरी कलंक लंक[2] दहली। जरि जरि जंबूनद[3] भूँगा बदरंग होत अंग फाटो दाड़िम[4] तुचा[5] भुजंग बदली॥ एरी चंदमुखी तू कलंकी कियो चंद हू को बोलै ब्रजचंद सों किसोर आप अदली। छार मूड़ डारैं गजराज ते पुकार करैं पुंडरीक बूड़्यो री कपूर खायो कदली॥१॥

होत ही प्रात जो घात करै नित पास-परोसिनि सों कल गाढ़ी।

---

१ मृग। २ कमर। ३ सोना। ४ अनार। ५ केंचुल।

हाथ नचावत मूड़ खुजावत पौरि खड़ी रिस कोटिक बाढ़ी ॥
ऐसी बनी नख ते सिख लौं ब्रजचंद ज्यों क्रोध-समुद्र ते काढ़ी ।
ईंट लिए पिय को मुँह ताकत भूत सी भामिनि भौन में ठाढ़ी ॥ २ ॥

फूलन की माला मोसों कहत मुलाम[1] ऐसी, फूलन की माला मेलि राखत न क्यों गरैं । मेरे दृग रोज ही बतावत सरोज ऐसे, लेइ कै सरोज रोज मन में न क्यों भरैं ॥ हौं तौ री न जैहौं आजु बनमाली पास, वोई पिय आइ पास पाइँ इत को न क्यों धरैं । मेरो मुख चंद सो बतावैं ब्रजचंद रोज, कहौ ब्रजचंदजू सों चंद देखिबो करैं ॥ ३ ॥

खेलत फागु जु मेरी भटू इनसों बड़े चाइ ते बावरी तैं हैं ।
केसरि के रँग की भरि सुंदरि डारत कामरी पै पिचकैं हैं ।
त्यों ब्रजचंदजू साँवरे गातन नावैं सुगंधन की लपटैं हैं ।
ये मँगुवा दधि-माखन के ते कहौ कहाँ ते फगुवा तोहिं दैं हैं ॥४॥

आजु मुखचंद पर राजत रुचिर बिन्दु याही ब्रजचंद के बिकावन सिताब की । छाजत छबीली छबि बरनी न जात मोपै हरनी [illegible] जन के हिय के हिताब की ॥ रति की न रंभा की न सची उरबसी की न, वारि वारि डारियतु उपमा किताब की । गालिब गुलाब की न पंकज के आब की रही न आफताब की न ताब माहताब की ॥ ५ ॥

४४२. ब्रजनाथ कवि

(रागमालाग्रन्थे)

दोहा—तिय चुम्बित मुख, कीर दुति, कुंडल धरि सिर पाग ।
मालाधर संगीत गृह, प्रबिसत मालव राग ॥१॥
तन्वंगी[2] कर को लिए, बैठी मूल रसाल[3] ।
स्याम आलिन सों हँसनि है, मालसिरी श्रीराग ॥ २ ॥

---

१ कोमल । २ दुबले अंग वाली । ३ आम की जड़में ।

मोर-पच्छ को बसन धरि, पहिरे मुक्तामाल ।
गहि अहि चंदनबृच्छ तर, आसावरि श्रीबाल ॥ ३ ॥
नील कंज तन देखिकै, चातक जाचै नीर ।
घन में बैठी देखिये, मल्लारहि तिय भीर ॥ ४ ॥
गौरी कुंकुम लाइ कुच, उग्र बदन जनु चंद ।
भूपाली सुमिरत पतिहि, परी बिरह के फंद ॥ ५ ॥
मोर चँदोवा सिर स्रवन, पल्लव उर बनमाल ।
इंदीबर तन भ्रमरजुत, लखि बसंत श्रीबाल ॥ ६ ॥

४४४. ब्रजमोहन कवि

ऐसी रूपवारी प्यारी हौं न देखी कामनारी[1] जैसी बृषभानु की दुलारी जो निहारिये । कंज की-सी रासि जाके अंगन सुबास-बस आसपास भृंगन की भीर हाथ ढारिये ॥ छाई जोति भूषन की दूषन को चंद-सोभा मंद गति धारै पाँइ देखिबे सिधारिये । खंज मृग मीन की निकाई ब्रजमोहनजू नैननकी दुति पर बारबार वारिये ॥१॥

केसरि को मुख राग धरे ज्यहि की उपमा न कोऊ सम तूल्यो ।
जोबन में बिकसै बिलसै लखि मित्र सुगंध पियै अलि भूल्यो ॥
कोमल अंग मनोहर रंग सु पौन के झूक लगे तन झूल्यो ।
नारि नई निरखी ब्रजमोहन नारि नहीं जल पंकज फूल्यो ॥ २ ॥

४४५. बलभद्र सनाढ्य टेहरीवाले (१)

(नखसिख)

मरकत-सूत[2] कैधौं पन्नग के पूत अति राजत अभूत तम-राज के-से तार हैं । मखतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन के काहू के कुमार हैं ॥ कोप की किरन कै जलज नल नील तंत उपमा अनंत चारु चँवर सिंगार हैं । कारे सटकारे भीजे सोंधे सों सुगंध बास ऐसे बलभद्र नवबाला तेरे बार हैं ॥ १ ॥

---

१ रति । २ नीलम ।

४४६. बलभद्र कायस्थ पन्नावाले (२)

करनी कछु पूरब कीनी बड़ी बिधु कौने सँजोग सु जीबो करै।
हुलसै बिलसै झुलनी में झुलै लखि सौतिन को सुख लीबो करै॥
निसि-बासर पीतम-नैनन को बलभद्र बड़ो सुख दीबो करै।
मतवारो भयो नथ को मुकुता अधरा को अमीरस पीबो करै॥१॥

मंजुल मुकुट केरे निकट घरीक रह्यो, उत ते उचटि लोनी लटन में लटि गो। कहै बलभद्र लोनी लट ते उलटि फेरि ग्रीवा कल कंठ की निकाई में सिमटि गो॥ भूलो भूलो फिरो फेरि भाँई-सी भुजन बीच आँगुरीन नाभी ते अचाक आइ छँटि गो। कटि को न आयो मन अटको निपट आली कटि के निकट पीतपट में लपटि गो॥ २॥ हीरन के हार ते सरस माहताब, माहत ब ते सरस घन-सार को बरस है। कहै बलभद्र घनसार ते सरस हिम, हिम ते सरस सो सुहायो हासरस है॥ हासरस हू ते सुद्ध सरस पियूष, औ पियूष[1] ते सरस कलानिधि को दरस है। परनापुरंदर महीपति नृपतिसिंह सुजस तिहारो कलानिधि ते सरस है॥ ३॥

४४७ ब्रज—लाला गोकुलप्रसाद कायस्थ बलरामपुरवाले
(दिग्विजयभूषण)

छप्पै

गनपति गौरि गिरीस गिरा[2] बिधि[3] रमा रमापति।
राजराज सुरराज सप्तऋषि पावन जलपति[4]॥
राहु केतु सनि भौम सुक्र बुध गुरु रबि निसिपति।
मच्छ कोल कहि कच्छ सिंहनर[5] बामन भृगुपति॥
सिय रामचंद ब्रजचंद प्रिय बौद्ध कलंकी अघ हरैं।
कहि गोकुल सुभ सब दिन सदै ये छतीस रच्छा करैं॥ १॥

नेह की न हानि तन मन में तिहारे प्यारे गेह में निहारे दीप

---

१ अमृत। २ सरस्वती। ३ ब्रह्मा। ४ वरुण। ५ नृसिंह।

बारे दरसात है । राखौ हित और सों की है है बस वाके आय मन को मनाय लीबो यही बड़ी बात है ॥ गोकुल बिलोकि बाल रावरे को हाल सुने खीझै फिरि रीझै माखै मोहि सतरात है । जोबन-सदन धन मद उपजाये जात खाये बवरात एक पाये बवरात है ॥ २ ॥ निसि को बिताय घर आये देखि भई दीन छिगुनी को छला करै भुज में निवास है । नवत बड़ाई हेतु बड़े जे प्रवीन ब्रज मान तजै मान हित मानिनी बिलास है ॥ उमँगो अनंद तेरे हिये न समाय प्यारी बरने न जात गुन बानी सों प्रकास है । दामिनी सों घन सोहै घन ही सों दामिनि है मेरो मन तो मैं तेरो मन मेरे पास है ॥ ३ ॥

(अष्टयाम)

जागै जोति जेबै जासे कंचन के काम जामें पैन्हे पायजामै फबै फेट को बिलास है । पानि पाँय पायताबे मोजे पुंज मोल के जो साजै मौज ही सों प्रतिरोज के लिबास है ॥ राजै महाराज दिग्बि-जयसिंह सिरताज जड़ित जतन सों रतन के उजास है । मानों मारतण्ड चण्ड मण्डल के आसपास मंडित नवग्रह की मण्डली प्रकास है ॥ १ ॥

(चित्रकलाधर)

बँधि गो अति बाँधत नारन मैं ब्रज तेरे सिवार से बारनमैं ।
दबि गो चल भौंह के भारन मैं फिरि दौरो फिरै दृगतारन मैं ॥
परि गो मुख-पानिप-धारन मैं बहि लागो उरोज-किनारन मैं ।
तहँ हेरि थक्यो बहु बारन मैं मन मेरो हेराइ गो हारन मैं ॥ १ ॥

४४८. बलदेवसिंह क्षत्रिय, श्रीद्विजदेव और क्षितिपालजू के साहित्यशास्त्र के गुरु

अम्बर[2] सुधारे अंगराग अंग धारे दृग अंजन सँवारे कारे कंज मद छीने है । भाल में बिसाल लाल रच्यो है रसाल बाल ता बिच

---

१ शोभा । २ कपड़े ।

कुरंगमद-बिन्दु[1] चारु दीने है ॥ आरसी में हेरै बैठी ताही को बिलास मंजु बलदेव उपमा सकोचि सोचि लीने है । मानों सूर-अंक इंदु, इंदु-अंक अरबिन्द, अरबिन्द-अंक में मलिन्द बास कीने है ॥ १ ॥

चन्दन चमेली चोप चौसर चढ़ाय चारु मधु मदनारे सारे न्यारे रसकारे हैं । सुगति समीर मद सेद[2] मकरन्द बुन्द बसन पराग से सुगन्ध गन्ध धारे हैं ॥ बारन बिहीन सुनि मंजुल मलिंद-धुनि बलदेव कैसे पिक वारे लाज हारे हैं । फूलमालवारे रतिबल्लरी पसारे देखो कंत मतवारे की बसंत यों पधारे हैं ॥ २ ॥

४४९. बिश्वनाथ कवि (१)

अतलस चीन को सलूका आधी बाँह तक सिर पै समूरवाली टोपी सुवासाम है । जुलफैं जलूस चारिबाग को रुमाल काँधे माया-मद-आँधे देत लेत न सलाम है ॥ कहै बिस्वनाथ लखनऊ की गलीन बीच ऐसन अमीरजादे कढ़त तमाम है । चोपदार आगे इतमाम को बढ़ावैं लिए पेचवान पैदर सवारी तामझाम है ॥ १ ॥

४५०. बिश्वनाथ भाट टिकईवाले (२)

मनसब दिल्ली ते लखनऊ ते खैरखाही लंदन ते खिलति बिसाति बिना सकसे । भार भुजदण्डन सँभारे भुवमंडल लौं जाकी धाक धाई धराधीस धकाधक से ॥ हाँक सुनि हालत हरीफ़ नाकदम होत कहै बिस्वनाथ अरि फिरैं जाके मकसे । कहाँ लौं सराही तेरे भुज की उमाही बीर रनजीतसिंह तेरे बादसाही नकसे ॥ १ ॥

४५१. बंशीधर कवि ३

एक ओर बान पंचबान[3] को गहाइ दीनो एक ओर रन अति कठिन लखावतो । दोषाकर[4] बीच दोषआकर बसाई सीतभीत करै जेते प्रीति बाहर निबाहतो ॥ बंसीधर कहै घर डगर नगर बीर लै करि समीर रोम रोमनि बसावतो । छूटतो न मान मंत्र तंत्र

---

१ केसर की टिकली । २ पसीना । ३ कामदेव । ४ चन्द्रमा ।

अरु जंत्र कीन्हे जो नहिं हिमंत दूती कंत बनि आवतो ॥ १ ॥
बोलत न मोर गयो चंद न मलीन भयो चातक रटनि बकी काहे ते भुलानी है। कोक[1] हू मिले हैं तिन्हैं दुख सरसान्यो अति हरष चकोरन के प्रीति कुम्हिलानी है॥ बंसीधर कहै भौंर मगन कलोल करैं कैकरि अडोल रहे सौत मनुहानी है। चंचला हेरानी घन पानी को न लेस रह्यो कौन रीति पावस की आजु दरसानी है॥२॥
हुवन दुसासन दुकूल[2] गह्यो दीनबंधु दीन ह्वै कै द्रुपददुलारी यों पुकारी है। छाँड़े पुरुषारथ को ठाढ़े पिय पारथ से भीम महाभीम ग्रीव नीचे को निहारी है॥ अंबर तो अंबर अमर कियो बंसीधर भीषम करन द्रोन सोभा यों निहारी है। सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है कि सारिही कि नारी है कि सारी है कि नारी है॥ ३॥

४५२ बारन कवि राउतगढ़वाले

दूध-सी फटिक[3]-सी सुरसरी[4]-सी सारदा-सी सारदा के सुत ऐसी समताई पाई है। चन्दन-सी संख-सी सुहास औ मृनाल ऐसी बक सी बिलोकि बहु होती सुखदाई है॥ हीरा ऐसी हंस-सी कपूर और कुंद ऐसी बारन सुकबि मन उपमा न पाई है। पुंडरीक स्वेत फूल सम को न लागत है सुजावलसाह ऐसी चाँदनी बनाई है॥ १॥

(रसिकविलासग्रंथे)

केहूँ छाँड़यो धाम केहूँ धन केहूँ ढोटा छाँड़यो केहूँ छाँड़े सुख-पाल पाँइ भागी जाती हैं। केहूँ छाँड़यो पति केहूँ पान केहूँ पानी छाँड़यो केहूँ छाँड़यो अन्न वै सबै न कछू खाती हैं॥ ऐसी तौ गिरा-सी देह सति सोहै तुच्छ मति लखि छाँह आपनी वै आपही डराती हैं। साहिब सुजान साहसुजा जू तिहारे त्रास बैरिन की बधू-बन बन बिललाती हैं॥ २॥

---

१ एक पक्षी। २ वस्त्र। ३ बिल्लौर। ४ गंगा।

तुम साँझ ते लाइ रहे जक एक न मानत है वह सौंह दिवाये।
सासु बिसासी के पास रहै नित कोटिन भाँति टरै न टराये॥
चालि जाउ न काहे अजू बलिहारी मैं आवै कदाचित आहट पाये।
कौन बदी चतुराई तिहारी जो आगि कहावत हाथ पराये॥३॥

आँगन हमारे बीच एक रूख बैरी को है सोई दुसराइत न कोई आसपासई। ननँद जिठानी गईं सकठकहानी सुनै आयो हो बुलावा न्यौता लै सिधायो सासई॥ सैयाँ तौ गोसैयाँ जानै कौन देस गौने गयो रहत कहाँ धौं औ बसत कौन बासई। दिया जो जरत बिना तेल सो झलमलात भूत औ पिसाचन सों अजौं जिय त्रासई॥ ४॥

जुवतीगन में ठटि कूप पै ठाढ़ी जबै नंदलाल पै दीठि करै।
उतसाह सों बोलि उठै हँसि हाथ सहेली के हाथ सों हाथ धरै॥
सब लोगन की तजि लाज जहाँ निज नाह तिही दिसि लै डगरै।
भरि कै धरि कै अपनी गगरी खरी और सखीन को पानी भरै॥ ५॥

सफरी से कंज से कुरंग करसायल से आँब की-सी फाँकैं सब कहत सुजान हैं। नटुवा से नट से तुरंगम से खंजन से बालक हठीले जैसे ऐसे ठने ठान हैं॥ देखो टेढ़ी कोरैं मानौ नखनैया छोर के हैं बान ऐसी अनी पैनी लागे लेत प्रान हैं। ठग बटपारे मत-वारे कवि तुच्छमति इतने ही नैनन के कहे उपमान हैं॥ ६॥

इंद्र की बधू[2] से मुकुता से नीलमनि ऐसे बीजुरी-बचा से दमकत देखे नित्त मैं। हीरा मूँगा मानिक से दाड़िम के दाने ऐसे लाल से बिराजत सो सोभा छाई चित्त मैं॥ जीगनं[1] से कुंद से बकाइनि के फूल ऐसे देखि कै त्रिबेनी तौ सुमिरि आई हित्त मैं। स्याम औ सुरंग सेत दसन की छबि एजू बारन कहत कवि एक ही कबित्त में॥७॥

---

१ शायद। २ बीरबहूटी।

अचल चकोर की कली हैं कोकनद की सी दाड़िम जँभीरी कीधौं फटिक के पौवा हैं। श्रीफल सुहाये किधौं कोकन के सावक हैं संग गिरिसंकर की कंचन के लौवा हैं ॥ कंज की कली हैं की सिंधौरा रूपरासिभरे जोबन के मग किधौं पके से बटौवा हैं। अति ही कठिन हैं बखाने नाहिं जात के हूँ प्यारी के पयोधर की काम के गटौवा हैं ॥ ८ ॥

कान फराइ जमाइ जटा सिर ध्यान लगाइ महान कहाये।
तीरथ जाइ नहाइ नदी-नद छार सों छाइ कै जोग उपाये ॥
दंड कमंडल मंडित पानि फिरे महिमंडल मूड़ मुड़ाये।
ऐसे भये तौ कहा जु पै बारन जानकीजीवन जीव न आये ॥ ९ ॥

छप्पै

चातक षटपद तीर बन्द अंबुज जिमि जानौ।
पाथर बक औ सुवा जंलौका[2] गनक बखानौ ॥
लम्पट नीर अकास अपनपौ भाव बतावै।
जाकी चाँदी अतिथि असुन मच्छर सुर गावै ॥
सुलतान साहसाहेब सुजा कवि बारन यह उच्चरत।
इमि बीस दास तुव सत्रु की सदा रहैं सेवा करत ॥ १० ॥

४५३. ब्रजवासीदास कवि

(प्रबोधचन्द्रोदय नाटक)

अंतर मलीन दीन हीन पुरषारथ सों कर्मता बिहीन पीन पाप की कहा कहौं। बिषय अधीन और कहाँ लौं कहै प्रबीन काम क्रोध लोभ मोह मद के धका सहौं ॥ रावरे हैं समरथ मो-से खल तारिबे को अधमउधारन हौ और ते न जाँचहौं। सरल सुजान संत प्यारे की निछावरि मोहिं दीजै सरनागत सन्त-संग मो परो रहौं ॥ १ ॥

---

१ कमल लाल। २ जोंक।

४५४. ब्यासजी कवि

दोहा— ब्यास बड़ाई जगत की, कूकर की पहिचानि।
प्यार करे मुख चाटई, वैरु करे तनहानि ॥ १ ॥
ब्यास कनक अरु कामिनी, ये लाँबी तरवारि।
निकसे हे हरिभजनको, बीच हि लीन्हे मारि ॥ २ ॥
ब्यास कनक अरु कामिनी, ये हैं करुई बेलि।
बैरी मारैं दाँउ दै, ये मारैं हँसिखेलि ॥ ३ ॥
धन बिद्या अरु बेलि तिय, ये न गिनैं कुल जाति।
जो समीप इनके बसै, वाही सों लपटाति ॥ ४ ॥

४५५. ब्रजदास कवि प्राचीन

आनन चंद सो खंजन से दृग हैं हर के रिपु[1] के रस छाते।
प्रेम अमी अनुराग रँगे पै भगे रससिंधु में मानौ चुचाते ॥
अंजन रंजन हैं मन के ब्रजचंद भनै बने झूम-झकाते।
मानौ कलानिधि पै बिबि कंज द्विरेफ[2] लसैं तिन पै मदमाते ॥ १ ॥

४५६. बृंद कवि

कौरवसभा-समुद्र गहर बिरोध बारि कोप बड़वानल की ओप अगमगी है। जोधा दुरजोधन करन जाकी बेला बने बृंद कहै लोभ की लहरि जगमगी हैं। कुबुधि बयारि ते दुसासन तुफान उठ्यो चाल्यो बादियान चीर भीति रगमगी है। प्रीति पतवार लैकै हूजिये करनधार आजु हरि लाज की जहाज डगमगी है ॥ १ ॥

४५७. बाजीदा कवि

बाजीदा बाजी रची, दिल दरख के बीच।
जो चाहै जीत्यो सु अब, साहेब सुमिरन सींच ॥ १ ॥

४५८. बलदेव कवि (४) प्राचीन

घुँघुरारे बार वारों मोतिन के हार वारों मुरली बजाय कछु

---

१ कामदेव। २ भ्रमर।

टोना करि दै गयो । जमुना के कूल कालिह मिल्यो हो अचानक ही जानि न परत कछु बात मोसों कै गयो ।। जब तें बिहाल भई डोलौं बनवीथिन में कहै बलदेव यह मैनबीज बै गयो । सखियाँ निगोड़ी हकनाहक बकावती हैं नन्द को कुमार हाय मेरो मन लै गयो ।। १ ।।

४५६. बुधराम कवि

कंचन के खंभ दोऊ सुरँग रँगाय डाँड़ी मरुवा पिरोजा लाल पटुली खरी जरी । सोलह सिंगार किये झूलति हैं चंदमुखी पहिले सरस हार मचकै खरी खरी ।। खन आसमान जाय धरती लगाय पाँय फहरत चीर ताहि दाबति घरी घरी । कहै बुधराम को है नायिका नवल ऐसी मानौ आसमान ते बिमान लै परी परी।। १ ।।

४६०. बिहारी कवि प्राचीन (२)

कब के बिहारी बलि करत हाहा री तू तौ करति कहा री सबै सरत बिचारिये । जग की जियारी दया देखि घटा कारी उठि आये बनवारी तू कहै तौ पाँय पारिये ।। जिन्हैं देखि हारी बननारी मृगनारी सारी काम की करारी सबै प्रेम मत वारिये । कारी कजरारी उजियारी अनियारी झपकारी रतनारी प्यारी आँखैं इतै डारिये ।। १ ।।

४६१. बलिजू कवि

नैनन को कजरा चकचूर है नेक बिलोकनि में सिचुर्‌यो परै ।
केसरि भाल के बीच को बिंदु जराव के जोबन सों बिथुर्‌यो परै ।।
बेसरि के मुकता बलिजू छबि सों झुकि झूमि झुर्‌यो उचर्‌यो परै ।
ओठनि को रँग सोहैं बतानि मनौ बसुधा पै सुधा निचुर्‌यो परै ।। १ ।।

४६२. ब्रजलाल कवि

घुमड़्यो गुलाल औ अबीर की धमक छाई सुन्दर सहेली हियो अंग अंग सरसै । नंद को कुमार ग्वालबालन सों सैन मारैं केसरी पिचक छूटैं मानो मैन दरसै ।। बृंदाबन रसिक चकोर सब

१ घूमती हूँ । २ वन की गलियों में ।

ब्रजलाल सुर नर मुनि सब देखिबे को तरसै। होरी अंक जोरी में पियूष अवनी पै आजु राधा-मुखचंद पर झलाझल बरसै ॥ १ ॥

४६३. बनवारी कवि

आनि कै सलावतिखाँ जोर कै जनाई बात तोरि धर पंजर करेजे जाइ करकी। दिलीपति साह को चलन चलिबे को भयो गाज्यो गजसिंह को सुनी है बात बरकी ॥ कहै बनवारी बादसाह के तखत पास फरकि फरकि लोथि लोथिन सों अरकी। हिन्दुन की हद सद राखी तैं अमरसिंह कर की बड़ाई कै बड़ाई जमधर[1] की ॥ १ ॥ नेह बरसाने तेरे नेह बर साने देखि यह बरसाने बर मुरली बजावैंगे। साजु लाल सारी लाल करैं लालसा री देखिबे की लालसा री लाल देखे सुख पावैंगे ॥ तू ही उर बसी उर बसी नाहीं और तिय कोटि उरबसी तजि तोसों चित लावैंगे। सेज बनवा री बनवा री तन आभरन गोरे तन वारी बनवारी आजु आवैंगे ॥ २ ॥

४६४. बिश्वंभर कवि

केलिकलोल में कंपति हौं जनु बेलि सी खेलि सकौं न करेरे।
जानौं न हाँसी मिलौं हिय खोलि न बोल न आवै बिलासी के टेरे॥
जद्यपि ऊँचे उरोज नहीं सु बिसंभर हौं सकुचौं मुख हेरे।
तद्यपि मानि महा सुख काहे धौं संतत कंत बसैं ढिग मेरे ॥१॥

४६५. बल्लभरासिक कवि

अटकि चली है पग मटकि धरनि लखि पायल की झनक सुठौन अनवटकी। छीन कटि पीन कुच मीन से नयन सखि सकुचि सटकि चली गली है निकट की ॥ बल्लभरसिक लखि चटक बदन मैं उलटि बटपार जुग धार मरवटकी। सटकी ललन तऊ न टिकी ललन-मति लट की लपट में लपटि आइ अटकी ॥ १ ॥

---

[1] कटारी का भेद।

४६६. बीठल कवि (२)

परत तुषार[1] झार उठत अपार भार द्वार भो पहार पूस आँगन सुहात है। बीछी कै से छौना भरे मानहुँ बिछौना माँझ दिसिहू बिदिसि लागे घेरे घर घात है॥ बीठल सुहित अति गति मति भूलि जात चातक करात जब बोलै आधी रात है। बिरह ने दही रात पिय बिन रही रात आवै नियरात तिय जात पिय-रात है॥ १॥

४६७. ब्रह्म, श्रीराजा बीरबर

उछरि उछरि भेकी[2] छपटैं उरग पर उरग पै केकिन[3] के लपटैं लहकि है। केकिन के सुरति हिये की ना कछू है भये एकी करि केहरि न बोलत बहकि है॥ कहै कवि ब्रह्म बारि हेरत हरिन फिरैं बैहरि बहति बड़े जोर सों जहकि है। तरनि के तापन तवा सी भई भूमि रही दसहू दिसान में दवागि सी दहकि है॥ १॥

एक समै हरि धेनु चरावत बेनु बजावत पैन रसालहि।
दीठि परी मनमोहन की बृषभानसुता उर मोतिन मालहि॥
सो छबि ब्रह्म लपेटि हिये कर सों कर लै करकंज सनालहि।
संभु के सीस कुसुंभ के पुंज मनो पहिरावत ब्यालिनि ब्यालहि॥२॥

४६८. बिश्वनाथ सिंह बघेले (३) महाराजा रीवाँ

बाजी गज सारे रथ शुतर[4] कतारे जेते प्यादे ऐंड़वारे जे सबीह सरदार के। कुँवर छबीले जे रसीले राजबंसवारे सूर अनियारे अति प्यारे सरकार के॥ केते जातिवारे केते केते देसवारे जीव स्वान सिंह आदि सैलवारे जे सिकार के। डंका की धुकार है सवार सबै एकबार राजैं वारपार द्वार कौसलकुमार के॥ १॥

पाग जरकसी गँसी कलँगी त्यों बसी बाँकी लंकदार असी लसी कसी पटछोर सों। भीजी मुख छ्वै सी मसी हँसी खासी कौमुदी[5]

---

१ पाला। २ मेढकी। ३ मोरनी। ४ शुतर=ऊँट। ५ चाँदनी।

सी फँसी अहि ससी सोभा जुलुफ मरोर सों ॥ प्रिया संग सोहैं बातें करत रसोहैं विश्वनाथ सोऊ सोहैं मुख जोहैं है चकोर सों। दूनो ओर चौंर चारु भये बर आये राम सेवक सलाम दास कीन्हो चहुँ ओर सों ॥ २ ॥

४६९. विष्णुदास कवि

दोहा—नव जलचर दस व्योमचर, कृमि गेरह बन बीस ।
विष्णुदास कवि कहत है, मनुज चारि पसु तीस ॥ १ ॥
दस सरवर दस हंस हैं, दस चातक दस मोर ।
राधाजू के बदन पर, बसत चालिसौ चोर ॥ २ ॥
अहि सिव पावक बाज तम, बाल लिखी ततकाल ।
लिखि भसमासुर घन बधिक, हरि फिरि लिख्यो उताल॥३॥
सिंहिनि को एकै भलो, गजदलगंजनहार ।
बहुत तनय किहि काम के, सूकरितनय हजार ॥ ४ ॥
दरपन दरसत हरि सहित, कमला परम प्रबीन ।
द्वादस कर पद दस सहित, आठ नयन ससि तीन॥५॥

४७०. बलराम कवि

केलिघर सुघर सिधारी अभिसार करि बार धूपि अगर अपार नेह पी को है । कहै बलराम जाकी छबि ना छपाये छपै छपा में छबीली छबिवारो अंग ती को है ॥ बारभार झुकत चलत मचकत बाल जावक के भार पग गौन करिनी को है । जानत छपाकर चकोर जातरूप चोर भृंग जानि गुंजत सुमन मालती को है ॥ १ ॥

४७१. विट्ठलनाथ (१) गोकुलस्थ

पद

जमुना जो नाम ले सो सभागी ।
सोई रस-रूप को सदा चिंतन करे नेक नहिं कल परे जाहि लागी॥
पुष्टिमारग परम अतिहि दुर्लभ परम छाँड़ि सगरे करम प्रेमपागी ।

श्रीविट्ठल गिरिधरन सी निधि अब भक्त को देत हैं बिनहि माँगी ॥१॥

४७२. बिहारी कवि (३)

गरुड़सँघाती गति लीन्हे नट नैनन की नाचत थिरकि मित्र खेरई समीर के। छोनी[1] ना छुवत पग अचल[2] उलंघि जात ताते तेज सुरँग अगाऊ जाइ तीर के ॥ सोने के सचित साज रतन-जटित सारे भनत बिहारी रन पैठत जे चीर के। मन ते सरिस चलिबे को चपलाई अंग राजत कुरंग ऐसे बाजी[3] रघुबीर के ॥१॥

४७३. बैताल कवि

छप्पै

जीभि जोग अरु भोग जीभि सब रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग जीभि लै कैद करावै ॥
जीभि स्वर्ग लै जाय जीभि सब नरक दिखावै।
जीभि मिलावै राम जीभि सब देह धरावै ॥
जीभि ओंठ एकत्र करि बाँट सिहारे तौलिये।
बैताल कहै बिक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिये ॥ १ ॥

टका करै कुलहूल टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै ॥
टका माइ अरु बाप टका भाइन को भैया।
टका सासु अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया ॥
एक टका बिन टकटका होत रात अरु रातदिन।
बैताल कहै बिक्रम सुनो धिक जीवन इक टका बिन ॥ २ ॥

मरै बैल गरियार मरै जो कट्टर टट्टू।
मरै कर्कसा नारि मरै वह खसम निखट्टू ॥
ब्राह्मन सो मरि जाय हाथ लै मदिरा प्यावै।
पूत वही मरि जाय जु कुल में दाग लगावै ॥

---

१ पृथ्वी। २ पहाड़। ३ घोड़े।

बेनियाउ राजा मरै तौ नींद धराधर सोइये।
बैताल कहै बिक्रम सुनो इतने मरे न रोइये ॥ ३ ॥
सत्ताइस अरु सात तीनि तेरह तेंतीसा।
नौ दस आठ अठारह बीस बावन बत्तीसा॥
चौदह चौंसठि चारि पाँच पंद्रह पैंतीसा।
सोरह छा छप्पनहु एक ग्यारह इकीसा॥
छानबे कोटि निनानबे सु इको दल भूपत्ति हुव।
बैताल भनै बिक्रम सुनो सु इतने रच्छा करहिं तुव॥ ४ ॥
पग तुरंग नहिं तुरी लंक केहरि नहिं चीता।
सिर बिन बेनी गुहै पेट बिन पीठि सुनीता॥
करि नर सों ब्यवहार भार वह सबै उठावै।
चलै अटपटी चाल हाथ बिन ताल बजावै॥
नहीं जीव नहिं मास तिहि भगति हेतु भंजन करै।
बैताल कहै बिक्रम सुनो सो गुनी नाम गुन मति धरै॥ ५ ॥

४७४. बेंचू कवि

जनक जनकजा[1] के बनक पै फीके होत धनक न ताके तन संपाति ही धारि ले। दसरथ दर्स देखि द्रवैं दिगपाल सबै तासु सुतबधू तौन हेतहू बिचारि ले॥ भूषन समाज कहाँ छूट्यो पर काज राज सुख को समाज बृथा चित्त सों बिसारि ले। बेंचू सिय लखन सों कहैं पंथ कानन के देवर थकी हौं नेक नेवर[2] उतारि ले॥ १ ॥

४७५. बजरंग कवि

बारहौ भूषन को साजि कै अरु सोरहौ भाँति सिंगार बनावै।
बैठी तिया मनिमंदिर में मुखचंद की चाँदनी को दरसावै॥
सो बजरंग बिचारि कहै कबि खोजि फिरे उपमा नहिं पावै।
नाइनि ठाढ़ि हहा करती ठकुराइनि भाल न ईंगुर छ्वावै॥ १ ॥

---

१ सीता। २ नूपुर।

४७६. बल्लभ कवि (२)

दोहा—बल्लभ बेल्ली प्रेम की, तिल तिल चढ़ै सुभाइ।
ज्वालजाल ते नहिं जरै, कपटलपट जरि जाइ ॥ १ ॥
गौनसमय मुख नासिका, बेसरि डोलत तीय।
मानहुँ मुकुता इमि कहत, हहा चलौ जनि पीय ॥ २ ॥
तन ताजी असवार मन, नयन पियादे साथ।
जोबन चलो सिकार को, बिरह बाज लै हाथ ॥ ३ ॥
तन कंचन को महल है, तामें राजा मान।
नयन झरोखा पलक चिक, देखै सकल जहान॥ ४ ॥
करसर सहित कमान बिन, मारत भरे कसीस।
घाव कहूँ नहिं देखिये, सालै नख अरु सीस ॥ ५ ॥

४७७. बकसी कवि

जेई बेद प्रभु के बसत उर अंतर हैं तेई बेद द्विज मुख रसना बिसेखिये। प्रभुजू के बंदन करत लोक लोकपति ऐस ही बड़ाई सतिजीव अवरेखिये ॥ बकसी कहत इन्हैं एकसम माने रहौ दूसरो न मानौ गनौ हगन में पेखिये। गुपत चहौ तौ परमेसुर को ढूँढ़ो करो प्रगट चाहौ तो इतै ब्राह्मन को देखिये ॥ १ ॥ माँगहु सँवारे सीस सेंदुर सुधारे लर मोतिन की डारे झलकत दुति हार की। तन जरकसी सारी तामें जगमगै प्यारी भारी छबि होत उर कंचन के हार की ॥ बालम बिदेस ताके ऐबे को दिवस सुन्यो ठाढ़ी मग जोए पल छिनक अबार की। बकसी कहत तिया सकल सिंगार किये बाजूबंद बाँधे बाजू पकरे किंवार की ॥ २ ॥

४७८. ब्रजवासीदास बृंदावनी
(ब्रजविलास)

दोहा—कही कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरे माहिं।

---

१ बेल। २ एक प्रकार का घोड़ा।

बूझे बदन दुरावते, सूधे चितवत नाहिं ॥ १ ॥
मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय ।
तेरो बालबिनोद लखि, मेरो हियो सिराय ॥ २ ॥

४७९. बंशीधर मिश्र संडीलेवाले

जिन्हैं तू मगन तेरे तिन्हैं ताकि देखो नर नग्न कै निकारिकै चढाइबे को जीता है । सपने की सम्पदा सुलभ साथ सब ही के सोई हित लाग्यो हरिनाम आनि हीता है ॥ कहै मिस्र बंसी कब हूँ न आई मति वैसी जैसी चहूँ छहूँ ठहराय गावै गीता है । चेत नाहीं परैगो पै तरी ताके चलौ अब सीताराम जपि ले जनम जात बीता है ॥ १ ॥

४८०. बिश्वनाथ कवि (५) प्राचीन

उकुति जुगुति[1] करि उपमा बिचारि चारु[2] तुक[3] निरधारि सुभ अच्छरन कीजिये । छंद दृढ़ बंद करि अरथ अनूप धरि जमक जराउ जड़ सोधि[4] सुद्ध लीजिये ॥ ललित ललित पद लहै बिस्वनाथ कहै गहै कबिरीति रीझि रीझि रस पीजिये । उदक उदायक बलायक समान दान गाहक बिना कबित्त नाहक न दीजिये ॥ १ ॥

४८१. ब्रजराज कवि

गुंजरित भृंगपुंज कुंजरित कोकिलादि पात पात सहकार[5] फूल फल नये री । चंपक कदंब औ कदंब भाँति भाँतिन के आलबाल[6] राजत तमाल बाल छये री ॥ बेला औ चमेला तूत एला[7] केला कुंजन में सीतल सुगंध मंद सीरी बाइ अये री । महासुकुमारी प्रानप्यारी ब्रजराज की तू आज ब्रजराज केहि काज बन गये री ॥ १ ॥

४८२. बलदेव कवि (५) दासापुर के ब्राह्मण
(शृंगारसुधाकर)

पाँवन की रज पावन हेत गलीन में आरत फेरो करैं ।

---

१ उक्ति और युक्ति । २ सुन्दर । ३ काफ़िया । ४ ठीक करके । ५ आम । ६ थाल्हा । ७ इलायची ।

बलदेव सुधासम केवल नाम अधार सबै थल टेरो करैं ॥
धरि राखे हैं प्रान निछावरि को मन चेरेन हू कर चेरो करैं।
डर मानि भरे दृग दूर ही सों भृकुटीन को रावरी हेरो करैं ॥ १ ॥
हौं सब भाँति अधीन लखो पै चवाइन के गन नेकु न मानते।
छूटत नेह नहीं सहजै बलदेव सबै गुरुलोगहु[1] जानते ॥
ता पै भनैं कुलकानि कथा करि रोष हिये सतरीति बखानते।
होनी सु तौ अब है चुकी है हकनाहक ही सब ये दृग तानते॥ २ ॥

४८३ बलदेवदास जौहरी (६) हाथरस के निवासी
(भाषा कृष्णखण्ड)

दोहा—सुमिरि सम्भु गिरिजा सुमिरि, गनपति सदा मनाय।
बिघनबिनासन एकरद, हूजै सदा सहाय ॥ १ ॥

४८४ बाजेस कवि

महाराजराजा स्रीअनूपगिरि तेरी धाक गालिब गनीमन[2] के पैर गरे जात हैं। भनत बाजेस भयो भीम भौ भरम महा दिल को उदार भूअधार धरे जात हैं ॥ तेरी सीलता को बीरता को धीरता को सुनि गुनीजन दुनी के हुलास भरे जात हैं। मेकल मतंगन में हौदा धरे जात पर प्रबल परिंद तेरे पौदा परे जात हैं ॥ १ ॥

४८५ बिश्वनाथ अताई (४)

मानुषजनम करतार तोहिं दीन्हो कूर ताकी रे कृतघ्नी तू ना सरन प्रस्यो रहो। चौरासी भ्रम्यो है कहूँ नेक न ब्रम्यो[3] है भाजाभाज यों स्रम्यो है अघओघन भस्यो रहो ॥ पाँचन सों मिलि खरा में मगरूर बैठि जौन करै काम जासों कारज सस्यो रहो। नाम सों न भेयो बिस्वनाथ यों ही बूड़ि गयो लोहे मध्य पींजरा में पारस धस्यो रहो ॥ १ ॥

४८६. बालनदास कवि
(रमलसार)

दोहा—इन्दु नाग अरु बान नभ, अंक अब्द स्रुति मास।

---

१ बड़े-बूढ़े। २ शत्रु। ३ बिरमा=बिलमा।

कृस्नपच्छ तिथि पंचमी, बरनेउ बालनदास ॥ १ ॥
गुरु गनेस सुम सेष मुनि, गरुड़ध्वज गोपाल ।
रमलकथा मुख कमल करि, चरनन की रज बाल ॥ २ ॥
चौंसठि प्रस्न बिचारि कै, संकर कीन प्रकास ।
तेहि मा सुख संसार को, बरमत बालमदास ॥ ३ ॥

४८७. बादिराय बन्दीजन डलमऊवाले

वही ज्ञान ज्ञाता वही सुमति को दाता करामात दरसाता अंग ब्याल लपटाइ कै । गरे मुंडमाल कंठ काल हू को काल ससि सोहत है भाल रीझै डमरू बजाइ कै ॥ ऐसे समै महिमा बखानै को महेसजू की बादेराय ध्यायो गुन कबित बनाइ कै । सकल सुमति सुख संपति सहित दै कै साँकरे में संकर सहाइ करौ आइ कै ॥ १ ॥

४८८. बिपुलबिट्ठलजी गोकुलस्थ

पद

प्रिया स्याम सँग जागी है ।
सोभित कनक कपोल ओप पर दसनछाप छबि लागी है ॥
अधरन रंग छुटी अलकावलि सुरत रंग अनुरागी है ।
बिट्ठलबिपुल कुंज की क्रीड़ा कामकेलि-रस पागी है ॥ १ ॥

४८९. बिहारीदास (४)

पद

तू मनमोहनी री मोहन मोहे री अंग अंग ।
अंगमनी अलकैं झलकैं बर उर पर छूटी लट मुख हँसत लसत दसनावलि सहज भृकुटीभंग ॥ मृग मधुप लौं स्याम काम सब तजे बन बेली धाम सौरभ सुरसब्द सुनत फिरत संग संग । बिहारनि दासि स्वामिनी सुखरासि रहसि फिर चितयो मानि आनि उर अंगरंग अनंग ॥ १ ॥

४६०. व्यासस्वामी

पद

सैननि बिसरे बैननि भोर ।
बैन कहत कासों पियहिय ते बिहँसत कतहि किसोर ॥
दुख मेटत भेटत तुमको नहिं चुंबन देत न थोर ।
काहि देत जोबनधन कर गहि लै कुचकोर अकोर ॥
काके पाइँ गहत मम प्यारे कासों करत निहोर ।
कौनिहिं बिकल किये नवनागर तुम पनिहाँ तुम चोर ॥
निज बिहार आरोपि आन पर कोपि मानगढ़ तोर ।
व्यासस्वामिनी बिहँसि मचाई सुरतिसमुद्र हिलोर ॥ १ ॥

४६१. बल्लभ

पद

बाती कपूर की जोति जगमगै आरती बिट्ठलनाथ बिराजै ।
घंटा ताल पखावज आवज सप्त सुरनि सारद साजै ॥
या छबि की उपमा कह कहऊँ कोटि काम निरखत लाजै ।
श्रीवल्लभ प्रेम प्रताप भरे नित आनँद मंगल गोकुल गाजै ॥ १ ॥

कबित्त । गायो ना गोपाल मन लायो ना रसाल लीला सुनि न सुबोध जिन साधु-संग पायो है। सेयो ना सवाद करि धरि अवधरि हरि कबहुँ न कृष्णनाम रसना कहायो है ॥ बल्लभ श्रीबिट्ठलेस प्रभु की सरन आय दीन ह्वै कै मूढ़ छन सीस ना नवायो है । रसिक कहाय अब लाज हू न आवै तोहिं मानुष-सरीरधरि कहा धौं कमायो है ॥ १ ॥

४६२. ब्रजपति

पद

ग्वालिनि माँगत बसन अपाने ।
सीतकाल जल भीतर ठाढ़ी आवत नाहिं दयाने ॥
तुम ब्रजराजकुमार प्रबल अति कौन परी यह बाँने ।

---

१ आदत ।

हम सब दासि तिहारी ब्रजपति तुम बहु निपट सयाने ॥ १ ॥

४६३. बलरामदास

पद

मोहन बसन हमारे दीजै ।

वारने जाउँ सुनो नँदनंदन सीत लगत तन भीजै ॥
कौन सुभाव बृथा अनऔसर[1] इन बातन कस जीजै ।
सुनि दुख पावै महर जसोमति जाइ कहैं अब हीं जै ॥
सब अबला जल माँझ उघारी दारुन दुख न सहीजै ।
प्रभु बलराम हम दासि तिहारी जो भावै सो कीजै ॥ १ ॥

४६४. बिष्णुदास

पद

प्रात समय स्रीबल्लभसुत को परम पुनीत बिमल जस गाऊँ ।
अंबुजबदन सुभग नयना अति स्रवनन लै हिरदै बैठाऊँ ॥
जबजब निकट रहत चरनन तर पुनि पुनि निरखि निरखि सुख पाऊँ ।
बिष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहिं बल्लभनंदनदास कहाऊँ ॥ १ ॥

४६५. बंशीधर

पद

होति खरी[1] तहाँ जहाँ खोरि[2] साँकरी सुन्दरस्याम सलोना री ।
इत ते हौं जात उतते वे आवत ओढ़े पीत उढ़ोना री ॥
हँसि मुसकाय लटकि जब बोलैं पूछत हैं बधु कोना री ।
हौं सकुची मो पै उतरु न आयो इन ठग ठगी ढिठोना री ॥
चित्रलिखी रहिगई ताहि छन मनु पढ़ि डारी टोना री ।
बंसीधर गिरिधर पर वारी अब कछु और न होना री ॥ १ ॥

४६६. बृन्दावन

पद

आजु सखी बन ते बने आवत गावत स्याम सखागन में ।

---

[1] बेवक़ । [2] गली ।

गति गुंजत अमित गयंद हु की लखि कौन रहै अपने मन में ॥
पगिया सिर लाल रही झुकि भाल सों पीत भँगा झलकै तन में
ये उपमा उपजी जिय में मानो चपला लपटी स्याम घन में ॥
घुँघरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर राजत है रज गोधन में ।
चित्रलिखी सी रहिगई ता छिन बृंदाबनप्रभु बृंदाबन में ॥ १ ॥

४६७- बिद्यादास

पद

आलसजुत देखियत जो भामिनी ।
राजत हैं रतनारे नैनन पिय सँग जागत गई जामिनी ॥
बाँह उठाय जोरि जमुहानी ऐंड़ानी कमनीय कामिनी ।
भुज छूटत छबि यों लागत मनु टूटि भई द्वै टूक दामिनी ॥
कुच उतंग पर रची कंचुकी सोभित त्रिबली उदर स्यामिनी ।
मानो मदन नृपति के तंबू हरिमन जीत्यो राधिका नामिनी ॥
बिथुरी अलक सिथिल कच डोरी नखछत छुरित मरालगामिनी ।
द्विगुन सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रमुदित बिद्यादास स्वामिनी ॥ १ ॥

४६८. भूपति श्रीराजा गुरुदत्तसिंह बंधलगोती अमेठीनरेश

सीसफूल सूर[1] सीसथली को बिभूषै भूप मंगल सुरंगबिंदु चंदन को मलकै । टीको सुरगुरु[2] मुख चंद को बिलोके सुक्र लटकनमोती सोन रोकै राहु अलकै ॥ ठोढ़ी अंक स्याम सनि गोरे रंग बुध गनि ऐउत डिठौना केतु सौतिन को तलकै । उच्चथल परे हैं सकल ग्रह तेरे आली या ते बनमाली लोटपोट कोटि ललकै ॥ १ ॥ मीन है कमीने परे पानी में निहारे हारि हारि कै चकोर ताते चुगत अँगारे हैं । भूपति भनत गंज कंजन के खंजन के गंजन गरब करि डारे कै निकारे हैं ॥ डोरे रतनारे तारे कारे औ सितारे सेत उपमा

१ सूर्य । २ बृहस्पति ।

सितासित तरंगन में भारे हैं। प्यारी तेरे मान दृग पानि पर सान
धारे कैबर कसीसे वै कमानवारे वारे हैं ॥ २ ॥

४९९. भृङ्ग कवि

जब नैनन प्रीति ठई ठग स्याम सयानी सखी हठि यों बरजी।
नहिं जान्यो बियोग को रोग है आगे झुकी तब हौं तिहि सों तरजी॥
अब देह भये पट नेह के घाले सों ब्यौंत करै बिरहा दरजी।
ब्रजराजकुमार बिना सुनु भृङ्ग अनंग भयो जिय को गरजी ॥ १ ॥

५००. भरमी कवि

जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू जग सुजस न लीनो।
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू पर-काज न कीनो॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू पर-पीर न जानी।
जिहि मुच्छन धरि हाथ दीन लखि दया न आनी॥
मुच्छ नाहिं वे पुच्छसम कबि भरमी उर आनिये।
नहिं बचन लाज नहिं सुजस मति तिहि मुख मुच्छ न जानिये॥

५०१. भगवान कवि

सजनी रजनी[१] रतिरंग जगी मनमत्थ कला करि आरभटी।
परिरंभन चुंबन अर्द्धबिलास प्रकास महा छबि केलि ठटी॥
पिय की नखरेख कपोल लगी उपमा यह अद्भुत तासु डटी।
भगवान मनौ परिपूरन चंद में न्यारी है द्वैजकला प्रगटी ॥ १ ॥

५०२. भीषम कवि

नंद बबा कि सौं मारिहौं साँटि उतारि कै तौ गहनो सब लैहौं।
भौंह कमान तू काहे चढावति नैनन डाँटे ते हौं न डरैहौं।
देखत ही छन एक में भीषम ग्वालन पै दधि दूध लुटैहौं।
गूजरी गोल न मारु[२] गवाँरि हौं दान लिये बिन जान न दैहौं ॥ १ ॥

---

१ रात। २ बढ़-बढ़कर बातें न कर।

५०३ भगवन्तीदास ब्राह्मण

(नासिकेतोपाख्यान)

दोहा—एते कर्मन पातकी, देखे हम जमद्वार।
तिन कहँ त्रास दिखावहीं, पूछहिं बारहिं बार॥ १॥
द्विज है संध्या नहिं करैं, अरु नहाय बिन खाहिं।
तिनके सिर आरा चलहिं, यहि महँ संसय नाहिं॥ २॥

५०४. भगवानदास निरंजनी

(भर्तृहरिशतक भाषा)

अरे अरे काम क्रूर बानवृष्टि वृथा पूर कोकिल कलभ नूर मोको न सतावैंगे। तरुनी विचित्र बाम महारस भरी काम अनत कटाच्छ धाम चित न चलावैंगे॥ चन्द्रधर-चरनचकोर है कै चित लाग्यो काम जाग्यो जानि कैसौ सम्भु गुन गावैंगे। डरैं नाहीं तासु डर भूल्यो है तू काके बर भगवान रुद्र बर रुद्र है कै धावैंगे॥ १॥

५०५. भोज कवि प्राचीन (१)

बातन ते गोरख कबीर तत्त्वज्ञान पाये बातन ते संत औ महंत हू पुजात है। बातन ते डाकिनी परेत भूत मुँह बोलैं बातन किये ते कारे नाग उतरात है॥ बातन ते मोहि लेत सत्रुहू को पल हीं मैं बातन ते रीझै बादसाह साँची बात है। भोज कहै बात करामात बिना बात कैसी बात कहि आवै तौ तौ बात करामात है॥ १॥

५०६. भोजमिश्रकवि (२)

(मिश्रशृंगारग्रंथ)

हूल उठी हरम[1] हिये में यह बात सुने त्रास परो सारी बादसाही के अवास में। खान सुलतान घने दाँतन तिनूका धरैं आँतन पखेरू मीर मारे एक स्वास में॥ भोज रतनेस से सवाई करी राजा राव बुद्ध बलवान बीरताई के अवास में। अप्सरा अकास में तमासे लगीं जा समै सु ता समै कटारी एक मारी आमखास में॥ १॥

---

१ अंतःपुर।

५०७. भोज कवि (३) बिहारीलाल भाट चरखारीवाले
(भोजभूषण)

चाह के हैं चाकर गुलाम गोरे गातन के सेवक हैं साँचे सुघराई सुखदान के। खानेजाद खाँसे खूबसूरती के भोज भनै जोरा बरदार तेरे कदम कलान के॥ छोरा छाँह छबि के पिछौरा पाँय पोंछन के भौंरा खुसबोइ मुख मधुर बतान के। मोह के मुसाहब मुसद्दी दृगफेरन के हेरनके हुकुमी हजूरी हाँसि जान के॥ १ ॥ आबदार अजब अनोखी अनियारी अलबेली ऐसी आँखें ऐन ऐननसे रूखीसी। भोज भनै जोबन जलूस मैन जागै जोति जोति जोम जुलुम हलाहल में पूखी सी॥ ताकि जाती तीखन तिरीछी तरुनाई पर तेरी दृग-नोकै तेज तीरन ते तीखी सी। नैन मढ़ि जाती चाह चोप चढ़ि जाती हियो फोरि बढ़ि जाती कढ़ि जाती साफ सूखी सी॥ २ ॥

मृगसावक के दृग देखि बड़े सजि बेनी भली रुचि माँग सँवारैं।
कंचुकी केसरि के रँग की पुनि पाँयन पायल की झनकारैं॥
भोज भनै कटि केहरि की छबि छीनि लई गज ऊपर वारैं।
सारी भली जरतारी लसै सिर चौबिसमास को घूँघुट डारैं॥ ३ ॥

भोज भनै एते होत हलके हरामजादे होसहीन हीजन सों हर्गिज हितैये ना। कलही कलंकी कूर कृपिन कुनामी काक कपटी कुकर्मी क्रोधी किंचित हितैये ना॥ चूतिया चवाइ चोर चंचल चलाँक चित्त चोपचोप चख तिन तरफ चितैये ना। बदी बदराही बदनामी बदफैल बद बेदरद बेदिल सों बात हू बतैये ना॥ ४ ॥

५०८. मानदास कवि चरखारीवाले

लीलम हरिद्रारंग बंदरी हलब्बी पटा मानसाही खाँड़ा धोप ऊना तेग तरनो। मिसिरी नेवाजखानी गुपती जुनब्बीखानी सुलेमानी खुरासानी कत्ता तेग करनो॥ सैफ गुजराती अँगरेजी औ दुदम्मी रूसी मक्की त्यों दुधारा नाम दौत नाम धरनो। गुरदा बगरबी

सिरोही औ फिरोजखानी भान कबि एती तरवारिजाति बरनो ॥ १ ॥

५०९. भूधर कवि काशीवासी

मदन महीपति के दूत से भँवत भौंर भौन भानु मानिनी की जोति रही दबि है। पीतम की चाह चहुँ ओर ते उछाह भयो बारुनी को राग लखे राग रह्यो फबि है ॥ मैन को सुभाव हावभाव चित्त मिलिबे को आगम जनायो तहाँ भूधर सुकबि है। चंद है न चाँदनी न तेज है न तम तैसो रवि है न राति है छबीली एक छबि है ॥१॥ सीरे तहखाने तामें खासे खसखाने सींचे अतर गुलाब की बयारि रपटत है। भूधर सँवारे हौज छूटत फुहारे वारे भारे तावदान पाँति भू पै उपटत है ॥ ऐसे समै गौन कहौ कैसे करि कीजियत सुधा की तरंग प्यारी अंग लपटत है। चंदन किंवार घनसार के पगार प्यारे तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटत है ॥ २ ॥ बा[illegible]बार बैल को निपट ऊँचो नाद सुनि हुंकरत बाघ बिरझानो रसरेला में। भूधर भनत ताकी बास पाइ सोर करि कुत्ता कोतवाल को बगानो बगमेला में ॥ फुंकरत मूषक को दूषक भुजंग तासों जंग करिबे को झुक्यो मोर हदहेला में। आपुस में पारषद कहत पुकारि कछु रारि सी मची है त्रिपुरारि के तबेला में ॥ ३ ॥

५१०. भूसुर कवि

श्रीमहेस भूप जस कम्बु सो कपूरसम कंज सो कलानिधि सो राजै कामतरु सो। कैरव सो कन्द सो करीस सो है करकासो काँस सो कपास सो औ कामधेनु बर सो ॥ कमला के पति सो है कमला के पितु ऐसो कमनीय हीरा सो कदरि सुधासरु सो। कलिकाक-मण्डली के बाहन सो सोभित है भूसुर सुकबि भनै कासीपतिवरु सो॥ १॥ कोई एक कामिनी रमन परदेस ताको भेजी है मँजूसी ताके नीचे लिखि अहिपति। भूसुर सुकबि वाके ऊपर में सिव फिरि पवनज चंपक बनाई है सुघरमति ॥ बूझत कबिन्दन को बात याको भाव

कहौ सब ही बिदुषबृन्द पेखिनिज मनगति। कहियो बिचारि नाहीं मौनहि पकरि रहौ बिना धुनि जाने कहै सभा हँसै वाको अति ॥ २ ॥

५११. भोलासिंह कवि पन्नावाले

कट्टन कलेस के कलेमन के चट्टन चपट्टन चवाई दहपट्टन कपट्ट के।
गट्टन गनीमन के गीबिन के रट्टन अघट्टन सुघट्टन सुघट्टन अघट्टके ॥
भनै भोलासिंह बीर बाघन के बट्टन जे गाइ नगरट्टन सुसंतन सुघट्ट के।
दुवनद पट्ट लात्र भव की लपट्ट बंदौ जुगुलकिसोर गढ़ परनाबिकट्ट के ॥ १ ॥

५१२. भावन कवि, भवानीप्रसाद पाठक मौराबाँवाले

पढ़न न देत हैं कबित बाजे भावन जू बाजे चुपचाप सुनि नीमिसी अचै रहैं। बाजे दस बीस गूढ़ पूछि दृष्टिकूटन को मूढ़ सत साखिन की चरचा मचै रहैं ॥ बाजे अफसोस करैं बाजे रहि रोस धरैं बाजे दै भरोस दरबार में नचै रहैं। बाजे सूम सूका देत पाथर लगाइ छाती बाजे सूम साहब सुपारियो पचै रहैं ॥ १ ॥

धोई सी चूनरी रोई सी कंचुकी तैसे सिंधौरा सिंदूरन चोखा।
धौं कबका लहँगा धरा भावन पायो परा कहूँ तागभरोखा ॥
चूरी परैं कर ते सरकी तरकी चरकी सब बात में धोखा।
नेगी कहैं हम आजु लख्यो यह सूम जतीम चढ़ाउ अनोखा ॥ २ ॥

(काव्यशिरोमणि)

मारि मृगा गज देत मियै सुभ मौक्तिक रतन सों सुभ चाल है।
आपुन लेत सदा परिधान को आसन को मनमुदित खाल है ॥
माल मनीन की देत मियै नित आप लपेटत अंगन ब्याल है।
भावन भावती के सुखदायक संकर सों कहु कौन दयाल है ॥ १ ॥

आवत ही बृषभानु के लोग सबै सकुचैं दुख सों चपिहैं री।
राधे सराहि कहै सुख गे अब ताप की थापैं महा थपिहैं री।
छाँहैं छपै तन में अति ब्याकुल ते तन जाइ कहाँ छपिहैं री ॥
पंचतु है है महापँचतत्व जो भावन यो हीं दुवो तपिहैं री ॥ २ ॥

कुमुदाबिलास देखि कुमुदबिलास सब सर से सरोज सखि भावै नहीं औगुनी। अति बिपरीत देखौ सिगरे द्विजन सीखी रीति भयदानि बनचारिन ते सौ गुनी॥ नखत निहारि उर कौन के न खत होत निसाचर चन्द देखि कौन निज औगुनी। भावन बिहीन देखि भावन अनंद होत सरद हमारी सौतिबरखाते सौगुनी॥३॥

५१३. भौन कवि (१) नरहरिवंशी भाट बैंतीवाले
(शृंगाररत्नाकरग्रन्थे)

ग्रीषम ते तचि बचि पावस मरू कै पाई तामें फूकैं जुगुनू सुभूकैं लागैं पौन की। हूकैं उठैं हिय में कनूकैं लखे बूँदन की झिल्लि हू न मूकैं ये बिसासी बैरी भौन की॥ चपला चहूकैं त्यों त्यों तन में भभूकैं उठैं ऊकैं मारैं मुरवा कहाँ मैं कौन कौन की। दादुर की हूकैं घाइ करत अचूकैं उर कोकिल की कूकैं तापै बूकैं देतीं नौन की॥१॥

मोहन मीत हमारे नहीं हैं तिहारे तिहारे रहैं घर नाहीं।
ताही ते नीकी लगै सजनी रजनी निज पी की छुओं नहिं छाहीं॥
भौन कबिंद कहै हँसि कै अंसुआ उमड़े दृगछोरन माहीं।
मेरे लिलार लिखी बिधना लिखि तेरे लिलार पिया-गलबाहीं॥२॥

धरत धरनि पग करत कलोल छन ऐंचत निचोल ओट लुकत लुगाई की। लरत भिरत फेरि फिरत फितूर करि गिरत परत पै करत मन भाई की॥ रिरकनि खिझनि बुझनि सुरझनि भौन अरुझनि अरनि ददा की और दाई की। भूलति न माई मोहिं भाई की दुहाई वह हेरनि हँसनि मुसुकानि सिसुताई की॥ ३॥ तापन तपाउ मत्त गज सों चपाउ मोसों धरनि नपाउ पाव पाव को पकरि कै। अहि सों डसाउ नर्कपुर में बसाउ लैकै सुजस नसाउ दुख दीजै सुख हरि कै॥ कहत सुकबि भौन पौन सों उड़ाउ बेगि आँखियो रँजाउ कान तातो राँग भरि कै। माथहि छिलाउ लाउ कालकूट तामें पुनि कूर सों मिलाउ ना गुबिंद देह धरि कै॥ ४॥

५१४. भगवंतराय कवि (१)
(रामायणसुंदरकाण्ड)

सुबरनगिरि सो सरीर प्रभा सोनित सी तामें झलझलै रंग बाल दिवाकर को। दनुज-सघन-बन-दहन-कृसानु[1] महा ओजसों बिराजमान अवतार हर को॥ भनै भगवंत पिंग लोचन ललित सोहैं कृपाकोर हेरयो बिरदैत उचै कर को। पवन को पूत कपिकुल पुरुहूत[2] सदा समर सपूत बंदौं दूत रघुबर को॥ १॥ गाढ़ परे गैयर गुहारिबो बिचारयो जब जान्यो दीनबंधु कहूँ दीन कोऊ दालि गो। जैसे हुते तैसे उठि धाये करुना के सिंधु अस्त्र सस्त्र बाहन बिसारि कै बिमालि गो॥ भनै भगवंत पीछे पीछे पच्छिराज[3] धाये आगे प्रतिपच्छि छेदि आयुधै उछलि गो। जौ लौं चक्रधारी चक्र चाह्यो है चलाइबे को तौ लौं ग्राहग्रीव पै अगारी चक्र चलि गो॥ २॥

५१५. भगवंतकवि (२)

रात की उनींदी राधे सोवत सकारे भये झीनो पट तानि परी पाँवन ते मुख ते। सीस ते उलटि बेनी कंठ है कै उर है कै जानु है छवानि है कै लागी सूधे रुख ते॥ सुरति-समर करि जोबन के महाजोर जीति भगवंत अरसाय राखी सुख ते। हर को हराय मानौ माल मधुकरन की राखी है उतारि मैन चंपाके धनुख ते॥ १॥

कट्टरो ताजिनो बीन ना बाजिनो भिच्छुकै लाजिनो भाजिनो देवा। माह के मास में फूस को तापनो भूत को जापनो झाँझरो खेवा॥
भनै भगवंत एते नहीं काम के जे नहीं राम के नाम लेवा।
धर्म को छूटनो साधु को लूटनो धूम को घूटनो सूम की सेवा॥२॥

चलु री सयानी तू सिरानी सब लाज जात मानी बात तेरी नेक राति सरसान दे। नूपुर उतारि छोरि किंकिनी धरन दीजै नैनन में नींद नारि नर के समान दे॥ तू तो धरु धीर तौ लौं मैं तो सजौं चीर

---

१ दैत्यवन जलाने की अग्नि। २ वानरेन्द्र। ३ गरुड़।

जौ लौं भारी भगवंतजू को चित्त ललचान दे। छपा को छपाय छपि जान दे छपाकर को आऊँगी कन्हैया पै जुन्हैया नेक जान दे॥ ३॥

५१६. भूमिदेव कवि

कुच लोह गोला लाल लाल मैन आगि तये चोलीदल पीवर धराऊ मेरे कर पर। भुज हेम साँकरे सों बाँधि कै मुसुक मेरी छाती पर धरि दे उरोज दोऊ गिरिवर॥ भनै भूमिदेव फिरि बेनी कारी नागिनि सों अंगन डसाउ बिष छाउ रोम रोम दर। राधे मैं बिहारी परनारी जो अनारी कहूँ सौंहैं करवाइ ले बिहारी कामसरवर॥ १॥

५१७. भवानीदास कवि

सोम² समेत अमावस माघ अन्हैबेको आये जके सब ठाढ़े।
देखन को छबि अंग की ताकी जु गंग सों माँगैं यहै बर गाढ़े॥
दास भवानी कहै कवि को दुति जाके अदेखे सों नेह जो बाढ़े।
खोलति ना तिय नेक प्रभा तिय चौबिसमास को घूँघुट काढ़े॥ १॥

५१८. भौनकवि प्राचीन (२)

भावती जो पिय की बतियाँ सखि सालती हैं उर सूल सी बोई।
घोर घटा बिजुली चमकै तिसरे पपिहा पिय-पीय रटोई॥
भौन भनै भ्रम भामिनि को लरजैं छतियाँ तन काम बिगोई।
सासन सास उसासत है बरसात गई बर साथ न सोई॥ १॥

५१९ भूषण त्रिपाठी टिकमापुरवासी
(शिवराजभूषण)

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सु अंभ पर रावन सु दंभ पर रघुकुल राज है। पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर त्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषन बितुंड³ पर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यों मलेच्छबंस पर सेर सिवराज है॥ १॥ गरुड़ को दावा जैसे नाग के

१ चाँदनी। २ अर्थात् सोमवती अमावास्या। ३ हाथी।

समूह पर दावा नागजूथ पर सिंह सिरताज को । दावा पुरुहूत को पहारन के कूर पर पच्छिन के गन पर दावा जैसे बाज को ॥ भूषन अखण्ड नव खंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरन समाज को । उत्तर पछाँह देस पूरब दखिन माँझ जहाँ बादसाही तहाँ दावा सिवराज को ॥ २ ॥

केतक देस जित्यो दल के बल दच्छिन चंगुल चापि कै नाख्यो ।
रूप गुमान हरयो गुजरात को सूरतको रस चूसि कै चाख्यो ॥
पंजन मेलि मलेच्छ मले दल सोई बच्यो जिहि दीन है भाख्यो ।
सो रँग है सिवराज बली जिहिं नौरंग में रँग एक न राख्यो ॥ ३ ॥

साजि चतुरंग बीर रंग है तुरंग चढ़ि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है । भूषन भनत हद निनद नकीबन के नैननीर मद दिसागज को गलत है ॥ ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठेल पेल सैल उसलत है । तारा सों तरनि धूरि धारा सों लगत जिमि थारा पर पारा पारावार ज्यों हलत है ॥ ४ ॥ भुज भुजगेस के वै संगिनी भुजंगिनी सी खोदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के । बखतर पाखरन बीच धसि जात मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के ॥ रैयाराव चम्पति के छत्रसाल महाराज भूषन सकत को बखानि यों बलन के । पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के ॥ ५ ॥ राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयन्द दिग्गजन हिये साल को । जाके परताप सों मलिन आफ़ताब होत ताप तजि दुज्जन करत बहु ख्याल को ॥ साजि साजि गज तुरी कोतल कतारी दीन्हे भूषन भनत ऐसो दीन-प्रतिपाल को । और राजा-राव मन एक हू न ल्याऊँ अब साहू को सराहौं की सराहौं छत्रसाल को ॥ ६ ॥ चाकचक चमू के अचाकचक चहूँ ओर चाक सी फिरत धाँक

चम्पति के लाल की। भूषन भनत बादसाही मारि जेर करी काहू उमराव ना करेरी करबाल की॥ सुनि सुनि रीति बिरदैत के बड़प्पन की थप्पन उथप्पन की रीति छत्रसाल की। जंग जीति लेवा ते वै है कै दामदेवा भूप सेवा लागे करन महेवा-महिपाल की॥७॥

दोहा—इक हाड़ा बूँदी धनी, मरद गहे करबाल।
सालत औरँगजेब के, वे दोनों छत्रसाल॥ १॥
ये देखौ छत्तापता, ये देखौ छत्रसाल।
ये दिल्ली की ढाल ये, दिल्ली ढाहनवाल॥ २॥

सारस से सूबा करबानक से साहजादे मोर से मुगुल मीर धीर में धचै नहीं। बंगला से बंगस बलूच औ बलख ऐसे काबिली कुलंग याते रनमें रचै नहीं॥ भूषनजू खेलत सितारे में सिकार संभा सिवा को सुवन जाते दुवन सचै नहीं। बाजी सब बाज की चपेटैं चंग चहूँ ओर तीतर तुरक दिल्ली भीतर बचै नहीं॥ ८॥ राना भो चमेली और बेला सब राजा भये ठौरठौर रस लेत नित यह काज है। सिगरे अमीर आनि कुन्द होत घर घर भ्रमत भ्रमर जैसे फूलन की साज है॥ भूषन भनत सिवराज बीर तू ही देसदेसन की राखी सब दक्खिन में लाज है। त्यागै सदा षटपद पद अनुमान जैसे अलि नवरंगजेब चम्पा सिवराज है॥ ९॥ कूरम कमल कल द्विज है कलिन्द मूल गवर गुलाब राना केतकी सुबाज है। तोंवर कनैर जाहीजूही पुनि चन्द्रावल पाडर पवाँर गौर केंवरे दराज है॥ भूषन भनत मुचुकुन्द बड़गूजर बघेले हैं बसन्त सदा सुखद नेवाज है। लेइ रस एतन को बैठि न सकत अहे अलि अवरंगजेब चम्पा सिवराज है॥ १०॥ साजि गज बाजि सिवराज सैन साजत ही दिल्ली दल गही दिसा दीरघ दुवन की। तानिया न तिलक सुथनिया न

रहीं अंग घामै घबरानी छोड़ि सेजिया सुखन की ॥ भूषन भनत बाक बहियाँ न कोऊ नाक तहियाँ सु थाकि थाकि रहियाँ रुखन की । गालियाँ सिथिल भईं बालियाँ बिथलि गईं लालियाँ उतरि मुगलानियाँ मुखन की ॥ ११ ॥ उलदत मद अनुमद ज्यों जलधिजल बलहद भीमकद काहू के न आहके । प्रबल प्रचंड गंड मण्डित मधुपबृन्द बिन्ध्य से बलन्द सिन्धु सात हू के थाह के ॥ भूषन भनत झूल झंपति झपान झुकि झूमत झुकत झहरात रथ डाह के । मेघ से घमण्डित मजेज दार तेजपुंज गुंजत सो कुंजर कमाऊँनरनाह के ॥ १२ ॥

५२०. भगवानहितरामराय

पद

बने आज नन्दलाल सखि प्रेममादक पिये संग ललना लिये जमुनतीरे ।
फूली केसर कमल मालती सघन बन मन्द सुगन्ध सीतल समीरे ॥
नीलमनि बरन तन कनकमण्डित बसन परम सुन्दर चरन परसि माला ।
मधुर मृदु हास परकास दसनावली छबिभरे इतरात दृग बिसाला ॥
किये चन्दन खौरि बदनारबिन्द मकरंद लोभे भ्रमर कुटिल अलकैं ।
हलतकुंडल लटकिचलत जब स्याम घनमनिनकी कांति कल गंड झलकैं ॥
रसिकमनि रंग भरे बिहरे बृन्दाबिपिन संग सखिमण्डली प्रेमपागी ।
कहै भगवानहितरामराय प्रभु सुमिरि सोई जानै जाहि लगनलागी १

५२१. भीषमदास

पद

यहि कलि परम सुभगजन धनि श्रीबिट्ठलनाथ उपासी ।
जो प्रकटे ब्रजपति बिठलेस्वर तो सेवक ब्रजवासी ॥
ब्रजलीला भूल्यो चतुरानन बज्र टास्यो ब्रतरासी ।
अब लौं सठ अब गनत अभागे करत परस्पर हाँसी ॥
परिहरि सदन सदा जस गावत भक्त मुक्ति की दासी ।
बदत न कछु भीषम भवबैभव भजनानन्द उपासी ॥१॥

५२२. भंजन कवि

सोई मेरी बीर जोइ लावै बलबीर ताहि देहौं दोउ बीर मेरो बिरह बँटाइ ले। भंजन छपा की पीर छपै ना छपाये पीर छपाकर छपै तौ छपाकर छपाइ ले॥ मदन लगो है धाय धाय सों कहौरी धाय एरी मेरी धाय नेक मोहूँ तन धाइ ले। देह मेरी थरथराइ देहरी चढ़ो न जाइ देह री तनक हाथ देहरी नँघाइ ले॥ १॥

जीव हैं द्वै रसना मुख एक हैं तीनि हैं नैन ते रूप बिसेखै॥
तीनि तिया बिबि कै रति एक है ताके सपूत है सेत बिसेखै।
होइ न कूट कहै कवि भंजन चातुर होय हिये महँ लेखै॥
बाँझ को पूत बिना अँखियान कुहू निसि में ससि पूरन देखै॥ २॥

५२३. भूप कवि भूपनारायण बंदीजन काकूपुरवाले

भूप कहै सुनियो सिगरे मिलि भिच्छुक बीच परौ जनि कोई।
कोई परौ तौ निकोई करौ न निकोई करौ तौ रहौ चुप सोई॥
जानत हौ बलि ब्राह्मन की गति भूलि कुपंथ भलो नहिं होई।
लेइ कोई अरु देइ कोई पर सुक्र ने आँखि अकारथ खोई॥ १॥

५२४. भगवतरसिक वृन्दावनवासी

कुंडलिया

सुचिता सील सनेह गति चितवनि बोलनि हास।
कचगूँथनि सीमन्त सुभ भाल तिलक सुखरास॥
भाल तिलक सुखरास दृगन अंजन अति सोहै।
बीरी बदन सुदेस चिबुक रसिकन मन मोहै॥
जावक मिहँदी रंग राग भगवत नित उचिता।
ये सोरह सिंगार मुख्य तामें बर सुचिता॥ १॥
नूपुर बिछिया किंकिनी नीबी-बन्धन सोइ।
करमुँदरी कंकन बलय बाजूबँद भुज दोइ॥
बाजूबँद भुज दोइ कंठसी दुलरी राजै।

नासा बेसरि सुभग स्रवन तारंक बिराजै ॥
भगवत बेंदा भाल माँग मोती गो ऊपर ।
द्वादश भूषन अंग नित्य प्यारी पग ऊपर ॥ २ ॥

५२५. भगवानदास ब्रजवासी

पद

श्रीबल्लभसुत परम कृपाल ।
तैसेइ श्रीगिरिधर श्रीगोबिन्द बालकृष्णजू नयन बिसाल ॥
महामोह मददोष दुखी जन प्रकट भये षट दर्सन ईस ।
जीव अनेक किये किरतारथ कोमल कर धारत पर सीस ॥
जा दर्सन सुर नर को दुर्लभ सरनागत को सुलभ अपार ।
जन्म मरन भवबन्धन छूटे जिन श्रीमुख देख्यो इकबार ॥
श्रीबल्लभ रघुपति श्रीजदुपति मोहनमूरति श्रीघनस्याम ।
जन भगवान जाय बलिहारी यह सुनि जपौं तिहारो नाम ॥१॥

५२६. भूधर कवि असोथरवाले (२)

म्यान ते कढ़त भूत अफरे अहार पाइ हार पाइ हरषि महेस आइ नचिगे । गाइ गाइ बरन बरंगना बरन लागीं चहलै सकल स्वान चरबी के मचिगे ॥ भूधर भनत मारे मुगल पठान सेख सैयद अमीर भूप धीर केते पचिगे । राइ भगवन्तजू के खड्ग मुखखेत आइ खपे ते सहादति ते खेस ओढ़ि बचिगे ॥ १ ॥

५२७. मान कवि (१)

कीन्हो ना बिलम्ब जब खम्भ गहि बाँध्यो बाप प्रकट प्रताप आप भये नरहारी है । कीन्हो ना बिलम्ब जब ग्राह गज ग्रसि लीन्हो छोड़ि खगराज बेगि बिपति बिदारी है ॥ कहै कबि मान बर बसन बढ़ाइ राख्यो कीन्हो ना बिलम्ब जब द्रौपदी पुकारी है । भई जेरबारी नहिं करिये अबारी अब अवधबिहारी सुधि लीजिये हमारी है ॥ १ ॥ तब ना बिचार्यो पाप गीध को सुगति दीनो

तब ना विचार्यो पाप गनिका उधारी है । तब ना बिचार्यो पाप सबरी के फल खाए तब ना बिचार्यो पाप साप तिय हारी है ॥ कहै कबि मान पुनि तब ना बिचार्यो पाप बानर, निसाचर बनाये अधिकारी है । भई जेरबारी सो भरोसो मोहिं भारी अब अवध-बिहारी सुधि लीजिये हमारी है ॥ २ ॥

५२८. मान कवि, बैसवारे के (२)

(कृष्णकल्लोल, कृष्णखंड भाषा)

दोहा—अष्टादस सै बरस सो, सरस अष्टदस साल ।
सुचि सैनी बर बार को, प्रगट्यो ग्रन्थ बिसाल ॥ १ ॥

छप्पै

जब लगि जग जगमगत भानु सितभानु नखतगन ।
जब लगि गिरि हिमवान पुहुमि पवमान प्रबल बन ॥
जब लगि सेस जलेस अमर अमरेस बिराजत ।
जब लगि हरि हर ब्रह्म ललित लोकन छबि छाजत ॥
जब लगि ध्रुव सनकादि सब अरुनादिक दूनौ अनुज ।
तब लगि नृप बैरीसाल सुख चिरंजीवि चम्पति तनुज ॥ १ ॥
जय गजमुख मुख सुमुख सुखद सुखमा सरसावन ।
जय जग सिद्धि समृद्धि बृद्धि बुधि बर बरसावन ॥
जय मंगल आचरन मंगलाबरन बिबिध बिधि ।
जय बर बरन अडोल कलित कल्लोल कलानिधि ॥
जय सम्भु-सुवन दुख-दुवन-हर भुवन भुवन गुनगाथ जय ।
जय निखिल-नाथ निजनाथ जय जय जय जय गननाथ जय ॥ २ ॥

५२९. मोहनभट्ट बाँदावाले कवि पद्माकरजू के पिता (१)

अड्डादार ऐंड़दार ओजदार आबदार तरक तराकदार तोरादार तेग म्यान । बखतबलंद श्रीनरिंद सभासिंह-नंद हिंदपति जालिम तो जस जाहिर जहान ॥ तुम जानि जानौ हम ही से हम और नहीं

मोहन बखानै चारु रौरे गुनपरमान । इन्द्र के जयंत, रतिकंत कृष्णचन्द्रजू के, रुद्र के खड़ानन[1], समुद्र के कलानिधान[2] ॥ १ ॥ दाबि दल दक्खिन सुसिक्खन समेत दीन्हे लीन्हे गहि पकरि दिलीस दहलन में । रूस रुहिलान खुरासान हबसान तचे तुरुक तमाम ताके तेज तहलन में ॥ मोहन भनत यों बिलाइति-नरेस ताहि सेर रतनेस घेरि ल्यायो सहलन में । जिहिं अँगरेज रेज कीन्हे नृपजाल तिहिं हाल करि स्वबस मचायो महलन में ॥ २ ॥ पीत पटवारे क्रीट गौहरनवारे गजमनिगनवारे तरि कुवर सँभरिगे । अंगराग केसरि से सर बड़े केसर में मृगमदवारे मृग आतुर उधरिगे ॥ मोहन भनत भूरि भूषन मयूषन[3] के कारन सकल सुरलोकन में भरिगे । गंगजल ताला में अन्हात बार बाला वाके अंग अंग आला याते जीवजाला तरिगे ॥ ३ ॥

जानत हौ सब मेरे हवाल अहो गुनजाल कहौं कहा गोसे ।
बंधुबिरोध न संग सहोदर[4] संग सखा सो लखा दिल दोसे ॥
उद्यम हाल न भाल बिसाल सो मोहन मोहन तेरे भरोसे ।
जामें रहै मम बाकमान सुजान सुजान बिनै करौं तोसे ॥ ४ ॥

५३०. मोहन कवि (२)

तक्कत ही ताकी तेज सक्कत समर सूर जक्कत है हुक्कत है थक्कै देत चाली को । छीन लैहै मद मदवारन को मद करि बिरद बिहद पैजपालै पैजपाली को ॥ मोहन भनत महाराज जयसिंह तेरी तेग रनरंग में खिलावै खल ख्याली को । सोनित[5] को ताल भरै काली को कपाल अरु मुंडन की माल पहिरावै मुंडमाली[6] को ॥ १ ॥ कबै आप गये ये बिसाहन[7] बजार बीच कबै बोलि

---

१ कार्त्तिकेय । २ चंद्रमा । ३ किरणों के । ४ सगा भाई । ५ रुधिर । ६ शिव । ७ खरीदने ।

जुलहा बिनाये दर पट से । नंदजी के कामरी न वहाँ बसुदेव-जू के तीनि हाथ पटुका लपेटे रहे कटि से ॥ मोहन भनत यामें रावरी बड़ाई कहा राखि लीन्ही आनिबानि ऐसे नटखट से । गोपिन के लीन्हे तब चीर चोरि-चोरि अब जोरि-जोरि लागे देन द्रौपदी के पट से ॥ २ ॥

गोकुल गैल में छैल फिरै अति फैल करै मन मैन जगावै ।
नेक बिलोकत मोहत मोहन मानिनि-मान को दूरि भगावै ॥
बिष्णु बिरंचि बिचार मनावत गावत कीरति मोद पगावै ।
बावरी जो पै कलंक लग्यो निरसंक ह्वै काहे न अंक लगावै ॥३॥

५३१. मुकुंदलाल बनारसी, रघुनाथ कवि के गुरु

रति के मुरीद महबूब बेदरद दोनों पानिप के प्याले पल अलफ़ीन झेलैंगे । सित औ असित डोरे सुरुख सुधारि सेली कोए कलमन स्रुतिपथन उठेलैंगे ॥ अंजन इलाही नूर पगे हैं मुकुंद कहै नजरि की आसा मन माहँ जीति खेलैंगे । राये नैन बेनवा बिहद छबि छाके बाँके मैन सर खाल नंदलाल पर मेलैंगे॥१॥

५३२. मुकुंदसिंह

छूटैं चन्द्रबान भले बान औ कुहुक-बान छूटत कमान जिमी आसमान छ्वै रह्यो । छूटैं ऊँटनालैं जमनालैं हथनालैं छूटैं तेगन को तेज सो तरनि[2] जिमि ब्वै रह्यो ॥ ऐसे हाथ हाथन चलाइ कै मुकुंदसिंह अरि के चलाइ पाइ बीर-रस च्वै रह्यो । हय चले हाथी चले संग छोड़ि साथी चले ऐसी चलाचल में अचल हाड़ा ह्वै रह्यो ॥ १ ॥

५३३. माखनकवि (१)

खंजन नबीन मीन मान के उमा के देत नाके देत मृगमद कंजके कहाँ के हैं । ठौर ठौर भँवर भ्रमत जाके ताके संग माखन चकोर कहै चंचल चलाँके हैं ॥ ऐसे ना रमा के ना उमा के ना तिलो-

---

१ कटि । २ सूर्य ।

च्छमा के प्रबल हरौल पंचबान प्रति नाके हैं । हैं न मंजुघोषा के बखाने मैनका के मैन ऐन सुखमा के नैन बाँके राधिका के हैं ॥१॥

नित ही तिनूका तोरै भूमि लिखि नख हू सों बसन मलीन राखै नेकु ना धोवावही । पाँव धोवै थोरे सौच दातउनि करै थोरी केस राखै रूखे पीठि मूठ की बजावही ॥ डासन[1]-बिहीन दोऊ संध्यन में रोज सोवै रोवै अन्न खात हँसै माखन सो गावही । औगुन इतेक ये कुबेर हू कदाति[2] करै हरै धन बिष्णु फेर बेर न लगावही ॥ २ ॥

तात नरायन बारि[3]धि मन्दिर पूत पितामह सो जिन जायो ।
छेह को घाम सहायक मित्र सो संभु सुरेसहि को जु रिझायो ॥
माखन ऐसी रची जिहि को तिहि को जग मेटनहार न गायो ।
कौन को प्यारो न अंबुज जो पै तुषार की त्रास न काहू बचायो ॥ ३ ॥

ऐसे मैनका हू के न ऐसे मैनका हू के न ऐसे मैन काहू के सँवारे दीह दौर के । भौंर हैं न कारे ऐसे भौंर हैं नकारे ऐसे भौंर हैं नकारे कंज मंजुल मरोर के ॥ सर सुखमा के हैं सरस सुखमा के हैं सो सर से हैं माखन कटाच्छ पैनी कोर के । देखे हरि नीके नैन देखे हरिनी के नैन देखे हरिनी के नैन तीके हैं न और के ॥४॥

४३४. माखन लखेरा पन्नावाले (२)

बाजे डफ ढोल बाजे फाग के समाज साजे ग्वालन के झुंड लै गुविंद फौज जोरी है । बाँधे सिर चीरा हीरा झलकैं कलंगिन में अंगन तरंग-रंग भूषन करोरी है ॥ केसरिया बागे अनुरागे प्रेम पागे मन माखन सभागे फहरात पट[4]ओरी है । लीन्हे भरि झोरी पिचकारी रंगबोरी आजु होरी आजु होरी बरसाने आजु होरी है ॥ १ ॥

---

१ बिछौना । २ कदाचित् । ३ समुद्र । ४ पाला ।

५३५. माधवानंद भारती काशीस्थ
(माधवीशंकरदिग्विजय)

भद्रग्रहं यद्यशरमणीयं
भक्त्या ह्यमरैरपि श्रवणीयं ।
आशुतोष श्रीहर कमनीयं
नौमि सदा शंकरभजनीयं ॥ १ ॥

चौपाई ।

मंगलमूरति सिद्धिबिधायक । बिनवहुँ प्रथमहिं श्रीगननायक ॥
श्रीगिरिजा जगजननि भवानी । चरन बंदि बिनवौं सुखखानी ॥ १ ॥

५३६. महेश कवि

सुनि बोल सुहावन तेरे अटा यह टेक हिये में धरौं पै धरौं ।
मढ़ि कंचन चोंच पखौवन में मुकताहल गूँदि भरौं पै भरौं ॥
सुख पींजरे पालि पढ़ाइ घने गुन औगुन कोटि हरौं पै हरौं ।
बिछुरे हरि मोहिं महेस मिलैं तोहिं काग ते हंस करौं पै करौं ॥ १ ॥

५३७. मदनमोहन

पद

तैं निसि लाल सों रति मानि मैं तब ही जानि पग डगमग मग न परत सूधे। सिथिल बदन कबरी[1]केस राजत आनन सुदेस बोलत कछु लटपटी बानी ॥ यह छबि मो मन भाई मिटिहै चपलताई पीकलीक अधरन लपटानी । मदनमोहन किसोर रिझाये श्यामा प्यारी धनिधनि नवनिकुंजरानी ॥ १ ॥

५३८. मंगद कवि

सूझै न मो[2] बन बाग तड़ाग सबै बिधि फूल पलासन[3] सूझै ।
सूझै न मो घरकाज सखी नहिं सासु जेठानी की बातन बूझै ॥

---

१ चोटी । २ मुझको । ३ टेसू के फूल ।

बूझै न मंगद बेनु नये नये सैनन नैनन में नहिं जूझै।
सूझै वही बनमाल गरे सिगरो जग साँवरो-साँवरो सूझै ॥ १ ॥

५३९. माधवदास

पद

श्रीगोकुलनाथ निज बपु धस्यो।
भक्त हेत प्रगटे श्रीवल्लभ जग तें तिमिर जु हस्यो ॥
नंदनँदन भये तब गिरि गोप ब्रज उद्धस्यो।
नाथ विट्ठलसुवन वहै कै परम हित अनुसस्यो ॥
अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कस्यो।
दास माधव त्रास देखे चरनसरनै पस्यो ॥ १ ॥

५४०. महाकवि *

राधिका माधवै एक ही सेज पै धाइ लै सोई सुभाइ सलोने।
प्यारे महाकबि कान्ह के मध्य में राधे कहै यह बात न होने ॥
साँवरे सों मिलि ह्वै है न साँवरी बावरी बात सिखाई है कोने।
सोने को रंग कसौटी लगै पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोने ॥ १ ॥

५४१. मलिंद कवि, मिहीलाल बंदीजन, डलमऊवाले

सोहै दंड चंड जे अखंड महिमंडल में दारिद बिखंडन में धीरज धरात है। देस औ बिदेस नरईसन सों भेंट करि करि सरवर नेक नेक ठहरात है ॥ गिलिम गलीचा पदमालया समूह सदा घोड़े पील पालकी हमेस दरसात हैं। भनत मलिंद महाराज श्रीभुआलसिंह तेरी भागि देखे ते दरिद्र भागि जात है ॥ १ ॥

५४२. महताब कवि

कहै मन चित को लगाय कै चरन रहौ स्रवन कहत गुनगाथ सो गहो करौं। बैन यों कहत रानारूप को पढ़ौंगो हाई नैन हू

---

* पं. कृष्णविहारी मिश्र बी० ए० एल्० एल्० बी० ने प्रमाणित किया है कि महाकवि कालिदास कवि ही का एक उपनाम है।

कहत रूपलाह सो लहे करौं ॥ त्योंही महताब दोइ मास घर सीख बिन बैस यों कहत परदेस क्यों रहो करौं । कीजिये दुरस न्याउ हिन्दूपति बादसाह कौन को उराहनो न्यों कौन को कहो करौं ॥ १ ॥ सोहत सजीले सित असित सुरंग अंग जीन सो दै अंजन अनूप रुचि हेरे हैं । सील-भरे लसत असील गुन साज किये लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं ॥ घूँघुरु फरस तामें फिरत फबित फूले लोक महताब अवलोकि भये चेरे हैं । मोरवारे मन के त्यों पन के मरोरवारे त्योरवारे तरुनी तुरंग दृग तेरे हैं ॥ २ ॥

५४३. मनसा कवि

पूरन करत परिपूरन मनोरथन सूरन के तूरन में कूरन की कंडिका । बनन के बीच उपबनन के बीच होत आपने जनन की है नीकी मानतंडिका ॥ देत दलदंडिका ये दोर[1]दंड दंडिका है जाकी दिपै मारतंड कोटिन उदंडिका । सिद्धि की करंडिका जो मनसा प्रचंडिका जो खंडन की खंडिका सो मेरी मात चंडिका ॥ १ ॥ दीपतिसिखा सी खासी मैनका तिलोत्तमा सी रतिदा सी रंभा सी सु रूपरंभा रासी है । सीता सी सती सी सत्यभामा सी सकुंतला सी सची सी सिवा सी स्वाहा सुधा सुखमा सी है ॥ कौल की कली सी है कला सी है कलानिधि की मनसा महा सी मुखहासी में प्रकासी है । संभुसालिका सी सुरबाल-बालिका सी बाल लालमालिका सी हरितालिका उपासी है ॥२॥ चामीकरचित्रिका सी चित्र की चरित्रिका सी चंपकलता सी चपला सी चारुता सी है । द्रुपदसुता सी दमयंती सी दिमाकदार दीप सी दिपति देव-दे[2]वदारिका सी है ॥ मनसा कहत भव[3]भामिनी सी भासमान बृषभानुजा सी भानुभा सी भवभा सी है । संभुसालिका

१ भुजदंड । २ देवबालिका । ३ गौरी ।

सी सुरपाल-बालिका सी बाल लालमालिका सी हरितालिका उपासी है ॥ ३ ॥ एक ही झमाके में छमा के मन मोहैं दृग ऐसे मारमा के ना उमा के ना रमा के हैं। दस हूँ दिसा के मनसा के फल देनवारे करन निसा के इमि जाकी ओर ताके हैं ॥ जाइ कै जहाँ के तहाँ मीन जल ढाँके गये हरिन हहा के ऐसे कमल कहाँ के हैं। सदन समा के सुखमा के उपमा के चारु चंचल चलाँके नैन बाँके राधिका के हैं ॥ ४ ॥ लालची लजीले लोल ललित रसीले लखे लोगन ललकि लै लै लूटत लराँके हैं। छिन में छलीन चित छैलन को छोभै छरैं छोरैं छरकीले सो छबीले छबि छाके हैं ॥ मनसा कहत डेरा डोड़ी के न डाँड़े डाका डारत डगर डग डारत में डाके हैं। ऐसे और काके मैनका के अबला के मैनबानन ते बाँके नैन ताके राधिका के हैं ॥ ५ ॥

५४४. मनसाराम कवि

स्याम द्रुम स्याम तम स्याम निसा स्याम बन स्याम नभ स्याम स्याम स्याम बन स्याम है। स्याम मनि स्याम बेनी गूँदी स्याम मानिक सों दीन्ही स्याम खौरि करै चली स्याम काम है ॥ मंसा-राम स्याम चोली भुजन कसे है बाम धरे स्याम चीर धाई भौंर भीर स्याम है। स्याम कुंजधाम सराजाम स्याम कै कै गई स्यामा स्याम जहाँ स्याम जहाँ स्याम स्याम है ॥ १ ॥

५४५. मीरन कवि

हौं मनमोहन सों मिलि कै करती उहाँ केलि घनी तरुछाहीं।
सो सुख मीरन कासों कहौं मन मारमसोसन ही मुरझाहीं ॥
पात गये झरि धूम के पुंजन कूह परी सिगरे बन माहीं।
गाँव के लोग महा निरदै जो पलासन कोऊ बुझावत नाहीं ॥ १ ॥

सुमन में बास जैसे सु मन में आवै कैसे नाहीं कहे होत नाहीं हाँ

कह्यो चहत है। सुरसरि सूरजा में सूरसुता सोहै जैसे बेद के बचन बाँचे साँचे निबहत है॥ परिवा के इन्दु की कला जो बसै अम्बर में परिवा को अच्छ परतच्छ न लहत है। जैसे अनुमान परमान परब्रह्म जैसे कामिनी की कटि कबि मीरन कहत है॥ २॥

५४६. मधुसूदन कवि

घेरि रह्यो बिरहा चहुँ ओर ते भागिबे को कोउ पार न पावै।
जानत हौ पर बात सबै तुम जाल को मीन कहाँलगि धावै॥
चाहै कछूक सँदेसो कह्यो सु तौ जी महँ आवै पै जीभ न आवै।
ऊधोजू वा मधुसूदन सों कहियो जु कछू तुम्हैं राम कहावै॥ १॥

५४७. मधुसूदनदास माथुर ब्राह्मण, इष्टकापुरी के निवासी
(रामाश्वमेध भाषा)

हे रघुकुलभूषन दुष्टबिदूषन सीतापति भगवान हरे।
नवपङ्कजलोचन भवभयमोचन अतिउदार गुन दिव्य भरे॥
यह नृप बल भारी समर मँझारी प्रन करि बंधन कीन प्रभो।
अब बेगि छुड़ावहु बिरद बढ़ावहु सबको दीन बिलोकि बिभो॥१॥

५४८. मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले

पूरन पुरुष के परम दृग दोऊ जानि कहत पुरान बेद बानि जोरि रढ़ि गई। कबि मतिराम दिनपति जो निशापति जो दुहुँन की कीरति दिसन माँझ मढ़ि गई॥ रबि के करन भये एक महा दानि यह जानि जिय आनि चिन्ता चित्त माँझ चढ़ि गई। तोहिं राज बैठत कुमाऊँ श्रीउदोतचन्द चन्द्रमा की करक करेज हू ते कढ़ि गई॥ १॥

(ललितललाम)

परम प्रबीन धीर धरमधुरीन दीनबंधु सदा सुनी जाकी ईस्वर में मति है। दुर्ज्जन बिहाल करि जाचक निहाल करि जगत में कीरति जगाई जोति अति है॥ राउ सत्रुसाल के सपूत पूत

भाऊसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है । जानपति दानपति हाड़ा हिंदुआनपति दिल्लीपति दलपति बालाबंदपति है ॥ २ ॥ कैसे आसमान से बिमान से घटा से गज रावरे चलत मानो मेरु से लसत हैं । अतल बितल तल हलत चलत दल गज-मद राजैं दिगदन्ती चिकरत हैं । कहै मतिराम सम्भु दुरद दराज ऐसे जिन्हैं पाइ कबिराज आनँद भरत हैं । कुंभ[1] छाये षटपद[2] मद निकरन नद कदन बलंद गढ़ गरद करत हैं ॥ ३ ॥

छप्पै

जब लगि कच्छप कोल[3] सहसमुख[4] धरनिभारधर ।
जब लगि आठौ दिसन दाबि सोहत दिग्गज बर ॥
जब लगि कबि मतिराम स-गिरि[5]-सागर महिमंडल ।
जब लगि सुबरनमेरु सघन घन मगन अगन चल ॥
नृप सत्रुसालनंदन नवल भावसिंह भूपालमनि ।
जग चिरंजीव तब लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥ ४ ॥

दोहा—भौंह कमान कटाच्छ सर, समरभूमि बिच नैन ।
लाज तजे हू दुहुन के, सलज सुहृद सब बैन ॥ १ ॥
रूपजाल नँदलाल के, परि कै बहुरि छुटै न ।
खंजरीट मृग मीन से, ब्रजबनितन के नैन ॥ २ ॥

बानी को बसन कैधौं बात को बिलास डोलै कैधौं मुख चंद चारु चाँदनी प्रकास है । कबि मतिराम कैधौं काम को सुजस कै परागपुंज प्रफुलित सुमन सुबास है ॥ नाक नथुनी के गजमोतिन की आभा कैधौं रति अन्त प्रगटित हिय को हुलास है । सीत करिबे को पिय नैन-घनसार कैधौं बाला के बदन बिलसत मृदु हास है ॥ ५ ॥

---

१ मस्तक । २ भ्रमर ३ बाराह । ४ शेष नाग । ५ पहाड़ों और समुद्रों सहित ।

(छन्दसारपिंगल)

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फतेसाहि स्री-नगर साहिबी समाज है । जैसो तौ चितौर-धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊँपति पूरो रजलाज है ॥ जैसे जयसिंह जसवन्त महाराज भयो जिनको मही में अजौं बढ्यो बलसाज है । मित्र साहिनन्द स्रीबुँदेलकुलचन्द जग ऐसो अब उदित सरूप महराज है ॥ ६ ॥ लखमन ही संग लिये जोबनविहार किये सीतहिये बसै कहो तासों अभिराम को । नवदलसोभा जाकी बिकसै सुमित्रै लखि कोसलै बसत कोऊ धाम धाम ठाम को ॥ कवि मतिराम सोभा देखिये अधिक नित सरसानिधान कबि कोबिद के काम को । कीनो है कबित्त एक तामरस[1] ही को यासों राम को कहत कै कहत कोऊ बाम को ॥ ७ ॥

(रसराज)

चन्दन चढ़ा री नभ चन्द न चढ़ारी अंग चन्द उजियारी देखि नकरात कैसी है । फूँद फन्द फुफुँदी गँसीली गाँठि गूँदि गूँदि मूँदि मूँदि मुख मन्द मतरात कैसी है ॥ मतिराम मिलन बिहारी को तू प्यारी चलु नित रतिवारी आजु जकरात कैसी है । कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसी रात इतरात कैसी है ॥८॥ चोर की चोर छिनार छिनार की साहु की साहु बली की बली । ठग की ठग कामुक कामुक की अरु छैल की छैल छली की छली ॥ परबीनन की परबीन ही त्यों मतिराम न जानै कहाँ धौं चली । इन फेरि दियो नथ को मुकता उन फेरि कै फूँकी गुलाबकली ॥९॥ गोपबधू तन तोलत डोलत बोलत बोल जु कोमल भाखैं । ऊरु नितम्बन की गुरुता पग जात गयन्दन की गति नाखैं ॥

---

१ कमल ।

आगम भो तरुनापन को मतिराम भनै भइँ चञ्चल आँखैं । खंजन के जुग सावक[1] ज्यों उड़ि आवत ना फरकावत पाँखैं ॥१०॥

एरे मतिमन्द चन्द धिक है अनन्द तेरो जो पै बिरहीन जरि जात तेरे ताप ते । तू तो दोषाकर[2] दूजे धरे है कलंक उर तीसरे सखान संग देखौ सिर छाप ते ॥ कहै मतिराम हाल जाहिर जहान तेरो बारुनी[3] के बासी भासी राहु के प्रताप ते । बाँधो गयो मथो गयो पियो गयो खारो भयो बापुरो समुद्र ऐसे पूत ही के पाप ते ॥ ११ ॥

५४६. मंडन कवि, जैतपुर, बुन्देलखंड के

(रसरत्नावली)

बैरी के निसान सुनि बिरचि बिरचि बेष नाहर से लपकि पुकार लागे बीर के । मंडन अनूप सिर मौर बाने बाँधे सबै लोहे के गहैया औ सहैया भारी भीर के ॥ होन लागी महा मार तुपकैं चलन लागीं तोप तरवारैं अरु रेले चले तीर के । दौरि-दौरि देखिबे को आँखैं चलीं लोगन की हाथ चले मंगद के पाइँ चले मीर के ॥ १ ॥ गरद के झुंड ढक्यो मारतण्डमण्डल लौं बाने फहराने जब ढिग आनि अरि के । तमकि तमकि तब राजे करजीले बीर बिरुझाने खरुजाने जैसे बाघ थरि के ॥ मंडन बिरुझि लीनी घोरन की बाग दीनी दौरि कै दरेरे जैसे भादौं की लहरि के । जित-तित बीजुरी से लोह लागे लहकन बरसन बान लागे जैसे बूँद झरि के ॥ २ ॥ आइ गयो दरबर औचकही हरबर अम्बर अनी के बरियार करियर के । तामसी तुरुक मान साहसी दराबखान कीधौं किरपान घमासान मचे परके ॥ मंडन सुकबि यह चाहत बधाई जब जीत के नगारे बाजे बीतत समर के । चलत हिमाचल ते

---

१ बच्चे । २ दोषों का घर और रात करनेवाला । ३ पश्चिम दिशा ।

मडसूं बजाइ तौ लौं डाक चौकी डाकिनी लै हाथ डास्यो हर के ॥३॥

यों झनकार घुरी झनकी सुचि ये सुनि कान अचाक जागे ।
उनई यों घटा सी लटैं चहुँ ओर जो मोर लखे हुलसे रसपागे ॥
लगी मुख मण्डन यों नहियाँ जु पढ़े सब सीखि सुआ बड़भागे ।
यों कछु कामिनी बोलन लागी जु ऊतर देन कबूतर लागे ॥ ४ ॥

रूप की रीझनि प्रेम पस्यो किधौं रूप की रीझनि प्रेम सों पागी ।
मंडन मैन जग्यो मनसा बस कै मनसा बस मैन के जागी ॥
लाजहि लै कुलकानि भगी किधौं लाज लिये कुलकानिहि भागी ।
नैन लगे वहि मूरति माई किधौं वह मूरति नैनन लागी ॥ ५ ॥

उतै वह नंदत री अनखाति इतै यह सौति सुहागिल घूरति ।
चौसहि बीतत बार न लागत मंडन लाजन हौं तो बिसूरति ॥
औरन को तौ मरू कै सिराति तऊ उनको यह राति न पूरति ।
प्यारे को जाड़ो सुहात है माई सु ताते कहावत सैन की मूरति॥६॥

रसकेलि दुहून सों होड़ परी कहुँ कुण्डल डोलैं कहूँक तरौना ।
मंडन अंगन अंग मिले सुनि ऐसे भये सब काम खिलौना ॥
नंदलला धरि ध्यान रहे बृषभानुलली कछु पावत गौं ना ।
चित्र लिख्यो लखि चाहि रही झपट्यो तब बाघ छुट्यो मृगछौना७

बादर के बीच धौं बिराजति है बीजुरी कि गोरो गात गोरी को गोपाल सों मिलत है । रस ही के रस मुख मुख सों मिलत कैधों सोरह कला को चन्द कौंल सों हिलत है ॥ मंडन हिये की खौरि ढरकि पसीजि किधौं देह में से न्यारो कै कै नेह पघिलत है । टूटि टूटि मोती सीसफूल ते गिरत कैधौं मेरी आली तरनि तरैयाँ उगिलत है ॥ ८ ॥

मानि सबै मनुहारि बहू मुसक्याइ उठै अँगिया न उतारै ।

---

१ बीतती है ।

मंडन डोरी के छोरत ही रिस कै मिस कै अँगुरी गहि मारै ॥
लला अपनो मन भायो करै सु चुरी खनकै जब हाथन झारै।
कोयल सी कुहकै पिहकै सिसकै सतराइ झुकै झझकारै ॥ ९ ॥
वहि द्यौस अकेली गली में गई मिलि जान न पाई कितीक अरी।
गहि बाँह लियो रस ओठन को पै न मंडन मैन अँबारि भरी ॥
ऐसे कछू झहराइ कै हाथ हरे सुर प्यारी उसास धरी।
सु लग्यो है अजौं वह मेरे हिये हिलकी सिसकी विष की सी डरी ॥१०॥
का कहि कै घर जैयतु है अरु कौन सुनै अति बीती भई।
कवि मंडन मोहन ठीक ठगी सु तौ ऐसी लिलार लिखी ती दई ॥
और भई सो भले ही भई पर एक ही बात बितीती नई।
रति हू ते गई मति हू ते गई पति हू ते गई पँति हू ते गई ॥ ११ ॥

(नयनपचासा)

दोहा—प्रेमनखासे नागरी, हृदय तुरंग बिकात।
लोचन तेरे लाहरी, ऊपर ही लै जात ॥ १ ॥
डीठि डोरि सो मन कलस, काम कुआँ में डारि।
ये नैना तुव नागरी, भरत प्रेम-रस-बारि ॥ २ ॥
खरे डरारे चरपरे, कजरारे अमनैक।
दृग अनियारे नागरी, न्यारे जनि करि नैक ॥ ३ ॥
बाँकी गबी बिसाल अति, सुन्दर भली लजोहि।
ये आँखैं लाखैं लहैं, जो मो तब सुधि होहि ॥ ४ ॥

५५० मल्ल कवि

नागर पराने सुनि समुद सकाने रन गब्बर डराने दिलजोरा छोरि बाने के। सुरपति सकाने देखि दल के पयाने अरि भभरि तुलाने नर काँपैं हबसाने के ॥ मल्ल कबि हम जाने बीररस सर-

---

१ इज़्ज़त। २ इंद्र। ३ यात्रा।

साने खींची कुलभानु कोटि किंमति बखाने के। कन्तन पुकारैं सुकुमारैं सुनि सोर जब दुन्दुभी धुकारैं भगवन्त मरदाने के ॥ १ ॥ आजु महादीनन को सूखि गो दया को सिन्धु आजु ही गरीबन को सब गांथ लूटि गो। आज द्विजराजन को सकल अकाज भयो आज महाराजन को धीरज सो छूटि गो ॥ मल्ल कहै आज सब मंगन अनाथ भये आज ही अनाथन को करम सो फूटि गो। भूप भगवन्त सुरलोक को पयान कियो आज कवितान को कलपतरु टूटिगो ॥ २ ॥

५५१. मानिकचन्द

पद

जे जन सरन गये ते तारे।
दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम बिट्ठलनाथ लला रे ॥
जितनी रबिछाया की कनिका तितने दोष हमारे।
तुम्हरे चरनप्रताप तेज ते तेते ततछन तारे ॥
माला कंठ तिलक माथे दै संख चक्र बपु धारे।
मानिकचँद प्रभु के गुन ऐसे महापतित निस्तारे ॥ १ ॥

५५२. मुनिलाल कवि

प्रभा होत मानिहू ते उज्वल अनंत रूप जंत्र मंत्र तंत्र तत्व सिद्धन समख हैं। हीरा ते बलंद सुठि सोहैं चंद मकरंद कंजरासि जोहैं चाहैं देवतन चख हैं ॥ कहै मुनिलाल ऐसो मोद भुवमंडल में जोज ओज पुष्ट चक्र अखिल अलख हैं। ऐनक ते चोखे दरपन ते अनोखे सुधा-मोखे रामचंद जू के पाँयन के नख हैं ॥ १ ॥

५५३. मानदास कवि ब्रजवासी

पद

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई। उठो तात भयो प्रात

१ पूंजी।

रजनी को तिमिर गयो प्रगटे सब ग्वालबाल मोहन कन्हाई ।। उठो मेरे आनंद कंद गगन चंद मंद मंद प्रगट्यो अकास भानु कमलन सुखदाई । संृगी सब पुरत बेनु तुम बिन ना छुटीं धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर बर राई ।। मुख ते पट दूरि कियो जसुदा को दर्स दियो अरु दधि सब माँगि लियो बिबिध रस मिठाई । जेंवत दोउ राम[1] स्याम सकल मंगल गुननिधान थार में कछु जूठ रही सो मानंदास पाई ।। १ ।।

५५४. मदनगोपाल शुक्ल फतूहाबादी
(अर्जुनविलास)

प्रबल प्रचंड सुंडादंड सों घमंडदार तेरे भुजदंड भू अखंड भार काँध्यो है । समंदार सूरमा सुसील भूप अर्जुनसे नेम धरि तब चंडीपद अवराध्यो है ।। मदन सुकबि कबिराज राजबंदन को दै दै गजबाजिबृंद तैं ही काज साध्यो है । कलि में गयो तो भोज बिक्रम बिना जो टूटि सोई अब धर्मध्वजा तैं ही फेरि बाँध्यो है।।१।।

सील औ लाज मिठाई बतानिमों तैसी दृढ़ाई स्वधर्म्म मयूषन । साधुता और पतिब्रत दोष मिताई सबै सो न काहू को दूषन ।। तैसी बिनै औ अचार छमा गुरुलोगन सेइबे को बिन दूषन ।। येई तियान को तीरथ से सुखकीरतिकारी हैं द्वादस[2] भूषन ।। २ ।।

(वैद्यरत्न)

ज्वानी चहै फेरि जो आवन तो यह जतन कराउ ।
अँवरा को रस काढ़ि कै अँवराचूर्न सनाउ ।।
अँवराचूर्न सनाउ भाउना दै बहुतेरी ।
बरनै मदनगोपाल बात जो मानै मेरी ।।
सुखै घाम में खाइ खाँड़ मधु[3] सों यह सानी ।
ऊपर पीजै दूध फेरि चाहै जो ज्वानी ।। १ ।।

---

१ बलदाऊ । २ बारह । ३ शहद ।

५५५. मदनगोपाल कवि, चरखारीवाले

चातुर के चेरे हैं कमेरे रसिकन हू के भाव हू के भूखे हैं भिखारी बड़े मान के। गुनिन के गाहक औ यार हैं सपूतन के रूप के रिझैया औ सनेही बड़े तान के॥ पंडित के पालक औ संत के सरन रहैं प्रीति करैं तासों जे कुलीन बड़ी कान के। एते पर मदन भरोसे सीता-रामजू के और सों न काम जेते लोग हैं जहान के॥ १॥

५५६. मेधा कवि

(चित्रभूषण)

दोहा—चित्रालंकृत भेद बहु, को कबि बरनै पार।
कछुक भेद गुरुपद सुमिरि, भाखत मति अनुसार॥ १॥
संबत मुनि रस बसु ससी, जेठ प्रथम सनि बार।
प्रगट चित्रभूषन भयो, कबि मेधा सिंगार॥ २॥
जे भाबिष्य ब्रतमान[1] कबि, तिन सों बिनय हमारि।
परमकृपाजुत सादरन, करिहैं याहि प्रचारि॥ ३॥
अपनी मति लघु समुझि कै, या ते संग्रह कीन।
उदाहरन सतकबिन के, राख्यौं सुमति प्रबीन॥ ४॥
सब्द अर्थ पद दोष जर, औगुन अगन बिचार।
अच्छर मोटे पातरन, नाहीं एक बिचार॥ ५॥

५५७. महबूब कवि

तौलौं कुल-रीति दीख गल नलपट्टी चट्टी अतरन भट्टी मलयाचल अमल के। कित्तन सुमन चित्त बित्तन हरत हित्त मित्तन करत रित्त चाहत अमल के॥ चित्रित चरित्र तेरी चाहन बिचित्र अति कहै महबूब दिल मिलत उछल के। रमो एक कंदरन कंदरपकंद आज अंदर बगीचन के मंदिरन चल के॥ १॥ जानै राग रागिनी

---

१ वर्तमान।

कबित्त रस दोहा छंद जप तप तेग त्याग एक सीग्र तन का ।" महबूब उरभ न देखि सकै मित्र की बिचित्र हरिभाँति मै रिझैया नुक्तन का ॥ जासे जो कबूलै सो न भूलै भूलै माफ करै साफ-दिल आकिल लिखैया हर फन का ॥ नेकी से न न्यारा रहै बदी से किनारा गहै ऐसा मिलै प्यारा तौ गुजारा चलै मन का ॥ २ ॥

आगे धेनु धारि गेरि ग्वालन कतार तामें फेरि फेरि टेरि धौरी धूमरी नगन ते । पोंछि पुचकारन अँगोछन सों पोंछि पोंछि चूमि चारु चरन चलावैं सुबचन ते ॥ कहै महबूब धरे मुरली अधर बर फूँकि दई खरज निखाद के सुरन ते । अमित अनंद भरे कंद छबि बृंदवत मंद गति आवत मुकुंद बृंदाबन ते ॥ ३ ॥

५५८. मनीराम कवि (१)

वह चितवनि वह सुंदर कपोलदुति वह दसननि छबि बिज्जु[1] की धरति है । वह ओठ-लाली वह नासिका-सकोरनि में वह हावभाव कैयो कौतुक[2] करति है ॥ कहै मनीराम छबि बरनि सकै को वह रति ते सरस मन मुनि को हरति है । वह मुसकानि जुग भौंहनि कमान दुति वह बतरानि ना बिसारी बिसरति है ॥ १ ॥

५५९, मनीराम मिश्र कन्नौजवासी (२)

(छंदछप्पनी पिंगल)

एक कवर्ग के अंत को अंक चवर्ग के द्वै मनीराम गनीजै ।
चारि टवर्ग के बीच बिना तजि जानि थकार पवर्ग न कीजै ॥
तीनि यवर्ग के छाँड़ि रकार ते और षकार हकार न कीजै ।
बर्नन कीन बिचारि कै चित्त ये मित्त कबित्त के आदि न दीजै ॥
ङ ञ झ ट ठ ढ ण थ प फ ब भ म र ल व ष ह ।

५६०. मनीराय कवि

सोने को जराव को न जानो जात हीरन को मोतिन को पन्नन

---

१ बिजली । २ तमाशे ।

को काहे को बनायो है। देव को चढ़ो है कै दिवारी को पढ़ो है कै गुनीन को गढ़ो है बिन गुनै गरे आयो है॥ कवि मनीराय एजू उर ते उतारि दीजै दीजै कर मोहिं नेक मेरे मन भायो है। छबि की छला सो इंद्रजाल की कला सो करि हा हा हरि कहौ ऐसो हार कहाँ पायो है॥ १॥

५६१. मानिक कवि कायस्थ, ज़िला सीतापुर

अँगिरात जम्हात प्रभात उठी परजंक पै प्यारी के अंग मुरे परैं।
दृग मूंदे से आलस खोले कहूँ कब हूँ तन सेदे के बुंद दुरे परैं॥
मानिक मध्य तरौनन के चख मींजै दोऊ उपमा उभरे परैं।
पाय सहाय प्रभाकर द्वै ज्यों सुधाकर सों जल जात लुरे परैं॥ १॥

५६२. महानंद बाजपेयी

(भाषा बृहच्छिवपुराण)

दोहा—बंदौं गनपतिचरनरज, निसिदिन प्रेम लगाइ।
बिघन निवारैं दुख हरैं, सुखगन करैं बनाइ॥ १॥
संकरचरनसरोजरज, बंदौं कर जुग जोरि।
सदा रहैं अनुकूल है, माँगौं यहै निहोरि॥ २॥

चौपाई

मैं बहु लखे पढ़े श्रुतिबादा। मिटेहु न मन कर सकल बिषादा॥
भ्रमत रह्यो मैं सब जग माहीं। संकरतत्त्व लह्यो कहुँ नाहीं॥

५६३. मून ब्राह्मण कवि, असोथरवाले

रोम स्याम सेत मध्य लोहित लकीर लसै मानों जुग मीन है महीन लाल जाल सा। मून सुधा-माधुरी त्यों अधर अरुनता में बिंबाफल फरहज फूल फीको फालसा॥ अली संग चली मोहिं आवत गली में मिली लीन्हे करकमल में कमल सनाल सा। सारी जरतारी की किनारी में छिपाये छबि आधो मुख देख्यो

१ डोरा। २ पसीना। ३ कुंदरू।

आधो देखिबे की लालसा ॥ १ ॥ उतै आई नाइका नवेलिन विहाय मून इतै कढे बेलिन ते स्याम यहि थाक री । जुरिगे दुहूँ के दृग लालची लजीले लोल ललित रसीले लोक-लाज को बिदा करी ॥ मुरि मुसक्याइ कै छबीली पिकबैनी नेक करत उचार मुख बोलन को बाँकरी । ताक री कुचन बीच काँकरी गोपाल मारी साँकरी गली में प्यारी हाँ करी न ना करी ॥ २ ॥ कंजबन मानि मून हंसगन आइ फिरे गंध बन भृङ्गन की भंग करि डारे तैं । पाके फल जानि सुकपुंज पछिताने आइ पाइ कै बसंत बात बृथा पात डारे तैं ॥ दूरि ते बिलोकि अरुनाई अति फूलन की आमिष अकार गीध बायस बिडारे तैं । एरे तरु सेमर के सिफति तिहारी कहा आस दिये पच्छिन निरास करि डारे तैं ॥ ३ ॥ बिम्ब में प्रवाल में न ईंगुर गुलाल में न चम्पक रसाल में न नेसुक निहारे मैं । दाड़िमप्रसून में न मून धरासून[1] में न इंद्र की बधून में न गुंजा[2] अधिकारे मैं ॥ कुसुम सुरङ्ग में न किंसुक[3] पतंग में न जावक मजीठ कंजपुंज वारि डारे मैं । राधेजू तिहारे पग अरुनसमानता को हेरि हारे कविता न आवत बिचारे मैं ॥ ४ ॥

५६४. मणिदेव कवि बनारसी

मदन सजोरी ताहि जोरि कौन रूप और रातौ दिन जोरी भूरि भीति सी घिराति है । मिस कै उठाय ताहि सुख सरसार जाय भौन पहुँचाय जाय कांति की किराति है ॥ मनिदेव भनत नबेली के सुभाव को री आय कै अकेली देखु नेक ना थिराति है । गही पी फलंग पर सुंदर पलंग पर चारि हू अलंग पर खसकी फिराति है ॥ १ ॥ याहू माहिं संकर बनाये सिद्ध मंत्र सब तिनसों भयंकर बिलात लखि दुन्द को । मोहनादि होत सब तिनसों

---

१ मंगल । २ घुंघची । ३ टेसू के फूल ।

सहम मानि दूरि करै कठिन कलेसन के कन्द को ॥ और सुनो तुलसी गोसाईं सूर आदिन की कबिता सों भाखैं मनिदेव बुध बृन्द को । मन को लगाइ सुनौ मेरी बात भाषा अति लागति है प्यारी रघुनन्द, ब्रजचन्द्र को ॥ २ ॥

५६५. मकरंद कवि

तेरे मन भावै ना मनावै कैसे मकरन्द लाल बिन दूषनै तू लाल बिन दूषनै । हँसि मन हँसो पिय रसबस करु प्यारी ल्याये हैं सु मन ते सुमन लागे सूखनै ॥ कौ लौं तू न बोलै मुख बोलै बलि जाउँ प्यारी तो ते मधुराई पाई ऊखनै पियूषनै । उन्हैं प्यास भूख नै तू तजि बैठी भूखनै है तोहिं तौ मनावैं ब्रजभूखनै तू भू खनै ॥ १ ॥ कीधौं वहि देस घन घुमड़ि न बरसत कीधौं मकरन्द नदी-नद-पथ भरि गे । कीधौं पिक चातक चतुर चक्रबाक बक कीधौं मत्त दादुर मधुर मोर मरि गे ॥ मेरे मन आवत न आली प्यारे आवत ज्यों कामकरनिकर मही ते धौं निकरि गे । कीधौं पंचसर हर फेरि कै भसम कियो कीधौं पंचसर जू के पाँचौ सर सरि गे ॥ २ ॥

५६६. मकरंद राय भाट—पुवावाँ
(हास्यरसग्रन्थ)

साध की न साध है असाध ही की सेवा करैं कपटी रसायनी को देखे हरषात हैं । मारि जानै पारो तामो बंग करैं हेमरंग दे हैं करि चौगुने गुरू की सौंह खात हैं ॥ आपने पराये सब गहने उतारि लाये रहैं मुँह बाये स्वामी सटके प्रभात हैं । लोभ चाँदी सोने घर खोने के करम कीने रोवैं बैठि कोने जब दूने करि जात हैं ॥ १ ॥

५६७. मंचित कवि

आजु निज पानिन ते पानि छुइ पाऊँ याही बेतन ते मारि गोप ग्वाल बिचलाऊँ ना । बीरन की सौंह जो अहीरन के देखत ही बीर बलबीरहू को बीर गहि लाऊँ ना ॥ मंचित भनत जो पै जोम जोरदारन

को चूर कै न हारौं फेरि मुख दिखराऊँ ना। खेलन न आऊँ खि-
लवार ना कहाऊँ जो पै लाड़िली बिजै के बिजैबाजे बजवाऊँ ना॥१॥
तुम नाम लिवावती हौ हम पै हम नाम कहौ कहा लीजिये जू।
अब नाव चलै सिगरी जल में थल में न चलै कहा कीजिये जू॥
कवि मंचित औसर जो अरुती सखती हम पै नहीं कीजिये जू।
हम तौ अपनो बर पूजती हैं सपने नहीं पी पर पूजिये जू॥२॥
आँखैं गुलाब सी खासी लसैं मुख नासिका बिंब धरा अवली को।
भारी नितंबन जंघन पीन बनो कटि छीन बनाव लली को॥
मंचित भीजो लसै उर चीर उरोजन ओप सरोज-कली को।
बाँधि कै जूरो कसे अँगिया मन पूरो करै तिय छैल छली को॥३॥

५६८. मुबारक, सैयद मुबारकअली बिलग्रामी

पानिप के पुंज सुघराई के सदन सुख सोभा के समूह और सावधान मौज के। लाजन के बोहित पुरोहित प्रमोदन के नेह के नकीब चक्रवर्ती चितचोज के॥ दया के दिवान पतिव्रत हू के परधान नैन ये मुबारक बिधान नवरोज के। सफरी के सिरताज मृगन के महाराज साहब सरोज के मुसाहब मनोज के॥१॥ दीरघ उजारे कजरारे भारे प्रेमनद कोकनद के से दल राजत भँवर से। सुघर सलोने कै मुबारक सुधा के दोने छबि के बिछौने कै अमलता के घर से॥ लाज के जहाज कैधौं मान के बिराजमान राधिका सुजान आजु तेरे दृग दरसे। चाकर चकोर भये मृग दास मोल लये खंजन खवास भये सफरी नफर से॥२॥

कान्ह के बाँकी चितौन चुभी चित काल्हि तू झाँकी री ग्वारि गवाछन॥
देखी है नोखी सी चोखी सी कोरन ओछे फिरैं उभरे चित जा छन॥
मार्‌यो सँभारि हिये में मुबारक हैं सहजै कजरारे मृगाछन॥
काजर दे री न एरी सुहागिनि आँगुरी तेरी कटैगी कटाछन॥३॥

छल करि छैल तजि गोकुल की गैल लगी कुबिजा चुरैल पगी मन बच काइ है। आप हैं सुखारी हमैं कियो है दुखारी प्रीति पाछिली बिसारी कहाँ एक कछू ना इहै॥ घनस्याम जीते ब्रज कामबामही ते है मुबारक पिरीते सो यहाँ पर न पाइ है। मरन उपाइ है न देखि है न पाइ है जु औरै कलपाइ है सो कैसे कल पाइ है॥ ४॥ कनकबरन बाल नगन लसत भाल मोतिन की माल उर सोहैं भली भाँति हैं। चन्दन चढ़ाइ चारु चंदमुखी मोहिनी सी प्रात ही अन्हाइ पगु धारे मुसकाति है॥ चूनरी बिचित्र स्याम सजि कै मुबारकजू ढाँकि नखसिख ते निपट सकुचाति है। चन्द्रमै लपेटि कै समेटि कै नखत मानो दिन को प्रनाम किये राति चली जाति है॥ ५॥

५६९. मनोहर कवि (१) राय मनोहरदास कछवाहा

दोहा—अचरज म्बहिं हिन्दू तुरुक, बादि करत संग्राम।
एक दिपति सों दिपत अति, काबा कासीधाम॥ १॥
इन्दु बदन नरगिस नयन, सम्बुल वारे बार।
उर कुंकुम कोकिलबयन, जेहि लखि लाजत मार॥२॥
सुथरे बिथुरे चीकने, घने बने घुँघुवार।
रसिकन को जंजीर से, बाला तेरे बार॥ ३॥
अकबर सों बर कौन पर, नरपति पति हिंदुवान।
करन चहत जेहि करन सों, लेन दान सनमान॥ ४॥

५७०. मनोहर (२) काशीराम भरतपुरवाले

(मनोहरशतक)

दोहा—ओछे नर के पेट में, कैसे बात समाय।
बिन सुबरन के पात्र के, बाघिनि दूध नसाय॥ १॥
भृत्य आपनो चाहिये, पलक नयन की नायँ।
तनक झोंक चख पर परे, वही पलक अड़ि जायँ॥ २॥

अरुन-बरन अँगुरीन पर, नखअवली की आब ।
जनु कनेर की कलिन में, पँखुरी लगी गुलाब ॥ ३ ॥
है पखाल मल मूत की, छनक माहिं फटि जाय ।
रे अजान यहि खाल पै, इतनो मति इतराय ॥ ४ ॥
केलि करी ससिमुखिन सँग, कस्यो न हरि सों मेल ।
मेलभेल अब सुमन के, चढ्यो काल की रेल ॥५॥

कबित्त । पान हैं कहत तो सों पूरी करु आस मेरी मो मन कचौंरी धरैं धीर न धरायेते । तू तो है पकौरी तो सों बड़ी मोखताई भई पायो है कछू को सार प्रीतम पराये ते ॥ कैसे रबड़ी है खोआ मुकर न मनोहर मांहिं नाहीं गौंदी सी का होत घबराये ते । कहत समोसे खजला के सब बराबरी गुपचुप रहो कहा बातन बनाये ते ॥ १ ॥

५७१. मातादीन शुक्ल अजगरावाले

बालबदी करै बादि सदा पितु मातु तऊ भरैं गोदन माहीं ।
कूर कसूर करै पसु भूरि तजै तऊ पालक पालिबो नाहीं ॥
हे रघुनाथ तिहारे ही हाथ अनाथ हौं दीन कहौं केहि पाहीं ।
मैं जड़ताबस तोहिं तज्यो ताजि मोहिं बराबरि होहु वृथाहीं ॥ १ ॥
पल एक अनेकन कल्प से जात बिना हरि सों नहिं आवत हैं ।
दुख दीन मलीन हितू न लखैं तऊ दीनदयाल कहावत हैं ॥
कुबिजा कहँ भोग बियोग हमैं लिखि ता पर जोग पठावत हैं ।
बेगुनाह के नाहक काह कही जो जरे पर लोन लगावत हैं ॥ २ ॥

५७२. मानिकदास कवि मथुरावासी

(मानिकबोध)

जमुनातट केलि करैं बिहरैं सँग बाल गोपाल बने बल भैया ।
गावत हैं कबौं बंसी बजावत धावत हैं कबहूँ सँग गैया ॥
कोकिल मोर की नाईं वे बोलत कूजत हैं कपि मिर्ग की नैया ।
मानिक के मन माहिं बसो अस नंद को नंद जसोदा को छैया ॥ १ ॥

५७३. मुरारिदास कवि

पद

सुंदरलाल गोबर्द्धनधारी कहँ तुम रैनि बसे मेरे लाल।
आलस नयन बयन बलि बोलत छुटे बंद पग डगमग चाल॥
साँरग अधर रुचिर बपु नखछत कुच प्रसंग उर बिलुलित माल।
करि रथहीन मीनपति जीत्यो चढ़ी धनुष मानो मोह बिसाल॥
नहिं सतभाय कहत पीतम सों फिरत हो पातपात अरु डाल।
दास मुरारि प्रीति औरन सों देखत प्रकट तुम्हारे हाल॥ १॥

५७४. मन्य कवि

गई साँझ समै की बदी बदि कै बड़ी बेर भई निसा जान लगी।
कबि मन्यजू जानी दगैलन छैलन छैल की छाती निदान लगी॥
अब कौन को कीजै भरोसो भटू निज बारियै खेती ये खान लगी।
अति सूधे बुलाइबे की बतियाँ नहिं जानियै का धौं बतान लगी॥१॥

५७५. मननिधि कवि

लसत सपानि तीखे ढारे खरसान महा मनमथबान को गुमान गरियत है। भारे अनियारे देखु तरल तरारे ये सुलच्छ नील तारे मीन हीन भरियत है॥ मृग बन-लीन जोति मोतिन की छीन ऐसे जलज नबीन जलधाम धरियत है। मननिधि आजु की अजूबी लखि नैनन में खूबी खंजरीटन की खाम करियत है॥ १॥

५७६. मणिकंठ कवि

अमल अनंग के अनंद की उदित भूमि जीति पिय बाजी दगाबाजी सी पसारी है। कनक के पात से उदर में उदित दुति त्रिबली तिहारी मैं निहारी मनिहारी है॥ रूप गुन चातुरी सों सुर-नर-नागन को जीते मनिकंठ बिधि सोहै रेख सारी है। सौति-मुख उतरै को पिय-प्रेम चढ़िबे को कुंदन की प्यारी पैरकारी सी सँवारी है॥ १॥

५७७. मोती लाल कवि

एकै आनि नीरज के दल अँखियान तारे देखत निहारे पै परै न पावैं पलकैं। एकै आनि दाड़िम दसन दुति मान एकै श्रीफल उरोजन मिलावै कौल-कलकैं॥ मोतीलाल मूँदे भेस कुच भुजमूल तऊ दारिये अनोखी छिगुनी की छबि छलकैं। कहाँ ते हौं आई इहि ओर भूलि माई मोहिं ब्रज की लुगाई लोग देखि देखि ललकैं॥१॥

५७८. मुरली कवि

अरुनाई एँड़िन की रबि-छबि छाजत है चारु छबि चंद-आभा नखन करे रहैं। मंगल महावर गुराई बुध राजत है कनक-बरन गुरु[1]-बनक धरे रहैं॥ सुक्र सम जोति सनि राहु केतु गोदना है मुरली सकल सोभा सौरभ भरे रहैं। नवौ ग्रह भाइन ते सेवक सुभाइन ते राधा ठकुराइन के पाँइन परे रहैं॥ १ ॥

५७९. मोतीराम कवि

पीउ पीउ करत मिलैं जु आजु मोहिं पीउ सोने चोंच चातक मढ़ाऊँ अति आदरन। कठिन कलापिन[2]के कंठन कटाइ डारौं देत दुख दादुर चिराइ डारौं दादरन॥ मोतीराम झिल्लीगन मंदिर मुँदाइ डारौं बधिक बुलाइ बाँधौं बक की बिरादरन। बिरह की ज्वालन सों जिरह जराइ डारौं साँसन उड़ाऊँ बैरी बेदरद बादरन॥ १ ॥

५८०. मनसुख कवि

सतोगुन मूरति के को गुन बखानि सकै चरन प्रताप परसत ही सिला[3] तरी। गनिका पथारी भृगु लात उर धारी नहीं भीलनी बिचारी निरवारी बिपदा खरी॥ अधम उधारे प्रभु अगन बिचारे मनसुख पचि हारे मुनि केती करता करी। दूध पी कै माइ के जु काहू पूत ना करी सु बिष पी कै नन्दजू के पूत पूतना करी॥ १॥

---

१ बृहस्पति। २ मोर। ३ अहल्या।

५८१. मिश्र कवि

ललना मुख इन्दु ते दूनो लसै अरविन्द बसै चखबार[1] सी लै ।
मुसकानि मनोहर जोन्ह महा कहि मिश्र जुबान सुधार सी लै ॥
तन ओप करै दुति चम्पक लोप सची सकुचै मति पारसी लै ।
कहि आवै न रूप सिपारसी याते दिखावै लला कर आरसी लै ॥ १ ॥

५८२. मुरलीधर कवि

प्रफुलित भये सब अवधपुरी के बासी प्रफुलित सरजू की सोभा सरसाई है । नाचैं नर नारी अति आनँद अपार भये घूमत निसान मुर्लीधर सुखदाई है ॥ देवता बिमानन ते फूलन की वृष्टि करैं बन्दी सूत मागध अनेक निधि पाई है । चलि क्यों न देखै आली राम को जनम भयो दसरथ-द्वार बाजै आनँद बधाई है ॥ १ ॥

५८३. मोहन कवि प्राचीन

जाप जप्यो नहिं मंत्र थप्यो नहिं बेद पुरान सुन्यो न बखानो ।
बीति गये दिन योंहीं सबै रस मोहन मोहन के न बिकानो ॥
चेरो कहावत तेरो सदा पुनि और न कोऊ मैं दूसरो जानो ।
कै तौ गरीब को लेहु निवाजि कै छाँड़ौ गरीबनिवाज को बानो १॥

५८४. मुकुन्द कवि प्राचीन

चौका की चमक औ झमक झीने बस्त्रन की देह की दमक बीर काको घर खोइबो । कहत मुकुन्द गयो तात को निरास भयो बात को बिसन ठयो गात को बिलोइबो ॥ भौंहैं मटकाय लटकाय लट अब हीं ते रुचत कुचन को है बार बार जोइबो । तब ही धौं कैसो ह्वै है सजनी री रजनी में एक दिन साँवरे के कंठ लागि सोइबो ॥१॥

५८५. मलूकदास कवि

चंद कलंकी कहा करि है सरि कोकिल कीर[2] कपोत लजाने ।
बिद्रुम हेम कैरी अहि केहरि[4] कंजकली औ अनार के दाने ॥

---

१ सरवर=बराबरी । २ तोता । ३ हाथी । ४ सिंह ।

मीनसरासन धूम की रेख मलूक सरोवर कम्बु भुलाने।
ऐसी भई नहीं है भुव में नहीं होइगी नारि कहा कवि जाने॥१॥
अलंकार छन्द काव्य नाटक को है अगार[1] राग रागिनी भँडार बानी को निवास है। कोककारिकान खाता पंकज को कोस मानों निकसत जामें भाँति भाँति को सुबास है॥ फूल से झरत बानी बोलत मलूक प्यारी हँसनि में होत दामिनी को परकास है। ऐसो मुख काको पटतर[3] दीजै प्यारे लाल जामें कोटि कोटि हाव-भाव को बिलास है॥ २॥ कैधौं राहु-डरते धरी है चन्द ढाल बिबि कैधौं राहु घेरि रह्यो चन्द्रमा को आइ कै। कैधौं तमभूमि में मलूक प्रेम की कसौटी कैधौं बिधि पढ़िबे की पाटी गढ़ी चाइ कै॥ कैधौं आदिरस[4] की बनाई उभै[5] क्यारी भली कैधौं मेघ-घटा रही चन्द्रमा पै छाइ कै। सुंदर सुहावनी है चित्त की चुरावनी है बटपारी पाटी प्यारी बैठी है बनाइ कै॥ ३॥

५८६. मीररुस्तम कवि

जहाँ अर्थ निज धर्म छूटै सकल भर्म सुभ कर्म स्वाद स्वजय जय प्रकासी। सुगम की अगम है अगम की कथा नित अगम सुरसरी पान दोषं बिनासी॥ पढ़ै पंडितौ बेदबिद्या सदाही परमहंस दंडी अखंडी सन्यासी। कहै मीररुस्तम जहाँ मीत नायम सु चलु चित्त चलु चित्त चलु चित्त कासी॥ १॥

५८७. महम्मद कवि

मन मुलुक खलक तहसील करन तन परगन सुख अखत्यारी।
बनी आदम आदि कुटुम सँग लै चल तेरे फीलसवारी॥
हौदा हूल महम्मद कुंभ महाक्रूर जरत जँजीर बहारी।
तेरी जरब पियारी वोह जारी दिलवर खूबी हुसननगर फौजदारी॥१॥

---

१ घर। २ भीतरी हिस्सा। ३ उपमा। ४ शृंगार-रस। ५ दोनों।

५८८. मीरीमाधव कवि

बाँसुरी बिसद बंसीबट को बसेरो तहाँ त्रिबिधै[1] बयारि बन बिसद बहति है। बरन बिरह मीरीमाधव ये बिधिबर बेष बूझि मानों बारि बिरसु कहति है॥ बारिजबदन बिरचो है बेना बानी बाँकी बिपिन बसन सुनि बिरचि रहति है। बारक कहति बिलखौंहीं हौं ही बार भई बार बार मोसों चलु बावरी कहति है॥ १॥

५८९. मदनकिशोर कवि

औचक ही आइ सुखदैन मन मेरो लैन मैनभरी नैनन की सैनन सरसि गो। सुधा के से सीकरै[2] सुनाय मृदु बैनन सों जानिये बसीकर के बैनन बरसि गो॥ तन को मिलाय करि तनको मिलाय करि तन को मिलाय करि तनको तरसि गो। अंगन अरसि गो री अंगन परसि गो री मदनकिसोर ऐसे दरसै दरसि गो॥ १॥

आव अब मेरे मनभावन बिदेसी पीव प्रानप्यारे प्रानन ते प्रानन परसि जा। चातक लौं[3] बासर बिताय बिसवास तेरे बारिद सुधा के द्वैक बुंदन बरसि जा॥ ससिकै सरीर भयो कामरि करीर की सी नीरनिधि नेह नीर सर से सरसि जा। बरसैं भई हैं बिन देखे तरसै है तन मदनकिसोर नेक दरसै दरसि जा॥ २॥

५९०. मखजात कवि, वाजपेयी जाल्पाप्रसाद

उठे घनजाल देखि दामिनिकलाप देखि देवराजचाप देखि त्रास अति पावतो। बुंदबृंद-पात देखि सूर्य अप्रकास देखि दिन हू को अंत देखि चैन हू न पावतो॥ नभ को बितार देखि बायु सुखचार देखि अति अंधकार देखि मोमैं मन लावतो। होतो उहाँ पावस तौ एरी सखी बात सुनौ बीस बिसे आजु ही हमारो कन्त आवतो॥ १॥

---

१ तीन तरह की– शीतल, मंद, सुगन्ध। २ कण। ३ तरह।

५६१. महाराज कवि

बात चली चलिबे की जहाँ फिरि बात सुहानी न गात सुहानो।
भूषन साजि सकै कहि को महराज गयो छुटि लाज को बानो॥
यों कर मींजति है बनिता सुनि पीतम को परभात पयानो।
आपने जीवन को लखि अंत सु आयु की रेख मिटावति मानो॥१॥

५६२. मुरलीधर (२)

कोऊ न आयो उहाँ ते सखी री जहाँ मुरलीधर प्रानपियारे।
याही अँदेसे में बैठी हुती उहि देस के धावन[1] पौरि[2] पुकारे॥
पाती दई धरि छाती लई दरकी अँगिया उर आनँद भारे॥
पूछन को पिय की कुसलात मनो हिय-द्वार किवाँर उघारे॥१॥

५६३. मनोहर कवि (३)

दीनदयाल कृपानिधि सागर जानत हौ सब ही तुम जी की।
प्रीति पुनीत हिये निबहै जिन देह दई कबहूँ बपु ती की॥
ऊधो उसास न पावति लै न दुरावति भाउ सदा सब ही की।
चारो नहीं है बिचारो मनोहर कीजिये सोई लगै जोऽब नीकी॥१॥

५६४. मदनगोपाल कवि

भारी हारभार उरभार त्यों उरोजभार जोबन मरोर जोर दाबे दलियत है। परँग-परग पर यहै जिय होत संक टूटि न परत कौन पुन्य फलियत है॥ कोऊ कहै खरी खीन कोऊ कहै कटि ही न मदन-गोपाल ऐसे चित्त धरियत है। काहू की न मानौ साँक कहत ही आई नाक ऐसी खीनी लाँक पै उलाँक चलियत है॥१॥

५६५. मोतीलाल कवि अघैलावाले

(भाषागणेशपुराण)

दोहा—जेते जन्म तुम्हार भे, देह तजे करि भोग।
तेते सिर की माल किय, प्रिया तिहारे सोग॥१॥

---

१ दूत। २ द्वार पर। ३ बश। ४ पग-पग।

पाछे सिव धावत फिरैं, किये क्रोध मुखमूल ।
भावी बस नृप कठिन है, छूट न संभु त्रिसूल ॥ २ ॥

५६६. मीरा बाई चित्तौर की रानी

दोहा—रसन कटै आनहि रटै, फूटैं आन लखि नैन ।
स्रवन फटैं ते सुने बिन, श्रीराधा जस बैन ॥ २ ॥

कवित्त । कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोऊ कहौ अंकिनी कलंकिनी कुनारी हौं । कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब कीन मैं अलोक लोक लोकन ते न्यारी हौं ॥ तन जाहु मन जाहु देव गुरुजन जाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं । बृंदावनवारी गिरधारी के मुकुट पर पीतपटवारे की मैं मूरति पै वारी हौं ॥ १ ॥

५६७. महेशदत्त ब्राह्मण, धनौली ज़िला बाराबंकी
(काव्यसंग्रह)

दोहा—गजमुख सुखकर दुखहरन, तोहिं कहौं सिर नाय ।
कीजै जस लीजै बिनय, दीजै ग्रन्थ बनाय ॥ १ ॥
जगदीस्वर को धन्य जिन, उपजायो संसार ।
छिति जल नभ पावक पवन, करि इनको बिस्तार ॥ २ ॥
नृपहि दास, दासहि नृपति, पबि तृन, तृनहि पषान ।
जलधि अल्प सर, लघु सरहि, उदधि करै छनमान ॥ ३ ॥

५६८. मनभावन ब्राह्मण मुंडियावाले
(शृंगाररत्नावली)

फूली मंजु मालतीन पै मलिन्द बृन्द बर सुरभि लपेट्यो मंद मधुर बहै समीर[३] । ललित लवंगन की बल्लरी तमाल जाल लतिका कदंबन की देखे दूरि होत पीर ॥ बौंड़ी गुंज पुंज अति झौंड़ी झुकि झाँक्यो बन केकीकुल कलित कपोत पिक बोलैं कीर । भरे प्रेम स्यामा स्याम गरेभुज धरे-दोऊ हरे-हरे[२] डोलतहैं तरनितनूजा[३]-तीर ॥ १ ॥

---

१ हवा । २ धीरे-धीरे । ३ यमुना ।

५६६. मनियारसिंह कवि क्षत्रिय काशीनिवासी
(हनुमतछब्बीसी)

अभय कठोर बानि सुनि लछिमनजू की मारिबे को चाही जो सुधारी खल तरवारि। यार हनुमंत तेहि गरजि हहास करि डपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि॥ पुच्छन लपेटि फेरि दंतन दरदराइ नखन बकोटि चौंथि देत महि डारि डारि। उदर बिदारि मारि लुत्थन लोटारि बीर जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि॥ १॥

सोरठा—छत्रीबर मनियार, कासीवासी जानिये।
जापै पवनकुमार, दयावंत सुखप्रद सदा॥ १॥
मृगपद मंजुल पास, सरजू तट सुरसरि निकट।
बलिया नगर निवास, भयो कछुक दिन ते सुमति॥ २॥

(भाषासौंदर्य्यलहरी)

तेरे पद पंकज पराग राजै राजेस्वरी बेदबंदनीय बिरुदावली बढ़ी रहै। जाकी किनुकाई पाइ धाता ने धरित्री कियो जापै लोक लोकन की रचना कढ़ी रहै॥ मनियार जाहि बिष्णु सबै सर्ब पोषत सों सेस ह्वै कै सदा सीस सहस मढ़ी रहै। सोई सुरासुर के सिरोमनि सदासिव के भसम के रूप ह्वै सरीर पै चढ़ी रहै॥ १॥

६००. राम कवि (१)
(रससागर)

दोहा—चित्रित दस अवतार सखि, तामें सतर्यो कौन।
बंक चितै कै जानकी, मुसुकानी गहि मौन॥ १॥
राधा प्यारी फागु में, गहि गहि कान्हहि लेति।
दियो न मैं यह जानि कै, फिरि फिरि काजर देति॥ २॥
अन्तरिच्छ गच्छत सुपथ, है सपच्छ बुधचित्त।
अच्छर प्रभु के ध्यान को, इच्छत कबिता बित्त॥ ३॥

कवित्त। चरचत चाँदनी चखन चैन चुगो परै चौंधा सो लग्यो है

चारों ओर चित चेत ना। गुंजत मधुप बृन्द कुंजन में ठौर ठौर सोर सुनि सुनि रह्यो परत निकेत[1] ना॥ राम सुने कूकन करेजो कसकत आली कोकिल को कोऊ मुख मूँदि अब देत ना। अन्त करे डारत बसन्तहि बनाय हाय कन्तहि बिदेस ते बुलाय कोऊ लेत ना॥ १॥ दंग करि दंगल उदंगल उदंग करि मंगल कै मंगल अमंगल दबाइ हौं। धीर निधि मण्डि धूरि धारानि घमण्डि घन-मण्डलै घमण्डि घन-नाद[2]हि बहाइ हौं॥ राम कबि कहै मैं अकेला आजु हेला करि देखत सुहेला लंक ढेला लौं बहाइ हौं। महामद अन्ध दसकन्ध के उतंग उतकाटि उत्तमंग[3] हार हर को बढ़ाइ हौं॥ २॥ दीरघ दँतारे भारे अंजन अचल कारे गाढ़े गढ़ कोट पट तोरत पबिन के। चौंपवन्त घन से सिंगारे बारि बरसत मुंडन उदन्त रथ रोंकन रबिन के॥ कहै रामबकस सपूत सिरमौर राना ऐसे राज देत महामन्दर छबिन के। बारे मघ-वानवारे महामयदानवारे दानवारे दानवारे द्वारे में कबिन के॥ ३॥

६०१. रामसिंह कवि

धावत प्रबल दल हिम्मति बहादुर को संकि सत्रुसाउज से नदी नद छूटि जात। सबद नगारन के भारी गजभारन के मारे खुर-थारन के फनी-फन फूटि जात॥ झँपिजात तरनि धरनि-कोन कम्पिजात दिग्गज धनेस रामसिंह मन हूटि जात। कूटि जात पब्बय सघन बन टूटिजात छूटि जात गढ़ मठ बैरिन के लूटिजात॥ १॥
भूलि न दान करै दमरी रन में न कहूँ किरवान जगाइस।
पोतो गनाइ धरै घर में करै झूठी सो पंचन में फुरमाइस॥
बातें बनाइ कै नोनी नई जिन जाचक को जियरा भरमाइस।
राम कहै न रहै चिर चौकस चीकने ठाकुर की ठकुराइस॥ २॥

६०२. रामजी कवि (१)

वारि जात बारिजात[5] दोऊ पारिजात देखि प्रबल प्रताप की

---

१ घर। २ मेघनाद। ३ सिर। ४ धनुषसमेत। ५ कमल।

कुमाच कुँभिलाती हैं। आब ना दिखात आफ़ताब सो भुलात देखि गालिब गुलाब को गरूर गरकाती हैं ॥ रामजी सुकबि जाहि देखत प्रकास होत पाप की प्रनाली पास पास है बिलाती हैं। राधा ठकुराइन के पाँइन के तीर कबि-उक्ति मड़राती खिसियाती फिरि जाती हैं ॥ १ ॥

६०३. रामदास कवि

स्याम घन आये आली स्याम परदेस छाये स्यामकण्ठ सत्रु आगि अंग में बढ़ै लगी। स्यामकण्ठ-बोल सुनि स्यामकण्ठ सौंरि आवै कोकिला हू कूकि कूकि प्रानन कढ़ै लगी ॥ झिल्ली औ मँडूक कूक सुनि हिये होत हूक रामदास तात गुननिधि सों चढ़ै लगी। रैनि अँधियारी होन लागी द्रुम बाढ़ी दसकन्धबन्धु-प्यारीऊ पयानो सो पढ़ै लगी ॥ १ ॥

६०४. राम कवि, रामरत्न गुजराती ब्राह्मण, फ़र्रुखाबादी

(बरवै नायिकाभेद)

बरवै—पात पात करि ढूँढ़्यों, सब बन बीनि।
घटहि हुते मो बालम, पर्‌यो न चीनि ॥
बालम सुरति बिसरिगै, कहत सँदेस।
एकहु पथिक न बहुरा, कस वह देस ॥
बालम की सुधि आवत, यह गति मोरि।
निकसि निकसि जिय पैसत, ज्यों चकडोरि॥
पात पात करि लूटिसि, बिपिन समाज।
राजनीति यह कासि कासि, कस ऋतुराज ॥

६०५. रामसहाय कवि कायस्थ, बनारसी

(वृत्ततरंगिणी)

घाँघरो घूमघुमेरो लसै तन चूनरी रंग कुसुंभ के गाढ़े।

---

१ मोर। २ रावण के भाई विभीषणकी स्त्री सरमा=अर्थात् शर्म।

दूलरी तीलरी चौलरी कंठ उरोजन कंचुकी मोल से बाढ़े ॥
रामसहाय बिलोकत ही घनस्याम निकुंज के बीच में ठाढ़े ।
लाज-भरी अँखियाँ बिहँसीं मिलि चौबिसैमासको घूँघुट काढ़े ॥ १ ॥

६०६. रामप्रसाद बंदीजन बिलग्रामी, रसाल कवि के पिता

घेरि लियो बिरधापन आनि कै पाँव चलाये चलैं न हमारे ।
आनन सों स्वर सुद्ध कढ़ै नहिं कानन बात सुनौं न पुकारे ॥
कंपत हैं सब अंग दयानिधि नैन भये दोउ नीर पनारे ।
दै अपनी सु दसा पठयो हम गोकुलचन्द को पास तिहारे ॥ १ ॥

६०७. रामदीन बंदीजन अलीगंजवाले

कालि ही सहेलिन में जात हुती जमुना को इत ही ते कान्ह कछु तान अनुराग्यो है । सुनि कै स्रवन लखि नैनन सरूप वाको चपल चितौनि मानो मैन-सर लाग्यो है ॥ भावत न भीर कोउ जाइ नहिं तीर कछु सुधि ना सरीर केहू कियो मंत्र जाग्यो है । भनै कबि रामदीन मन में बिचरि देखो भूत नाहिं लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ॥ १ ॥

६०८. रामदीन त्रिपाठी, टिकमापुर

दोहा—जो बाँधी छत्रसालजू, हृदय माहिं जगतेस ।
परिपाटी छूटै नहीं, महाराज रतनेस ॥ १ ॥

६०९. रामलाल कवि

प्रथम[2] पचीसहू के बैर को निवारति हौं छठये अठारा और पन्द्रह चढ़ाइ कै । चौबिस बतीस सताईस त्यों सतावत हैं ताते छिति-सुत सो उठत अकुलाइ कै ॥ भनै रामलाल प्यारी प्यारे को सँदेसो लिखि प्यारे मुख बैन कह्यो पथिक बुझाइ कै । जीवत जो चाहैं कान्ह तुर्त मोहिं मिलैं आनि ना तो नाक[3] जाती हौं भुवैन-ऋतु खाइ कै ॥ १ ॥

---

१ दुशाला । २ यह एक कूट कवित्त है । ३ स्वर्ग । ४ विष ।

६१०. रामनाथ प्रधान कवि ब्राह्मण अवधवासी

(रामकलेवा इत्यादि)

जगबंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदन को बाजी[1]।
ताको गुन छबि कहँ लगि बरनौं जोहि[2] होत मन राजी ॥
भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन-हयँ[3] लखि लाजैं।
चोटिन तनियाँ गुथीं सुमनियाँ पग पैजनियाँ बाजैं ॥ १ ॥

६११. रामसिंह देव क्षत्रिय खँडासा

सोहत मुकुट सीस कुंडल स्रवन सोहैं मुरली अधर धुनि मोहै त्रिभुवन को। लोचन रसाल बंक भृकुटी बिसाल सोहै सोहै बनमाल गरे हरे लेत मन को ॥ रूप मनमोहन न चित ते बिसारौं वारौं सुंदर बदन पर कोटि मदनन को। जगतनिवास कीजै सुमति प्रकास मेरे उर में हुलास है विलास-बरनन को ॥ १ ॥

६१२. रघुराइ कवि

(यमुनाशतक)

रबि की कुमारी जाके पीतम मुरारी सो तो इंदिराँदि[4] नारिन में सरदार नारि है। जोई उर धारि लेहै ताहि निसतारि देहै ध्रुव को सँभारि तैसे तोहूँ पार पारि है ॥ कहै रघुराइ ताहि गाइ चितु लाइ नीके जाको बारि पापन को बारि बारि डारि है। जमुना बिसारि है तौ जमु ना बिसारि है जो जमुना सँभारि है तौ जमु ना सँभारि है ॥ १ ॥

६१३. रसराज कवि

(नखशिख)

कैधौं ससि-मंदिर पै स्याम-घन-कलसा है कैधौं देह दामिनि पै तिमिर समैठो है। गुनन को गूढ़ो कैधौं सोभा को समूह छूटो कैधौं मखतूल सम राजत बिजैठो है ॥ काजर को धूम कैधौं लसत मसाल रसराज को सिंगार कैधौं प्रानपिय पैठो है। प्यारी सीस

---

१ घोड़ा। २ देखकर। ३ सूर्य के घोड़े। ४ लक्ष्मी आदि।

जूरो ऐसी सोभा देत रूरो कैधौं मानों हेम-गिरि पै बियाल[1] पैठि बैठो है ॥ १ ॥

६१४. रामनारायण कायस्थ

उन्है जो कहै हैं बैन रसना ते कहा भयो रस नाहिं जामें दोष वामें कहा दीजिये । मति में न आये मति नाम ही प्रतच्छ वाके मैन जाको कहत भरोसो कौन कीजिये ॥ नय नाहिं नैनन में प्रेम उपजावै कौन रामनारायन यह साँची कै पतीजिये[2] । झारि झिझकारि प्यारे काहे को कहाये कर मोहन रिसाइ हाइ बैठी हाथ मींजिये ॥ १ ॥

६१५. ऋषिजू कवि

दरवाजे न जैये लजैये सबै बरिआई[3] कलंक लगाइबो है ।
सुनि कै क्यहि भाँति सों धीर धरैं मृदु बाँसुरी तान को गाइबो है ॥
इहि बाँस की कौन कहै ऋषिजू सु पतिव्रत पूरो छुड़ाइबो है ।
सुनु री सजनी ब्रज को बसिबो तरवार की धार को धाइबो है ॥ १ ॥

६१६. रामकृष्ण चौबे कालिंजरवासी

(विनयपचीसी)

द्रुपदसुता को गहि ल्यायो है सभा के बीच नीच यों दुसासन कुमति मन में भरी । देखे भूप भीषम करन द्रोन मौन गहि खैंचत बसन उर धीर काहू ना धरी ॥ दीनन के नाथ तुम ऋषिका के नाथ नाथ अंबर बढ़ायो है पुकारी जब हे हरी । नंद के दुलारे रामकृष्ण जग तारे सुनो पीतपटवारे देर मेरी बार क्यों करी ॥ १ ॥

६१७. रघुनाथ पण्डित शिवदीन रसूलाबादी

(भाषा-महिम्न)

वसुधा बलंद को बनायो रथ बैठिबे को जंता चारि बंद्त चरन रबि चंद है । धनुष नगेन्द्र कीन्हो पीनो चक्र बान कीन्हो

---

१ बियाल=सर्प । २ मानिए । ३ ज़बरदस्ती ।

बिनही अडम्ब सम ख्यात हू समंद है ॥ तंत्र तूल अनल पतंग मिलि होत जैसे कोप की किरन जैसे त्रिपुरनिकंद[1] है। नाहीं परतंत्र है सुतंत्र रघुनाथ प्रभु संग पाल दावानल करत अनंद है॥१॥

६१८. रामसखे कवि

(नृत्य-राघव-मिलन नाटक)

सोरहौ सिंगारवारो नील मेघ हूँ ते कारो आनत प्रमोदबन सजनी यह को है। चंदन सुगंध कान फूल तेल जुलफन में अंजन लगाये नैन सैनन करि जोहै॥ भूषन बसन सन मोती मनि मानिक धनुष बान तरकस धारे अति सोहै। पाँयन पनहियाँ लाल सोहै जनु कामजाल रामसखे वाको रूप सबको मन मोहै॥१॥

६१९. ऋषिराम मिश्र पट्टीवाले

(वंशीकल्पलता)

दोहा—उभय घरी दिन अंत में, गौरी लई अलाप।
मोहि गई ब्रजनायिका, यह बंसी परताप ॥ १ ॥

बाँसुरी अलापी जाय बन में बिहारी लाल ईमन कल्यान सूर फाखता सुहायो री। भनै ऋषिराम तहाँ काफी औ भँभौटी राग मारू औ केदारा सुभ सोरठ सुनायो री॥ देस औ बिलावल बिहाग बनकुंजन में भौंर के तरंगन में भैरौं ठहरायो री। साधि परभाती जड़ जानी राति जाती काहू बंसीबट बंसी आपु भैरवी बजायो री॥ १॥

दोहा—नवल किसोरी राधिका, नवल छैल ब्रजचंद।
बंसीबट बंसी धरी, अधरन पर गोबिंद ॥ १ ॥

कान्ह की बाँसुरी ऐसी बजी मन मेरो हरो सुधि ना रही प्रान की। प्रान की कौन गुमान करै अनुमान बिचारि कियो सुरतान की॥ तान की तेग लगी जिय में हिय में अति सोच करै बृषभान की। भान की भौन को भूली फिरै जब ते परी कान में बाँसुरी कान की॥१॥

---

१ त्रिपुर को जलानेवाले।

६२०. ऋषिनाथ कवि

ल्याई सखी नवला को भुराइ धरै डग दारन लोकै रटी ज्यों।
देखत ही मनमोहन को भई पानिप[1] में गई बूड़ि घटी ज्यों॥
प्यारे भरी अँकवारि पसारि बिहारि को ज्यों ऋषिनाथ ठटी ज्यों।
यों निकसी कर-कुंडल[2] ते नटकुंडली ते कढ़ि जात नटी ज्यों॥१॥

बन उपवन निरभर[3] सर[4] सोभासने अंबर[5] अवनि कल बल बरसावनी। हंसजलरंबित खचित थल बन बनी तारापति सरिस जुन्हाई सुखदावनी॥ ऋषिनाथ मालती मुकुंद कुंद कुसुमित बस पारिजात पारिजातावलि[6] पावनी। मन अरुझावनी रसिक रास रसरंग भावनी सरदरैनि सरद सुहावनी॥२॥

६२१. रविनाथ कवि

बूड़त वारि में आगि दवारि उबारि लियो प्रहलाद भयाहर।
वै रविनाथ सनाथ कियो निज सेवक जानि भे खम्भ से बाहर॥
रूप धस्यो नरकेहरि को हरनाकुस मारि गये जब ठाहर।
आनन देखि डरी कमला हँसि बेनी गह्यो मृगनैनी की नाहर॥१॥

६२२. रविदत्त कवि

रूठै क्यों न जन जाके मन में विकार बसै रूठै जातिपाँति और रूठै दुखदाइये। रूठै राव राना सबै जाना वही ठौर ही में रूठै जो परोसी ताहि मन में न ल्याइये॥ रूठै परिवार यार सारा संसार औ कबिंद मूढ पंडित रबिदत्त ना सकाइये। एते सब रूठैं आइ चूमैंगे अँगूठो मेरो एहो रघुनाथ एक तू न रूठो चाहिये॥१॥

६२३. रतनेश कवि

मंजरिया[7] लघु पाली अली तिहि लेन की मोहिं परी टक है।

---

१ पानी। २ गोद में। ३ झरने। ४ सरोवर। ५ आकाश। ६ कल्पवृक्षों की कतार। ७ बिलैया।

नभ मंदिर चित्त को देखत ही लखि स्वान पस्यो तहाँ औचक है ॥
झझकी रतनेस भई भय कंप चढ़ी रुचि रोम भई सक है ।
भुजमूल उरोज कपोलन दै नख भाजि गई न गई धक है ॥ १ ॥

प्रथम समागम ते कंपत सरोजमुखी दुखी ह्वै रहत अरु प्रीति न लहति है । दिनन की थोरी अरु बातन में अति भोरी नीवी कसि बाँधे डोरी छोरी ना चहति है ॥ कहि रतनेस दिन बूड़े मन बूड़ि आयो सासु को बोलाय दौरि पाँयन गहति है । जानि घर माहीं पिय आय गही बाहीं हम नाहीं हम नाहीं परछाहीं सों कहति है ॥ २ ॥

६२४. रत्नकुँवरि

(प्रेमरत्न)

सोरठा—अबिगत आनँदकन्द, परमपुरुष परमातमा ।
सुमिरि सु परमानन्द, गावत कछु हरि बिमल जस॥ १ ॥
अगम उदधि मधि जाहिं, पंगु[2] तरहिं बिनु जिमि तरनि[3] ।
तैसिय रुचि मन माहिं, अमित कान्ह-जस-गान की॥ २ ॥

६२५. रसनायक, तालिबअली बिलग्रामी

तट की न घट भरैं मग की न पग धरैं घर की न कछु करैं बैठी भरैं साँसु री । एकै सुनि लोटि गईं एकै लोट-पोट भईं एकन के दृग ते निकसि आये आँसु री ॥ कहै रसनायक सो ब्रजबनितान बधि बधिक कहाय हाय भयो कुल हाँसु री । करिये उपाय बाँस डारिये कटाय नाहीं उपजै गो बाँस नाहीं बाजै फेरि बाँसुरी ॥ १ ॥

६२६. रावराना कवि, चरखारीवाले भाट

सोनजुही सेवती निवारी[1] सों बिराजी भये राजी भये निरखि गुलामी मुख तेरी है । फूली फुलवारी बीच राजै चारु चन्द्रिका सी सघन निकुंज की अँधेरी में उजेरी है ॥ सहज सुभाव छबि

---

१ धड़कन । २ लँगड़े । ३ नाव ।

पानिप के पुंज भरे रावराना सुकबि हजारन में हेरी है । मान सिख मेरी एरी मालती न मान करु तेरे मकरंद पै मलिंद देत फेरी है ॥ १ ॥ चन्दमुख उन्नत उरोज अनियारे दृग अधर सुधारस सराहि पीजियत है । गोरे गोरे गरुये नितम्ब जुग जंघ राजै लङ्क लचकीली भरि अंक लीजियत है ॥ रावराना सुकबि सचिक्कन[1] अमोल गोल अमल कपोल छबि देखि जीजियत[2] है । आनँद की बेली रूपरासि अलबेली ऐसी नायिका नबेली सों सनेह कीजियत है ॥ २ ॥ फाग खेलि स्याम संग सदन[3] सिधारी प्यारी राजै दुति दामिनी सी भामिनी भरी अनङ्ग । कबि रावराना बैठि रतनसिंहासन पै दर्पभरी दर्पन लै भूषन सँभारै अंग ॥ चन्दमुख चंदन ते चंद की कला सी खासी कञ्चन की झारिन में जल भरि लाई गंग । कोमल कपोलन ते धोवै ज्यों गुलाल-लाली त्यों त्यों होति आली अति गहँव[4] गुलाबी रंग ॥ ३ ॥

६२७. रघुराज, श्रीबांधवनरेश महाराज रघुराजसिंह बहादुर बघेले

बसुधाधर में बसुधाधर में औ सुधाधर में त्यों सुधा में लसै ।
अलिबृंदन में अलिबृंदन में अलिबृंदन में अतिसै सरसै ॥
हियहारन में हरहारन में हिमहारन में रघुराज लसै ।
ब्रजबारन बारन बारन बारन बारन बार बसंत बसै ॥ १ ॥

(हनुमतचरित्र सुंदरशतक)

दोहा—संबत उनइस सै चतुर, आस्विन सुदि सनि बार ।
सरदपूर्निमा को बन्यो, सुंदरसतक उदार ॥ १ ॥

कोई कहै नंदी को सराप साँचो करिबे को कैधौं कपिरूप धरि आये कासिका के नाथ । कोई कहै कैधौं देखि मुनिन को

---

१ चिकने । २ जीते हैं । ३ घर । ४ गहरा ।

दुख दीबो दुसहन महि कोपि आये सरसुतीनाथ ॥ कोई कहै कैधौं देवनाथ की पुकार सुनि भेज्यो है प्रचंड चक्र रोषित है रमानाथ। कोई कहै कैधौं सिया हेत रावनै निकेत कपिकुलकेत कालकील भेज्यो रघुनाथ ॥ १ ॥

६२८. राय कवि

सीतल समीर आय उरन दुसाल होत जगत बिहाल होत बचत न भागे ते। हाथ पायँ कंपे जायँ बसनन धरे रहैं रैनि कंप जाय ना रजाई तन त्यागे ते ॥ राय कबि दंपति बिनोद चहूँ कोद[2] करैं सिसिर में होत घर-बाहर अभागे ते। अगिन के आगे ते न जागे ते न बागे ते सु सीत जात उन्नत उरोज उर लागे ते ॥ १ ॥

६२९. रनछोर कवि

बादि गे अवधि ऐसे धिक मोह मेऱ्यो नाहिं दियो दुख देह सु तौ नेह बिसरायो है। बिरह की ज्वाला जाल जरि जरि उठै जीव पीव पीव करै यों अनंग उर छायो है ॥ आयो सासुसुत ता को तात चल्यो मिलिबे को चढ़ि चित्रसारी नारी नीके चित लायो है। कहै रनछोर दोऊ मिले चारों भुजा जोरि ससुर की छाती लगे बहू सुख पायो है ॥ १ ॥ *

६३०. रायजू कवि

आये हैं भाव भरे नँदलाल सुभाव करै घरकाज से भावै।
झाँकी दै नैन की सैन कऱ्यो हँसि रायजू कुंजन खेल खेलावै ॥
जो बरुनी बरु[3]नीन परै पल घूंघुट खैंचन सासु सिखावै।
ताहि न लाज सों काज कछू जरि जाइ सो लाज जो काज न आवै॥१॥

६३१. रसाल कवि, अंगनेलाल भाट, बिलग्रामी

(बरवै अलंकार)

बरवै—सरसम लागत सरसों सरसों फूल।

---

१ सालती है। २ चारों तरफ़। * यह एक कूट समस्या पूर्ति है। ३ पलक।

बर सों भेंट न बरसों बरसों सूल ॥ १ ॥
बन उपबन सब करहत करहत हाल ।
करहत देखी करहत जीवत बाल ॥ २ ॥

खरी जु स्याम गात की न जानौं कौन जात की अनेक नेक भाँति की सुभाइ भेंट ह्वै गई । बधू बधू है साथ की सुभावती हैं गात की अनेक चूरि हाथ की मनै की मौज कै गई ॥ गही न जात भामिनी लजात जात कामिनी न दीठि होत सामनी दयाल ह्वै चितै गई । रसाल नैन जोरि कै बिसाल भौंह मोरि कै चटाक चित्त जोरि कै पटाक पट्ट दै गई ॥ १ ॥

६३२. रसिकदास

पद

सुमिरो नर नागर बर सुंदर गोपाल लाल ।
सब ही दुख मिटि जैहैं चितत लोचन बिसाल ॥

ध्रुवा । अलकन की झलकन लखि पलकन गति भूलि जात भ्रूबिलास[2] मंद हास रदन छदन अति रसाल । निंदत रबि कुंडल छबि गंड[3] मुकुर[4] झलमलात पिच्छगुच्छ[5] कृत वतंस[6] इंदु बिमल बिंदु भाल ॥ अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग रंग बिगत मद गयंद होत देखत लटकीली चाल । रतन रसन पीत बसन चारु हार बर सिंगार तुलसि कुसुम खचित पीन उर नवीन माल ॥ ब्रजनरेस बंसदीप बृंदाबन बर महीप श्रीबृषभान मान्यपात्र सहज दीन जन दयाल । रसिक रूप रूपरासि गुन निधान जान राय गदाधर प्रभु जुवतीजन मुनि मन मानस मराल ॥ १ ॥

६३३. रसिया, नजीबखाँ महाराजा पटियाला के सभासद

रमि कै रसरीति की गैलन माहिं अनीति को पंथ न गाँहिये[7] जू ।

---

१ रसीले । २ भौंह का मटकना । ३ कपोल । ४ शीशा । ५ मोरपंख के गुच्छ । ६ कलँगी । ७ ग्रहण कीजिए ।

अब तौ छलछन्द की बानि तजौ हँसि-बोलि कै चित्त उमाहियेजू ॥
रसिया कर जोरि करौं बिनती कछु और हमैं नहिं चाहिये जू ।
यह प्रेम की आँखैं लगीं सो लगीं पै कुलीन ज्यों और निबाहिये जू॥१॥

६३४. रूप कवि

कैधौं कली बेला की चमेली की चमक चारु कैधौं कीर कमल में दाड़िम दुरायो है। कैधौं दुति मंगल की मण्डल मयङ्क मध्य कैधौं बीजुरी को बीज सुधा में सिरायो है॥ कैधौं मुकताहल महावर में बोरि राखे कैधौं मैन मुकुर में सीकर सुहायो है। रूप कवि राधिकाबदन में रदन छबि सोरहो कला को काटि बत्तिस बनायो है॥ १॥

६३५. रूपनारायण कवि

रमि कै रतिमन्दिर में तरुनी रँगरावटी में रसमाले कियो।
पगि प्रेम में पूरि प्रबीन के प्यार सों सौतिन ही में दुसाले कियो॥
कबि रूपनरायन आरसी लै कर आनन पै बसवाले कियो।
अरबिन्दन बैर कियो बरु लै मनो भानु के इन्दु हवाले कियो॥१॥

६३६. रामजी कवि (२)

चोंथते चकोर चहुँओर जानि चंदमुखी रही बचि डरन दसन दुति दम्पा के। लीलि जाते बरही[१] बिलोकि बेनी बनिता की गुही जो न होती यों कुसुमसर कम्पा के॥ रामजी सुकबि ढिग भौंहैं ना धनुष होतीं कीर कैसे छोंड़ते अधर बिम्ब झम्पा के। दाख के से झौंरा झलकत जोति जोबन की भौंर चाटि जाते जो न होती रङ्ग चम्पा के॥ १॥ स्वेदकन जाली अंसुमाली[२] की तपनि आली सुकी जानि खण्डे ते अधर बिम्ब बूझे हैं। बेनी जानि साँपिनी यों चोंथी हैं कलापिनी[३] ने बापुरी चकोरी को कपालै चन्द सूझे हैं॥ रामजी सुकबि मैं पठाई तू न तहाँ गई बन्द कञ्चुकी के काहू झौंर

---

१ मोर। २ सूर्य। ३ मोरनी।

में अरुझे हैं । उरन उरोज न स्वयम्भू सम्भु किंसुक सों कुंजन के कोने कहौ कौने आजु पूजे हैं ॥ २ ॥

६३७. राजाराम कवि

ठगी सी न ठौर चित ठोढ़ी गहे ठाढ़ी हुती ठौर ही ठनाकि परी ठाई दै ठनकसी । पञ्चबान कञ्चु में रुमंच रञ्च रञ्च भये कंचु ऐसी है गई जो काया हू कनक सी ॥ छनक में छीन भई छिगुनी ते राजाराम छबीली छरी सी परी छिति में छनक सी । बनक सी हनी पुनि फनक सी खाई सुनि स्याम को सिधारिबे के तनक भनक सी ॥ १ ॥

६३८. रसिकशिरोमणि कवि

नागर नवल नीके रसिकसिरोमनि हैं ललित त्रिभङ्गी गति कैधौं सखियान की । मुख कहु ससि सों दुहूँ कुल प्रगट जस कुबिजा विदित जग कहा रति जान की ॥ मोहन बिसासी उत लागै उर फाँसी सी सुजस ब्रजबासी करैं हाँसी सुखदान की । गोकुल बिलासी नवलासी सी बिसारी चित दासी की बिदा सी कलकानि कुलकानि की ॥ १ ॥

६३९. रघुनाथ प्राचीन

ग्वाल सङ्ग जैबो ब्रज गाइन चरैबो ऐबो अब कहा दाहिने ये नैन फरकत हैं । मोतिन की माल वारि डारौं गुंजमाल[२] पर कुंजन की सुधि आये हियो धरकत हैं ॥ गोबर को गारो रघुनाथ कछू याते भारो कहा भयो महलन मनि मरकत हैं । मन्दिर हैं मन्दर[३] ते ऊँचे मेरे द्वारका के ब्रज के खरिकैं[४] तऊ हिये खरकत[५] हैं ॥ १ ॥

६४०. रंगलाल कवि

छप्पै

जटित[६] जवाहिर मल्ल रल्ल चहुँ दिसि दिसि हल्लिय ।

---

१ काम । २ घुँघची की माला । ३ मंदराचल । ४ गोशाला । ५ खटकते हैं । ६ जड़े हुए ।

गहरि नदिय खलभलत भार फनपति थर सल्लिय ॥
तरवर घन दय परत होत कुल्लाहल भाँरिय।
हय-हींसनि धर धसक मसक नर मिलत न नारिय ॥
चढ़ि हंकि निसंक अभंग दल प्रगट जंग दल जान तुव।
सुज्ञान नंद रँगलाल मनि कुल बदनेस सु भानु हुव ॥ १ ॥

६४१. रसरास कवि

लालहिं घेरि रही ललना मनो हेमलता लपटानी तमालहि।
मालहि टूटत जात न जानत लूटत है रसरास रसालहि ॥
सालहि सौतिन के उर में चलि री उठि बेगि दै ताल उतालहि।
तालहि देत उठी ततकाल[1] लगाय गुपाल के गाल गुलालहि ॥१॥

६४२. रसरूप कवि

एरे मतिमंद बिप्र मानत कहे न छिप्र[2] जानि यह पीछे भली-भाँति समुझावैगी। कबि रसरूप अंग फूलि कै फिरत अबै भूलि जैहै सेवा जबै साँप लपटावैगी ॥ कंठ को कपाल-माल डमरू त्रिसूल कर कामरू की बिद्या दै बनाय बवरावैगी। तरल तरंगा ताको त्यागु तू प्रसंगा ना तो नंगा करि गंगा तोहिं पंच में नचावैगी ॥ १ ॥

६४३. रघुनाथराय कवि

काली अरधंग लै कपाली मुंडमाली चल्यो देखि लोहू लाली को हुलास भयो प्यासे को। कोप्यो रोप्यो राइ रघुनाथ कौन समुहाइ राइ उपराइन के परौ जी उसासे को ॥ बादसाह जहाँ बैठो जंग जोरि तहाँ स्वच्छ साहसी अमरसिंह रोप्यो रनरासे को। लै लै छरा[3] दौरी अपछरा पहिराइबे को आसन सों आयो पाकसासन[4] तमासे को ॥ १ ॥

---

१ फ़ौरन्। २ जल्दी। ३ माला। ४ इंद्र।

६४४. रघुराय कवि

प्यारेहित काज प्यारी प्यारीहित काज प्यारे दुहुँन सिंगारे तन नीके चटमट सों। जमुना के नीर तीर हँसि हँसि बातैं करैं मन अटकायो कल कोकिला की रट सों॥ एते रघुराइ घन घटा घहराइ आई बरसन लाग्यो नान्हीं बूँदन के ठट सों। जौलौं प्यारो प्यारी को उढ़ायो चाहै पीत पट तौलौं प्यारी प्यारो ढाँपि लीन्ह्यो नील पट सों॥ १॥

६४५. रामकृष्ण कवि

राजै मेघडंबर[1] जो अंबर परसि कर तेज चकचौंधे होत बाहन दिनेस के। सुंडन के सीकर छुटत जब ऊरध को बसन दरीचिन के भीजत सुरेस के॥ लंका होत संका सुनि घननात घंटा घोष चलत लचत फन सेस भुजगेस के। उड़त मलिंद गंड-मंडल ते रामकृष्ण झूमत गयंद फिरैं कोसलनरेस के॥ १॥

६४६. रतन कवि ब्राह्मण, बनारसी

(प्रेमरत्न)

दोहा—वह बृन्दाबन सुखसदन, कुंज कदम की छाहिं।
कनकमई यह द्वारका, ताकी रज सम नाहिं॥ १॥
नृपतिसभा सिंहासन, जिहि लखि लजत अनंग।
नहिं बिसरत वह सखनको, गाय चरावन संग॥२॥
राजसाज साजे सकल, तिमि नहिं नेकु सुहाहिं।
गुंजमाल बन चित्र जिमि, मोरमुकुट माधि माहिं॥ ३॥

६४७. रघुनाथदास ब्राह्मण, महंत अयोध्या के

राम के नाम के अच्छर द्वै महिमा कहि सेस सकै न करोरी।
जासु प्रसाद सुरासुर में हर हर्षि हलाहल पान करो री॥

---

१ मेघों का समूह।

जन रघुनाथ के नाथ सोई जो सजीवनसार सुधा रस कोरी।
रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेसकिसोरी ॥ १ ॥

६४८. रज्जब कवि

दोहा—रज्जब जाकी चाल सों, दिल न दुखाया जाय।
इहाँ खलक खिजमति[1] करै, उत है खुसी खुदाय ॥१॥
साध सराहै सो सती, जती जोषिता जान।
रज्जब साँचे सूर को, बैरी करत बखान ॥ २ ॥

६४९. रघुलाल कवि

आई एक प्यारी गौने सोने से सरीर नोने[2] रूप रस रति के प्रकास दरसात हैं। अतर सुगंध रंग भूषन बसन बोरे लाल दृग डोरे मनों फूले जलजात[3] हैं॥ कबि रघुलाल सेज आये सुखदान जाके नखसिख छबि के छरा से छहरात हैं। अंकुरित जोबन छुये ते लंक संकुरत इंकुरत जंघ अंग कुंकुरत जात हैं॥ १ ॥

६५०. रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुरवासी
(निर्णयमंजरी)

दोहा—मंगलमूरति सिवसुवन, श्रीगनेस हेरंब।
बानी बाक सरस्वती, श्रीसारद जगदंब ॥ १ ॥
इन कहँ प्रथमहिं सुमिरिकै, बहुरि इष्ट करि ध्यान।
उर धरि गुरुपदपद्मजुग, करौं कछुक निर्मान ॥२॥

६५१. रसरंग कवि लखनऊवाले

नंदलला लखी वा दिसि पै जहाँ जाति नबेलिन की अवली है।
अंग बिभूषित भूषन ते सब रंग रँगे पट सोभ सली है॥
ता बिच नील पटो पहिरे रसरंग रले गले चंपकली है।
जात चली मुसकात गली में सबै बिधि सों बृषभानलली है ॥१॥

---

१ सेवा। २ सलोने। ३ कमल।

६५२. रतन कवि, श्रीनगर बुंदेलखंडी

(फ़तेशाहभूषण)

सोहत सुरंग मुख-रंग में दुरंग सोहैं जिन रंग सोहैं को है रंग ना रँगीप के। सुकबि रतन सरबसी भरे उरबसी तर बसी करै उरबसी के समीप के ॥ चमकनि चीकने कपूर-मनि कैसे ओपे लोपे ते बिलोकत बिबेक ज्ञान दीप के। सरस सरोजमुखी तेरे ये उरोज मूँगा मीर मसनंदी मानों मदन महीप के ॥ १ ॥

(फ़तेप्रकाश)

सुंदर पुरंदर-गयन्द से बलन्द कद मंदर समंद मंद झर मेदिनी भरैं। धावा की धमक धुकि धसकि धराधरन ससकि ससकि सेस सीस न धरा धरैं ॥ बार न लगत ऐसे बारन बकसि देत साह मेदिनी को फतेसाह साहसी ढरैं। पुंडरीक से प्रचण्ड पुंड पुंडरीक जानि सुंडन सकेलैं चन्दमण्डल खरे-खरैं ॥ १ ॥ गोकुल को गई मति गई हौं दही लै गई नन्दजू के मन्दिर समीप है सिधाई हौं। ग्वालि घरघाली तो सनेहवारी बातन में घेरि बनमाली बड़ी बेर बिलमाई हौं ॥ दोऊ कर जोरि नैन मोरि कै निहोरि हरि कहा करौं त्योर तारिबे को सकुचाई हौं। प्यारी तेरे प्यार के पत्यार प्यारे मोहन को मरम नगीना करि देन कहि आई हौं ॥ २ ॥

६५३. रतन कवि (२)

(रसमंजरी भाषा)

दोहा—कल कपोल मद लोभ रस, कल गुंजत रोलंब[3]।
काकदंब अवलंब कह, लंबोदर[4] अवलंब ॥ १ ॥

चौपाई।

अति पुनीत कलिकलुषबिहंडन। साहिसभा सबहिन सिरमंडन ॥

दोहा—रसिकराज हरिबंस तिन, चंचरीक निज हेत।
भानु उदित रसमंजरी, मधुर मधुर रस लेत ॥ २ ॥

---

१ हाथी। २ एक दिग्गज का नाम। ३ भ्रमर। ४ गणेश।

निकसे नव निर्जन कुंजन ते अँगअंग अनंग के प्रेम जगे।
किये कानन केतकी की कलिका कमनीय कपोल परागपगे॥
लखि यों बिधि राधिका माधव की भरि बारि बलाहक[1] ज्यों उमगे।
बरसे नयना झरि लाइ भले निरखे तन को न निमेख[2] लगे॥१॥
उर ते गिरि मोतिनमाल परी कटि लागत कंठ[3] तटी कल सों।
भृकुटी तट मोरि कछू छबि सों करनांबुज डारि भुजाबल सों॥
अलबेलिय भाँति खुजावति कान सुरंग खरी अँगुरीदल सों।
तिरछे बलबीर हि बारहि बार बिलोकत बालबधू छल सों॥२॥

६५४. रतनपाल कवि

दोहा—जाके घोड़ा अनसधे, और सारथी कूर।
ताको रथ पहुँचै नहीं, होय बीच चकचूर॥१॥
भक्तिभाव ते की अवाँ, ज्ञानअगिनि तपि जाय।
रतनपाल तिन घटन[3] में, ज्ञान अमी ठहराय॥२॥
पूजा कै भगवान की, तिलक देत सिव हेत।
सिव जानैं हरि देत हैं, हरि जानैं सिव देत॥ ३ ॥
माला तुलसी की धरै, तिलक लगावै आइ।
ना हरि के ना रुद्र के, बृथा भये तजि भाँड़॥४॥

६५५. रूपसाहि कायस्थ, बागमहल पूना-समीपवासी
(रूपविलास)

बृच्छन बल्ली चढ़ी करि चोप अली अलिनी मधु पी मुदकारी।
कोकिल सारिका[4] कीर कपोत करैं धुनि माधुरी काननचारी॥
फूले सबै बन बाग तड़ाग भरे अनुराग पिया अरु प्यारी।
चैत में चारु बिहारु करैं दसरत्थकुमार बिदेहकुमारी॥ १ ॥
सावन के दुखदावन यों घनस्याम बिना घन आनि सतावै।

---

१ बादल। २ पलक। ३ घड़ा और हृदय। ४ मैना।

तैसे मिलो तिन्हैं आनि ये मोर सु जोर के सोर जरे पै जरावै ॥
प्यारे को नाम सुनाय सखी हिये पापी पपीहा ये सूल उठावै ।
नेह नवेली मरी अब हौं दिन दोइक पीय जु और न आवै ॥२॥

दोहा—श्रीजू सीतापतिचरन, हिये ध्याय सुख पाय ।
रूपसाहि बिरचत बिमल, रूप बिलास सुहाय ॥ १ ॥
छत्रसाल बुंदेलमनि, ता सुत श्रीहिरदेस ।
सभासिंह तिनके तनय, ता सुत हिन्दुनरेस ॥ २ ॥
कायथ गनियरबार है, श्रीबास्तव पुनि साम ।
कीन्हो रूपबिलास जिन, ग्रन्थ अधिक अभिराम ॥ ३ ॥
गुन[3] ससि बसु सासि जानिये, संवत अंकप्रकास ।
भादौं सुदि दसमी सनी, जनम्यो रूपबिलास ॥ ४ ॥

६५६. रघुनाथ कवि बंदीजन, काशीवासी

(रसिकमोहन)

लावत मैं न सुगन्ध लखी सब सौरभ[1] को तन देत दसी है ।
अंजनरंजन हू बिन स्याम बड़े बड़े नैनन रेख लसी है ॥
ऐसी दसा रघुनाथ लखे यहि आचरजै मति मेरी फसी है ।
लाली नवेली के ओठन में बिन पान कहाँ ते धौं आन बसीहै ॥ १ ॥

(जगतमोहन)

तिमिर परात[2] कुलकैरव[3] लजात रंग रूप सरसात अंग रोज नव बर के ।
फूलत बिटप[4] बेलि गुंजत भँवर फिरैं पंथ लागेचलन पथिक थरथर[5] के ॥
बेदधुनि होत चहूँ दूध को स्रवत गऊ असनदसन ध्यान पूजा हरि हर के ।
रोग जात सोग जात कहै कबि रघुनाथ उवत परेखे चोर देखे दिनकर के १॥

(काव्यकलाधर)

बिरची सुरति रघुनाथ कुंजधाम बीच कामबस बाम करै ऐसे

---

१ खुशबू । २ भागता है । ३ कुमुद (कोकाबेली) । ४ वृक्ष । ५ जगह-जगह के ।

भाव थपँनो । जंघन सों मसकै सकोरे नाक ससकै मरोरै भौंह हँस-कै सरीर डारै कपनो ॥ आँखिन सों आँखि ना मिलावै लचकावै लंक भुज खींचि लावै अंग छोंड़ि करै जपनो । ज्यों ज्यों जी में आवै त्यों त्यों रीझि रस अधरा को आपु पियै पिय को पियावै पियै अपनो ॥ १ ॥

(इश्कमहोत्सव)

आप दरियाव, पास नदियों के जाना नहीं दरियाव पास नदी होइगी सो धावैगी । दरखत बेलि ही के आसरे को राखता ना दरखत ही के आसरे को बेलि पावैगी ॥ आपके लायक कहने था सो कहा आप रघुनाथ मेरी मति न्याव ही को गावैगी । वह मुहताज आपकी है आप उस के ना आप कैसे चलौ वह आप पास आवैगी ॥ १ ॥

(काव्यकलाधर)

दोहा—ठारह सत पै द्वै अधिक, संबतसर सुखसार ।
काव्यकलाधर को भयो, कातिक में अवतार ॥ १ ॥

सकल दिसान बस करता सरूपवान तेजवान ज्ञानवान भाग-वान गथ के । बेद बिधिबिहित सुकबि रघुनाथ कहै प्रतिपाल-करता सकल पुन्यपथ के ॥ सबसों अजीत आपु सबके जितैया आपु आपु सरबज्ञ हैं जनैया जे अकथ के । ऐसे मंसाराम के महीप बरिबंड जैसे काम पुरुषोत्तम के राम दसरथ के ॥ १ ॥

९५७. रसखानि कवि, सैयद इब्राहीम, पिहानीवाले

मानुस होहुँ वही रसखानि बसौं ब्रजगोकुल गोप गुआरन ।
जो पसु होहुँ कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन होहुँ वही गिरि को जो धरयो कर छत्र पुरंदर धारन ।

---

१ स्थापित । २ समुद्र । ३ श्रीकृष्ण ।

जो खग होहुँ बसेरो करौं वही कालिंदी कूल कदंब की डारन॥ १ ॥
या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहू सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥
कोटिन हू कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।
आँखिन सों रसखानि कहै ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं॥२॥
मोरपखा सिर ऊपर राजत गुंजे की माल हिये पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी बन गावत गोधन संग फिरौंगी॥
भावै री तोहिं कहा रसखानि सो तेरे लिये सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥ ३ ॥
एक समै मुरलीधुनि में रसखानि लियो कहुँ नाम हमारो।
वा दिन ही ते ये बैरी बिसासिनि झाँकन देतीं नहीं हैं दुवारो॥
होत चवाव बचाओं सु क्यों करि क्यों अलि भेंटिये प्रानपियारो।
दीठि परी तब ही चटको अटको हियरे पियरे पटवारो॥ ४ ॥
संकर से मुनि जाहि जपैं चतुरानन ध्यानन धर्म बढ़ावैं।
जा पग देव अदेव भये सब खोजत हारे जु पार न पावैं॥
जाहि हिये लखि आनँद ह्वै जड़ मूढ़ हिये रसखानि कहावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाँछ को नाच नचावैं॥ ५ ॥

डहडही बौरी मंजु डार सहकार[5] की पै चहचही चुहिल चहूँकित[6] अलीन की। लहलही लोनी लता लपटी तमालन पै कहकही ता पै कोकिला की काकलीन की॥ तहतही करि रसखानि के मिलन हेत बहबही बानि तजि मानस मलीन की। महमही मंद मंद मारुत मिलन तैसी गहगही खिलनि गुलाब की कलीन की॥ ६ ॥

---

१ पक्षी। २ सुवर्ण। ३ घुँघची ४। लड़कियाँ। ५ आम। ६ चारों ओर।

६५८. रामचंद्र कवि नागर, गुजरातवासी
(गीतगोविंदादर्श, भाषा-गीतगोविंद)

सोरठा—आनँदकंद अमंद, सजन कुमुद कुल चंद नृप ।
डालचंद कुलचंद, रायचंद प्रतिपाल प्रभु ॥ १ ॥

घन घेरि आयो बन सघन तिमिर छायो रैनि को डरैंगे लेखि देखि यों दृगन ते । नंदजू कहत बृषभानुनंदिनी सों नंदनंदनहिं घरै जाहु लैकै बेगि बन ते ॥ गुरु के बचन पाइ प्रेम की रचन भरे चले कुंज-तीर तरु देखि कै बिपिन ते । जमुना के कूल[१] में रहसि रसकेलि करैं ऐसे राधा-माधौ बाधा हरैं मेरे मन ते ॥ १ ॥

६५९. रामदया कवि
(रागमाला)

दोहा—भैरव, दीपक, मेघश्री, कौसिक और हिंडोल ।
रामदया षट राग ये, बरनत पुरुष अमोल ॥ १ ॥

भैरो सुर गाये कोल्हू आपु सों चलत मालकौस के अलापे होत पाहन दरारैं री । सबद सुने ते सूखे रूखहू हरेरे होत जल की कनूकैं भरैं मेघ की मलारैं री ॥ चढ़ि कै हिंडोरे जब गावत हिंडोल राग फिरकी सी डोलै पाय मारुत के रारैं री । दीपक उचारै दिया हाथ सों न बारै मन औरै करि डारैं ये कदंबन की डारैं री ॥ १ ॥

६६०. राजाराम कवि

छाई छबि हीरन की रबि जोति जीरन की राजाराम चीरन[२] की चिलकारी अलकैं । अबला[३] अहीरन की पाली दधि-छीरन की सोने से सरीरन की गारी दै दै बलकैं ॥ पिचकारी नीरन की मार सम तीरन की देव दान चीरन की माँगिबे को ललकैं ।

---

१ किनारे । २ वस्त्रों की । ३ स्त्री ।

हैं करैं बीरन की उड़नि अबीरन की मुख-लाली बीरन की बीरन की झलकैं ॥ १ ॥

६६१. राजा रणधीरसिंह, सिरमौर, सिंगरामऊ

(भूषणकौमुदी)

दोहा—भाषाभूषन ग्रन्थ को, किय जसवन्त नरेस ।
टीका भूषनकौमुदी, रचि रनधीर सुबेस ॥ १ ॥
सम्बत मुनि ससि निधि धरनि, माघ त्रिदस सित चार ।
सुभ मुहूर्त कबि बार लहि, भयो ग्रन्थ अवतार ॥ २ ॥
जनमनप्रतिपाली बिसद, भव-घाली अवगाह ।
ऐसी काली को सुजस, आली बरनै काह ॥ ३ ॥

मंजुल सुरङ्ग बर सोभित अचिन्त रेख फल मकरन्द जन मोदित करन हैं । प्रमित बिराग ज्ञान केसर अब्यक्त देखे बिरद असेस जस पांसु पसरन हैं ॥ सेवित नृदेव मुनि मधुप समाधि ही के रनधीर ख्यात द्रुत इच्छित भरन हैं । ईस हृदि मानस प्रकासित सदाई लसैं अमल सरोज बर स्यामा के चरन हैं ॥ ४ ॥

(काव्यरत्नाकर)

छप्पै

एकरदन गुनसदन मदन अरि पञ्च-बदन-सुत ।
बिघनकदन गजबदन दानि मङ्गल सिंदूरजुत ॥
भाल चन्द गजबन्द मन्द-मति-तम-बिनासकर ।
बुद्धिकरन है स्मरन जासु बर बरन भासकर ॥
मद झरत गण्ड मण्डरित अरु झुण्ड झुण्ड गुंजरित जेहि ।
करि ध्यान हृदय अरबिन्दपद[1] सीस धारि रनधीर तेहि ॥ १ ॥

दोहा—सम्बत मुनि निधि बसु ससी, अंक-रीति गनि चारु ।
जेठसुक्ल सुभ द्वादसी, जनित ग्रन्थ गुरुबारु ॥ १ ॥

---

१ चरण-कमल ।

६६२. रसिकलाल, बाँदावाले

सोरठा—गयापिण्ड मा कूप, रसिकलाल सुत सों कहै।
संतत खानियो कूप, मृगनयनी पानी भरैं॥ १॥

६६३. रसपुंजदास

(प्रस्तारप्रभाकर पिंगल)

दोहा—सूधी रेखा लघु समुझि, गुरु सुक-चञ्चु-अकार।
इनमें बरतैं छन्द सब, जे कबि बुद्धि उदार॥ १॥

६६४. रसलीन-गुलामनबी, बिलग्रामी

(रसप्रबोध)

दोहा—ग्यारह सै चौवन सकल, हिजरी सम्बत पाइ।
सब ग्यारह सै चौवनै, दोहा राखे ल्याइ॥ १॥
सत्रह सै अट्टानबे, मधु-सुदि[1] छठि बुधबार।
बिलग्राम में आइ कै, भयो ग्रन्थ-अवतार॥ २॥
सौतिन मुख निसि कमल भो, पिय चख भये चकोर।
गुरुजन मन सागर भये, लखि दुलहिनि मुख ओर॥ ३॥
सखिन कहे ते आभरन, नेकु न पहिरत बाम।
मन ही मन सकुचति डरति, भजत लाल को नाम॥ ४॥
नवला मुरि बैठति चितै, यह मन होत बिचार।
कोमल मुख सहि ना सकत, पिय-चितवनि को भार॥ ५॥

(फुटकर)

सोरठा—पीतम चले कमान[2], मोको गोसा[3] सौंपि कै।
मन करि हौं कुरबान, एक तीर[4] जब पाइ हौं॥ १॥

६६५. रसलाल कवि

प्यारे को चीरो चुनौटिया राजत प्यारी की चूनरी लागी किनारी।
प्यारे को बागो बनो बहु सुन्दर प्यारी की कञ्चुकी सोंधे सुधारी॥

---

१ शुक्लपक्ष। २ कमाने को और कमान। ३ एकांत और गोसा।
४ पास और बाण।

रसलाल सु भाल पै टीको लसै अरु प्यारी की बेंदी रही फबि न्यारी।
झाँकैं झरोखे में दोऊ लखे सिरीनन्दलला बृषभानु दुलारी ॥ १ ॥

६६६. रामचरण ब्राह्मण, गणेशपुरवाले
(कायस्थधर्मदर्पण)

दोहा—निकरी गजमुख-गाल ते, नदी मयन जल ताल ।
पाप-बाल की डाकिनी, हरै सकल भ्रमजाल ॥ १ ॥
सीता, रघुनन्दन, लषन, भरत, सत्रुहन बीर ।
बन्दौं पनवकुमारजुत, बिहरत सरजू तीर ॥ २ ॥
बचन-अर्थ इव एकमय, बचन-अर्थ के हेतु ।
बन्दौं जग-जननी-जनक, पारबती-बृषकेतु ॥ ३ ॥

६६७. रामराइ कवि

पद

जयति श्रीबल्लभसुवन उद्धरन त्रिभुवन फेरि नन्द के भवन की केलि ठानी। इष्ट गिरिबरधरन सदा सेवक चरन द्वार चारों बरन भरत पानी ॥ बेदपथ ब्यास से हनूमान दास से ज्ञान को कपिल से कर्मजोगी। साधु लछिमन निपुन बहु ब्रजराज प्रगट सुखरासि मनो इन्दुभोगी ॥ सिन्धुसम गम्भीर मिलन रङ्ग नीर प्रीति को जल छीर ब्रजउपासी। ध्यान को सनक से भक्त को सनँद से याही ते बस कियो ब्रह्मरासी ॥ मनहुँ इन्द्र को जीति कृष्ण सों करी प्रीति निगम की चली नीति अति बिबेकी। रहित अभिमान ते बड़े सनमान ते सील अरु दान गोबिन्द टेकी ॥ सदा निर्मल बुद्धि अष्ट सिद्धि नव निद्धि द्वार सेवत जहाँ मुक्ति दासी। रामराइ गिरिधरन जानि आयो सरन दीन के दुखहरन घोषबासी ॥ १ ॥

६६८. रामदास बाबा, सूरजी के पिता

पद

हम पर यह हिगई बीबाजन।
लै डारे जसुदा के आगे जे तुम फोरे भाजन॥
दुरी बात करि देत प्रगट सब नेकहु आई लाज न।
रामदास प्रभु दुरे भवन में आँगन लागी गाजन॥ १॥

६६९. रहीम कवि (२)

सुनिये बिटप¹ प्रभु पुहुप² तिहारे हम राखिये हमैं तौ सोभा रावरी³ बढ़ाइ हैं। तजिहौ हरस तो बिरस ते न चाँरो कछू जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनी छबि पाइ हैं॥ सुरन चढ़ैंगे सुर नरन चढ़ैंगे सीस सुकबि रहीम हाथ हाथ ही बिकाइ हैं। देस में रहैंगे परदेस में रहैंगे काहू भेस में रहैंगे तऊ रावरे कहाइ हैं॥ १॥

६७०. रामप्रसाद अगरवाले

लाला तुलसीराम मीरपुरवाले भक्तमाल-ग्रन्थकर्ता के पिता

सवैया

दीन मलीन औ हीन ही अंम बिहंगे⁴ परो छिति छीन दुखारी।
राघव दीनदयाल कृपाल को देखि दुखी करुना भइ भारी॥
गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैनसरोजन में भरि बारी।
बारहिबार सुधारत पङ्ख जटायु⁵ की धूरि जटान सों झारी॥ १॥

६७१. लाल कवि (१) प्राचीन

दारा और औरँग लरे हैं दोऊ दिल्ली बीच एकै भाजि गये एकै मारे गये चाल में। बाजी दगाबाजी करि जीवन न राखत हैं जीवन बचाये ऐसे महाप्रलैकाल में॥ हाथी ते उतरि हाड़ा लरयो हथियार लै कै कहै लाल बीरता बिराजै छत्रसाल में।

---

१ वृक्ष। २ फूल। ३ तुम्हारी। ४ बश। ५ जटायु।

तन तरबारिन में मन परमेस्वर में पन स्वामिकारज में माथो हरमाल में ॥ १ ॥ मिली पारावार[1] को हजार करि धारा तऊ पारावार बेग को न पारावार सरि की । बन्दौं नागदारा नागदारा देवदारा लाल मानौ हंस चारा चार कित कल हरि की ॥ जाति बिधि द्वारा जमकारा ना बरुनकारा न्हाइ पापी पापन को आरा मैन-अरि की । पारा ते सरस दूध-धारा से सरस चन्द-तारा ते सरस सेत धारा सुरसरि की ॥ २ ॥

(विष्णुविलास नायिकाभेद)

बाँह डुलाइ चले अति ऐंड़ सों भौंहन ही हँसि बात कहे री ।
गोल कपोल उतुंग[2] नितम्ब बिलोकत लोचन लागि रहे री ॥
जानति है गड़ि जात हिये खन जो भरि अंकम नेकु गहे री ।
काहे न कान्ह रहे निपटै लटि ज्यों यह जोबन याहि लहे री ॥ १ ॥

तरुन तीय बस रसिक सदा सुखहीं रहै ।
अति गँभीर निश्चिन्त न चित बिकृति गहै ॥
राजा उदयन बत्सराज सम होइ जो ।
धीर ललित सुबिबेकी नायक कह्यो सो ॥ १ ॥

६७२. लाल कवि (२) बनारसी

अरिन[3] सँहारै गजघंटनि अहारै रक्त पियत अपारै ऐसी जालिम जवाल की । जंग जीतिबे की जामें अमित कला है काल की सी अबला है ऐसी सोहत हवाल की ॥ कहै कबि लाल जंग मुकुति-जुगुतिवारी चेतसिंह कर धारी है धौं कौन काल की । जमदण्डिका सी रन बीच चण्डिका सी है सुरत्न-कन्यका सी तेग कासी-महिपाल की ॥ १ ॥ छोटे छोटे पात कौनौ काम के न ठहरात देखे छुद्र छाँह मन कैसे कै रसाइये । पैने पैने कण्टक

---

१ समुद्र । २ ऊँचे । ३ शत्रुओं को ।

विलोकि कै बहुत सूल मूलै हू में ठौर बिसराम को न पाइये ॥ लाल कबि फूल फूले रस-रूप-गन्ध बिना स्वाद बिना फल मुख कैसे कै लगाइये । तुम ही कहौ न तौन बारी में बबूर जौन कौन आस राखि रावरे के पास आइये ॥ २ ॥ बंसीवारे प्यारे तेरी बानीके प्रवाह बीच तरत सभा की सभा प्रेमनीर छाकी है । बेनु की अदा की तान बाँकी वे सुकबि लाल चर थिर ताकी थिर-चरता हू थाकी है ॥ अकथ[2] कथा की कथा कहाँ लौं बखानौं तथा भव की बिथा को नेक सुनत बृथा की है । पण्डितप्रथा की मति थाकी हेल थाप थहै न इहि बिथा की थाकी कहन कथा की है ॥ ३ ॥

६७३. लाल कवि (३) बिहारीलाल त्रिपाठी, टिकमापुरवाले

सूनो परो कब को यह गेह है साँकरो यामें न सूर[3]प्रकास है ।
जौन बतायो पठायो इहाँ तिन कीनो खरो तुम्हरो उपहास है ॥
आई हौ भागि रहौ अनतै कहुँ आली कहौ यामें कौन सुपास है ।
भीतर कारे भुजंग बसैं अरु ऊपर चौक चुरैल को बास है ॥ १ ॥
ऊजरी होय न केहूँ अली तिरछी चितवै हरि सों अनुरागी ।
लाज कहै नहीं छूटत दाग दगा दै सुनार बनावत दागी ॥
भेंट भई जमुनातट में तकि दोऊ रही न टरैं अनुरागी ।
गूजरी ठाढ़ी कहै चलु गूजरी गूजरी भाजन गूजरी लागी ॥ २ ॥
कोऊ डरानी परानी[4] कोऊ डरपै नहिं मेरो हियो मजबूत है ।
बावरी ये घर बाहर की सब जाहिर मोहिं तिहारो अकूत[5] है ॥
लाऊँ दिखाऊँ मिटाऊँ कलंक इहाँ ब्रज एक बड़ो अवधूत है ।
तोहिं तौ भाव भवानी को आवत गाँव के लोग लगावत भूत है ॥ ३ ॥
बिधि वा मृगनैनी को रूप अनूप लिख्यो मनो औरहि लेखनियाँ ।
दृग कंज से लाल सुधाधर से मुख अंग अनूप अलेखनियाँ ॥

---

१ जड़में भी । २ न कहने लायक़ । ३ सूर्यकी रोशनी । ४ भागी । ५ भाव ।

लखि पेखन¹ की सुधि भूलि गई हैं भई अँखियाँ अनिमेखनियाँ² ।
वहि पेखनहारी की पेखि रहे छबि पेखनहार औ पेखनियाँ ॥४॥

६७४. लाल कवि (४)

(भाषा-राजनीति)

दोहा—मंत्र सु मैथुन औषधी, दान मान अपमान ।
गृह-संपति अरु छिद्र ये, प्रगट न लाल बखान ॥१॥
नृत्य-गीत अरु पढ़त में, सभा, जुद्ध, ससुरारि ।
लाल अहार बिवहार में, लज्जा आठ नेवारि ॥२॥
षोड़स बरस बिबाह करि, द्वादस गृह बिसराम ।
बरस चतुर्दस बास बन, राज करत पुनि राम ॥३॥
बावन जुग की बात है, लाल अवधबिस्तार ।
तेरह त्रेता द्वै गये, भये राम अवतार ॥४॥
बुधि जाके बल ताहि के, निर्बुधि के बल कौन ।
ससँक³ हन्यो निज बुद्धि ते, सिंह महाबल जौन* ॥५॥
जो उपाय ते होत है, बल ते क्यों कहि जात ।
कनकसूत ते साँप को, कवइ किया निपात † ॥६॥
बसै बुराई जासु उर, ताही को सनमान ।
भलो भलो कहि त्यागिये, खोटे ग्रह जप दान ॥७॥

६७५. लालगिरिधर बैसवारे के

पद

नवलै आली सँग लै चली ।
चली लै पतियाय बतियन जहाँ रति की थली ।
धरत जहँ पग परत तहँ मृदु पाँवड़े मखमली ॥
गौनहाई चूनरी बिच गौनहाई लली ।
मनो पावकलपट में छबि देत कुंदन डली ॥

१ देखने की । २ पलकहीन । ३ खरगोश । * व † हितोपदेश में कथाएँ हैं

कहूँ अँगड़ति अड़ति कतहूँ चलत है वै गली।
लिए जात मतंग को मानो महावत बली॥
हेरि आवत भावती हरि-दृष्टि नेकु न हली।
लालगिरिधर मनहुँ रति की बेलि फूली-फली॥

६७६. लालमुकुंद

कनकाचल कंदर[1] अंदर लौं निरबात[2] सिंगारलता लटकी।
तियरोमावली किधौं संकर है लखि बाल भुजंगिनि ह्वै ठटकी॥
भनि लालमुकुंद किधौं चकवा तकि मीर सिकार लगी फटकी।
किधौं मैन मतंग जक्यो थकि तुंग जँजीर अरीन परी अटकी॥१॥

६७७. लालचंद कवि

अजब परेरू एक हाड़ है न चाम जाके आप उड़ि जाइ पर पंख ना दिखात हैं। ताके बार बीनि बीनि बसन बनावैं लोग ओढ़त न मैले दिब्य रोज ही दिखात हैं॥ जप तप जोग वारे षटरस भोगवारे लालचन्द ओढ़ि ओढ़ि हिये हरषात हैं। सुर मुनि ईसन को पंडित कबीसन को मंत्र सबको है यहै वाको मास खात हैं॥१॥

कुंडलिया—पसरै बीता एक लौं सिकुरि हाथ भरि जाय।
जियै आयुवल और की, कछू न पीवै खाय॥
कछू न पीवै-खाय जीव बिन दुर्लभ नाहीं।
देखो बिमल बिचारि देखिये सब जग माहीं॥
लालचंद लखि परै नहीं कबितन की कसरै।
कर में देखो खोजि होत का सिकुरे पसरै॥२॥

६७८. लोने (१) लोनेसिंह मितौलीवाले

(भागवत भाषा)

ताल री बाजत भूरि मृदंग छुटै बहु रंग भयो नभ लाल री।

---

१ गुफा। २ जहाँ हवा नहीं चलती।

लालरी गुंजन की उर माल अबीर भर्यो भरि झोरिन साल री॥
साल री होत बिलोके बिना नँदनंदन आजु रचो ब्रज ख्याल री।
ख्याल री लोने कहा बरनै मनमोहन नाचत दै करताल री॥ १॥

६७९. लोने कवि (२)

मोरे मोरे मंजुतर मंजरीन मिलि आली गंधगुनमयी मंद मारुत झकोरे लेत। नवलकिसोर लोने कंपजुत लतिकान लम्पट निपट रस आनँद अथोरे लेत॥ गरल[2] की गाँठ से गँठे से ये कठे से ठसे फिरत अमान मान गाँठ गहि छोरे लेत। काम के से चर ऋतुराज के से सहचर चच्चर करत चंचरीक[3] चित चोरे लेत॥ १॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ठरारे मनमथ मतवारे हैं। लाज भरि भारे भारे चपल अन्यारे तासे साँचे के से ढारे प्यारे रूप के उज्यारे हैं॥ आधी चितवनि ही में किये तैं अधीन हरि टोने से बसीकर की लोने परिहारे हैं। कमल कुरंग मीन खंजन भँवर बृषभानु की कुवँरि तेरे दृगन पै वारे हैं॥ २॥

६८०. लक्ष्मणदास

पद

रामकृष्ण बासुदेव दामोदर दीनबंधु दयासिन्धु करुनानिधि मोहन बनवारी। मधुसूदन मुरलीधर माधव जगजीवन प्रभु कमलनयन राधापति गोविंद गिरिधारी॥ अच्युत गोपाल कान्ह चिंतामनि चक्रपानि बिट्ठल भगवन्त बिष्णु केसव कंसारी। नामै सब सुखबिलास लछमन दासानुदास अज्ञ अल्पबुद्धि चरन सरन परि पुकारी॥ १॥

६८१. लक्ष्मणसिंह कवि

मुस्की महरोर मौर महुवर मटोहा मोती लखौरी लाखी लाल लालो लहरदारो है। पँचरंग पीलग पिलंग मुखपट्ट नौबहर

---

१ घुँघची। २ विष। ३ भ्रमर।

बिहार बदामी पीत तारो है ॥ तोलिया तिलकदर तुरकी दरियाई टोप अबलख अबस्या अवरान कुलवारो है । जारद जरद नुकरा नागारनि सून धूम लछमनसिंह छत्तिस तुरंग रंग न्यारो है ॥ १॥

६८२. लीलाधर कवि

जानि तौ परैगी जब काहू की परैगी दीठि रहि जैहै द्वारन को खोलिबो औ ढाँकिबो । लीलाधर कहै कापै परैंगे तिहारे दृग भलो ना समुझि लोकलीकन को नाकिबो ॥ तूरन में ताप हू है पूरन सो पाय ब्रज चूरन हजारन को रहि जैहै फाँकिबो । सोकन करैगो तन पोषन मिटैगो सब दोषन को मूल है झरोखन को झाँकिबो ॥ १ ॥ तारे तुम कैयक उबारे काज बैठो अब भारे भुवभार के उतारे जब कैहौं मैं । लीलाधर हेरैं गुर रहियो चितैरे भूलि परियो न भोरै गीध गनिका गनैहौं मैं ॥ कहौं कहा बारबार दीनन के यार ये अपार पारावार जाके पार जब जैहौं मैं । खगपति बाहवारे जगत निबाहवारे चारि बाँहवारे वाहवा रे तब कैहौं मैं ॥ २ ॥ दसन की चंड चोट असिन टुटूक करैं दलित अदल अरिदल दगाबाज हैं । दीह दरखत जरमूर ते उखारिबे को स्रवनपवन गहे अलख इलाज हैं ॥ जिनके दरस दिगदंती मद बिन होत लीलाधर कबि सुरदंती सिरताज हैं । अगड़ी अडंबर हैं जंगी अनखंगी पारवारपूर संग रंगजी के गजराज हैं ॥ ३ ॥

६८३. लच्छू कवि

केकी कि कूक पिकी की पुकार चहूँ दिसि दादुर दुन्दि मचायो ।
भूमि हरी चमकैं चपला अरु स्याम घटा जुरि अंबर छायो ॥
ऐसे में आवन होइ लछू अबला लखि लाल सँदेस पठायो ।
बावन को पग भो बिरहा सु अहो मनभावन सावन आयो ॥ १ ॥

६८४. लछिराम कवि, होलपुर के
(शिवसरोज)

एकै पग सोहत बिभूति सिव आभरन एकै पग जेबदार जावक भरे रहैं। एकै अंग सोहत सुकबि लछिराम कहै एकै अंग चर्म एकै बसन गरे रहैं॥ एकै नैन लाल लाल ज्वाल सों सदैव रहैं एकै नैन उज्ज्वल सों कज्जल करे रहैं। एकै कर गौरि के सु कटितट करे एकै सिवसिंह सेंगर के सिर पै धरे हैं॥ १॥

नित सासु कहै सिसुता सों भरी ननँदी रिसही सोऊ झेलती हैं।
चल चाल हैं बार भरे रज सों सिर पै उपरैनी न मेलती हैं॥
लछिराम कहै यह बैस भली पै अजौ कछु औस में वेलती हैं।
वह बाल सों बालन के गन में मिलि लालन के सँग खेलती हैं॥ २॥

आनन ओप की चोप लखे मुसकानि में आनि सुधा बरसै लगी।
छूटि गई वह सूधी चितौनि सो नैनन तीच्छनता सरसै लगी॥
द्वै परिवेष के मध्य में चारु उरोजन की गुरुता दरसै लगी।
बारन बार लटी कटि है लछिराम कहै वे छपा परसै लगी॥ ३॥

है अचलै मचलै न चलै सखि लीन्ही छलै मेहँदी लुनै जाल की।
आयो अलैते कुलै न पलै परै होत फलै मिलै सिद्धि सी लाज की॥
देखत ही धरी पाइ कै धाइ कही नहीं जाइ कथा तेहि हाल की।
ज्यों हरिनी परनी अहै जाल की त्यों गति आजु भई वहि बाल की॥ ४॥

है नहीं अंत रमै तुमसों मैं निरंतर भेद कह्यो सब जी को।
कारज कौन करै इत को उतै जाइँ लै आइयो मोहन पी को॥
क्यों न तुम्हैं उचितै लछिराम सु मारग में दुति होत है फीको।
जो हमको अति लागत नीको सोइ तुम को अति लागत नीको॥ ५॥

लाज कहै यह काम कि काम है काम कहै यह लाज निगोड़ी।
काम कहै करु नाम के कारज लाज कहै गहै मोहिं न छोड़ी॥

यों दुबिधान बिधान के बीच में मोहिं लगाइ लई इन होड़ी।
है कनकातुल बाल को अंग घटै न बढ़ै सम राखत जोड़ी ॥ ६ ॥

६८५. लेखराज कवि, नंदकिशोर मिश्र, गँधौलीवाले

(रसरत्नाकर)

सनसन डोलै पौन सनसन सूख्यो सन सनसन अंग दुख सन होत हरघरी। बनबन बीनि लीन्हो बनबन ब्यौरि ब्यौरि बनत न बरनत क्यों हूँ उर धरधरी ॥ लेखराज ऊखऊ पियूष सों बिसेस सेस राखि नाहिं अनिमेस देखि देखि करबरी। अब हरबरी सरबरी मिलैं कैसे कंत आर हरी अरहरी अरहरी अरहरी ॥ १ ॥
राति रतिरंग पिय संग सों उमंग भरि उरज उतंग अंग अंग जंबूनद के। ललकि ललकि लपटाय लाय लाय प्रेम बलकि बलकि बोल बोलत उलद के॥ लेखराज लाख लाख अभिलाख पूरे किये लोयन लखात लखि सूखे सुख खद के। दोऊ हद रद के सु देत छद रद के बिबस मैनमद के कहै मैं गई सदके ॥ २ ॥

(लघुभूषण अलंकार)

बरवै

लेस गुनौ गुन अवगुन गुन जेहि ठौर।
नैन राग ना रुचि कुचि सुचि सुकठौर ॥ १ ॥
नैन कंज सकटाच्छन नहिं मकरन्द।
स्याम स्वेत अरुनारे करत अनंद ॥ २ ॥
साँचे कमल से नैना निसिदिन फूल।
बिना नाल के लोने स्रुतिहि दुकूल ॥ ३ ॥
लेत गंगजल मुंडन खग तस हेत।
राजत गोदी संकर जन सुख देत ॥ ४ ॥

(गंगाभूषण)

अंग अंग सोभा की तरंग है सुरंग रंग धीर है उतंग संग राजत

महेस के। बंक कर चलत दलत दुख सक्र आदि चक्र से भ्रमत भौंर ठौर एक देस के ॥ एक रद धारे हैं बिदारे हैं बिघनबृन्द जन-सुखकन्द फन्द फारे महिषेस के। लेखराज केस छोरि बेस दीनता ते पेस बंदत हमेस पद गंगा औ गनेस के ॥ १ ॥

६८६. लालनदास ब्राह्मण, डलमऊवाले

दोहा—दालभि ऋषि की दलमऊ, सुरसरि तीर निवास।
तहँ दास लालन बसे, करि अकास की आस ॥ १ ॥

छंद

छल करी सुरेस नारि गौतम सों दीन्ही साप सहसरेखै।
श्रीपति घाटि कियो बिन्दा सों गे बौराय बिबिध पेखै ॥
रावन हरी जगतमाता को ताके कुल न रहे रेखै।
यह लालन कहत पुकारि घाटि जिन किया न होइ सो करि देखै॥१॥

६८७. लछिराम ब्रजवासी

पद

छबीले लाल छबि तेरी मोहिं नीकी लागति है होतन मन जी बारो रे।
भोर भये आये मेरे अँगना हौं पलकन सों पग झारो रे॥
सुख दीजै रसलीजै रैनि को हौं चित ते नेक न टारो रे।
कृष्णजीवन लछिराम के प्रभु सँग नव सत सिङ्गारो रे ॥ १ ॥

६८८. लोधे कवि

कान्ह अचानक आइ गये चितये बिन घूँघुट कैसे कै कीजै।
तौ कहतीं हम सों कछु वे इन बातन ऊपर क्यों करि जीजै ॥
लोधे कहैं हम आपुन वैसियै भावै जहाँ सो तहाँ कहि दीजै।
ढोटा पराये को नाम न छाड़हु मोहिं सों जीभ बड़ी करि लीजै ॥१॥

६८६. लोकनाथ कवि

बनबने बानिक मो बरन बरन फूले लोकनाथ ललित लतान छबि छाई है । मंजु मंजु मंजरीन गुंजत मधुपपुंज कुंजन में कोकिला की कूकनि सुहाई है ॥ होरी होरी करत किसोरी दौरी खोरी[1] खोरी गोरी चल तहाँ बलि बलि सुखदाई है । लटकि लटकि कान्ह बाँसुरी बजावत हैं एरी चलि देखिये बसंत ऋतु आई है ॥१॥

६९०. लाल (५), लल्लूजी कवि आगरे के

(सभाविलास)

दोहा—भाव सरस समुझत सबै, भले लगैं यहि भाइ ।
जैसे अवसर की कही, बानी सुनत सुहाइ ॥ १ ॥
नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात ।
जैसे बरनत जुद्ध में, रस सिंगार न सुहात ॥ २ ॥
फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय बिचारि ।
सबके मन हरखित करै, ज्यों बियाह में गारि ॥ ३ ॥

६९१. लतीफ़ कवि

चंद सों आगरी है मुख जोति बड़े अति नैन समासम[2] दोऊ ।
मूँदत हाथ में आवत नाहिंन कैसे कै जाय छिपै कहौ कोऊ ॥
मावस रैनि की पूनो करै कल थोरक सो मुख खोलत सोऊ ।
देखि लतीफ यहै ब्रजबाल सु आवत री यह खेल के खोऊ ॥ १ ॥
सब रैनि जगी हरि के सँग राधिका बासर[3] बास[4] उतारति है ।
अतिआलसवन्त जम्हाति तिया अँगिराति भुजान पसारति है ॥
सरकी अँगिया जु हरे रँग की सु लतीफ महा छबि पारति है ।
मनु है जो पुरैनि[5] के पातन में उरझो चकवा तेहि टारति है ॥२॥

---

१ गली-गली । २ सम-विषम । ३ दिन । ४ वस्त्र । ५ कमल ।

६६२. लाला पाठक कवि

(शालिहोत्र)

दोहा—सुमिरि राम के जलजपद, बिधि बंदौं कर जोरि ।
दीरघ पच्छ तुम्हार प्रभु, अल्प बुद्धि अति मोरि ॥ १ ॥

६६३. लक्ष्मणशरणदास

पद

श्रीबल्लभ पुरुषोत्तमरूप ।
सुन्दर नयन बिसाल कमलरँग मुख मृदु बोल अनूप ।
कोटि मदन वारौं अँगअँग पर भुज मृनाल अति सरस सरूप ॥
देवीजी बड़धारन प्रगटी दास सरन लछिमनसुत भूप ॥ १ ॥

६६४. लाल साहब, महाराज त्रिलोकीनाथसिंह, द्विजदेव, महाराज मानसिंह बहादुर के भतीजे और जाँनशीन, भुवनेश कवि

(भुवनेशभूषणग्रन्थ)

भुवनेस गुलाब से गातन पै नित नैनन ते जल सों झरि हैं ।
चकै चित्त चकोरन हू चुगि कै बिरहानल-ज्वाल सबै हरि हैं ॥
घनस्याम प्रवास[1] चले तो चलो सिख यों हम लै चित में धरि हैं ।
करि है छल जो पै मनोज अहो तो कहो हम कौन दवा करि हैं ॥ १ ॥
समता भ्रमता में परी ही रहैं अवलोकि छटा उन नैनन की ।
सरसात ससी दुति सुन्दरता लहि हैं छबि लाजि सरोजन की ॥
भुवनेस सबै बिधि ये तो सुरंग कुरंग[2] गहै सरि क्यों इनकी ।
इन पानिप को लहि मीनहु के गन आस करैं निज जीवन[3] की ॥ २ ॥

आये नहिं कंत होन चाहै रजनी को अंत सोवति सयानी चंद मन्दहि पिछानि कै । उससि उसासु आँसु मोचिं[4] सोचि लोचन ते ती तन में छाये दुख दीरघ मसानि कै ॥ सकुचि सहेलिन सों सोई भुवनेस इमि ढाँपि लीन्हो अंग अंग सारी सुभ्र[5] तानिकै ।

---

१ परदेश । २ मृग । ३ जल और ज़िंदगी । छोड़कर । ५ सफ़ेद ।

मानो करि हीर कोक कीर मृग इन्दु अहि बाँधि राख्यो जालदार पींजरे में आनि कै ॥ ३ ॥

६६५. वाहिद कवि

सुन्दर सुजान पर मन्द मुसकान पर बाँसुरी की तान पर ठौरहि ठगी रहै। मूरति बिसाल पर कञ्चन की माल पर खंजन सी चाल पर खौरन खगी रहै ॥ भौंहैं धनु-मैन पर लोने जुग नैन पर सुद्ध रस बैन पर वाहिद पगी रहै। चञ्चल से तन पर साँवरे बदन पर नन्द के नँदन पर लगन लगी रहै ॥ १ ॥

६६६. श्रीपति कवि, पयागपुरनिवासी

जलभरे झूमैं मनो भू मैं परसत आइ दसहू दिसान घूमैं दामिनि लये लये। धूरिधारधूसरित धूमसे धुधारे कारे धारे धुरवान धावैं छबि सों छये छये ॥ श्रीपति सुजान कहै घरी घरी घहरात तावत अतन तन ताप सों तये तये। लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी अब कादर करत मोहिं बादर नये नये ॥ १ ॥ मदमई कोयल मगन है करत कूकैं जलमई मही पग परते न मग में। बिज्जु नाचै घन में बिरह हिय बीच नाचै मीचु नाचै ब्रज में मयूर नाचैं नग में ॥ श्रीपति सुकबि कहै सावन सुहावन में आवन पथिक लागे आनँद भो अँग में। देह छायो मदन अछेह[1] तम छिति छायो मेह छायो गगन सनेह छायो जग में ॥ २ ॥

(काव्यसरोज)

फूलन के मग में परत पग डगमगै मानो सुकुमारता की बेलि बिधि बई है। गोरे गरे बसत लसत पीक-लीक नीकी मुख-ओप पूरन छपेस[2] छबि छई है ॥ उन्नत उरोज औ नितम्बभार श्रीपतिजू टूटि जानि परै लंक[3] संक चित भई है। या ते रोममाल मिस मरग छरी दै त्रिबली की डोरि गाँठि काम बागबान दई

---

१ अभेद्य अंधकार। २ चंद्रमा। ३ कमर।

है ॥ ३ ॥ कामिनी सदन गजगामिनी बिलोकि आई दा[1]-
मिनी न पाई गो गुराई गोरे गात सी । बिधु मानसर ते सरद
ससि कर तर सेस के मुकुर ते अधिक अवदात सी ॥ श्रीपति
सुजान परखत हरखत मन नैन को सितासित सरोज नव
बात सी । जाही हारि जात सी जुही बिदारि जात सी बिकास
खारिजात सी सुबास पारिजात सी ॥ ४ ॥ रारि जात आलि कोने
वारिन की आरि जात लागि जात सहज बयारि जाके तन की ।
श्रीपति सुजान जाही-जूथिका[2] बिदारि जात महिमा बिगारि जात
पारिजात-बन की ॥ झारि जात मालती गुलाब मद मारि जात
सौरभ उतारि जात केतकी सघन की । वारि जात तगर अगर धूप
हारि जात राह पारिजात पारिजात के सुमन की ॥ ५ ॥ बारि
जात पारिजात पारिजात हारि जात मालती बिदारि जात सौंधेन
की झरी सी । माखन सी मैन सी मुरार मखमल सम कोमल सरस
तरु फूलन की छरी सी ॥ गहगही गरुई गुराई गोरी गोरे गात
श्रीपति बिलौर-सीसी ईंगुर सों भरी सी । बिज्जु थिर धरी सी
कनकरेख करी सी प्रबाल दुति हरी सी लालित लाज-लरी सी॥ ६ ॥
गोरी महा भोरी तेरे गात की गुराई देखि दिन दिन दामिनी की
छाती होत धुँधुआ[3] सी । श्रीपति कमल की कसानी मखमल की बद-
खसानी लाल की ललाई लागै मुँआ सी ॥ मोम निदरत सोमकर
को हरत जोम रोमरोम छुरत छपायेन की छुआ सी । सुखमा को
ऐनमई हीतलको चैनमई पी-मन को मैनमई नैनन को सुआ[4] सी॥ ७॥
एहो ब्रजराज एक कौतुक बिलोको आज भानु के उदै में बृषभानु
के महल पर । बिन जलधर बिन पावस गगन धुनि चपला चमंकै
चारु घनसार थल पर ॥ श्रीपति सुजान मन मोहत मुनीसन के

१ बिजली । २ जाही जूही के फूल । ३ धकधक । ४ द्युखे ।

सोहै एक फूल चारु चञ्चला[1] अचैल[2] पर । तामैं एक कीर चौंच दाबे है नखत जुग सोभित है फूल स्याम लोभित कमल पर ॥८॥ घनसार दीपकसिखा सी चपला सी चारु चंपकलता सी नव भानु की बिभा सी है । नयन चकोरन को सींचत सुधा सी कलानिधि की कला सी मुखसुखमा प्रकासी है ॥ लखि ललचान्यो रूप करत बखान जान्यो श्रीपति सुजान कासीनगर-निवासी है । सम्भु सालिका सी सुरपाल बालिका सी बाल लालमालिका सी हरतालिका उपासी है ॥ ९ ॥ तेल नीको तिल कोऽजमेर को फुलेल नीको साहिब दलेल नीको सैल नीको चन्द को । बिद्या को बिबाद नीको रामगुननाद नीको कोमल मधुर सदा स्वाद नीको कन्द को ॥ गऊ-नवनीत[3] नीको जेठ ही को सीत नीको श्रीपतिजू मीत नीको बिना फरफन्द को । जातरूप-घट[4] नीको रेसमको पट नीको बंसीबट-तट नीको नट नीको नन्दको ॥ १० ॥ चोरी नीकी चोर की सुकबि की लबारी नीकी गारी नीकी लागती ससुरपुर-धाम की । नाहीं नीकी मान की सयान की जबान नीकी तान नीकी तिरछी कमान नीकी काम की ॥ तात हू की जीति नीकी निगम प्रतीति नीकी श्रीपतिजू प्रीति नीकी लागै हरिनाम की । रेवा नीकी बान खेत मुँदरी सुठेवा नीकी मेवा नीकी काबुल की सेवा नीकी रामकी ॥ ११ ॥ ताल फीको अजल कमल बिन जल फीको कहत सकल कबि हबि फीको रूम को । बिन गुन रूप फीको ऊसर को कूप फीको परम अनूप भूप फीको बिन भूमि को ॥ श्रीपति सुकबि महाबेग बिन तुरी फीको जानत जहान सदा जोह फीको धूम को । मेह फीको फागुन अबालक को गेह फीको नेह फीको तिय को सनेह फीको सूम को ॥ १२ ॥

---

१ बिजली । २ स्थिर । ३ गऊ का मक्खन । ४ सोने का घड़ा ।

नेम बिना नित आनँद में परतन्त्र नहीं कछु पार न पावै।
नौ रस[1] जामें सबै मधुरे द्विज श्रीपति यों ही कहा जस गावै॥
नेसुक नाहीं डरै जम सों इन भाँतिन के गुन केते गनावै।
बानीमई तिहुँ लोक रचै कबिराज बिरञ्चि को सीस नवावै॥१३॥

छोहिनी अठारा दल बाजे बाजे रावन के पूत भूत नाती केते भूतन को खाइ गे। नव लाख गाइ ब्याइ तासों कहै एक नन्द ऐसे नव नन्द उपनन्दहू हेराइ गे॥ श्रीपति भनत माया गिरिधरलाल-जू की लेत देत बार ना बजार ऐसी लाइ गे। सौ भये तिमिर के सगर के सहस साठि छप्पन करोरि जादौ छन में सिराइगे॥ १४॥ सारस के नादन को बाद ना सुनत कहूँ नाहक ही बकवाद दादुर महा करैं। श्रीपति सुकबि जहाँ ओज ना सरोजन को फूलै नाफ फूल जाहि चित्त दै चहा करैं॥ बकन की बानी की बिराजत है राजधानी काई सों कलित पानी हेरत हहा करैं। घोंघन के जाल जामें नरई सेवार व्याल ऐसे पापी ताल को मराल लै कहा करैं॥ १५॥ कैसे रतिरानी के सिंधौरा कवि श्रीपतिजू जैसे कलधौत के सरोरुह सँवारे हैं। कैसे कलधौत के सरोरुह सँवारे कहि जैसे रूप नट के बटा से छवि ढारे हैं॥ कैसे रूप नट के बटा से छबि ढारे कहि जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं। कैसे काम भूपति के उलटे नगारे कहि जैसे प्रानप्यारी ऊँचे उरज तिहारे हैं॥ १६॥ फेन सो फटिक सो फनीस सो फिरत फूलो सुजस तिहारो राम फूलो कुन्दफूल सो। तार सो तुपार सो तपोबल सो तीरथ सो तारा सो तमीपति सो तूलिका सो तूल सो॥ श्रीपति महामुनीसमन सो मराल सो मरालजानमान सो मनोजतरुमूल

---

१ नवरस-शृंगार, वीर, करुणा, रौद्र, भयानक, वीभत्स, शांत, अद्भुत, हास्य।

सो। गौरी सो गिरा सो गजबदन गदाधर सो गंगा सो गऊ सो गंगधारा सो गधूल सो ॥ १७ ॥

६९७. सरदार कवि बनारसी

(साहित्यसरसी)

संग की सहेली रहीं पूजत अकेली सिवा तीर जमुना के वीर चमक चपाई है। हौं तौ आँई भागत डरत हियरा ते घेरे तेरे सोच करी मोहिं सोचित सवाई है ॥ बचि हैं बियोगी जोगी जानि सरदार ऐसी कएठ ते कलित कूक कोकिल कढाई है। बिपिनसमाज में दराज सी अवाज होत आज महाराज ऋतुराज की अवाई है ॥ १ ॥

बैठति आपु खुसी खिरकी खनहू-खन हेरि हरा हलरावै।
जो सरदार बँधो सुक बाहिर ताहि पके फल खोलि खवावै ॥
सासु पतिब्रत की चरचा चित दै चतुराइनि मोहिं सिखावै।
रोखभरी अँखियाँ करिकै ननदी किमि आपु झुकै झँपि जावै ॥

राजकाजका में है न साजसाजका में मन्त्रतन्त्रलाजका में है न जन्त्रसाधिका में है। बेदकाँधिका में है न भेद बाधिका में सरदार नाधिका में नाहीं ध्यानलाधिका में है ॥ बासआसिका में ना प्रकासपासिका में सदा हासरासिका में है न साँसबाधिका में है। ज्ञानधारिका में है न कामकारिका में है जो कान्ह द्वारिका में है, पै सदा राधिका में है ॥ २ ॥

वा दिन ते निकसो ना बहोरि[2] कै जा दिन आगि दै अंदर पैठो।
हाँकत हूँकत ताकत है मन माखत मार-मरोर उमैठो ॥
पीर सहौं न कहौं तुम सों सरदार बिचारत चार कुठैठो।

१ बन। २ फिर।

ना कुच कंचुकी छोरी लला कुच कन्दर अन्दर बन्दर बैठो ॥ ४ ॥
वे थिर की बतियाँ कहि कै थिर जे थिरकी कहि वे थिर की हैं।
वे खिरकी खिरकीन बतावत कै खिरकी खिरकी खिरकी हैं॥
ये सरदार सुनैं सबरी नवरी नवरी नवरी टरकी हैं।
वे घर की घर की न बिचारत ये परकी पर[1]की परकी हैं॥ ५ ॥

(रसिकप्रिया-तिलक)

दोहा—बास ललितपुर नन्द है, हरिजन को सरदार।
बन्दीजन रघुनाथ को, पालत पवनकुमार ॥ १ ॥

छप्पै

सरस सुजस-ससि उदित होइ दिनरैनि प्रकासित।
मारतँ[2]ण्ड उद्दंड तेज ब्रह्मण्ड बिलासित ॥
पंचदेव परिपूर क्रिया दृगकोर निहारे।
दुसमन दावादार पाँइ पर सीस सुधारे ॥
सरदार सुच्छ अतलच्छ गृह अच्छ अच्छ क्रीड़ा करो।
पुत्रन समेत ईस्वर नृपति सीस बिप्र आसिष धरो ॥ १ ॥

६६८. सूरदासजी
(सूरसागर)

पद

देखे री मैं प्रकट द्वादस मीन।
षट इन्दु द्वादस तरनि सोभित बिम्ब उडु[3]गन तीन ॥
दस-अष्ट अम्बुज कीर षट्मुख केकिला सुर एक।
दस द्वै जु बिद्रु[4]म दामिनी षट ब्याल तीनि बिसेक ॥
त्रिबलि पर श्रीफल बिराजत उर परस्पर नारि।
ब्रजकुँवरि गिरिधरकुँवर पर सूर जन बलिहारि ॥ १ ॥

---

१ परकीया। २ सूर्य। ३ नक्षत्र। ४ मूँगा।

(सूरविनय)

आप को आपनही बिसरो ।
जैसे स्वान[1] काँच के मंदिर भ्रमि-भ्रमि भूकि मरो ॥
ज्यों केहरि प्रतिमा के देखत बरबस कूप परो ।
तैसे ही गज फटिकासिला सों दसनानि आनि करो ॥
मरकट[2] मूठि छोड़ि नहिं दीन्ही घर घर द्वार फिरो ।
सूरदास नलिनी के सुवना कहु कौने पकरो ॥ २ ॥
दोहा—सुंदर पद कवि गंग के, उपमा को वरवीर ।
केसव अर्थगँभीर को, सूर तीनि गुन तीर ॥ १ ॥
तन समुद्रसम सूर को, सीप भये चख लाल ।
हरि मुकुताहल परत ही, मूँदि गयो ततकाल ॥ २ ॥

६९९. सन्तदास ब्रजवासी

पद

माई कौन गोप के ये दोउ नागर ढोटा ।
इनकी बात कहौं सखि तोसों गुनन बड़े देखन को छोटा ॥
अग्रज[3] अनुज[4] सहोदर जोरी गौर स्याम ग्रंथित सिर चोटा ।
संतदास बलि बलि मूरति पर लला ललित सबही विधि मोटा ॥ १ ॥

७००. श्रीधर कवि (१)

श्रीधर भावते प्यारी प्रवीन के रंगरँगे रति साजन लागे ।
अंग अनंग-तरंगन सों सब आपने आपने काजन लागे ।
किंकिनि पायल पैंजनियाँ बिछिया घुँघुरू घन गाजन लागे ॥
मानो मनोज महीपति के दरबार मरातिब[5] बाजन लागे ॥ १ ॥

७०१. श्रीधर (२) राजा सुब्बासिंह, ओयल के

(विद्वन्मोदतरंगिणी)

कारन भाव को भाव को रूप नवौ रस पूरन कै दरसायो ।

---

१ कुत्ता । २ बंदर । ३ बड़ा भाई । ४ छोटा भाई । ५ नौबत ।

नाइका दूती रसौ मिलि तातु इन्हैं करि न्यारोई भेद बनायो ॥
जन्य पिता अवरोध बिरोध औ दृष्टि सबै रसाभास जनायो ।
बिद्वनमोदतरंगिनि श्रीधर आनँदखानि बखानि बनायो ॥ १ ॥
जा मुखकी दुति दीप ते सौगुनी दामिनी कुंदन केसरि आइका ।
काम की खानि सदा मृदु बानि सनेह छकी छिति में छबिछाइका ॥
अंग अनूपम को बरनै सब अंगन प्रीतम को सुखदाइका ।
मानो रची बिधि मूरति मोहनी श्रीधर ऐसी सराहत नाइका ॥२॥

७०२. श्रीधर मुरलीधर कवि (३)
(कविविनोद पिंगल)

दोहा—श्रीधरमुरलीधर सुकबि, मानि महा मन मोद ।
कबि बिनोदमय यह कियो, उत्तम छंदबिनोद॥ १ ॥
श्रीधरमुरलीधर कियो, निज मति के अनुमान ।
कबिबिनोद पिंगल सुखद, रसिकन के मन मान ॥ २ ॥

७०३. सूदन कवि

दंतिन[1] सों दिग्गज दुरंदर दबाइ दीन्हे दीपति दराज चारु घंटन के नद हैं । सुंडन झपट्टि कै उलट्टत उदग्ग गिरि पट्टत समुद्दबल किम्मति बिहद्द हैं ॥ सूदन भनत सिंह-सूरज तिहारे द्वार झूमत रहत सदा ऐसे बझकद्द हैं । रद्द करि कज्जल जलद[2] से समद्दरूप सोहत दुरद्द जे परद्दलदलद्द[3] हैं ॥ १ ॥ एकै-एक सरस अनेक जे निहारे तन भारे लाल भारे स्याम कामप्रतिपाल के । चंग लौं उड़ायो जिन दिल्ली को वजीर भीर मारि बहु मीरन को किये हैं बिहालके ॥ सिंह बदनेस के सपूत यों सुजानसिंह सिंह लौं झपटि नख कीन्हे किरबाल के । वेई पठनेटे मेलि साँगन खखेटे भूरि धूरि सों लपेटे लेटे भेटे महा-काल के ॥ २ ॥ सेलन धकेला ते पठानमुख

---

१ हाथी । २ बादल । ३ शत्रुदलके दलनेवाले ।

मैला होत केते भट मेला है भजाये भ्रुव भंग में। तंग के कसे ते तुरकानी सब तंग कीन्ही दंग कीन्ही दिली औ दुहाई देत बंग में॥ सूदन सराहत सुजान किरवान गहि धायो धीर धारि बीरताई की उमंग में। दक्खिनी पछेला करि खेला तैं अजब खेल हेला करि गंग में रुहेला मारे जंग में॥ ३॥

७०४. सेन पति कवि, वृन्दावनवासी

(काव्यकल्पद्रुम)

दूरि जदुराई सेनापति सुखदाई ऋतु पावस की आई न पठाई प्रेम पतियाँ। धीर जलधर की सुनत धुनि धरकी सो दरकी सुहागिनि की छोहभरी छतियाँ॥ आई सुधि बर की हिये में आइ खरकी सुमिरि प्रानप्यारी वह प्रीतम की वतियाँ। भूली औधि आवन की लाल मनभावन की डग भई बावन की सावन की रतियाँ॥ १॥ गोरस न साधे राखै वरन बिवेक ही सों पद को भरोसो राखै काम करै तीर को। निसा पाइ नीक ही प्रबंध करै नेम ही सों दोहा करि कृति को बखानै बलबीर को॥ पत्र लै कै प्रगट करै है पृथु पालना को सेनापति सुकबि बिचारै मतिधीर को। कीन्हों है कबित्त कबिराज महाराजन को ऋषि को कहत कोऊ कहत अहीर को॥ २॥ फूलन सों बाल की बनाय गुही बेनी लाल भाल दीन्ही बेंदी मृगमद की असित है। अंग अंग भूषन बनाये ब्रजभूषनजू बीरी निज कर सों खवाई करि हित है॥ है कै रसबस जब दीबे को महाउर के सेनापति स्याम गह्यो चरन ललित है। चूमि हाथ लाल को लगाय रही आँखिन सों एहो प्रानप्यारे यह अति अनुचित है॥ ३॥ धातु सिला दारु निरधारु प्रतिमा को सारु सो न करतारु है बिचारु बीच गेह रे। राखि

---

१ बादल।

दीठि अंतर[1] जहाँ न कछु अंतर[2] है जीभ को निरंतर[3] जपावत हरे हरे।।अंजन बिमल सेनापति मनरंजन दै जपिकै निरंजन परम पद लेह रे। करि न सदेह रे वही है मन देहरे कहा है बीच देहरे कहा है बीचदेह रे।।४।।

७०५. सूरति मिश्र आगरानिवासी

खरी होहु ग्वालिनि, कहा जु हमैं खोटी देखी, सुनौ नेकु बैन, सो तौ और ठाउँ जाइये। दीजै हमै दान, सो तौ आजु ना परब कछू, गोरस दे, सो रस हमारे कहा पाइये।। मही दीजै दीजै, सो तौ देहै महि-पति कोऊ, दही दीजै, दहे हौ तौ सीरो कछू खाइये। सूरति सुकबि ऐसे सुनि हरि रीझे लाल लीन्ही उर लाय सोभा कहाँ लगि गाइये ।। १ ।।

(अलंकारमाला)

दोहा—तड़ि घन बपु घन तड़ि बसन, भाल लाल पख मोर ।
ब्रजजीवन मूरति सुभग, जय जय जुगलकिसोर ।। १ ।।
सूरति मिस्र कनौजिया, नगर आगरे बास ।
रच्यो ग्रंथ नव भूषनन, बलित बिवेकबिलास ।।
संबत सत्रह सै बरस, छाँसठि सावन मास ।
सुरगुरु सुदि एकादसी, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास ।। २ ।।

७०६. श्रीधर कवि (४)

(भवानी छंद)

छप्पै

नारायन नर अमर बीर बिसहुर थिर थाप्यो ।
बिबिध[4] दीर्घ पर दान सक्ति सासन सचि आप्यो ।।
जय जयकार जगत्रि उदय उच्चरी अगोचरि ।
सब्द पंच पच्छंदि धवल मंगल सचराचरि ।

---

१ भीतर । २ फ़र्क़ । ३ लगातार । ४ तरह-तरह के ।

आनदरूप अविगति हवी सोऽय सून्य मंडल धनी ॥
साधीरबंस श्रेष्ठसुरथ मार्कंडेमुनि बर्नेनी ॥ १ ॥

७०७. सुखदेव (३)

प्रान दिलीपति केरे लिये दिये भालन मारु दई अरिजालहि ।
दारिद दीन्हो सबै द्विजलोगन निर्भयदान दियो कलिकालहि ॥
अंतरबेद को देह दई दतिया को बियोग दियो तिहि कालहि ।
राज दियो भगवंत महीप को माथ दियो अपनो हरमालहि ॥ १ ॥
भानु प्रभा बिन जैसे सरोज सरोज बिना गति ज्यों सरसी[१] की ।
ज्यों रजनीस[२] बिना निसि को रजनीस बिना निसि लागत फीकी ॥
धौहरा[३] ज्यों बिन देव हरा बिन ज्यों छतिया औ तिया बिन पी की ।
त्यों भुवकंत बिना भगवंत लगै सब अंतरबेद न नीकी ॥ २ ॥

७०८. सुखदेव मिश्र (२) दौलतपुरवाले

मीन की बिछुरता कठोरताई कच्छप की हिये घाय करिबे को कोल ते उदार हैं । बिरह बिदारिबे को बली नरसिंहजू सों बामन सों छली बलदाऊ अनुहार हैं ॥ द्विज सों अजीत बलबीर बलदेव ही सों राम सों दयाल सुखदेव या बिचार हैं । मौनता में बौध कामकला में कलंकी चाल प्यारी के उरोज ओज दसौ अवतार हैं ॥ १ ॥ मंदर महेंद्र गंधमादन हिमालै सम जिन्हैं चल जानिये अचल अनुमान ते । भारे कजरारे तैसे दीरघ दँतारे मेघमंडल बिहंडैं जे वै सुंडादंड ताने ते ॥ कीरति बिसाल छितिपाल श्रीअनूप तेरे दान जो अमान का पै बनत बखाने ते । इतै कबिमुख जस-आखर खुलत उतै पाखर-समेत पील खुलैं पीलखाने ते ॥ २ ॥

(रसार्णव)

लरिकाई के खेल छुटे न बनाइ अजौं न मनोज के बान लगे ।

---

१ तालाब । २ चंद्रमा । ३ मंदिर ।

तरुनापन[1] आयो नहीं सजनी तरुनीन के बैन सुहान लगे ॥
हरि को हैं कहाँ के हैं कौन के हैं ये बखान कछूक हितान लगे ।
अब तो तिरछे चलि जान लगे दग कान लगे ललचान लगे ॥१॥

दोहा—कानन टूटैं बिघन के, जानन के यह ज्ञान ।
कज आनन की जाति मिटि, गजआनन के ध्यान ॥ १ ॥
मरदनराउ-निदेस को, सादर सीस चढ़ाय ।
मिस्र सुकबि सुखदेव ने, दीन्हो ग्रंथ बनाय ॥ २ ॥

७०६. श्रीसुखदेव मिश्र (१) कंपिलावासी

(वृत्तविचार पिंगल)

छप्पै

रजत[2]-खंभ पर मनहुँ कनक[3] जंजीर बिराजति ।
बिसद[4] सरद-घन मध्य मनहुँ छनदुति[5]-छबि छाजति ॥
मानहुँ कुंद कदंब मिलित चंपक प्रसून-तति ।
मनहुँ मध्य घनसार लसति कुंकुम लकीर अति ॥
हिमगिरिपर मानहुँ रबिकिरन इमि तियबर अरधंग महँ ।
सुखदेव सदासिव मुदित मन हिम्मतिसिंह नरिंद कहँ ॥१॥

(फ़ाजिलअलीप्रकाश)

त्रिभंगी छंद

जय जय गननायक सिद्धि बिनायक बुद्धि बिधायक भयहरनं ।
जय जय खलदाहन बिघन-बिगाहन मूषकबाहन जनसरनं ॥
जय जय गुनआगर सब सुखसागर अवनि उजागर दुवन दमो ।
जय जय जगबंदन कलिमलकन्दन गिरिजानन्दन नमो नमो ॥ १ ॥

दोहा—जेती पर पृथु रथ फिस्यो, जेती धरी फनीस ।
तेती जीती अवनि है, औरँगजेब दिलीस ॥ १ ॥

---

१ जवानी । २ चाँदी । ३ सुवर्ण । ४ उज्ज्वल । ५ बिजली ।

दाता ज्ञाता सूरमा, सुमति इनाइतिखान ।
अति फ़ाजिल फ़ाजिलअली, तिन के भये सुजान ॥ २ ॥
रची कपिल मुनि कंपिला, बसत सुरसरी-तीर ।
निसि दिन जा में देखिये, कबि कोबिद की भीर ॥ ३ ॥
अलहयार खाँ भुज बली, सुमति सूर-सिरताज ।
जिन्हैं दियो कबिराज-पद, बड़े गरीबनेवाज ॥ ४ ॥

७१०. शिवसिंह प्राचीन (१)

हौं जमुना जल जात अचानक बानक सों नँदलाल ठई ।
तब दौरि धस्यो कर सों कर को उर लाइ लई जनु निद्धि पई ॥
सिवसिंह जहीं परस्यो कुच को तुतुराइ कह्यो अब छोड़ु बई ।
भुज ते निबुकाइ गुपाल के गाल में आँगुरी ग्वारि गड़ाइ गई ॥१॥

७११. शिवसिंह सेंगर काँथानिवासी, ग्रन्थ के कर्त्ता (२)

पियो जब सुधा तब पीबे को कहा है और लियो सिवनाम तब लेइबो कहा रह्यो । जान्यो निज रूप तब जानै को कहा है और त्याग्यो मन आसा तब त्यागिबो कहा रह्यो ॥ भनै सिवसिंह तुम मन में बिचारि देखो पायो ज्ञान-धन तब पाइबो कहा रह्यो । भयो सिवभक्त तब ह्वैबे को कहा है और आयो मन हाथ तब आइबो कहा रह्यो ॥ १ ॥ महिष से मारे मगरूर महिपालन को बीज से रिपुन निरबीर भूमि कै दई । सुम्भ औ निसुंभ से सँहारि झारि म्लेच्छन के दिल्लीदल दलि दूनी दरबिन लै लई ॥ प्रबल प्रचण्ड भुजदण्डन सों गहि खग्ग चण्ड मुण्ड खलन खलाइ खाक कै गई । रानी महारानी हिंद लन्दन की ईस्वरी तैं ईस्वरी समान प्रान हिंदुन की ह्वै गई ॥ २ ॥ सिंह से पछारे सिख स्याही सम पेसवान स्यार से सिराज भेड़ियान सी

---

१ पाई ।

हबसभीर। चीता सम चीनी औ बराह से रुहेले हेले करी से वजीरी लोमरीन से पठान, मीर॥ रोज से फिरोज ओज मौज हरि रूसिन की रीछ से तुरुक काक काबुली फरांस बीर। तेरे तेज तरनि तरुन को निहारि सकै साह कै वजीर कै मुसीर कै देवीर भीर॥ ३॥ चीनी चापि डारे भूनि डारे भूटियान भट पीसि डारे पेसवा सिराज सैन संहरी। मीरखान मारि कै सिराइ दीन्हे सिक्खन को हरि कै रुहेलन सु हेलन पै हुंकरी॥ पानी बिन कीन्हे हैं जपानी रूसी रोस हेरि हबसी हराये रूम साम हाम पै अरी। छाँहैं हिंदुवान की पनाहैं साहसाहन की जगनिरबाहैं बाहैं तेरी हिंदसंकरी॥ ४॥ टीपू को दिमाक मीरखान को दिमाक तुरकान तुमतराक हाँक-धाँक है दरीन की। नाजिम निजामति सुजाइति सुजाइदौला हिम्मत हबस वीरताई बबरीन की॥ सिक्खन की सेखी कारसाजी निज सेनन की रूसिन की रिस दगाबाजी दर्दरीन की। तेरे मारतंड तेज अखिल[1] अनूप[2] आगे आब इसकंदरी न ताब बाबरीन की॥ ५॥ खान खुरासान[3] के खिलति पाय खूब खुस काबुल के कामदार कीरति कहा करैं। अरब इरानी तुहरानी इस्पहानी खानी तेरी महारानी सौंह भौंहनि चहा करैं॥ रूम रूस तूस फिरँगाने औ सकल हूस तेरे धूमधाम के धमाकन सहा करैं। ना करे निवाह कहाँ हाँकरे पनाह कहाँ याते नरनाह सब हाजिर हहा करैं॥ ६॥ कहकही काकली[4] कलित कलकंठन की कंजकली कालिंदी कलोल कहलन में। सेंगर सुकबि ठंड लागती ठिठुरवारी ठाठ सब ठये ठगि लेते टहलन में॥ फहरैं फुहारे फाबि रही सेज फूलन सों फेन सी फटिक चौतरा के

---

१ संपूर्ण। २ चमक। ३ एक देश। ४ कोकिला।

पहलन में। चाँदनी चमेली चम्पा चारु फूलबाग बीच बसिये बटोही मालती के महलन में ॥ ७ ॥

७१२. शिव कवि (१) अरसेला बंदीजन, देवनहावाले

(रसिकविलास)

मंद मंद चालि कै अनंद नंदनंद पास अँगिया के बंद बार बार तरकत हैं। बतियाँ रसाल बर बाल हँसि हँसि कहै हीरा होत जात लाल पन्ना मरकत[1] हैं॥ कहै सिव कबि ऐसे तकि कै तमासे तनि कौतुक सखीन के हिये सों सरकत हैं। जहाँ जहाँ मग माहिं पग देत तहाँ तहाँ रुचिर कुसुंभ के से कुंभ ढरकत हैं॥ १ ॥

(अलंकारभूषण)

गोरी की हथोरी सिव कबि मेंहदी को बिंदु इंदुती[2] को गन जा के आगे लगै फीको है। अँगुठा अनूप छाप मानों ससि आयो आप करकंज के मिलाप पात तजि ही को है॥ आगे और आँगुरी अँगूठा नीलमनिजुत बैठो मनों चोप भरो चेंटुवा[3] अली को है। दबि कै छला सों कोमलाई सों ललाई[4] दौरि जीतत चुनी को रंग छोर छिगुनी को है॥ १ ॥

(पिंगल)

तोटक छंद

कटि देखि महा जु रही लटि है।
कुचभारन सों न परै छटि है॥
त्रिबली मिसु मैन कसी थटि है।
यह कुंदन की रसरी बटि है॥ १ ॥

७१३. शिव कवि (२) भाट बिलग्रामी

(रसनिधि)

सापने में आयो सुख साँवरो सलोनो वह निज अंग आगे जो

---

१ नीलम। २ बीरबहूटी। ३ बच्चा। ४ बहाने।

अनंगहि लजायो है। मोहनी सी बातैं कहि कहि गहि गहि बाँह हँसि हँसि हरष हजार उपजायो है ॥ सिव कबि कहै मो पै कह्यो ना परत कछू बिरह दुसह दुख नेक न भजायो है। जौ लगि हिये में मैं लगाऊँ री रसिकराउ तौ लगि बजरमारे गजर बजायो है ॥ १ ॥

७१४. शिवप्रसाद सितारेहिन्द बनारसी

(भूगोलहस्तामलक, इतिहासतिमिरनाशक)

केते भये जादव सगरसुत केते भये जात हू न जाने ज्यों तरैयाँ परभात की। बलि बेनु अंबरीष मानधाता पहलाद कहिये कहाँ लौं कथा रावन जजात की ॥ वेहू ना बचन पाये काल कौतुकी के हाथ भाँति भाँति सेना रची घने दुखघात की। चार चार दिना को चवाव सब कोऊ करौ अंत लुटि जैहै जैसे पूतरी बरात की॥१॥

दोहा—इत गुलाम इत अलतमस, इतहि महम्मदसाह।
इतहि सिकन्दर सारिखे, बहुतेरे नरनाह ॥ १ ॥
जे न समाये बाहुबल, अटॅक-कटक के बीच।
तीन हाथ धरती तरे, मीचु किये अब नीच ॥ २ ॥

७१५. शिवनाथ कवि

(रसरंजन)

नाचि नट नटी लोहू पिये घटघटी रन ऐसी अटपटी सिवनाथ सिरतेस की। कौन सिर आड़ी होति काहू सों न आड़ी होति काहू सों न आड़ी होति चाँड़ी होति देस की ॥ झमकैं झिलिम सत्रु भाजैं दीप-दीपन के लचै छन माहँ मद गब्बर नरेस की। अरिन पै करि कोप काटत झिलिम टोप सुजस को कोस देति धोप जगतेस की ॥ १ ॥ आब छिरकाइ दे गुलाब कुंद केवरा में चंपक चमेली चोप चाँदनी निवारी में। जुही सोनजुही जाही

१ नक्षत्र। २ एक नदी।

चंदन कदंब अंब सेवती समेत बेला मालती पियारी में ॥ सिवनाथ बाग को बिलोकिबो न भावै हमैं कंत बिन आयो री बसंत फुलवारी में । भागि चलौ भीतर अनार कचनारन में आगि लगी बावरी गुलाला की कियारी में ॥ २ ॥

दोहा—त्रिबिध महामायामई, तीनि भेद परकास ।
स्वीया परकीया कही, पुरजोपिता बिलास ॥ १ ॥
तीनौ के भेदन रहे, तीनि लोक परिपूरि ।
इनहीं ते उपजत जगत, यही सजीवनमूरि ॥ २ ॥

७१६. शिवराम कवि

मीना के महल में बिराजै राधे सिवराम देखत प्रभा के भये भानु अस्त भूतिया । रतन अभूषन की कुंडली ते मानौ कढ़ी चौंगुनी चटक चारु चंद्रिका अकूतिया ॥ चरचि चुकानो चकचौंधो घट्ट चढ़ि आयो चरन बिलोकि चौंको सत चित दूतिया । ऊपर लखत ग्यारा गिर्यो गगनाइ गुनि चौदहौ कला को भूलि बन्यो चन्द्र चूतिया ॥ १ ॥

७१७. शिवदास कवि

जैसे फल झरे को बिहंग छाँड़ि देत रूख भुवा देखि सुवा छोड़ै सेमर की डार को । सुमन सुगंध बिन जैसे अलि छाँड़ि देत मोती नर छाँड़ि देत जैसे आबदारको ॥ जैसे सूखे ताल को कुरंग छाँड़ि देत मग सिवदास चित्त फाटे छाँड़ि देत यार को । जैसे चक्रबाक देस छाँड़ि देत पावस में तैसे कबि छाँड़ि देत ठाकुर लबार को ॥ १ ॥

७१८. शिवदत्त कवि

उत्तर महेस पुनि रामन मैनाक और तीसरो मथन जच्छादिसि

---

१ जो कूती नहीं जा सकती । २ फूल ।

चत्रथारो है। पंचम रुचिर षष्ठ उतर सारंगी कहै कबिजन लहै ज्ञान चित्त सो विचारो है॥ सप्तम राजीव पुनि धावन बिभासै सिद्धि मध्यग बरन बर चरचा सुधारो है। कहै सिवदत्त हनुमान प्रति जानकी जू आसिरबचन निसि बासर हमारो है॥ १॥

७१९. शिवलाल दुबे डौंड़ियाखेरवाले

धीर गयो ही को सुनि सोर बरही[1] को बीर नाम लै कै पी को या पपीहा[2] आनि पीको है। मेघअवली को घोर पौन अवली को बहै मार अबली को हाइ मार अबली को है॥ नाह से पथी[3] को कहूँ आइबो न ठीको कहै देखि अवनी को रंग लागत न नीको है। डारै अधजी को मोहिं कीन्हे अधजी को यह जानत न जी को भेद रहत नजीको है॥ १॥ रूसन में दूसन में लाल मन मूसन में मैन की मसूसन में धीर कैसे रैहै री। कोकिला की कूकन में पौन मन्द झूकन में औसर की चूकन में फेरि पछितैहै री॥ बेलिन नबेलिन में संग की सहेलिन में खेलन में केलिन में मनसा समै है री। बृंदावनकुंजन में फूलन के पुंजन में भौंरन की गुंजन में भूलि मान जै है री॥ २॥

धावन कोऊ पठाऊँ उतै उन तौ इहिऔसर में कह्यो आवन।
गावन एरी लगे मुरवा धुरवा नभमंडल में लगे धावन॥
छावन जोगी लगे सिवलाल सु भोगी लगे हैं दसा दरसावन।
तावन लागो बियोगिनि को तन सावन बारि लगो बरसावन॥३॥

काहे को रूसत पावस में इन बातन तोहिं न कोऊ सराहैं।
पौन लगे लहरातो लता तरुकुंज कदंब में केकी[4] करा हैं॥
बोल सुहावने चातक के लगैं इन्द्रवधूगन[5] धाई धरा हैं।
बोलि पठाई उतै उन पै उनये नये देखि नये बदरा हैं॥ ४॥

---

१ भोर। २ बोला। ३ बटोही। ४ मोरनी। ५ बीरबहूटी।

बहु फूलैं कदंब-निकुंजन में अरु भावतो पौन बहै नित मैं।
बरजै जनि कोऊ मयूरन को गरजैं घन आपने ही मित मैं॥
सिवलाल भयो मन-भायो जितो अब और करौंगी तितो हित मैं।
वर साइत में घर आइ गये बड़े भाग भदू बरसाइत मैं॥ ५॥

७२०. शिवराज कवि

मंगल होत कहै सिवराज कहौ केहि के दुख होत बिसेखो।
कौन सभा महँ बैठि न सोहत, को नहिं जानत चित्त परेखो॥
कौन निसा ससि को न उदोत[1] भो का लखिकै बिरही दुख पेखो।
बाँझ को पूत बिना अँखियान कुहू निसि में ससि पूरन देखो॥१॥

७२१. शिवदीन कवि

एक समै श्रीपति गौरीस के मिलाप काज पच्छि राज पीठि चढ़ि पहुँचे छिनकमें। कहै सिवदीन सिव बेगि उठे पेखत ही गरुड़ बिलोकि भाजे ब्याल[2] हुते लंक में॥ कीन्हीं ईस चाम ओट ससि हँसि सुधा ढारो जियो बाघ धायो भाग्यो बृषभ ससंक में। नगन बिलोकि लजी उमा रमाकंत हँसे पीतपट ओट कै लगायो हरि अंक में॥१॥

७२२. शंभु (१) राजा शंभुनाथसिंह सोलंकी

कौहर कौंल जपादल बिद्रुम का इतनी जु बँधूक में कोति है।
रोचन रोरी रची मेहँदी नृप संभु कहै मुकता सम पोति है॥
पाँय धरै ढरै ईंगुर-सो तिहि में मनि-पायल की घनी जोति है।
हाथ द्वै-तीनि लौं चारिहूँ ओर ते चाँदनी चूनरी के रँग होति है॥१॥
देखा चहै पिय को मुख पै अँखियाँ न करैं जिय की अभिलाखी।
चाहति संभु कहै मन में बतियाँ मुख ते पुनि जाति न भाखी॥
भेंटिबे को फरकैं भुज पै नहिं जीभि ते जाइ नहींनहिं नाखी।
लाज औ काम दुहून बहू बलि आजु दुराजै[3] मजा करि राखी॥२॥

---

१ उदय। २ सर्प। ३ दो राजोंकी मातहत रिआया।

साँझ ही ते रतिकी गति जीतिकै लोकके आसन जे गिरा गावति।
बारिजनैनन बारहिबारन चूमिबे को मिसु भोर छपावति॥
केलिकला के तरंगन सों हठि मोहन लाल को ज्यों ललचावति।
अंक[1] में बीति गई रतिया पै तऊ छतिया तियै छोड़ि न भावति॥३॥
रूठि उठै उठि बैठै भटू झिझकारै झुकै बिहँसै मुख फेरे।
दूनी ह्वै जाइ छुये अँचरा छरकै फुफुँदी के छरा तन हेरे॥
चेरे से कै लिये सम्भु सदा गृहकाज अकाज के जाति न नेरे।
बाल के ख्यालहि में नँदलाल रहैं छकि रोज घरी घर घेरे॥४॥
रीति तजी बिपरीति[2] सजी रसना बजी मंजुल लंक के घोस ते।
द्वौ उर बीच उरोज दबे नृप संभु बचे हैं अनंग के सोस ते॥
चापि कपोल दुहूँ कर सों मुख चूमति प्यारी अनंदित तोस ते।
बैर तजे मधु चंद पियै मकरंद मनो अरबिन्द के कोस ते॥५॥
अंगराग जानति न सखिन के पट रँगे केसरि के भ्रम न पखारै सारी सेत है। अधर खटाई लै घसत क्यों ललाई जाइ अरुन सुभाव ही कबै धौं यह चेत है॥ नैन प्रतिबिम्ब परै आरसीमहल मध्य सम्भुराज द्वारन कपाट दै दै लेत है। खंजरीट[3] जानि दौरि दौरि गहै आनि जब मूठी परै झूठी तब छोंड़ि छोंड़ि देत है॥६॥
फूलन को बिनिबो ठहराइ कै ल्याइ कै दूती मिलाइ दई।
नँदलाल निहारि निहाल भये छबि कुंदनमाल सी बाल नई॥
कर ते छुटि भागि दुरी[4] पग द्वै बलि पै न चली कछु चातुरई।
हरि हेरे न पावत भावती सम्भु कुसुंभ के खेत हेराइ गई॥७॥
बालम के बिछुरे बड़ी बाल के व्याकुलता बिरहा दुखदानि ते।
चौपरि आनि रची नृप सम्भु सहेलिनि साहेबिनी सुखदानि ते॥

---

१ गोद। २ एक प्रकार की रति। ३ खँड़रैचा पक्षी। ४ छिपी।

तो जुग फूटै न मेरी भटू यह काहू कही सखिया सखियानि ते ।
कंज से पानि से पाँसे गिरे अँसुआ गिरे खंजनसी अँखियानि ते ॥८॥

७२३. शम्भुनाथ (२)

(रामविलास रामायण)

दोहा—वसु ग्रह मुनि ससि धर बरष, सित फागुन कर मास ।
सम्भुनाथ कबिता दिनै, कीन्हो रामबिलास ॥१॥
श्रीगुरु कबि सुखदेव के, चरननहीं को ध्यान ।
निर्मल कबिता करन को, वहै हमारे ज्ञान ॥ २ ॥

मिटै ही उछाह उठे दाह हिय-हिय माँह जब ते अवध चाह चलिबे की बगरी । कहाँ बड़े बार कहाँ तरुन बिचार भेष ऋषि के बिचारन धरत सिर पगरी ॥ मुखदुति मुरझानी चल्यो अँखियान पानी सब देह पियरानी हरद ज्यों रगरी । हाइ-हाइ बानी घर घर सरसानी सोकसिन्धु में समानी बिललानी सब नगरी ॥ १ ॥

७२४. शम्भुनाथ (३) ब्राह्मण असोथरवासी

(अलंकारदीपिका)

बार न रहत वारपार ही बहति जाकी धार ही में मीचु अरि वर की बसति है । बार बार बैरिन को बारति बिदारति औ बादर वली में बिजुरी सी बिलसति है ॥ सम्भु कहै काटि कूटि कौंचन[१] की गिरह जिरह ज्यों तितारा गंगधारा में धसति है । भगवंत रैया राव म्यान ते तिहारी तेग अरिन के प्रानन समेत निकरति है ॥१॥

आजु चतुरंग[३] महाराज सैन साजत भो धौंसा की धुकार धूरि परि मुँह माही के । भय के अजीरन ते जीरन उजीर भये सूल उठी उर में अमीर जाही-ताही के ॥ बीर-खेत बीर बरछी लै बिरझानो इतै धीरज न रह्यो संभु कौन हू सिपाही के । भूप भगवंत

१ बढ़ी । २ कवच । ३ वह सेना, जिसमें घोड़े, हाथी, रथ और पैदल हों ।

सब ग्वाही कै खलक बीच स्याही लाई बदन तमाम बादसाही के ॥ २ ॥ हेरत ही हाथिन के हलके हेराइ जैहैं रोरे सम घोरे रथ बहल बिलानैंगी । मुहरैं रुपैये पर मोहरैं रहैंगी करी परी सी नितं-बिनी ते परी रहि जावैंगी ॥ पालकी में हाल की खबरि ना रहैगी जब काल के कलेवर की फौजैं उठि धावैंगी । सम्भु जू सिपाही माही चलत मरातब ते नौबति बजाइबे की नौबति न आवैंगी ॥ ३ ॥ सीरी सीरी बही चहूँ ओर ते बयारि बड़ी घटनि बगारि बड़ो आसरो सो दै रह्यो । याही हेतु छोड़ि कै नदीन नद एते दिन तेरी आस गहे तेरी ओर तकतै रह्यो ॥ नीरद[2] तू आपनो बिचारि देखु नाम सम्भु कहा ऐसे औसर में ऐसो हठ लै रह्यो । गरजि गरजि हुलसायो हियो चातक को बुन्दन के समयनि मुंद मुख कै रह्यो ॥ ४ ॥ सारी हरी गोरे तन कैसी खुलि रही देखौ तैसो लोनो लहँगा लहलहात डोरी है । तैसे तरिवन छोटे छुवत कपोल डोलैं तैसी खुली नाक नथ मोतिन की जोरी है ॥ भोरी[3] थोरी बैस की सलोनी सुकुमारि सम्भु कै धौं देह धरे चित चोरिबे की चोरी है । बसीकर मन्त्र कैधौं रूपवन्त देवता है कै धौं यह बाम काम ठग की ठगोरी है ॥ ५ ॥

७२५. शम्भुनाथ (४) त्रिपाठी, डौंड़ियाखेरेवाले
(बैतालपचीसी)

दोहा—नन्द ब्योम धृति जानि कै, सम्बतसर कबि सम्भु ।
माघ अँध्यारी द्वैज को, कीन्हो तत आरम्भु ॥ १ ॥
छबि कदम्ब लखि अम्ब के, उमड़त मोद अखण्ड ।
कलरवा करि करिवरबदन, फेरत सुंडादण्ड ॥ २ ॥

---

१ समूह=घेरा । २ बादल । ३ भोली ।

एक समै गिरिराज की नन्दिनि आई अन्हाइ कहूँ सरसी ते।
भासुर[1] भाल दिये दल कौंल को आनन सों छबि की छबि जीते॥
सो हठि लेबे को सुंड पसारि तहाँ गननायक आइ अभीते।
चाहि कै चोप सों दौरि मनोहर लेत सुधा अहिराज ससीते[3]॥१॥

(मुहूर्त्त-मंजरी)

सिंह के सिंह के अंस में जो गुरु होहिं तौ भूलेहु ब्याह न कीजै।
मेष के सूरज होहिं तौ कीजिये भाषत पण्डित सो सुनि लीजै॥
गोदावरी अरु गङ्ग के बीच में मेष हू के रबि मैं न कहीजै।
पण्डित एक कहै गुन मण्डित जी में बिचारि जनौ मति दीजै॥२॥

७२६. शम्भुनाथ मिश्र (५) सातनपुरवावाले

(बैसवंशावली)

दोहा—गहरवार अरु परगही, पुनि भालेसुलतान।
तिलकचन्द नरनाह के, कृत्रिम[4] छत्री जान॥१॥

लोध बिप्र। कीनछिप्र॥ बैसबंस। वै प्रसंस॥१॥

तासु पुत्र रावता सुजानियो महाबली।
और देव छाँड़ि भक्ति कै महेस की भली॥
जीतियो अनेक सत्रु जे बखानि जात ना।
तासु पुत्र भो बलिष्ठ जासु नाम सातना॥
सातना नरेस के तिलोक चन्द जानिये।
जासु दान मान एक जीह क्यों बखानिये॥२॥

७२७. शम्भुनाथ मिश्र (६) गंज मुरादाबादवाले

देवन की देखी दादि[5] मारे मधु-कैटभ को महिष सँहारे कीन्ही नेक नहीं देरी है। करी ना अबार[6] मातु सत्रु पै सवार है कै दैत्यन को

---

१ प्रकाशमान। २ निठुर। ३ चंद्रमा। ४ नक़ली। ५ दाद-फ़र्याद। ६ देरी।

फेरि आप फिरत न फेरी है ॥ कहै सम्भुनाथ सम्भुरानी तिहुँलोकरानी दीन सुनि बानी आनी नूतन न बेरी है । लागी ना[1] निमेष तै निसुम्भ को बिदारि[2] डारे बिपति हमारी कहा सुम्भौ ते करेरी है ॥ १ ॥

७२८. शम्भुप्रसाद कवि

दम्पति[3] नेह सों रङ्ग भरे लसैं कुंजन में लिये कोई सखी न है ।
सुन्दरता इनमें छल सों मुरली लइ कान्ह के हाथ सों छीन है ॥
सम्भुप्रसाद कहै लखि कै धरे पीन पयोधर पै सो प्रवीन है ।
माँग्यो जबै मुसक्याइ कह्यो सुनो बाँसुरी है की ये बीन नवीन है॥१॥

७२९. सन्तन कवि बिन्दकीवाले (१)

काम के वकील फिरैं सुरँग सबीलई कोइ न आसपास ना चलत चतुराई को । जोबन चढ़ाई बारी बैस पै करत चढ़ि बढ़ि न सकत कहै सुपथ सहाई को ॥ बारु को मराऊ है न दाउ ज्ञान गोलिन को कहुँ ना लगाउ ऐसी अलँग उचाई को । सन्तन लुनाई फौजैं हारि हटीं फिरि लरि कैसे जन लूटै गढ़ वाकी सिसुताई को ॥ १ ॥

७३०. सुजान कवि भाट

सुखाइ सरीर अधीन करैं दृग नीर की बूँद सों माल फिरावैं ।
नेह की सेली वियोग जटा लिए आह की सींगी सँपूर बजावैं ॥
प्रेम की आँच में ठाढ़ी जरैं सुधि आरो लै आपनी देह चिरावैं ।
सुजान कहैं कला कोटि करौ पै बियोगी के भेद को जोगी न पावैं ॥१॥

७३१. श्याम कवि

औनि[4] ते अकास ते अवासन ते उदक[5] ते इन्दु के उदै ते आसुदे ते उमड़ो परै । स्याम कवि मालन ते मन ते मनी ते मनमोहन

---

१ पल भर । २ फाड़ डाला । ३ पति-पत्नी । ४ पृथ्वी । ५ जल ।

के मोह ते मनोज ते मड़ो परै ॥ झाँकती झरोखन ते झंझा के झकोरन ते झाड़न ते झारन ते झूमि झुमड़ो परै। पान ते प्रसून[1] ते पराग ते पहारन ते हारन ते हेम ते हिमन्त हुमड़ो परै ॥ १ ॥

७३२. सन्तबकस कवि होलपुर

कारी सारी सोहति किनारी कोर कानन लौं ककना कनक चूरी कारी कर मैं ठई। कारी लोनी लतिका सी उरज भुजंगी कारी ठोढ़ी ठकुराइनि की कारी कारी सोभई ॥ कारी अभिलाष ब्रजराज पास कारी त्यों ही उतरि अटा ते कारी कारी मग को लई। कारी दिसि कारी निसि कारे नैन कानन लौं कारी कंचुकी को पैन्हि कारे कान्ह पै गई ॥ १ ॥

७३३. सन्तन कवि जाजमऊ के (२)

वै बरु देत लुटाइ भिखारिन ये बिधि पूरब दानि गऊ के।
द्वै अँखियाँ चितवैं उत वै इत ये चितवैं अँखियाँ यकऊ के ॥
वै उपमन्यु दुबे जग जाहिर पाँड़े वनस्थी के ये मथऊ के।
वै कवि संतन हैं बिंदुकी हम हैं कवि संतन जाजमऊ के ॥ १ ॥

७३४. शोभ कवि

चाह सिंगार सँवारन की नव बैस[2] बनी रति वारन की है।
सोभ कुमार सिवारन की सिर सोहति जोहति वारन की है ॥
हंसन के परिवारन की पग जीति लई गति बारन[3] की है।
याहि लखे सरबारन की छनकौ रति के परिवार न की है॥ १ ॥

७३५. शिरोमणि कवि

हूल हियरा में धाम धामनि परी है रोर भेंटत सुदामै स्यामै बनै ना अघात ही। सिरोमनि रिद्धिन में सिद्धिन में सोर पर्यो काहि बकसी धौं काँपै ठाढ़ी कमला तहीं ॥ नरलोक नागलोक

---

१ फूल। २ अवस्था। ३ हाथी।

नभलोक नाकलोक थोक थोक काँपै हरि देखे मुसक्यात ही।
हालो पस्यो हालिन में लालो लोकपालिन में चालो पस्यो
चालिन में चिउरा चबात ही ॥ १ ॥

दादुर चातक मोर करो किन सोर सुहावन कै भरु है।
नाह तेही सोई पायो सखी मोहिं भाग सोहागहु को बरु है ॥
जानि सिरोमनि साहिजहाँ ढिग बैठो महाबिरहा हरु है।
चपला चमको गरजो बरसो घन, पास पिया तौ कहा डरु है ॥२॥

७३६. शंकर कवि

बाटिका बिहारी अभिसार को सिधारी भारी संकर अँधेरी में उजेरी को सो कंद है। भादौं को बिषम मेह दीप सी दुरै न देह नागर के नेह को सनेह दृष्टि बंद है॥ सिवा जान्यो नागरि पिसाचिनि कमच्छा जान्यो मृगन कलानिधि औ छली जान्यो छंद है। बिज्जु जान्यो घन घोर घरा पर मोर जान्यो भोर जान्यो चोरन चकोर जान्यो चंद है ॥ १ ॥

७३७. सिंह कवि

हास ही हास में मान भयो पिय पौढ़ि रहे पलिका पट तानि है।
मान छड़ाबै को बैठी त्रिमूरति काह कहै धौं पिया मुख मानि है ॥
सिंह उरोज दै पाँयन पौढ़ि कै काम के बान लगैं तब जानि है।
पीतम नेह सों अंक भस्यो लगि प्यारी गरे मुरि कै मुसकानि है ॥१॥

आदि म्रजाद बिचारे बिना सिर सौंपत भार महा अति तापै।
गाड़र ऊँट कि सान करै यह बात कहो कहि जात है का पै ॥
सिंहजू काग सुहावन होइ तौ काहे को कोऊ मरालहि थापै।
काम परे पछिताहिंगे वै जे गयंद को भार धरैं गदहा पै ॥ २ ॥

७३८. संगम कवि

समै को न जानै सीख काहू की न मानै रारि कठिन को ठानै

---

१ उपदेश। २ झगड़ा।

सो अजानै भई जाति है । पाछे पछितैहै घात ऐसी नहिं पैहै टेक तेरी रहि जैहै कहा टेढ़ी भई जाति है ॥ संगम मनावै तोहिं हित की सिखावै सीख जा बिन न भावै भौन ताही सों रिसाति है । मोसों अठिलाति बिन काम को हठाति प्यारी तू तौ इतराति उत राति बीती जाति है ॥ १ ॥ तीर है न बीर कोऊ करै ना समीर धीर बाढ़ो स्रम-नीर मेरो रह्यो ना उपाउ रे । पंखा है न पास एक आस तेरे आवन की सावन की रैनि मोहिं मरत जियाउ रे ॥ संगम मैं खोलि राखी खिरकी तिहारे हेत होति हौं अचेत मेरी तपनि बुझाउ रे । जानु जानि जानौ कौन कीजिय उताल गौन पौन मीत मेरे भौन मंद मंद आउ रे ॥ २ ॥ सोरा नख स्याम तालू कंजा कलजीह जौन कौड़ी पाँवपेंचा पाउ जखम गनी-जिये । वड़ी लूम बालखण्डी माई पर झोंकदार मौड़ा मटखोरा पर नजर न कीजिये ॥ संगम कहत टेढ़ दाँत को दुरद दान दीवे को पतालदंती मन में न धीजिये । राजसिरताज सिंहराज महाराज भूलि ऐसो गजराज कविराज को न दीजिये ॥ ३ ॥

७३९. सम्मन कवि

दोहा—बाज, वीर, वीरा, वनिज, द्यूतकला[3], कल, पोत ।
सम्मन इन सातहुन पै, चोट करे रँग होत ॥ १ ॥
बिप्र, वैद्य, बालक, वधू, गुरु, गरीब, अरु, गाय ।
सम्मन इन सातहुन पै, चोट करे रँग जाय ॥ २ ॥

७४०. श्रीगोविन्द कवि

भूप सिवराज साहि प्रबल प्रचण्ड तेग तेरो दोरदण्ड[4] भूमि भारत भड़ाका है । फारै आसमान भासमान को गरब गारै डारै मघवान[5] हू के हिय में हड़ाका है ॥ कहै श्रीगुविन्द सब सत्रुन के

---

१ मूर्ख । २ हठ करती है । ३ जुआँ । ४ भुजदंड । ५ इंद्र ।

सीसन पै गाज ते गिरत गरू गाज ते धड़ाका है। हौदा काटि हाथी काटि भूतल बराह काटि काटि श्रीकमठ-पीठि काटत कड़ाका है॥ १॥

७४१. सखीसुख कवि नरवरवासी

रोग सो असाधिन की औषधी को जानै सब खान की क्रियान में प्रबीन मन भायो है। मेटत अजीरन को भूख न बढ़ाइ देत नारिन के सोधिबे को भेद जानि पायो है॥ कली ना खिलत येहैं पुरिया खुलति लाली भोगिन को देत सखी सुख सो सुहायो है। रिझवार मोहन के आगे गुन प्रगटत आजु बनि देखु री बसंत बैद आयो है॥ १॥ फूलन के दोने रचि साकलि सुमन सुचि सान्यो मकरंद चीकनो लै घृतसोतु है। महामुनि ऋतुराज काम बेद बाँचत है खग होम स्वाहाकार द्विजन को गोतु है॥ मदनगुपाल देवता की पूजा कीजियत सखीसुख वारी प्यारी तेज को उदोतु है। मधुकुण्ड माँझ लाल टेसू ये अगिनि झरैं आजु बृन्दाबन में अनूठो होम होतु है॥ २॥

७४२. सुखराम कवि

कंचुकी कोचकी कैसी कसी लसी श्रीफल से लसे गुच्छ बिसाल हैं।
मोती-लरैं दिहरैं खँजरैं खगरैं सी जरी जरी जाल रसाल हैं।
एती लहे छबि चेती कहा कुच केती कहै सुखराम सु माल हैं॥
धाइये लीजिये दीजिये जू कछु बीच किनारे लगे लखौ लाल हैं॥ १॥

७४३. सुखदीन कवि

भाव औ बिभाव अनुभाव दस हाव नव रस को प्रभाव ते सुभाव ही रहत हैं। धुनि गुन तीनि चारि गन को प्रचार करि बिमल बिचार अलंकार न महत हैं॥ नष्ट औ उदिष्ट बरनमात्रिका सदृष्ट मेरु मर्कटी पताका प्रसतार को बढ़त हैं। सुखदीन सोहरा मनोहरा मुदित मंजु दोहरा हमारे देस छोहरा पढ़त हैं॥ १॥

७४४. सूखन कवि

कालिहही कंस को होत बिधंस कहौ जिन के रस में रसबानी ।
बाप तिहारे दई तिनको तुम ताही ते कंस बिभौ भरुहानी ॥
देती हौ दान लली बृषभान की धौं मटकी पटकी मनमानी ।
सूखन नंन्द को छोह करौं न तौ आज ही तेरो उतारती पानी ॥१॥
कालिह परे पलना पर झूलत आज उगाहन दान लगे हौ ।
कंस की यादि नहीं तुमको जिनके डर लाल उहाँ ते भगे हौ ॥
पावै सुनै तौ बिसाइ कहा पुनि बंदि परे पितु मातु सगे हौ ।
सूखन छाँड़िये मेरी गली इन बातन केतिक लोग ठगे हौ ॥ २ ॥

७४५. शेख कवि

प्यारी परजंक पै निसंक परी सोवत ही कंचुकी दरकि नेकु ऊपर को सरकी । अतर गुलाब औ सुगंध की महक पाइ देखो उठि आवनि कहाँ ते मधुकर की ॥ बैठो कुच बीच नीच उड़ि न सकत केहूँ रही अवरेख सेख दुति दुपहर की । मानहु समर में सुमिरि बैरसंकर को मारि सब रारि फोंक रहि गई सर की ॥ १॥ नेक सो निहारे नाह नेक आगे नीकी बाँह छुवत समिटि नारि नाहिंयै ररति है । पीतम के पानि मेलि आपनी भुजा सकेलि धरकस केलि हियो गाढ़ो कै धरति है ॥ सेख कहै आधे बैन बोलि कै मिलावै नैन हाहा करि मोहन के मन को हरति है । केलिको अरंभ लखि खेलहि बढ़ाइबे को प्रौढ़ा जो प्रवीन सो नवोढ़ा ह्वै ढरति है ॥ २ ॥

७४६. सेवक कवि

काबुल कँपत करनाटक तपत कलकत्ता पत्ता के समान हालै हद्द जुरते । रूम रुहिलान मुगलान खुरासान हवसान सान छाँड़ि छाँड़ि भरे डर उर ते ॥ सेवक कहत गड़बड़ द्राबिड़न परै धकल दिलीस देस देस तेज तुर ते । भानुकुल-भानु महादानी रतनेस जब चक्रधर सुमिरि चलत चक्रपुर ते ॥ १ ॥

सहजही पटना सतारो जाने तोरि डारे सागर उजारि जाने गढ़ आगरो लहो। कास्मीर काबुल कलकत्ता औ कलिंजराज गौड़ गुजरात ग्वालियर गोह दै गहो ॥ सेवक कहत और कहाँ लौं बखानौं देस जाके निरदेस को नरेस चित्त दै चहो। आनि के पनाह नरनाह रतनेससिंह को न नरनाह तेरी बाँह-छाँह में रहो ॥ २ ॥

बड़े छेम सों छेमकरी[1] मड़रात सुदेत क्यों मंडल है घरके।
मम सेवक बाहु बिलोचन त्यों तजि दाहिने बाग दोऊ फरके ॥
कहिये हित कै हित मेरी हितू कर के कत कंकन हू करके।
दरके कुच के पट कंचुकी के तरके बँद आजु कहा तरके[2] ॥३॥

गुनमें सनी को बर बालनि मनी को रूप छानि कै बनी को गनी हेरति हिया को मैं। भाव में भरी को रति रंग में डरी को गौरि सेवक ढरी को डरी मदन-तिया को मैं ॥ गरब गही को रंभा मान की मही को नित्त चित्त की चही को लही काम की क्रिया को मैं। धन्नि की धिया को जोतिजूह की जिया को बेस विधना बिया को कबै पेखिहौं प्रिया को मैं ॥ ४ ॥

७४७. संत कवि

पिय सों जु झुकी रसना बिन काज लगे गुन नाम समान तिहारे।
नै नै चले अति रूखे रहे तुम ताही ते नैन ये नाम धरा रे ॥
संत बिरोध बढ़्यो अति ही जिय ते दुख नेक टरै नहिं टारे।
पाइ सुलच्छन नाम अरे कर काहे को नंदलला झिझकारे ॥१॥

अधउई चाँदनी अँधेरी अधऊपर लौं कोक अधसोक दिन आभा अधद्वै गई। अधमिटो मान मानिनी को सो बिलोकि संत बाढ़ी नीरनिधि की अवधि अध त्वै गई ॥ ता समै अटा चढ़ि पिया को पंथ देखिबे को अंग अंग मदन मरोर बीज व्वै गई। अधमुँदे कमल

---

१ चील्ह। २ सबेरे।

कुमुद घन अधखुले अधउओ चंद देखि आधासीसी[1] ह्वै गई ॥ २ ॥

७४८. सवितादत्त बाबू

बीच भ्रमैं बिबिभौंर मनो सहकार[2] सरोज[3] की सौरभ[4] गीधे[5] ।
हेरति ज्यों हरिआनन ओर त्यों छ्वै छ्वै फिरै उत होत सनीधे ॥
राखे इतै न रहैं सबिता अकुलात बिलोकनि लालच बीधे ।
या बिधि नैन नितंबिनि के ठहरात न लाज औ काम समीधे॥ १ ॥

मुखसों लगत मुख सौंहैं न करत मुख लाज काम समता बपुप में लगी रहै । रति के बिलास उर अंतर[6] बसावै[7] पै प्रकास ना करत अंग प्रेम कै पगी रहै ॥ केलि की कथान कहे ऊतर न देति उर रूखे नैन मूँदे हौंस सुनै की जगी रहै । प्यारे को जगोहैं जानि ओढ़ै पट तानि तानि लगी रहै उर जौ लौं पजक लगी रहै ॥ २ ॥

७४९. साधर कवि

छप्पै

अरध चंद इत दिये उतै ससि पूरन दिय्ये ।
इतै जटा मधि गंग उतै मुकुताहल तिय्ये ॥
इत त्रिसूल त्रय नयन उतै बेंदी रोरी की ।
इत भुअंग-आभरन उतै बेनी गोरी की ॥
साधर सुकब्बि बहु सिवा सिव सकल सभा आनँद हिये ।
सर्बंगी को ध्यान करु अर्द्धंगी आसन किये ॥ १ ॥

७५० सुन्दर कवि

काके गये बसन पलटि आये बसन[8] सु मेरो कछु बस न रसन उर लागे हौ । भौंहैं तिरछी हैं कवि सुन्दर सुजान सोहैं कछू अरसोहैं गोहैं जाके रस पागे हौ ॥ परसों मैं पाँय हुते परसों[9] मैं पाँय गहि परसों ये पाय निसि जा के अनुरागे हौ । कौन बनिता

---

१ आधा सिर दर्द करने की बीमारी । २ आम । ३ कमल । ४ खुशबू । ५ फँसे । ६ भीतर । ७ बसने । ८ कपड़े । ९ छूती हूँ ।

के हौ जू कौन बनिता के हौ सु कौन बनिता के बनिता के संग जागे हौ ॥ १ ॥

मन है तो भली थिर ह्वै रहि तू हरि के पदपंकज में गिर तू।
कबि सुन्दर जो न सुभाव तजै फिरिबोई करै तौ इहाँ फिर तू॥
मुरली पर मोरपखा पर ह्वै लकुटी पर ह्वै भृकुटी भिर तू।
इन कुण्डल लोल कपोलन में घनें[1]-से तन में घिर ह्वै थिर तू ॥२॥
सासु रिसाति बकै ननदी सखि तू सिखवै सिख सीख के बैना।
है ब्रजबास चवाव महा चहुँ ओर चलै उपहास की सैना॥
देखत सुन्दर साँवरी मूरति लोक अलोक की लीकै[2] लखै ना।
कैसी करौं हटके न रहैं चलि जात तऊ लखि लालची नैना ॥ ३ ॥

क्रीट स्रुति कुण्डल कपोल गोल लोयन की बोलनि अमल हरि हँसनि वा लाल की। राग औ धमारि के मलार में न गावै तहाँ देखि ब्रजनारि घाँघरनि उन लाल की॥ भागि आई भागि से भले मैं देखि आई लाल ताकि पिचकारी दृग चलनि उताल की। गोकुल गलीन में गोपाल गन गोप लीने आवत करत बीर गरद गुलाल की ॥ ४ ॥

(सुन्दरशृंगार)

दोहा—नगर आगरो बसत है, जमुना-तट सुभ थान।
तहाँ बादसाही करैं, बैठे शाहजहान ॥ १ ॥
साहजहाँ तिन गुनिन को, दीने अनगँन[3] दान।
तिनने सुन्दर सुकबि को, कियो बहुत सनमान ॥२॥
नग भूषन गन सब दिये, हय हाथी सिरपाव।
प्रथम दियो कबिराज पद, बहुरि महाकबिराव ॥ ३॥
बिप्र ग्वालियर-नगर को, बासी है कबिराज।

---

१ मेघ। २ परिपाटी। ३ बेशुमार।

जापै साह दया करै, सदा गरीबनेवाज ॥ ४ ॥
सम्बत सोरह सौ बरस, बीते अट्ठासीति ।
कातिक सुदि षष्ठी गुरुहि, रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति॥५॥

७५१. सुन्दर कवि (२)

कामिनी की देह अति कहिये सघन बन उहाँ सु तौ जाइ कोऊ भूलि कै परत है । कुंजर है गति कटि केहरि[1] की भय यामें बेनी कारी नागिनी सी फन को धरत है ॥ कुच हैं पहार जहाँ काम चोर बैठो तहाँ साधि कै कटाच्छ बान प्रान को हरत है । सुन्दर कहत एक और अति भय तामें राच्छसी बदन खाँव-खाँव ही करत है ॥ १ ॥ नीर बिना मीन दुखी छीर[2] बिना सिसु[3] जैसे पीर जाके दवा बिन कैसे रह्यो जात है । चातक ज्यों स्वाति-बुंद चंद को चकोर जैसे चन्दन की चाह करि फनी[4] अकुलात है ॥ अधन ज्यों धन चाहै कामिनी को कामी चाहै ऐसी जाके चाह ताको कछू ना सुहात है । प्रेम को प्रभाव ऐसो प्रेम तहाँ नेम कैसो सुन्दर कहत यह प्रेम ही की बात है ॥ २ ॥

सेवक सेव्य[5] मिले रस पीवत भिन्न नहीं अरु भिन्न सदाहीं ।
ज्यों जल बीच धर्यो जल-पिण्ड सुपिंडऽरु नीर जुदे कछु नाहीं ॥
ज्यों दृग में पुतरी दृग एक नहीं कछु भिन्न न भिन्न दिखाहीं ।
सुन्दर सेवक भाव सदा यह भक्ति परा परमेसुर माहीं ॥ ३ ॥

७५२ शंकर कवि (२)

एक समै मिलि सूनी गली हरि राधिका संकर भाग भरे भर ।
साहस सों उन हेरि दियो उन संकन-संक सों अंक[6] लई भर ॥

---

१ सिंह । २ दूध । ३ बच्चा । ४ सर्प । ५ जिसकी सेवा की जाय । ६ गोद ।

सौंहैं अनेक करी सजनी सिर हाथ दियो नहिं मानी इते पर।
काहे से री सुनु मेरी भटू उन छाती छुई उन छोड़ि दियो कर॥१॥

७५३. शंकर त्रिपाठी, बिसवाँवाले (३)

(रामायण कवित्त)

आरंज[1] प्रात गये गुरु गेह को पाँय परे कहि आरत बानी।
आसिष दीन्ही बसिष्ठ तबै हरषे मुनिवृन्द महासुख मानी॥
कारनकाज बिचारो भली बिधि की गति सों कछु जाति न जानी।
संकर भारत भौन लही यह देखि चरित्र रिसाइ न रानी॥ १॥

७५४. शंकरसिंह गौर, चंडरावाले (४)

हरी है सबै सुधि-बुद्धि हरी तिय सेज परी तन चेत न री है।
नेरी[2] है कहाँ रति रूप रतीक न सोने के साँचे ढरी पुतरी है॥
तरी[3] है मनोज महानद की नृप संकर सोभित लाल डरी है।
डरी है खरी यहि पावस में सिखि[4]-सोर सुने लखे भूमि हरी है॥१॥

७५५. संपति कवि

कोटिन सरूप रूप एकही करत जब जानत अचर देव कायर डहकती। चंडमुंडमर्दनी महिषकाल कालिका सुदामिनी दमक तोई भारि कै भहकती॥ खाउँ खाउँ करत अघात न अगम जोति जोगिनी जमाति कई भाँति से लहकती। दुष्टन के उदर बिदारि कै करेजे पर चढ़ि-चढ़ि रुधिर चभाकि कै चहकती॥ १॥

७५६. शीतल त्रिपाठी, टिकमापुरवाले (१)

बिहारीलाल कवि के पिता

आजु अकेली उताहिली है तट लौं पहुँची तुम आई करार में।
साथ सखीन के हाहा किये पग हौं हूँ दियो जल-केलि बिहार मैं॥
सीतल गात भये सिथिले उछरी तौ मरू करि केतिकौ बार मैं।
कान्ह जो धाइ धरै न अली तौ वही हुती हौं जमुना-जलधार मैं॥ १॥

१ रामचंद्र। २ मानुषी। ३ नाव। ४ मोर।

७५७. शीतलराय भाट, बौंड़ीवाले (२)

छप्पै

चकित पवन गति प्रबल थकित रवि स्रवन सुनत जस ।
बिकल होत दल दुर्वन भुवन जस पूरि रह्यो बस ॥
गिरत बिटप बल कटक कोल कंपत उर अहिगन ।
स्रवत सिंधु उछलत मनोज दृग जा दृग ता मन ॥
चहुँ ओर सोर बरनत सुकबि बर बिलेन बसुधा बस्यो ।
दब्बै जमीन हहलत सु गिरि जब्बै गुमान हयबर कस्यो ॥ १ ॥

७५८. सुवंश शुक्ल, बिगहपुरवाले

हैं गुरुलोग बिलोचन चित्त के साँपिनी-सी सदा सासु सिहारो ।
जे रन ही में कलंक धरे खरे ते खल चारिहूँ ओर निहारो ॥
पाउँ धरै को न ठाउँ कहूँ अब ह्वैहै कहा यह बात बिचारो ।
किंसुक दान सुबंस कहै अभिराम उरोजन पै तिय डारो ॥ १ ॥
दंपति मोद भरे मन में अँग-अंग अनंग सुबंस बखान्यो ।
आसँव दोउ दुहूँन पियावत बासव की सरि को सुख मान्यो ॥
लेत पिये सिगरो रसनासव गोगन जन्म बृथा करि जान्यो ।
है प्रतिबिंब मनो मधु में तेहि ते सब इंद्रिन मंजन ठान्यो ॥ २ ॥
प्यारी सु आनि अचानक आलिन पीतम की कहि दीन्ही अवाई ।
भूरि भरी पुलकावली यों सब अंगन में सुखमा सरसाई ।
बाल उताल सुबंस कहै नँदलाल के देखन को उठि धाई ॥
भार नितंबन को न गयो कटि टूटन की मन संक न आई ॥ ३ ॥
देव सुरासुर सिद्ध-बधून के एतो न गर्ब जितो यहि ती को ।
आपने जोबन के गुन के अभिमान सबै जग जानत फीको ॥

---

१ शत्रु । २ वृक्ष । ३ बाराह । ४ श्रेष्ठ घोड़ा । ५ पीने की चीज़ मदिरा आदि । ६ इंद्र । ७ बहुत । ८ शोभा । ९ जल्दी । १० जितना ।

काम कि ओर सिकोरत नाक न लागत नाक[1] को नायक नीको।
गोरी गुमानिनि ग्वारि गँवारि गनै नहिं रूप रतीक[2] रती को॥ ४॥

गहु रे हरि के पदपंकज तू परिपूगो सिखावन है यहु रे।
यहु रे जग झूठो है देखु चितै हरिनाम है साँचो सोई कहु रे॥
कहु रे न कहूँ परद्रोह की बात सुबंस कहै कोऊ सो सहु रे॥
सहु रे मन तो सों करौं बिनती रघुनाथ निरंतर को गहु रे॥४॥

७५६. सिरताज कवि, बरसानेवाले

मानती न मालिनी कहे ते तौन तेरी बात काहे ते लतानन की लौंदैं झकझोरती। कहै सिरताज फुलवारी की बहार देखि करि अनुराग अनमोलो सुख रोरती[3]॥ फूलो री गुलाब गुलदाउदी गहबदार बेला औ चमेलिन की बेलिन बिथोरती। कारन कहा है इन नारिन को बाग बीच नाहक प्रसून ये अनारन के तोरती॥१॥

छप्पै।

करि हरि मृग मंजीर कलानिधि अहि बिम्बाफर।
चलन लंक दृग उरज बदन बेनी अधराधर॥
मत्त तरुन बन कनक पूर्न परिपक्क रुचिर दुति।
सुरस छुपी सिसु उपी दोष बिन असित बोलि जुति॥
सिरताज सरोष सभीत बिन बेध सरद नव निकट जल।
सुनु बाल गात ऐसे निरखि कस न होइ लालन बिकल॥२॥

७६०. सुमेर कवि

करत कलोल कीर कोकिल कपोत केकी चन्द की बधाई बाजैं जानै जानि घन-धुनि। सुकबि सुमेर मीन मृगज मराल मन मुदित मधुप न्योते कोकिला सकल सुनि॥ केहरि कँदूरी कीर कदली[4] कमल फूले सौतिन सजे हैं तन चीर चारु चुनि चुनि। कहा पट

---

१ स्वर्ग। २ रति, काम की स्त्री। ३ अरोरती=लूटती। ४ केला।

तानि प्यारी पौढ़ी हौ बिलोकौ आनि चारों ओर चौचँद मच्यो है तुम्हैं रूसे सुनि ॥ १ ॥

७६१. सागर कवि, ब्राह्मण
(बामामनरंजन)

जाके लगे गृहकाज तजै अरु मातु पिता हित बात न राखैं ।
संग में लीन ह्वै चाकर चाह कै धीरज-हीन अधीन ह्वै भाखैं ॥
तर्फत मीन ज्यों नेह नवीन में मानौं दई बरछीन की साखैं ।
तीर लगैं तरवारि लगैं पै लगैं जनि काहू से काहू की आँखैं ॥ १ ॥
जाके लगै सोई जानै बिथा पर-पीर में कोऊ उपहास करै ना ।
सागर जो चुभि जात है चित्त तौ कोटि उपाउ करै पै टरै ना ॥
नेक-सी कंकरी जा के परै सोऊ पीर के मारे सु धीर धरै ना ।
कैसे परै कल एरी भटू जब आँखि में आँखि परै निकरै ना ॥ २॥

७६२. सुलतानपठान, नवाब सुलतान मोहम्मदखाँ
(१) रामगढ़, भूपालके अधिपति
(कुंडलिया-सतसई का तिलक)

मेरी भव[2]बाधा हरौ राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई[3] परे स्याम हरित दुति होइ ॥
स्याम हरित दुति होइ मिटै सब कलुषकलेसा ।
मिटै चित्त को भरम रहै नहिं एक अँदेसा ॥
कहि पठान सुलतान काटु जमदुख की बेरी ।
राधा बाधा हरौ इहा बिनती सुनु मेरी ॥ १ ॥
नासा मोरि नचाइ दृग करी कका की सौंह ।
काँटे-सी कसकत हिये गड़ी कटीली भौंह ॥
गड़ी कटीली भौंह केस निरवारत प्यारी ।

---

१ लफ़्ज़ा । २ जन्म-मरण की बाधा । ३ अक्स ।

मारत तिरछी कोर मनो हिय हनत कटारी ॥
कहि पठान सुलतान छके नर देखि तमासा।
वाको सहज सुभाव और को बुधि-बल नासा॥ २॥

७६३. सहजराम बनिया, (१) पैंतेपुर
(रामायण)
चौपाई

सीता रछक भछ कठोरा। भगन भयउ उर भूपन कोरा॥
भूपजरा रिपु सल्य उमा-सी। तेहि छत बहुरि रमापति धाँसी॥१॥

७६४. सुलतान कवि (२)

तुम चाले की बातैं चलावती हौ सुनिकै अति ही तन छीजतु है।
छन नेकहु न्यारी जो होति कहूँ थल मीनन की गति लीजतु है॥
जब लौं सुलतान न आवै घरै तब लौं तौ बिदा नहिं कीजतु है।
वहि पीतम की अनुहारि सखी ननदी-मुख देखि कै जीजतु है॥ १॥

७६५. सुखलाल कवि

दसरथ के बेटे खरे खरेटे धनुष करेटे सर टेटे।
गोरे सौंरेटे उर बघनेटे जरी लपेटे सिर फेटे॥
नैना कजरेटे रन दुलहेटे रमा पलेटे चरनेटे।
सुखलाल समेटे चारों बेटे हँसि करि भेंटे सौंरेटे॥ १॥

७६६. शिवनाथ सुकुल, मकरंदपुरवाले देवकीनंदन के भाई

पति-प्रीति प्रिया बिपरीति रची रति-रंग-तरंग बहारन को।
नचै बेग ते बेसरि को मुकुता चित बित्त हरै दृग सारन को॥
वह नाथ के सौंहैं न डीठि करै गड़िजाति है नीठि निहारन को।
रति कूजित गान की तान मनो निहुरे ससि लेत है तारन को॥१॥

७६७. सुजान कवि

आपन ही नैनन सों नैनन मिलाइ लेत सैनन चलाइ हरि लीन्हे

गौना।

चित्त धाइ चाइ । अब क्यों कहत गुरुलोगन की संक मोहिं मारत निसंक काम कासों कहौं जाइ जाइ ॥ एरे निरदई कान्ह कहत सुजान तोसों तेरे बिन हेरे आँखैं रहैं झर लाइ लाइ । दूरी जो बसाइ तौ परेखो हू न आइ एरे निकट बसाइ मीत मिलत न हाइ हाइ ॥ १ ॥

७६८. शिवप्रकाशसिंह बाबू, डुमरावँवाले
(रामतत्त्वबोधिनी)

तुलसी प्रसाद हिय हुलसी श्रीरामकृपा सोई भवसागर के पुल-सी है लसी है । जाकी कबिताई अनरथ-तरु-टंगासम गंगा की-सी धार भक्तजन-मन धसी है ॥ परमधरम मारतंड उर-व्योम[1] उग्यो काम क्रोध लोभ मोह तम निसा नसी है । वाही के प्रकास जमगन मुँह मसि[2] लाई अति सुख पाय जिय मेरे आय बसी है ॥ १ ॥

७६९. सबलसिंह कवि
(षटऋतु बरवै—भाषाऋतुसंहार काव्य)

भावै चन्द न चन्दन सुरभि[3]-समीर ।
भावै सेज सुहावनि बालम तीर ॥ १ ॥
ऋतु कुसुमाकर[4] आकर बिरह बिसेखि ।
ललित लतान मितान बितानन देखि ॥ २ ॥
का बड़ भयऊ सेमर फूले फूल ।
जो पै स्याम भँवर सखि नहिं अनुकूल ॥ ३ ॥
जेठमास सखि सीतल बर कै छाँह ।
नई नींद सिरहनवाँ पिय कै बाँह ॥ ४ ॥
पिय कर परस सरस अति चन्दन-पंक ।
भावक रजनि सुहावनि दरस मयंक ॥ ५ ॥

---

१ आकाश । २ स्याही । ३ सुगंध । ४ वसंतऋतु ।

७७०. शिवदीन कवि, भिनगावाले

(कृष्णदत्तभूषण)

जमुना के तट बंसीबट के निकट कहूँ लख्यो पीतपट औ मुकुट अति सोह में। उड़ि गये भूषन बसन प्यास बास साँस आस लगी रैनि-दिन मिलिबे की छोह में॥ बारबार बरत बियोग की बिथान बीच भनै सिवदीन परी मनसिजद्रोह में। ज्ञान गुन बोरि लाज कुलकानि भानि-भानि वा दिन ते वाको मन मोहि रह्यो मोह में॥ १॥

७७१. सुमेरसिंह साहेबजादे

बातैं बनावती क्यों इतनी हम हू सों छप्यो नहिं आज रहा है।
मोहन की बनमाल को दाग दिखाय रह्यो उर तेरे अहा है॥
तू डरपै करै सौंहैं सुमेर अरी सुनु साँच को आँच कहा है।
अंक लगी तौ कलंक लग्यो जु न अंक लगी तौ कलंक कहा है॥१॥

७७२. शेखर कवि

भीतर ते उठि आवत देखि कबै वह बाल भुजा भरि लैहैं।
सेखर कंठ लगाइ कै पाछे ते आनँद के अँसुवान अन्हैहैं॥
कन्त भले भले बोल के साँचे कह्यो तुम हो हम वा दिन ऐहैं।
औधि गये यों भिया घर जाय कबै हम हाय उराहनो पैहैं॥ १॥

७७३. सेवक कवि असनीवाले (२)

मुख भावन भूषित जाको बिलोकि न चन्द की ओर चितैबो भलो।
अधरामृत पान कै सेवक जाके पियूष[1] सों कौन हितैबो भलो॥
जिहिं लाय कै अंक निसंक दई न परीन को रंक मितैबो भलो।
धिक ता के बिना पलकौ तजि कै न बियोग में बैस बितैबो भलो॥१॥
जब ते सुनि देखे बसे मन में तब ते फिरि भेंट भई नई री।
जल-हीन से मीन दुखी अँखियाँ तलफैं दिन-रैनि बिथा भई री॥

---

१ अमृत।

बिधि[1] सों अब सोच नहीं सपने में गह्यो कर मैं हूँ उठी दई री।
मनमानी भई नहीं सेवक सों तजि नैनन नींद किते गई री ॥ २ ॥
इमको कित कैसे कहाँ न लखैं नित ऐसी बिथा जिय जागती हैं।
न गनाय गुनाय मनाय जनाय बनाय वही रँग रागती हैं ॥
कसकैं न सकैं कढ़ि कैसे हु सेवक सोहन-सी दिल दागती हैं।
परतीन[2] की सैन सुधा सों भरी बरछीन ते सौगुनी लागती हैं ॥३॥

७७४. सबलश्याम कवि

कहा भयो जानै कौन सुन्दर सबलस्याम छूटी गुन[3] धनुष तुं-नीर[4] तीर झरिगो। हालत न चपलता डोलत समीरन के बानी कल कोकिल कलित कण्ठ परिगो ॥ छोटे छोटे छौनां[5] नीके नीके कलहंसन के तिनके रुदन ते स्रवन मेरो भरिगो। नीलकंज मुदित निहारि बारि बिद्यमान भानु मकरन्दहि मलिन्द पान करिगो ॥१॥

७७५. सोमनाथ कवि

सोने-सो सरीर ता पै आसमानी रंग चीर औरै ओप कीनी रबि रतन तरौना है। सोमनाथ कहै इंदिरा[6]-सी जगमगै बाल गाढ़े कुच ठाढ़े मानो ईस जुग भौना है ॥ कारी घुँघुरारी मन्द पवन झकोर लागे फरहरै अलक कपोलन के कौना है। सो छबि अमंद मनों पान सुधाबिन्दु करि इन्दु पर खेलत फनिन्दँन[7] के छौना है ॥१॥

७७६. शशिनाथ कवि

गाइहौं मंगलचार घने सखि आवत ही तन ताप बुझाइहौं।
झाइहौं पाँइ गुलाबन सों कमखाब के पाँवड़े पुंज बिछाइहौं ॥
छाइहौं मन्दिर बादले सों ससिनाथ जू फूलन की झरि लाइहौं।
लाइहौं सौतिन के उर साल जबै हँसि लाल को कंठ लगाइहौं ॥१॥

---

१ ब्रह्मा। २ पराई स्त्री। ३ धनुष की डोरी। ४ तरकस। ५ बच्चे। ६ लक्ष्मी। ७ सर्पों के।

७७७. शशिशेखर कवि

कुंज-निकेत पिया बिन चाहि कै अंग अनंग की आँच-सी आई।
दूती को देत उराहनो ठाढ़ी महा कपटी किन बात चलाई॥
हा हौं जरी हौं जरैं ससिसेखर सम्भु सदासिव राखि सिराई।
चैन नहीं मृगसावकनैनी को पंकजनैनी गई कुम्हिलाई॥ १॥

७७८. सहीराम कवि

बागन है छलि दान लिये द्विज दुर्बल है लकुटी पकरी।
बलि ने बहु आदर-भाव कियो पग तीनि धरा तब माँगी हरी॥
सहीराम कहै भुव नापि लई डग तीनि ही में बसुधा सगरी।
लकरी जुत हाथ बढ़े हरि के तब ज्यों बिन पात बढ़ी लकरी॥ १॥

७७९. सदानन्द कवि

अंग अंग जोती[2] सुठि नासिका बनक ओती सदानन्द को ती तिय तेरे तीर त्योरदार। कनक के कानन तरौना इन्दु आनन में अलकैं झुकी हैं मोतीमालन मरोरदार॥ उन्नत उरोजन पै कैसी लसै उरबसी[3] तैसी कसी कंचुकी कुसुंभी रंग ओरदार। छोरदार अंबर की ओट दुरे डोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार॥ १॥

७८०. सकल कवि

दाता ते दुनी[4] में सूम काजै जानियत इमि कायर को जानिये समर माँह सूर ते। पापी ते प्रगट पुन्य जानिये दुखी ते सुखी निधनी को जानिये सु धनी धन दूर ते॥ भाखत सकल जानै भूप ते भिखारी चोर साह ते पिछानै औ चतुर चित्त कूर ते। राति-दिन सूर ते यों कञ्चन कचूर नर जान्यो जात या बिधि सहूर बेसहूर ते॥ १॥
ऐसी मौज कीनी जदुनाथ ने अनाथ लखि लीने हाथ चामर पठाये द्विज भामा के। भाखत सकल काँप्यो स्वर्न को सुमेर औ कुबेर के कुबेर गात काँपे अभिरामा के॥ जरी नग लाल और लरी मुकुता

---

१ भवन। २ ज्योति। ३ एक आभूषण। ४ दुनिया।

प्रवाल चराचर चामीचर चामीकर[1] धामाके। अम्बर लौं बरषै मतङ्ग मदधार देखौ अम्बर[2] लौं लागे मेघडम्बर सुदामा के ॥ १ ॥

७८१. सामंत कवि

तुरंग बैठि जंग में कुरंग को लगाय कै चल्यो बिहंगराज लौं बिहंग कौन आदरै। बढ़ै समूह छोर ज्यों धुराउ ओरछोर लौं सुभाय खेलि सेल सों उखारि सेज को धरै ॥ समन्त हाथ जोरि कै अमीर दन्त तोरि कै उखारि मारि भूमि सों गयन्द गेंद-से करै। बचै न सिंह सारदूल सिंह वारपार लौं नौरंगसाहि बीर के सिकार बीच जो परै ॥ १ ॥

७८२. सेन कवि

जब ते गुपाल मधुबन को सिधारे आली मधुबन भयो मधु दावन बिषम सों। सेन कहै सारिका सिखण्डी खञ्जरीट सुक मिलि कै कलेस कीनों कालिंदीकदम सों ॥ जामिनीबरन यह जामिनी में जाम जाम वधिक को जुगुति जनावै टेरि तम सों। देह कारी किरच करेजो कियो चाहत है काग भई कोयल कगायो करै हम सों ॥१॥

७८३. स्यामलाल कवि

राजा राव राजे बादसाह जे जहान जाने हुकुम न माने ते हुकुम तर आने हैं। सूर बीर संगन में सुघर प्रसंगन में रीति रस रंगन में अति ही बखाने हैं ॥ स्यामलाल सुकवि नरेस उमराउगिरि तुम से न नृप कोऊ आज के जमाने हैं। हम मरदाने जानि बिरद बखाने पर द्वारे चोबदार कौं साहब जनाने हैं ॥ १ ॥

७८४. शोभनाथ कवि

दिसि-बिदिसान ते उमड़ि मढ़ि लीनो नभ छोरि दिये धुरवा जवासे जूह जरिगे। डहडहे भये द्रुम रञ्चक हवा के गुन कुहू-कुहू मोरवा पुकारि मोद भरिगे ॥ रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत

१ सुवर्ण। २ आकाश। ३ प्रकाश।

ही सोभनाथ कहूँ कहूँ बूँद हू न करिगे। सोर भयो घोर चहूँ ओर नभमण्डल में आये घन आये घन आय कै उघरिगे ॥ १ ॥

७८५. सन्त कवि (२)

सेर सम सील सम धीरज सुमेर सम सेर सम साहेब जमाल सरसाना था। करन कुबेर कालि कीरति कमाल करि तालेबन्द मरद दरदमन्द दाना था ॥ दरबार दरस परस दरबेसनको तालिब तलब कुल आलम बखाना था। गाहक गुनी के सुखचाहक दुनी के बीच सन्त कबि दान को खजाना खानखाना था ॥ १ ॥

७८६. सहजराम सनाढ्य, बँधुवावाले (२)

(प्रहलादचरित्र)

रामभजन को कौन फल, विद्या को फल कौन।
घाटा नफा बिचारि कै, बिप्र पढ़ैं मैं तौन ॥ १ ॥
बरनत बेद पुरान बुध, सिव बिरञ्चि सनकादि।
ये बाधक हरिभक्ति के, बिद्या बित बनितादि ॥ २ ॥
खाय मातु मोदक कटुक, परै बदन बिच आइ।
जठर अगिनि की ज्वाल सों, जीव बिकल ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

७८७. श्यामशरण कवि

(स्वरोदय भाषा)

मिथुन मीन धन जानि, द्विस्वभाव कन्या-सहित।
संग सुषुम्ना आनि, परमसिद्धिदायक सदा ॥ १ ॥

७८८. सीतारामदास बनिया, बीरापुरवाले

सेस न पावहिं पार, राम-जन्म उत्सव महा।
आई करन जुहार, मुदमङ्गल तिहुँ लोक की ॥ १ ॥
हरन पाप-दुख-जाल, मुक्तिदानि सरजू नदी।
कियो भक्त को काम, सेवक सीताराम तहँ ॥ २ ॥

७८९. शिवप्रसन्न कवि, रामनगर के, शाकद्वीपी ब्राह्मण

धौरहर धौलं धूप धाप हू धसै न जामें चहुँघा दुआर के सुगन्ध

सार साला से । मनिदीपमाला मनि भूषन बलित बाला खासे परजंक बासे सुमनन माला से ॥ बिजन उसीर नीर मलय समोये है परस समीर है सरस सीतकाला से । जिन हेत बिरचे बिरञ्चि हैं मसाला ऐसे ब्यथित न होत ते निदाघ-जात-ज्वाला से॥१॥

७६०. सुकवि कवि

कञ्चनबरन बाल हरन मुनीन मन चरनसरोज राजै सब सुखसाजी है। भनत सुकबि अंग अंगन अनंग राजै नैन चारु चंचल न पावै पार बाजी है॥ बैठी चित्रसाला में बिचित्र चित्र देखत है केहरि कुरंग की करति छबि माजी है। कोकिल कपोत कीर पेखि सुख पायो बाल निरखि जुराफा भई अति इत राजी है॥ १॥

७६१. श्यामदास

पद

श्री गोपालजू की आरती करतु हैं।
घण्टा ताल पखावज बाजे पञ्चमुखी बाती बरतु हैं॥
सिव बिरञ्चि नारद इन्द्रादिक सब मिलिगावत बीन बजतु हैं।
स्याम प्रभू को देखत सब तन मन धन वारि वारि डारतु हैं॥१॥

७६२. श्रीभट्ट

पद

स्यामा स्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत सिंगार।
इन पहिरी वाकी मोतिन-माला उन पहिरो वाको नौसरहार॥
पेंच सँवारे बृषभानुनंदिनी अलक सँवारत नंदकुमार।
हँसि मुसकाय करत दोउ बातैं बदन निहारत बारम्बार॥
लटपटि पाग मरंगजी माला कहि न जात सोभा सुखसार।
श्रीभट के प्रभु जुगल की दूनी मेरे आँगन करत बिहार॥ १॥

७६३. श्याममनोहर

चली दधि बेंचन किसोरी कुँवरि है गजेगामिनी।

१ मसली हुई। २ हाथी की-सी मस्त चाल से चलनेवाली।

नखसिख रूप अनूप सुन्दरी दसन दुति मनु दामिनी ॥
स्यामा प्यारी कुल उजियारी बिमल कीरति ऊजरी ।
जोबनवाली सरस सुन्दरी चंद्रबदनी गूजरी ॥ १ ॥
वृन्दाबन भीतर स्याममनोहर घेरी ।
हौं तुम्हैं जान न देहौं घर को लेहौं दान निबेरी ॥ १ ॥

७९४. सगुणदास

पद

नेही श्रीवल्लभ के है गाजो ।
चरनाम्बुज गहि मानग्रंथि तजि स्वामी पद ते भाजो ॥
गीता भागवत निगम[1]-से साखी तौ काहे को लाजो ।
गीतगोविन्द बिल्वमङ्गल[2]-सी बाँकी कहि सके अनदाजो ॥
पुरुषोत्तम इनहीं ते पैये गृह दृढ़ मति तुम साजो ।
सगुनदास कहै जुवति-सभा में गिरिधर महल बिराजो ॥ १ ॥

७९५. सबलसिंहचौहान

(भारतभाषा)

हृदय बिचारत नख लिखत, कौरव की मति पोच ।
हाथी हरहट मद-गलित, नाहिन सीलसकोच ॥१॥
जुद्ध जुआ बस होत नहिं, भ्राता करहु बिचार ।
होत तासु जय तात सुनु , जिहि सहाय करतार ॥२॥

७९६. श्रीलाल कवि भांडेर, जयपुरवाले

देबो जस को मूल है, या ते देबो ठीक ।
पर देबे में जानिए, दुख कबहूँ नहिं नीक ॥ १ ॥
सञ्चय करिबो है भलो, सो आवै बहु काम ।
पाप न सञ्चय कीजिये, जो अपजस को धाम ॥२॥

---

१ वेद । २ एक बेश्यागामी लंपट, जो पीछे बहुत बड़ा प्रेमी भक्त महात्मा होगया ।

जड़ कबहूँ नहिं काटिये, काहू को मन धारि ।
पापरूप रिन की जर कटै, भलो एक निरधारि ॥ ३ ॥
भलो होत नहिं मारिबो, काहू को जग माहिं ।
भलो मारिबो क्रोध को, ता सम नर-रिपु नाहिं ॥ ४ ॥
बुरो माँगिबो जगत ते, जाते हो अपमान ।
छमा माँगि सो ईस ते, भलो एक करि ज्ञान ॥ ५ ॥

७९७. श्यामलाल कवि, कोड़ाजहानाबादी

पटुका मँगाय मुँह बाँधौं हलवाइन को चासनी न चाटि जाइँ जौलौं सियरायँगी[1] । मृत्तिका[2] मँगाइ कै कुटाइ डारौं भाठन को चूहे अरु चूही कहौ कैसे नियरायँगी[3] ॥ चारिहू दिसान ते बयारिन को बन्द कीजै उड़ने न पावैं जौ लौं तौ लौं ठहरायँगी । माछिन को मारि डारौं चींटिन अँबार फारौं चींटी दई मारी क्या हमारी खाँड़ खायँगी ॥ १ ॥ बीसवीं पुस्ति हम बाँटे हैं गेंदौरे सुनि बड़े बड़े बैरिन की छाती फटि जायगी । नाइनि सु बारिनि परोसिनि पुरोहितानी छोटे पाय खोटी खरी मोंसों कहि जायगी ॥ सुनु हलवाई चलि आई है हमारे यही डेढ़ टाँक खाँड़ चहै औरौ लागि जायगी । फिरकी से छोटे और दीमक से जोटे जरा कागद से मोटे बनैं बात रहि जायगी ॥ २ ॥

७९८. सीताराम त्रिपाठी पटनावाले

बिधि को बिबेक सों बनाउ बिरधान करि केसव कलेस नासकर रनधीर है । रुद्ररूप संसृति[4]-संहारक सुरेस आदि तपन तपत सीत सीतकर बीर है ॥ बिघ्न को बिदारन बिनायक के बाँटे परो सीताराम सरन सदासर समीर है । धारिबो धरा को जैसे धीर है धरेसजी को तारिबो तरंगिनी तिहारी तदबीर है ॥ १ ॥

---

१ ठंढी होंगी । २ मिट्टी । ३ नज़दीक आवेंगी । ४ सृष्टि ।

७९९. सारंग कवि

तंगन समेत काटि बिहित मतंगन सों रुधिर सों रंग रनमंडल मों भरिगो। सारँग सुकबि भनै भूपति भवानीसिंह पारथ समान महा-भारथ-सो करिगो ॥ मारे देखि मुगुल तुराबखान ताही समै काहू सो न जाना काहू नट-सो उचरिगो। बाजीगर की-सी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथी हाथा हाथते सहादति उतरिगो ॥१॥

८००. सुदर्शनसिंह, राजा चंद्रापुर के

पद

विनै करौं बनै नहीं सुबुद्धिहीन भारती[1]।
नहीं प्रसून चंदनादि पूजि कीन आरती ॥
कितो कपूत पूत पै कृपा छुटै न मातु की।
तजौ नहीं सुदर्सनै सु मेरि मातु जानकी ॥ १ ॥

८०१. हरिदास कवि कायस्थ, पन्नानिवासी (१)
(रसकौमुदी)

सुघर सुहागिनि बट[2] बिटप, पूजति भरी उछाहिं।
परति पाँव री प्रेम सों, भरति भाँवरी नाहिं ॥ १ ॥
खग मृग गन चित्रित जिते, निरखति तिते सहेत।
पै न स्वयम्बर-चित्र पै, चंदमुखी चित देत ॥ २ ॥
चंचल चखनि चितौनि की, जंघ जुगल दुति देख।
कदली बदली सी सजे, कदली बदली बेख ॥ ३॥

चलति न आतुरी न मन्द गति देखियत सूधी भौंह भाल ना बिसाल बंक लसिगो। लंक में न पीनता[3] न कुच पीन हरिदास मुख न मलीन न प्रभा प्रकास बसिगो ॥ लखति न सूधे औ न करति कटाच्छन को अच्छन द्वै दिन ते प्रमान यह फाँसिगो। सिसुताई जोबन में कासिगो पिया को मन मानो बिबिचुंबक के बीच लोह गँसिगो ॥१॥

---

१ सरस्वती। २ बर्गद का पेड़। ३ मोटाई।

सोवत जानि कै देवर सासुहि मोद भयो महिलैं। के हियो है।
भूषन डारे उतारि सबै गृह माँझ को दीनो बुझाइ दियो है॥
सोऊ उतारि बिचारि कै मैलो-सो चीर सरीर सुधारि लियो है।
यों अधराति अमावस की बनि कुंजन को अभिसार कियो है॥ २॥
पिय प्यारे के प्यार बिचारि-बिचारि प्रचार करै चतुराइन के।
मन में अति सोच सकोच भरै करै सोच सकोच लुगाइन के॥
हरिदास महाउर देन न देत महा उर नेह सुभाइन के।
परि लेत है बेरहि बेर भटू ठकुराइन पाँइन नाइन के॥ ३॥

लेहै बाँधि जूरो तऊ पानि सों न पूरो निज बारन गरूरो कुण्डली को रूप सैहै री। हरिदास ऐस ही जो बदन ललौंटी तौ या मोतिन की काँचुरी-सी सोभा सरसै है री॥ जाइ माति गोकुल बिलोकि तोहिं दूरि ही ते कुंजन ते बाँसुरी बजाइ आइ जैहै री। काली जानि आली रसप्याली पछुऐहै कहूँ ब्यालीसम बेनी बनमाली लखि पैहै री॥ ४॥

८०२. हरिदास कवि, बाँदानिवासी, नोने कवि के पिता (२)

कमल कला के कंज कानन भिरत चंच्छु[2] कमल कला के कंज कानन भिरत हैं। कहै हरिदास बैन मधुर मुलाम ग्राम मधुर मुलाम ग्राम आरभ थिरत हैं॥ कन्दरप दरप बिभूषन घिरत हेम कन्दरप दरप बिभूषन घिरत हैं॥ १॥ *

कोमल कंजन की कलिका अलि काहे न चित्त तहाँ तू रमायो।
मंजरी मंजु रसालन[3] की तिनको रस क्यों नहीं तो मन भायो॥
कुंजन औरै अनेक लता हरिदासजू आयो बसन्त सुहायो।
छोड़ि गुलाबन को बन तू कटसेरुवाँ पै केहि कारन आयो॥ २॥

---

१ स्त्री। २ नेत्र। ३ आम। ४ एक पेड़, जिसका फूल पीला होता है, और जिसमें काँटे बहुत होते हैं, पर सुगंध कम।

* मूल में तीन ही चरण थे, चौथे का पता नहीं है। सम्पादक

८०३. हरिदेव बनिया, बृन्दावनबासी
(छंदपयोनिधि पिंगल)

बरन-छंद में गनन की, नहिं गुन-दोषबिचार ।
मात्रिक छंदन में कियो, गन-गुन-दोष सिहार ॥ १ ॥
ग्रंथ बृत्तरतनावली, तामें यह निरधार ।
चिरंजीवजू भट्ट ने, कीन्हो यह निस्तार ॥ २ ॥
आसिरबादी सब्द सुर-बाची सुभ सुखदान ।
इनमें गन अरु दग्ध को, फल नहिं कियो बखान ॥३॥
अवासि मानुषी काव्य में, गन-गुन-दोष बिचार ।
दग्ध बरन हू के फलनि, ताही में निरधार ॥ ४ ॥

८०४. हरीराम कवि
(पिंगल)

सिद्धि मिलै द्वै मित्त मित्त सेवक जय जानहु ।
मित्त उदासी मिलत मिलत कछु लच्छन मानहु ॥
मिले मित्र अरु सत्रु बहुत पीड़ा उपजावहिं ।
दास मित्र के मिलत काज सिधि को नर पावहिं ॥
है सकल नास द्वै दास जहँ, हानि दास सम के मिले ।
हरिराम भनै है हारि सहि दासऽरु अरि जो कहुँ मिले ॥ १ ॥

८०५. हरदयाल कवि

प्यारी के दृगन में झमकि दृग पीतम के पीतम के नैन दृग प्यारी मनरंज हैं । चाउ में सिंगार साज मैनही के सुधासार दूध में पखारि धरे माधुरी के मंज हैं ॥ हरदयाल सुकवि रसाल उपमा बिसाल लाल मन लाल है कै मैनसरसंज हैं । कंज बीच खंज हैं कि खंज बीच कंज हैं कि कंज हैं कि खंज हैं कि दोऊ कंज खंज हैं ॥ १ ॥

---

१ अमृत का सारांश ।

८०६. हिरदेश कवि, झाँसीवाले
(शृंगारनवरस)

चंदन चहल चित्र महल हिदेस मोहे रस बतियान सों प्रमोद[1] सखियान में। खासे खस फरस फुहारे फुही फैल फैल फैल भर सीतल समीर छतियान में ।। गोरे गात सोहैं गरे गजरे चमेलिन के गुहे बर सुघर सहेली अति स्यान में । गोद ते उरोज कर परस गुलाब-जल छिरकत लाड़िली लली की अँखियान में ।। १ ।।

८०७. हरिनाथ कवि, असनीवाले, नरहरिजू के पुत्र

बाजपेई बाजसम पाँड़े पच्छिराज सम हंस-से त्रिबेदी जौन सोहैं बड़ी गाथ के । कुही सम सुकुल मयूर से तिवारी भारी जुर्रा सम मिसिर नवैया नहीं माथ के ।। नीलकंठ दीच्छित अवस्थी हैं चकोर चारु चक्रबाक दुबे गुरु सुख सुभ साथ के । एते द्विज जाने रंग-रंग के मैं आने देस-देस में बखाने चिरीखाने हरिनाथ के ।।१।।

छप्पै

हाटक[2] कंज मयंद चन्द दाड़िम[3] गयंद गति ।
छदन अरुन ऐंड़ात एक पक्षौ मदंड अति ।।
मिलि सुहागजल कुँधित सरद दरक्यो जँजीरजुत ।
तपत छपत कँस तरुन गात ततकाल रोस हुत ।।
हरिनाथ ओप ग्रीषम सिसिर अमरलोक लाली घुलत ।
यह रूप देखि तन सुन्दरी जहँ ब्रह्म बिष्णु मुनि मन डुलत ।। २ ।।

८०८. हरिहर कवि

कैला कालकूट के तचाई तेज बाड़व के सेस फूँक धमानि प्रचंड ताय चढ़ी है । आई आसमान ते कि आसमान पाई सान प्रलै की बुझाई पानी पैनी धार कढ़ी है ।। हरिहर हर को त्रिसूल हरि

---

१ आनंद । २ सुवर्ण । ३ अनार । ४ दुबले ।

चक्र पास बैरी बर बधिबे को भली बिधि पढ़ी है। अबदुलवाहिद के नबीखान तेरी तेग बज्र के हथौरा काल कारीगर गढ़ी है॥ १॥

८०६. हरिकेश कवि, जहाँगीराबादी बुंदेलखंडी

हाली[1] ग्वाली बरदिया[3], कटकैया कोतवार।
ये तुम पर दाया करैं, नितप्रति बारम्बार॥ १॥
चन्द्र धरनि रबि ध्रुव उदधि, सेस गनेस महेस।
चिर थिर राजि करौ सदा, छत्रपती जगतेस॥ २॥

मोर को मंजुल माथे किरीट लसै उर गुंज को हार ठगारो।
ठाढ़े रहे कब के हरिकेस खड़े अँगना तुम डीठि न टारो॥
साँची कहौ तुम या छबि सों बलि को हौ बिकाऊ-से रोंके दुआरो।
हैं तौ बिकाऊ जो लेत बनै हँसि बोल तिहारो है मोल हमारो॥ १॥

डहडहे डंकन को सबद निसंक होत बहबही सत्रुन की सेना आइ सर की। हाथिन के भुण्ड मारू राग की उमंग उतै चम्पति को नन्द चढ़यो उमँग समर की॥ कहै हरिकेस काली ताली दै नचत ज्यों-ज्यों लाली परसत छत्रसाल मुख बर की। फरकि-फरकि उठैं बाहैं अस्त्र बाँहिबे[5] को करकि-करकि उठैं करी बखतर की॥ २॥

८१०. हरिवंश मिश्र, बिलग्रामी

को तुम दर्भ[6] जवा तिल आखँत पूरित नीर गुमान भरी हौ।
श्रीबिरसिंह की दान-नदी हम जाति सुरी तुम जाति नरी हौ॥
काहे ते ना नमती हम को हरिबंस भनै का प्रभाव बरी हौ।
पानि-सरोज ते हैं हम जू तुम भिच्छुक[8] के पग ते निकरी हौ॥ १॥
करिये जु कहा बिन देखे तुम्हें गृह तौ दृगबारिधि सों भरिये।
भरिये दिन एक सुकै हरिबंस तऊ निसि जागत ही तरिये॥

---

१ बलदेव। २ कृष्ण। ३ शिव। ४ भैरव। ५ चलाने को। ६ कुश। ७ अक्षत=चाँवल। ८ वामन।

हरिये यहि लाज-तरंगिनि सों गुरुलोगन को डर जी धरिये।
धरिये नँदलाल दया उर में कबहूँक तौ गौन इतै करिये ॥ २ ॥

८११. हरि कवि

भावै खेल वाको मोहिं और ना सुहावै कछू सुन्दरी छबीली बनी पातरे से अंग है। लागत झकोर पौन कैसी लहरात जात चन्द ज्यों चकोर चाहै दीठि मेरी संग है ॥ गुन[1] सों लगाइ राखी चहौ तहाँ लिये जाउ ऊँचे-ऊँचे अटन पै कीजत सुरंग है। एहो कोऊ कामिनी लगी है चित्त कहो अहो ? कामिनी न होइ या चढ़ावत की चंग है ॥ १ ॥ सारद सुधार ढारै मोती बुद्धि सीप साँचे ढारि सिलपी बिधान युक्ति बर भेद्यो है। गुनन सों पोहि तीनो रीति चारो बृत्ति लरी सात को बनाइ हार दोष सबै छेद्यो है ॥ अलंकार दोऊ स्यामा स्याम अंग-अंगन में पहिराइ जुग छन्द अंकुस निबेद्यो है। लच्छना सु व्यंग्य धुनि ब्यंजना हू तातपर्ज नवौ रस हरि काव्य रचि दुख खेद्यो है ॥ २ ॥

८१२. हरिवल्लभ कवि

कुण्डलिया

हरिया हरिसों हेत करु, निसि-दिन आठो जाम।
भवसागर के भँवर में, यहै एक बिसराम ॥
यहै एक बिसराम काम जब जम सों परिहै।
मात पिता सुत बन्धु पीर कोऊ नहिं हरिहै ॥
हरिवल्लभ यह कहत देखु राँहट की घरिया।
निसिदिन आठौ जाम हेत हरि सों करु हरिया ॥

८१३. हरिलाल कवि

माँगत देह दधीचि दई बनि आई भली तिन हू पै बिदाई।

---

१ गुण और डोरा।

बामन द्वार गये बलि के सब भूमि दई अरु पीठि नपाई ॥
लाल कथा हरिचंदहु की सुनी सर्बस दीन न बात चलाई ।
राखिबो तौ कठिनाई नहीं रस राखि बिदा करिबो कठिनाई ॥ १ ॥

८१४. हठी कवि, ब्रजवासी
(राधाशतक)

कंचनफरस फैली मनिन मयूखै तैसे जरी को बितान तेज तरनि तरा परैं । पाँवड़े बिछौना बिछे मोतिन की कोरवारे चारों ओर जोर ज्यों प्रभा भराभरी परैं ॥ हीरन तखत बैठी राधे महारानी हठी रम्भा रति रूप गिरि धसकि धरा परैं । छूटी मुखचंद चारु किरनैं कतारैं बाँधि छ्वै छ्वै चन्द्रमण्डल पै छबि के छरा परैं ॥१॥

मखमल माखन से इन्दु की मयूखन[1] से नूतन तमालपत्र आभा अभरन हैं । गुल[2] से गुलाल से गुलाब जपा[3] पावकसे[4] जावक[5] प्रवाल[6] लाल सोभा के धरन हैं ॥ उमापति रमापति जमापति आठो जाम सेवत रहत चारि फल के फरन हैं । पंकजबरन रबि-छबि के हरन हठी सुख के करन राधे रावरे चरन हैं ॥ २ ॥

ऋषि सु बेद बसु ससि सहित, निर्मल मधु को पाइ ।
माधो तृतिया भृगु निरखि, रच्यो ग्रंथ सुखदाइ ॥ १ ॥

८१५. हनुमान कवि, बनारसी

दीपक-सो ज्वलित प्रताप रामचन्द्र तेरो जासु छबि छाई अंड अमल उजास की । कबि हनुमान कच्छ चरन फनिंद दंड भाजन महा है मही जगत निवास की ॥ उदधि[7] सनेह बाती सुभग हिरन्य सैल तेज है अखंड मारतंड तम नास की । जारि डार्‍यो आसु सत्रु समर हतासु काज जरत परत सोई कालिमा

---

१ किरन । २ फूल । ३ दुपहरिया का फूल । ४ अग्नि । ५ महावर । ६ मूँगा । ७ समुद्र

अकास की ॥ १ ॥ पाप सैलहा के पाकसासन सला के सम हेतु करता के भारहरन धरा के हैं । देन मनसा के सैलजा के जलजा के हाल जाके ध्यान छाके कटे संकट न का के हैं ॥ कंत कमला के लोक पालै बल जाके बेस बासके करैया हनुमान जियरा के हैं । ओज सविता के गुन कलपलता के महा मुकुतपताके पाँय जनकसुता के हैं ॥ २ ॥

८१६. हनुमंत कवि

राजै द्विजराज पद भूषित बिभूतिमान मुक्ति देत दीनन को बास बर भायो है । बंदित सुदेवदेव अधिक पुनीत रीत हुतभुक-नेही[1] चार मत उर लायो है ॥ कमलानिवास[2] बास बरनैं अनंत संत भनै हनुमंत तासु सुजस सुहायो है । कोऊ कहै इन्दु सिव सिंधु रवि बिष्णुजू को हौं तौ भूप मान परताप-गुन गायो है ॥ १ ॥

धावन[3] भेजु सखी वहि देस बसैं जिहि देस पिया मन भावन ।
भावन भोर या लूक लगी तन बीच लगी जियरा झरसावन ॥
सावन में न भयो हनुमंत दोऊ मिलि झूलि मलारहि गावन ।
गावन मोहिं सुहात नहीं बदरा बदराह लगे जुरि धावन ॥ २ ॥

८१७ होलराय कवि, होलपुर के

छप्पै

माथुर जग उजियार गौड़ गालिब गुन आगर ।
उन्नाये सखसेन नाग मुनि औ भटनागर ॥
ऐठाने आमिष्ठ प्रगट पुहुमी जे जाने ।
बालमीक कलि श्रेष्ठ सदा सूरमा बखाने ॥
कहि राय होल श्रीबासतव दिपहिं राजदरबार बर ।
गो-बिप्र हेत बिधनै रच्यो ये बारह कायस्थ घर ॥ १ ॥

---

१ अग्नि । २ लक्ष्मी का घर । ३ दूत ।

दिल्ली ते तख्त ह्वै है बख्त ना मुगल कैसो ह्वै है ना नगर कहूँ आगरा नगर ते। गंग ते न गुनी तानसेन ते न तानबन्द मान ते न राजा औ न दाता बीरबर ते ॥ खान खानखाना ते न नर नरहरि हू ते ह्वै है ना दिवान कोऊ बेडर टोडर ते। नवो खण्ड सात दीप सात हू समुद्र बीच ह्वै है ना जलालुद्दीन साह अकबर ते ॥ २ ॥

८१८. हजारीलाल त्रिवेदी, अलीगंज

सोरठा—या तन हरियर खेत, तरुनी हरिनी चरि गई।
अब हूँ चेत अचेत, अधचरचरा बचाइ ले ॥ १ ॥

८१९. हितनंद कवि

दारिद-कदन गजबदन रदंन[1] एक सदंन[2] हद न बुधि साधन सुधा के सर। धूमकेतु धीर के धुरंधर धवंल[3] धाम हेम के भरन सरनाम ना निधनकर ॥ लम्बोदर हेमवतीनंद हितनन्द भाल चंद कंद आनँद बिबुध बंदनीय बर। सदा सुभदायक सकल गुन लायक सु जै जै गननायक बिनायक बिघनहर ॥ १ ॥

८२०. श्रीहितहरिवंशजी स्वामी

पद

आजु निकुंज मंजु में खेलत नवलकिसोर अरु नवलकिसोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर अति अभूत भूतल पर जोरी ॥
बिद्रुम फटिक बिबिध निर्मित घर नव कर्पूर परॉग न थोरी।
कोमल किसलय सैन सुपेसल ता पर स्यामल निबिसत गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायन पीक कपोल कमल पर जोरी।
गौर स्याम भुज कलह मनोहर नीबी बंधन मोहन डोरी ॥
यों उर मुकुर बिलोकि अपनपौ बिभ्रम बिकल मानजुत भोरी।
चिबुंक[5] सुचारु प्रलोइ प्रबोधित प्रिय प्रतिबिम्ब जनाइ निहोरी।

---

१ दाँत। २ घर। ३ उज्ज्वल। ४ धूर। ५ ठोढ़ी।

नेति नेति बचनामृत सुनि सुनि ललितादिक देखत दुरि चोरी।
हितहरिबंस करत कर-धूनन प्रनय कोप माला बलि तोरी॥ १॥

८२१. हरिभानु कवि

(नरेंद्रभूषण)

कैधौं है सिंगार बीच रौद्र रस रेख कैधौं सोहत कसौटी कैधौं कनक सराफ काम। कैधौं तम ऊपर रजोगुन की लीक मृदु कैधौं घन दामिनी लसत महा अभिराम॥ कैधौं स्याम भामिनी को भूखि कै बिधाता कीनी न्हाइबे को नीकी बर रेसम की डोरी दाम। कैधौं प्यारे प्रीतम के बस करिबे को भानु सेंदुर सुबेस माँग सुन्दर सँवारी बाम॥ १॥ संग दल भारो घोर धुरत नमारो कोई और न बिचारो कोई तोरावर रावरो। पेल परी अधिकात फरियारो गैल गैल खैल भैल अति सु मुलुक भयो घावरो॥ बैरिन की बाला यों कहत निज बालम सों बैरिन रच्यो है कंत कीनो कालु रावरो। सूधी मति जानो आन कबिन बखानो भानुसिंह रनजोर सुनियत रन रावरो॥ २॥

८२२. हुसेन कवि

कज्जल सी निसि सज्जल[3] से घन तज्जल में चली संग न सथ्थी।
कुंज अँध्यारी सिधारी हुसेन बिहारी पै जाति ती सुद्धि मैं न थ्थी॥
किंचक दब्बत सर्प लग्यो पग सर्प घसीटत एक पगथ्थी।
जोर जँजीर जरो जकरो मनो छूटि चलो मनमथ्थ को हथ्थी॥ १॥

८२३. हेमगोपाल कवि

चंद ते स्याम कलंक ते उज्ज्वल है निसि चंद पै चंद न होई।
बर्षि सुधा सबको सुख देत रहै जो महेस के मस्तक सोई॥

---

१ नहीं-नहीं। २। छिपकर। ३। जलभरे। ४। एक पैर से थी।

है बिपरीत नहीं बिपरीत सु बेद पुरान कहैं सब कोई।
मास के मध्य में हेमगोपाल बदौं नर ताहि कहै कवि जोई॥ १॥ *

८२४. हेमनाथ कवि

जोर परे जोर जात भार परे भूमि जात झूमि जात जोबन अनंग रंग रस है। कहै हेमनाथ सुख सम्पति बिपति जात जात दुख दारिद समूह सरबस है॥ गढ़ गिरि जात गरुआई औ गरब जात जात सुख-पाहिबी समूह सब रस है। बाग कटि जात कुआँ ताल पटि जात नदी नद घटि जात पै न जात जग जस है॥ १॥ एक रसना[1] मै जाम जपत हौं रामै ता मै तेरो जस जोरि कामै कबहूँ बिसारि हौं। कहै हेमनाथ नरनाथन के आगे जाय तेरो जस जाहिर जवाहिर पसारि हौं॥ कौन देहै मोल मोहिं केहरी कल्यान-साहि नाम सो नगीना कहि काके कान डारि हौं। साँपिनि सुनाइ गुन गारुड़ी तिहारो पढ़ि सूम उर बिबर[2] सों बाहर कै डारि हौं॥२॥

८२५. हेम कवि

करि कै सिंगार अली चली पिय पास तेरे रूप को दिमाग काम कैसे धीर धरि है। एरी मृगनैनी चाल चलत मरालन[3] की तेरी छबि देखे ते पिया न ध्यान टरि है॥ ता ते तू बैठि रूप-आगरी सु मन्दिर में तेरे रूप देखे ते अरकरथ[4] अरि है। कहै कवि हेम हियो ढाँपि लेहु अंचल ते पेटी ना दिखाउ कोऊ पेट मारि मरि है॥ १॥

८२६. हरिश्चंद्र बाबू बनारसी श्रीगिरिधरदास के पुत्र

(सुंदरीतिलक)

तब तौ बहु भाँति भरोसो दियो अबहीं हम लाय मिलावती हैं।
हरिचंद भरोसे रहीं उनके सखियाँ जे हमारी कहावती हैं॥
अब तेऊ दगा दै बिदा है गईं उलटे मिलि कै समुझावती हैं।

---

* यह कवित्त कूट है। १ जीभ। २ बाँबी। ३ हंस। ४ सूर्य का रथ।

पहिले तो लगाय कै आगि सबै जल को अब आपुहि धावती हैं ॥१॥
जानि सुजान मैं प्रीति करी सहि कै जग की बहुभाँति हँसाई ।
त्यों हरिचंद जू जो जो कह्यो सो कस्यो चुप ह्वै करि कोटि उपाई ॥
सोऊ नहीं निबही उनसों उन तोरत बार कछू न लगाई ।
साँची भई कहनावति या अरी ऊँची दुकान की फीकी मिठाई ॥ २ ॥

८२७. हरजीवन कवि

हरजीवन नेह भरी न रहै घर जी मनमोहन के गरजी ।
गरजी सुनिकै उनकी मुरली ततकाल हिये में लग्यो सरजी ॥
सरजीवन देह न ऐसी परी सु मनो धन प्रान गये धरजी ।
धर जीभ गई लटराय तऊ मुख से निकसै हरजी हरजी ॥ १ ॥

८२८. हरदेव कवि

उड़ि उड़ि जात घनसार घन सोभासार हेरि हेरि हंसन सी करतै अतारै सी । कहि हरदेव हिमगिरि सी गिरा सी गंग की सी सरसाती है रती के तोर तारै सी ॥ कीरति तिहारी रघुनाथराव महादानि पुंडरीक-स्रेनी सुभ्र सहज सतारै सी । छीरद की ह्वै रही छटा सी छिति छोर पर चारौ ओर ह्वै रही कलानिधि कतारै सी ॥ १ ॥

८२९. हरिलाल

केसरि निकाई किसलय कीरताई लिये झाईं नाहीं जिनकी धरत अलकत है । दिनकर-सारथी ते देखियत एते सैन अधिक अनार की कली ते अरकत है ॥ लीला सी लसत जहाँ हीरा सी हँसनि राजै नैन निरखत अलकत असकत है । जीते नगलाल हरिलाल लाल अधरन सुघर प्रबाल से रसाल झलकत हैं ॥ १ ॥

---

१ बाण । २ सरस्वती । ३ कमल की पंक्ति । ४ अरुण । ५ मूँगा । ६ रसीले ।

८३०. हरिजन कवि

मेरे नैन अंजन तिहारे अधरन पर सोभा देखि गुमर बढ़ावैं सबै सखियाँ। मेरे अधरन पै ललाई पीक लाल तैसे रावरे कपोल गोल नोखी लीक लखियाँ ॥ कबि हरिजन मेरे उर गुन-माल तेरे बिन गुन माल रेख सेख देखि झखियाँ। देखौ लै मुकुर[1] दुति कौन की अधिक लाल मेरी लाल चूनरी तिहारी लाल अँखियाँ ॥ १ ॥

८३१. हरिजू कवि

माया के निसान जे निसान अपकीरति[2] के जानत जहान कहूँ कहूँ उसुरन सों। कुंज सी कु ये ही अंग ऐबी गुमराही गुनी देखि अनखाय पगे पाप कुकुरन सों ॥ हरिजू सुकबि कहै बचन अमोलन के जाति कुरबातन बसाति असुरन सों। माँगत इनाम करतार पै पुकारि कहौं परै जानि काम ऐसे सूम ससुरन सों ॥ १ ॥

८३२ हीरामणि कवि

छाये रहे माड़व गवाये रहे गीत रीत न्योते न्योतहारी सों बरात रही बनि ये। भीषम सकुचि घर भीतर ही बैठि रहे रोष करि लिये जात द्वारका को धनि ये ॥ हीरामनि रुकुम पुकार लगे यह सुनि बिफल से बाँधि लिये हनते को हानि ये। हरि कर कहत रुकुमिनी सों जादौनाथ अजहूँ तिहारे बीर सूरन में सनि गे ॥ १ ॥ डारि डारि हलधर हल कही बारबार कलप कलप की कलंक कुल दै गयो। हीरामनि कहै जब कोऊ ना लग्यो पुकार पांडुसुत है प्रचण्ड पुण्डरीक कै गयो ॥ तेह ते तमकि यों रुकिमिनी ने कही बात जब जदुनाथ प्रभुजू को दम दैगयो। साँझ बिन सूझे बिन बूझे बिन जूझे बिन अरजुन पकरि सुभद्राजी को लै गयो ॥ २ ॥

८३३. हरीराम प्राचीन

लागे लाल चौकी में बिराजैं हरीराम कहै रोमावली दंड है

---

१ आईना। २ अपयश।

अकाल दिया काम को। कैधौं जलधर एक धारा सों बिराजत है कैधौं कबेरी की परछाईं झाईं बाम को॥ कैधौं गजसुण्ड नाभि-कुण्ड जल पान करै कैधौं कामदेव लिखि राख्यो रति-नाम को। कैधौं कुच भूप सीमा[2] बाँटि लीनी आधै-आध कैधौं है पिपीलिका[3] की पाँति चली धाम को॥ १॥

८३४. हिमाचलराम शाकद्वीपी,भटौलीवाले

एक समै प्रभु खेलहिं गेंद गिरो जमुनाजल मध्यहि माहीं।
कूदि पस्यो हरि ताही के हेत गयो धसि पैठि पतालहि जाहीं॥
बाल सखा बहु रोदन कै हिय सोच बड़ो गये मैहरि पाहीं।
कृष्ण तिहारो डुबो जमुना विच ढूँढि थके हम पावत नाहीं॥१॥

८३५. हीरालाल कवि

हिमंकर बैरी और हाथी औ हरिन हरि खंजरीट बैरी तेरो मीन औ मराल री। कदली कपूर फेरि कोकिल की बैरिनि तू दाड़िम बँधूक बिम्ब बैरी हैं सँवार री॥ चम्पा सम्पा चंचरीक कीर कम्बु हीरालाल जमुना औ सौति बैरी कुन्दन औ व्याल री। एते सबै बैरी तेरे एक हितू स्याम तेरे स्याम हू ते बैर तेरो ह्वैहै कौन हाल री॥ १॥

८३६. हुलास कवि

व्याप्यो न काहि बियैव को बेदन कौन सुभाउ न मंगल पेख्यो।
कौन तिया को सिंगार न भावत कौन सी रैनि जो चंद न लेख्यो॥
काहे हुलास संजोगिनी के जिय साँची कहौ यह बात बिसेख्यो।
बाँझ को पूत बिना अँखियान कुहूनिसि[5] में ससि पूरन देख्यो॥१॥

८३७. हरिदास वृन्दावनवासी

पद

जयति राधिकारमण वरचरणपरिचरणरतिवल्लभाधीशसुतविट्ठलेशे।

---

१ चोटी। २ हद। ३ चींटी। ४ चंद्रमा। ५ अमावस की रात।

दासजनलौकिकालौकिके सर्वथा कैवंचित्तोदयति हृदयदेशे ॥
स्थापयत मानसं सततकृतलालसं सहजसुखमारुचिररूपवेशे ।
भालगततिलकमुद्रादिशोभासहितमस्तकाबद्धसितकृष्णकेशे ॥
सहजहासादियुतवदनपंकजसरसवचनरचनापराजितसुदेशे ।
अखिलसाधनरहितदोषशतसहितमतिदासहरिदासगातनिजवलेशे १॥

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधुमण्डलीन जायके। धायो न धर्मकि बृन्दाबिपिन के कुंजन में रह्यो न सरन जाइ बिट्ठलेसराय के ॥ नाथजू न देखि छक्यो छनहू छबीली छबि सिंहपौरि पर्यो नाहिं सीसहू नवाय के। कहै हरिदास तोहिं लाज हू न आवै जिय जनम गँवायो न कमायो कछु आय के ॥ १ ॥

८३८. हरिचरणदास कवि
(भाषा बृहत्कविवल्लभ)

आनँद को कन्द बृषभानुजा को मुखचंद लीला ही ते मोहन के मानस को चोरै है । दूजो तैसो रचिबे को चाहत बिरंचि नित ससि को बनावै अजौं मुख को न मोरै है ॥ फेरत है सान आसमान पै चढ़ाय फेरि पानिप चढ़ाइबे को बारिधि में बोरै है। राधिका के आनन को जोट न बिलोकै बिधि टूक-टूक तोरै फेरि टूक-टूक जोरै है ॥ १ ॥

८३९. हरिश्चन्द्र कवि बरसानेवाले
(छन्दस्वरूपिणी पिंगल)

सोरठा—गनपति-पद सिर नाइ, बरनौं छन्दस्वरूपिनी ।
मात्रन बरन गनाइ, नाम रूप प्रतिछन्द को ॥ १ ॥

दोहा—कहुँ हरिचंद्रै कहूँ हरि, कहूँ चन्द्रही नाम ।
ग्रंथ भरे में छन्दप्रति, यहै कियो लिखि काम ॥ २ ॥

सवैया

काल कमाल कराल करालन साल बिसालन चाल चली है ।
हाल बिहालन ताल तमाल प्रबाल के बालक लाल लली है ॥
लोल बिलोल कलोल अमोल कलाल कपोल कलोल कली है ।
बोलन बोल कपोलन डोल गलोलग लोल रलोल गली है ॥ ३ ॥

इति श्रीशिवसिंहसेंगरविरचितो शिवसिंहसरोज-
संग्रहः सम्पूर्णः ।

कवियों के जीवनचरित्र

१ अकबर बादशाह, दिल्ली; संवत् १५८४ में उत्पन्न हुए।

इनके हालात में अकबरनामा, आईन-अकबरी, तवकात्-अकबरी, अब्दुलकादिर बदायूनी की तारीख़ इत्यादि बड़ी बड़ी किताबें लिखी गई हैं, जिनसे इस महा प्रतापी बादशाह का जीवनचरित्र साफ़-साफ़ मालूम होजाता है। यहाँ केवल हमको उनकी कविता का वर्णन करना आवश्यक है। हमको इनका कोई ग्रंथ नहीं मिला। दो-चार कवित्त जो मिले, सो हमने लिख दिये हैं। जहाँगीर बादशाह ने अपने जीवनचरित्र की किताब तुज़ुक-जहाँगीरी में लिखा है कि अकबर बादशाह कुछ पढ़े-लिखे न थे, परन्तु मौलाना अब्दुल्कादिर की किताब से प्रकट है कि अकबर बादशाह एक रात को आप ही संस्कृत महाभारत का उल्था कराने बैठे थे। सुलतान मुहम्मद थानेसरी और खुद मौलाना बदायूनी और शेख़ फ़ैज़ी[1] ने जहाँ-जहाँ कुछ आशय छोड़ दिया था उसका फिर तर्जुमा करने का हुक्म दिया। इनके समय में नरहरि, करन, होल, ख़ानख़ाना, बीरबल, गंग इत्यादि बड़े-बड़े कवि हुए हैं। पाँच ख़ास कवि जो नौकर थे, उनके नाम इस सवैया में हैं—

सवैया

पाइ प्रसिद्धि पुरंदर ब्रह्म सुधारस अंमृत अंमृत बानी।
गोकुल गोप गोपाल गनेस गुनी गुनसागर गंग सु ज्ञानी॥
जोध जगन्न जमे जगदीस जगामग जैत जगत्त है जानी।
कोर अकब्बर सैन कथी इतने मिलिकै कविता जु बखानी॥ १॥

---

१ शेख़ फ़ैज़ी बहुत बड़ा विद्वान् था। अकबर उसे बहुत मानते थे।

श्रीगोसाईं तुलसीदास इनके दरबार में हाज़िर नहीं हुए। सूरदासजी और उनके पिता बाबा रामदास गानेवालों में नौकर थे, जैसा कि आईन-अकबरी में लिखा है। केशवदासजी उस समय में इनके मंत्री श्रीराजा बीरबल के दरबार में हाज़िर हुए थे, जब इन्द्रजीत राजा उड़छा बुंदेलखण्डी पर प्रबीनराइ पातुर के लिये बादशाही कोप था॥

दोहा—जाको जस है जगत में, जगत सराहै जाहि।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि॥ १ सफ़ा॥

२ अजबेश प्राचीन (१), सं० १५७० में उ०।

यह कवि श्रीराजा वीरभानुसिंह, जोधपुर के यहाँ थे, और उसी देश के रहने वाले बंदीजन मालूम होते हैं॥ २ सफ़ा॥

३ अजबेश नवीन भाट (२), सं० १८९२ में उ०।

यह कवि श्रीमहाराजा विश्वनाथसिंह बान्धव-नरेश के यहाँ थे॥ २ सफ़ा॥

४ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी सातनपुरवा, ज़िला
रायबरेली, औध छाप है। विद्यमान हैं।

यह कवि संस्कृत और भाषाके महान् पण्डित आजतक विद्यमान हैं। इनकी कविता बहुत सरस और अनोखी है। छन्दानन्द, साहित्य-सुधासागर, राम कवित्तावली इत्यादि ग्रन्थ बनाये और बहुधा श्रीअयोध्याजी में बाबा रघुनाथदास महन्त और चन्दापुर में राजा जगमोहन सिंह के यहाँ रहा करते हैं॥ ३ सफ़ा॥

५ अघधेश ब्राह्मण बुंदेलखण्डी, चरखारी, सं० १९०१ में उ०।

यह कवि राजा रतनसिंह बुंदेला चरखारी अधिपति के क़दीम कवि हैं। इनकी कविता सरस है। परन्तु मैंने कोई ग्रन्थ इनका नहीं पाया॥ ४ सफ़ा॥

६ अवधेश ब्राह्मण सूपा के (२), बुंदेलखण्डी, सं० १८९५ में उ०।

यह कवि बहुत सुन्दर कविता करने में चतुर थे। परन्तु कोई ग्रन्थ मैंने इनका नहीं पाया॥ ४ सफ़ा॥

७ अवधबक्स, संवत् १९०४ में उ०।

कविता सरस है। गाँव-ठाँव मालूम नहीं॥ ४ सफ़ा॥

८ औध कवि, संवत् १८९६ में उ०।

इनके हालात से हम नावाकिफ़ हैं, और भ्रम होता है कि शायद जो कवित्त हमने इनके नाम से लिखा है, वह वाजपेयी अयोध्याप्रसाद का न हो॥ ७ सफ़ा॥

९ अयोध्याप्रसाद शुक्ल, गोला गोकरननाथ, ज़िला खीरी, सं० १९०२ में उ०।

यह कुछ विशेष उत्तम कवि तो नहीं थे, हाँ कविता करते थे, और बहुतेरे ग्रन्थ इनके बनाये मैंने देखे हैं। राजा भूड़ के यहाँ इनका बड़ा मान था॥ ७ सफ़ा॥

१० आनन्दसिंह, नाम दुर्गासिंह, अहबन दिकोलिया, ज़िले सीतापुर। विद्यमान हैं।

सामान्य कवि हैं। अभी कोई ग्रन्थ नहीं बनाया॥ ९ सफ़ा॥

११ अमरेश कवि, सं० १६३५ में उ०।

इनकी कविता बड़ी उत्तम है। कालिदासजू ने अपने हज़ारे में इनकी कविता बहुत सी लिखी है॥ ९ सफ़ा॥

१२ अंबुज कवि, सं० १८७५ में उ०।

इनके नीति-संबंधी कवित्त और नखशिख बहुत सरस हैं॥ ५ सफ़ा॥

१३ आजम कवि, सं० १८९६ में उ०।

यह मुसलमान कवि कविता के चाहक थे, और कवियों के सत्संग में सुंदर काव्य करते थे। इनका बनाया हुआ नखशिख और षट्ऋतु अच्छा है॥ ५ सफ़ा॥

१४ अहमद कवि, सं० १६७० में उ० ।

इनका मत सूफी अर्थात् वेदांतियों से मिलता-जुलता था। इनके दोहा, सोरठा बहुत ही चुटीले, रसीले हैं ॥ ६ सफ़ा ॥

१५ अनन्य कवि (१), सं० १७१० में उ० ।

वेदांत-संबन्धी तथा नीति, चेतावनी, सामयिक वार्ता में इनकी बहुत कविता है ॥ ६ सफ़ा ॥

१६ आलम कवि (१), सं० १७१२ में उ० ।

पहले सनाढ्य ब्राह्मण थे, पीछे किसी रँगरेजिन के इश्क में मुसल्मान होकर मुअज्जम शाह (शाहज़ादे शाहजहाँ बादशाह) की ख़िदमत में बहुत दिनों तक रहे। कविता बहुत सुंदर है ॥ ६ सफ़ा ॥ (?)

१७ असकंदगिरि, बाँदा, बुंदेलखंडी सं० १६१६ में उ० ।

यह कवि गोसाईं हिम्मतबहादुर के वंश में थे, और कविता के बड़े चाहक, गुणग्राहक थे। नायिका भेद का एक ग्रंथ असकंद-विनोद नाम बहुत अद्भुत रचा है ॥ १० सफ़ा ॥

१८ अनूपदास कवि, सं० १८०१ में उ० ।

शांत-रस में बहुधा इनके कवित्त, दोहा, गीत आदि देखे गये ॥ १० सफ़ा ॥

१९ ओलीराम कवि, सं० १६२१ में उ० ।

कालिदासजी ने इनका काव्य अपने हजारे में लिखा है ॥ ११ सफ़ा ॥

२० अभयराम कवि, वृन्दावनी सं० १६०२ में उ० ।

ऐज़न ॥ ११ सफ़ा ॥

२१ अमृत कवि, सं० १६०२ में उ० ।

अकबर बादशाह के यहाँ थे ॥ ११ सफ़ा ॥

२२ आनन्दघन कवि दिल्लीवाले, सं० १७१५ में उ० ॥

इन कवि की कविता सूर्य के समान भासमान है। मैंने कोई

ग्रंथ इनका नहीं देखा। इनके फुटकर कवित्त प्रायः पाँच सौ तक मेरे पुस्तकालय में होंगे ॥ ११ सफ़ा ॥

२३ अभिमन्यु कवि, सं० १६८० में उ० ।

इनकी कविता शृंगार-रस में चोखी है ॥ १२ सफ़ा ॥

२४ अनन्त कवि, सं० १६६२ में उ० ।

नायिकाभेद का इनका एक ग्रन्थ अनन्तानन्द है ॥ १२ सफ़ा ॥

२५ आदिल कवि, सं० १७६२ में उ० ।

फुटकर काव्य है। कोई ग्रन्थ देखा-सुना नहीं ॥ १२ सफ़ा ॥

२६ अलमिन कवि, सं० १६३३ में उ० ।

सुन्दरीतिलक में इनके कवित्त हैं ॥ १३ सफ़ा ॥

२७ अनीश कवि, सं० १६११ में उ० ।

दिग्विजयभूषण में इनके कवित्त हैं ॥ १३ सफ़ा ॥

२८ अनुनैन कवि, सं० १८६६ में उ० ।

इनका नखशिख अच्छा है ॥ १३ सफ़ा ॥

२९ अनाथदास कवि, सं० १७१६ में उ० ।

शांतरस-सम्बन्धी काव्य किया है, और विचारमाला नाम ग्रन्थ बनाया है ॥ १४ सफ़ा ॥

३० अक्षरअनन्य कवि, सं० १७१० में उ० ।

शान्त-रस का काव्य किया है ॥ १४ सफ़ा ॥

३१ अनन्य कवि (२)

दुर्गाजी का भाषा-अनुवाद किया है ॥ १० सफ़ा ॥

३२ अब्दुलरहिमान दिल्लीवाले, सं० १७३८ में उ० ।

यह कवि मोअज्जमशाह के यहाँ थे, और यमकशतक नाम ग्रन्थ अति विचित्र बनाया है ॥ ५ सफ़ा ॥

३३ अमरदास कवि, १७१२ में उ० ।

सामान्य काव्य है। कोई ग्रंथ इनका देखा-सुना नहीं ॥ २ सफ़ा ॥

३४ अगर कवि, सं० १६२६ में उ० ।

नीति-सम्बन्धी कुंडलिया, छप्पय, दोहा इत्यादि बहुत बनाये हैं ।। ८ सफ़ा ।।

३५ अग्रदास गलता, जयपुर-राज्य के निवासी, सं० १५६५ में उ० ।

इनके बहुत पद रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम में हैं। ये महाराजा कृष्णदास पयअहारी के शिष्य थे, और इन महाराज के नाभादास भक्तमाल-ग्रन्थकर्त्ता शिष्य थे ।। १८ सफ़ा ।।

३६ अनन्यदास चकेदवा, ज़िले गोंडावासी ब्राह्मण, सं० १२२५ में उ० ।

महाराजा पृथ्वीचन्द दिल्लीदेशाधीश के यहाँ अनन्ययोग नाम ग्रन्थ बनाया है ।। १४ सफ़ा ।।

३७ आसकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ़-वाले के पुत्र, सं० १६१५ में उ० ।

पद बहुत बनाये हैं, जो कृष्णानन्द व्यासदेव के संगृहीत ग्रंथ में मौजूद हैं ।। १४ सफ़ा ।।

३८ अमरसिंह हाड़ा जोधपुर के राजा सं० १६२१ में उ० ।

यह महाराज अमरसिंह श्रीहाड़ा-वंशावतंस सूरसिंह के पौत्र हैं, जिन सूरसिंह ने छः लाख रुपए एक दिन में छः कवियों को इनाम में दिए थे, और जिनके पिता गजसिंह ने राजपूताने के कवियों को धनाधीश कर दिया था । राजा अमरसिंह की तारीफ़ में जो बनवारी कवि ने यह कवित्त कहा है कि "हाथ की बड़ाई की बड़ाई जमधर की" सो इसकी बाबत टाडसाहब की किताब टाडराजस्थान से हम कुछ लिखते हैं । प्रकट हो कि राजा अमरसिंह हाड़ा महागुणग्राहक और साहित्य-शास्त्र के बड़े क़दरदान और ख़ुद भी महाकवि थे । इन्हीं महाराजा ने पृथ्वीराजरायसा चन्द्रकवि-कृत को सारे राजपूताने में तलाश कराकर उनहत्तर खण्ड तक जमा किया, जो अब सारे राजपूताने में बड़े-बड़े पुस्तकालयों में

मौजूद है। शाहजहाँ बादशाह के यहाँ अमरसिंह का मनसब तीन-हजारी था। अमरसिंह बहुधा सैर-शिकार में रहा करते थे, इस लिये एक दफ़े शाहजहाँ ने नाराज़ होकर कुछ जुरमाना किया, और सलावतखाँ बख़शी उल्मुमालिक को जुरमाना वसूल करने को नियत किया। अमरसिंह महाक्रोधाग्नि से प्रज्वलित हो दरबारमें आए। पहले एक खंजर से सलावतखाँ का काम तमाम किया, पीछे शाहजहाँ पर भी तलवार आबदार झाड़ी। तलवार खंभे में लगी। बादशाह तो भाग बचे। अमरसिंह ने पाँच और बड़े सरदार मुग़लों को मारा। आप भी उसी जगह अपने साले अर्जुन गौर के हाथ से मारे गये। विस्तार के भय से मैंने संक्षेप लिखा है॥

३९ आनन्द कवि, सं० १७११ में उ०।

कोकसार और सामुद्रिक दो ग्रन्थ इनके बनाये हैं॥

४० अंबरभाट चौजीतपुर बुंदेलखण्डी, सं० १९१० में उ०।

४१ अनूप कवि, सं० १७९८ में उ०।

४२ आकूब खाँ कवि, सं० १७७५ में उ०।

रसिकप्रिया का तिलक बनाया है॥

४३ अनवर खाँ कवि, सं० १७८० में उ०।

अनवरचन्द्रिका नाम ग्रन्थ सतसई का टीका बनाया है॥

४४ आसिफ़ खाँ कवि, सं०१७३८ में उ०।

४५ आछेलाल भाट कन्नौजवासी, सं० १८८९ में उ०।

४६ अमरजी कवि राजपूताने वाले।

राजपूताने में ये कवीश्वर महानामी हो गुजरे हैं। टाडसाहब ने राजस्थान में इनका ज़िक्र किया है॥

४७ अजीतसिंह राठौर उदयपुर के राजा, सं० १७८७ में उ०।

इन महाराज ने राजरूपकाख्यात नाम एक ग्रन्थ बहुत बड़ा

वंशावली का बनवाया है। इस ग्रंथ में वंशावली जयचन्द राठौर महाराजा कन्नौज की तब से प्रारंभ की है, जब नयनपाल ने संवत् ५२६ में कन्नौज को फ़ते करके अजयपाल राजा कन्नौज का वध किया था। तब से लेकर राजा जयचंद तक सब हालात लिख फिर दूसरे खण्ड में राजा यशवंतसिंह के मरण अर्थात् संवत् १७३५ तक के सब हाल लिखे हैं। तीसरे खण्ड में सूर्य-वंश जहाँ से प्रारंभ हुआ वहाँ से यशवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह के बालेपन अर्थात् १७८७ तक का वर्णन किया है॥

१ इच्छाराम अवस्थी पचरुवा इलाक़े हैदरगढ़ के, सं० १८५५ में उ०।

ब्रह्मविलास नाम ग्रन्थ वेदांत में बहुत बड़ा बनाया है। यह बड़े सत्-कवि थे॥ १६ सफ़ा॥

२ ईश्वर कवि, सं० १७३० में उ०।

यह कवि औरंगज़ेब के यहाँ थे। कविता सरस है॥ १५ सफ़ा॥

३ इन्दुकवि, सं० १७७६ में उ०।

यह कवि सामान्य हैं॥ १५ सफ़ा॥

४ ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी पीरनगर ज़िले सीतापुर, विद्यमान हैं।

रामविलास ग्रंथ, वाल्मीकीय रामायण का उल्था, नाना छन्दों में काव्यरीति से किया है॥ १५ सफ़ा॥

५ ईश कवि, सं० १७६६ में उ०।

शृङ्गार और शांत रस की इनकी कविता बहुत ही ललित है॥ १६ सफ़ा॥

६ इंद्रजीत त्रिपाठी बनपुरा अंतरबेदवाले, सं० १७३६ में उ०।

औरंगजेब के नौकर थे॥ १६ सफ़ा॥

७ ईसुफ़ ख़ाँ कवि, सं० १७६१ में उ०।

सतसई और रसिकप्रिया की टीका की है॥

१ उदयसिंह महाराजा मारवार, सं० १५१२ में उ० ।

ख्यात नाम ग्रंथ बनाया, जिसमें अपने, अपने पुत्र गजसिंह और अपने पोते यशवंतसिंह के जीवनचरित्र लिखे हैं ॥

२ उदयनाथ बंदीजन काशीवासी, सं० १७११ में उ० ।

उदयनाथ नाम कविन्द का भी है, जो कालिदास कवि के पुत्र और दूलह कवि बनपुरा-निवासी के पिता थे ॥ १७ सफ़ा ॥

३ उदेश भाट बुंदेलखण्डी, सं० १८१५ में उ० ।

सामयिक कवित्त बहुधा कहे हैं ॥ १७ सफ़ा ॥

४ ऊधोराम कवि, सं० १६१० में उ० ।

इनकी कविता कालिदासजू ने अपने हज़ारे में लिखी है ॥ १७ सफ़ा ॥

५ ऊधो कवि, सं० १८५३ में उ० ।

सामान्य कवि थे ॥ १८ सफ़ा ॥

६ उमेद कवि, सं० १८५३ में उ० ।

इनका नखशिख सुंदर है । मालूम होता है, यह कवि अंतरबेद अथवा शाहजहाँपुर के निकट किसी गाँव के रहने वाले थे ॥ १८सफ़ा॥

७ उमरावसिंह पँवार सैदगाँव, ज़िले सीतापुर। विद्यमान हैं ।

कुछ कविता करते और कविलोगों का सत्संग रखते हैं ॥ १८ सफ़ा ॥

८ उनियारे के राजा कछवाहे, सं० १८८० में उ० ।

भाषाभूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक बहुत विचित्र बनाया है। नाम हमारी किताब से जाता रहा । उनियारा एक रियासत का नाम है, जो जयपुर में है ॥

१ केशवदास सनाढ्य मिश्र (१) बुंदेलखंडी, सं० १६२४ में उ० ।

इनका प्राचीन निवास टेहरी था। राजा मधुकरशाह उड़छावाले के यहाँ आये, और वहाँ इनका बड़ा सम्मान हुआ। राजा इंद्रजीत-सिंह ने २१ गाँव संकल्प कर दिये । तब कुटुंब-सहित उड़छे में रहने-

लगे। भाषाकाव्य का तो इनको माम, मम्मट, भरत के समान प्रथम आचार्य समझना चाहिये, क्यों कि काव्य के दसो अंग पहले-पहल इन्हीं ने कविप्रिया ग्रंथ में वर्णन किये। पीछे अनेक आचार्यों ने नाना ग्रंथ भाषा में रचे। प्रथम मधुकरशाह के नाम से विज्ञानगीता ग्रंथ बनाया, और कविप्रिया ग्रंथ प्रवीणराय पातुर के लिये रचा। रामचंद्रिका राजा मधुकरशाह के पुत्र इंद्रजीत के नाम से बनाई, और रसिकप्रिया साहित्य और रामअलंकृतमंजरी पिंगल ये दोनो ग्रंथ विद्वज्जनों के उपकारार्थ रचे। जब अकबर बादशाह ने प्रवीणराय पातुर के हाज़िर न होने, उदूलहुकुमी और लड़ाई के कारण राजा इंद्रजीत पर एक करोड़ रुपए का जुरमाना किया, तब केशवदासजी ने छिपकर राजा बीरबल मंत्री से मुलाक़ात की, और बीरबल की प्रशंसा में "दियो करतार दूहूँ कर तारी" यह कवित्त पढ़ा। तब राजा बीरबल ने महाप्रसन्न हो जुरमाना माफ़ कराया। परंतु प्रवीणराय को दरबार में आना पड़ा॥ १८ सफ़ा॥

२ केशवदास (२)।

सामान्य कविता है॥ २१ सफ़ा॥

३ केशवराय बाबू बघेलखण्डी, सं० १७३६ में उ०।

इन्होंने नायिकाभेद का एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है और इनके कवित्त बलदेव कवि ने अपने संगृहीत ग्रंथ सत्कविगिरा-विलास में रक्खे हैं॥ २२ सफ़ा॥

४ केशवराम कवि।

इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रंथ रचा है॥ २२ सफ़ा॥

५ कुमारमणि भट्ट गोकुलनिवासी, सं० १८०३ में उ०।

यह कवि कविता करने में महा चतुर थे। इन्होंने साहित्य में एक ग्रंथ रसिकरसाल नाम का बनाया है, जिसकी खूबी उसके अवलोकन से विदित हो सकती है॥ २२ सफ़ा॥

६ करनेश कवि बन्दीजन असनीवाले, सं० १६११ में उ० ।

यह कवि नरहरि कवि के साथ दिल्ली में अकबर शाह की सभा में जाते-आते थे । इन्होंने कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, भूपभूषण, ये तीन ग्रंथ बनाये हैं ॥ ३४ सफ़ा ॥

७ करन भट्ट पन्नानिवासी, सं० १७९४ में उ० ।

इन्होंने साहित्यचन्द्रिका नाम ग्रंथ बिहारीसतसई की टीका श्रीबुंदेलवंशावतंस राजा सभासिंह हृदयसाहि पन्नानरेश की आज्ञानुसार बनाया है । पहले यह कवि काव्य पढ़कर एक दिन पन्नानरेश राजा सभासिंह की सभा में गये । राजा ने यह समस्या दी, "बदन कँपायो दाबि रसना दसन सों ।" इसीके ऊपर करनजी ने "बड़े-बड़े मोतिन की लसत नथूनी नाक" यह कवित्त पढ़ा । राजा ने बहुत प्रसन्न होकर बहुत दान-सम्मान किया ॥ २४ सफ़ा ॥

८ कर्ण ब्राह्मण बुंदेलखंडी, सं० १८५७ में उ० ।

यह कवि राजा हिन्दूपति पन्नानरेश के यहाँ थे और साहित्यरस, रसकल्लोल, ये दो ग्रन्थ रचे हैं ॥ २४ सफ़ा ॥

९ करन कवि बंदीजन जोधपुरवाले, सं० १७८७ में उ० ।

यह राठौर महाराजों के प्राचीन कवि हैं इन्होंने सूर्यप्रकाश नाम ग्रंथ राजा अभयसिंह राठौर की आज्ञा के अनुसार बनाया है । इस ग्रंथ की श्लोक-संख्या ७५० है । श्रीमहाराजा यशवन्तसिंह से लेकर महाराजा अभयसिंह तक अर्थात् संवत् १७८७ से सरबलन्दखाँ की लड़ाई तक सब समाचार इस ग्रंथ में वर्णन किये हैं । एक दिन राजा अभयसिंह और महाराजा जयसिंह आमेरवाले पुष्कर-तीर्थ पर पूजन-तर्पण इत्यादि करते थे, उसी समय करन कवि गये । दोनों महाराजा बोले—कविजी, कुछ शीघ्र ही कहो । करन कवि ने यह दोहा कहा—जोधपूर आमेर ये, दोनों थाप अथाप । कूरम मारा बेकरा,

कामध्वज मारा बाप ॥ अर्थात् राजा जोधपुर और आमेर गद्दीनशीनों को गद्दी से उठा सकते हैं । कूरम अर्थात् कछवाह राजा ने अपने पुत्र शिवसिंह को और कामध्वज अर्थात् राजा राठौर ने अपने पिता बखतसिंह का बध किया । टाड साहब राजस्थान में लिखते हैं कि करण कवि राज्यसंबंधी कार्यों में, युद्ध में और कविता में, इन तीनों बातों में महा निपुण था ॥

१० कुमारपाल महाराजा अनहलवाले, सं० १२२० में उ० ।

यह महाराज अनहलवाले के राजा थे, और कवीश्वरों का बड़ा मान करते थे। जैसे चंद कवि ने पृथ्वीराज के हालात में पृथ्वीराजरायसा लिखा है, वैसे ही इन महाराज की वंशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक एक कवीश्वर ने बनाकर उसका नाम कुमारपालचरित्र रक्खा ॥

११ कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अंतरबेद के निवासी, सं० १७४९ में उ० ।

यह कवि अंतरबेद में बड़े नामी-गरामी हुए हैं। प्रथम औरंगज़ेब बादशाह के साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिण के देशों में बहुत दिन तक रहे । पीछे राजा जोगाजीतसिंह रघुवंशी महाराजा जंबू के यहाँ रहे, और उन्हींके नाम से वधूविनोद नाम का ग्रंथ महाअद्भुत बनाया । एक कालिदासहज़ारा नाम संग्रह ग्रंथ बनाया, जिसमें संवत् १४८० से लेकर अपने समय तक, अर्थात् संवत् १७७५ तक, के कवियों के एक हज़ार कवित्त, २१२ कवियों के, लिखे हैं । मुझको इस ग्रंथ के बनाने में कालिदास के हज़ारे से बड़ी सहायता मिली है । एक ग्रन्थ और जंजीराबंद नाम का महाविचित्र इन्हीं महाराज का मेरे पुस्तकालय में है । इनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र और पौत्र कवि दूलह बड़ेभारी कवि हुए हैं ॥ २८ सफ़ा ॥ (?)

१२ कवीन्द्र (१) उदयनाथ त्रिवेदी बनपुरानिवासी कवि कालिदासजू के पुत्र, सं० १८०४ में उ० ।

यह कवि अपने पिता के समान महान् कवीश्वर हो गुजरे हैं। प्रथम राजा हिम्मतिसिंह बंधलगोत्री अमेठी-महाराज के यहाँ बहुत दिन तक रहे, और कविता में अपना नाम उदयनाथ रखते रहे। जब राजा के नाम से रसचंद्रोदय नाम का ग्रन्थ बनाया, तब राजा ने कवीन्द्र पदवी दी। तब से अपना नाम कवीन्द्र रखते रहे। इस ग्रन्थ के चार नाम हैं, रतिविनोदचंद्रिका १, रतिविनोद-चंद्रोदय २, रसचन्द्रिका ३, रसचंद्रोदय ४। यह ग्रन्थ भाषा-साहित्य में महा अद्भुत है। पीछे कवीन्द्रजी थोड़े दिन राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी के यहाँ रहकर फिर भगवंतराय खींची और गजसिंह महाराजा आमेर और राव बुद्ध हाड़ा बूँदीवाले के यहाँ महा मान-सम्मान के साथ काल व्यतीत करते रहे। एक कवीन्द्र त्रिवेदी बेतीगावँ, ज़िले रायबरेली में भी महान् कवि हो गये हैं॥ ३० सफ़ा ॥ (२)

१३ कवींद्र (२) सखीसुखब्राह्मण, नरवर बुंदेलखण्डनिवासी के पुत्र, सं० १८५४ में उ०।

इन्होंने रसदीपक नाम ग्रन्थ बनाया है॥

१४ कवींद्र (३) सारस्वत ब्राह्मण काशीनिवासी, सं० १६२२ में उ०।

यह कवीन्द्राचार्य महाराज संस्कृत-साहित्य-शास्त्र में अपने समय के भानु थे। शाहजहाँ बादशाह के हुक्म से भाषा-काव्य बनाना प्रारम्भ किया और बादशाही आज्ञा के अनुसार कवीन्द्रकल्पलता नाम ग्रंथ भाषा में रचा, जिसमें बादशाह के पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहबा की तारीफ़ में बहुत कवित्त हैं॥ ३२ सफ़ा ॥

१५ किशोर, युगुलकिशोर बंदीजन दिल्लीवाले, सं० १८०१ में उ०।

यह कविता में महानिपुण थे, और मोहम्मदशाह बादशाह के

यहाँ थे। इनका ग्रन्थ मैंने कोई नहीं पाया। केवल किशोर-संग्रह नाम का एक इनका संगृहीत ग्रन्थ मेरे पुस्तकालय में है, जिसमें सिवा सत्कवियों के इनका भी काव्य बहुत है ॥ २६ सफ़ा ॥

१६ कादिर, कादिरबख़्स मुसलमान पिहानीवाले सं० १६३५ में उ०।

कविता में निपुण थे और सैय्यदइब्राहीम पिहानीवाले रसखानि के शिष्य थे ॥ २५ सफ़ा ॥

१७ कृष्ण कवि (१), सं० १७४० में उ०।

यह कवि औरङ्गज़ेब बादशाह के यहाँ थे ॥

१८ कृष्णलाल कवि, सं० १८१४ में उ०।

इनकी कविता शृंगार-रस में उत्तम है ॥ ३३ सफ़ा ॥

१९ कृष्ण कवि (२) जयपुरवाले, सं० १६७५ में उ०।

बिहारीलाल कवि के शिष्य और महाराजा जयसिंह सवाई के यहाँ नौकर थे। बिहारीसतसई का तिलक कवित्तों में विस्तारपूर्वक वार्तिकसहित बनाया है ॥ ३१ सफ़ा ॥

२० कृष्ण कवि (३), सं० १८८८ में उ०।

नीति-संबन्धी फुटकर काव्य किया है ॥ ३४ सफ़ा ॥

२१ कुंजलाल कवि बन्दीजन मऊ, रानीपुरा, सं० १६१२ में उ०।

ग्रन्थ कोई नहीं देखने में आया। फुटकर कवित्त देखे-सुने हैं ॥ ३४ सफ़ा ॥

२२ कुंदन कवि बुंदेलखण्डी, सं० १७५२ में उ०।

नायिकाभेद का इनका ग्रंथ सुंदर है। कालिदासजी ने इनका नाम हजारे में लिखा है ॥ ३५ सफ़ा ॥

२३ कमलेश कवि, सं० १८७० में उ०।

यह कवि महानिपुण कवि हो गये हैं। नायिकाभेद का इनका ग्रंथ महासुन्दर है ॥ ३५ सफ़ा ॥

२४ कान्ह कवि प्राचीन (१), सं० १८५२ में उ० ।

नायिकाभेद का इनका ग्रंथ है ॥ ३६ सफ़ा ॥

२५ कान्ह कवि, कन्हईलाल (२) कायस्थ राजनगर बुंदेलखंडी, सं० १६१४ में उ० ।

बहुत सुन्दर कविता की है। इनका नखशिख देखने योग्य है ॥ ३६ सफ़ा ॥

२६ कान्ह, कन्हैयाबख़्श बैस बैसवारे के विद्यमान ।

शांत-रस का इनका काव्य उत्तम है। कवियों का बहुत आदर करते हैं ॥ ३८ सफ़ा ॥

२७ कमलनयन कवि बुंदेलखंडी, सं० १७८४ में उ० ।

इनके शृङ्गार-रस के बहुत कवित्त देखे गये हैं । ग्रंथ कोई नहीं मिला । कविता सरस है ॥ ३७ सफ़ा ॥

२८ कविराज कवि बंदीजन, सं० १८८१ में उ० ।

सामान्य प्रशंसक इधर-उधर घूमनेवाले कवि मालूम होते हैं। सुखदेव मिश्र कंपिलावासी ने भी अपना नाम बहुत जगह कविराज लिखा है, पर यह वह कविराज नहीं हैं ॥ ३८ सफ़ा ॥

२६ कविराय कवि, सं० १८७५ में उ० ।

नीति-सम्बन्धी चोखी कविता की है ॥ ३६ सफ़ा ॥

३० कविराम कवि (१), सं० १८६८ में उ० ।

कोई ग्रन्थ नहीं देखा । स्फुट कवित्त हैं ॥ ३६ सफ़ा ॥

३१ कविराम (२) रामनाथ कायस्थ वि० ।

इनके कवित्त सुंदरीतिलक में हैं, जो बाबू हरिश्चन्द्रजी ने संग्रह बनाया है ॥ ४२ सफ़ा ॥

३२ कविदत्त कवि, सं० १८३६ में उ० ।

इनके कवित्त दिग्विजयभूषण में कवि दत्त के नाम से जुदे

लिखे हैं। मुझे भ्रम है, शायद दत्त कवि और कवि दत्त एक ही न हों॥ ४२ सफ़ा॥

३३ काशीनाथ कवि, सं० १७५२ में उ०।

महाललित काव्य किया है॥ ३७ सफ़ा॥

३४ काशीराम कवि, सं० १७१५ में उ०।

यह कवि निजामतखाँ सूबेदार आलमगीरी के साथ थे। कविता इनकी ललित है॥ ४५ सफ़ा॥

३५ कामताप्रसाद, सं० १६११ में उ०।

इनके कवित्त ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी ने अपने संग्रह में लिखे हैं। किन्तु मुझे भ्रम है, शायद यह बाबू कामताप्रसाद असोथरवाले न हों, जो खींची भगवंतरायजू के वंश के सब विद्या में निपुण हैं। इनका नखशिख बहुत अच्छा है॥ ४६ सफ़ा॥

३६ कबीर कवि, कबीरदास जोलाहा काशीवासी, सं० १६१०में उ०।

इनके दो ग्रंथ अर्थात् बीजक और रमैनी मेरे पास हैं। इनके चरित्र तो सब मनुष्यों को विदित हैं। कालिदासजू ने हज़ारे में इनका नाम भी लिखा है, इसलिये मैंने भी लिख दिया॥ ४७ सफ़ा॥

३७ किंकरगोविंद बुंदेलखण्डी, सं० १८१० में उ०।

शांत-रस की इनकी कविता विचित्र है॥ ४८ सफ़ा॥

३८ कालीराम कवि बुंदेलखंडी, सं० १८२६ में उ०।

सुंदर कविता की है॥ ४८ सफ़ा॥

३९ कल्याण कवि, सं० १७२६ में उ०।

इनकी कविता कालिदास ने हज़ारे में लिखी है॥ ४० सफ़ा॥

४० कमाल कवि कबीरजू के पुत्र काशीस्थ, सं० १६३२ में उ०।

ऐज़न॥ ४० सफ़ा॥

४१ कलानिधि कवि (१) प्राचीन, सं० १६७२ में उ० ।

ऐज़न ४० सफ़ा ॥

४२ कलानिधि कवि, (२), सं० १८०७ में उ० ।

इनका नखशिख बहुत सुंदर है ॥ ४४ सफ़ा ॥

४३ कुलपति मिश्र, सं० १७१४ में उ० ।

इनकी कविता हज़ारे में है ॥ ४१ सफ़ा ॥

४४ कारबेग फ़क़ीर, सं० १७५६ में उ० ।

ऐज़न ॥ ४१ सफ़ा ॥

४५ केहरी कवि, सं० १६१० में उ० ।

महाराजा रतनसिंह के यहाँ थे । कविता में महाचतुर थे ॥ ४१ सफ़ा ॥

४६ कृष्णसिंह बिसेन राजा भिनगा, ज़िले बहिराइच, सं० १६०६ में उ० ।

यह राजा काव्य में बहुत निपुण थे, और इस रियासत में सदैव कवि-कोविद लोगों का मान होता था । भैया जगतसिंह इसी वंश में बड़े नामी कवि हो गये हैं और शिव कवि इत्यादि इन्हीं के यहाँ रहे हैं । अब भी भैया लोग खुद कवि हैं, और काव्य की चर्चा बहुत है, जैसा बुंदेलखण्ड और बघेलखण्ड के रईस अपना काल काव्यविनोद में व्यतीत करते हैं, वैसे ही इस रियासत के भाईबंद हैं ॥ ४१ सफ़ा ॥

४७ कालिका कवि बंदीजन, काशीवासी वि० ।

सुन्दरीतिलक और ठाकुरप्रसाद के संग्रह में इनके कवित्त हैं ॥ ४२ सफ़ा ॥

४८ काशीराज कवि श्रीमान् कुमार बलवानसिंहजू काशीनरेश चेतसिंह महाराज के पुत्र, सं० १८८६ में उ० ।

चित्रचंद्रिका नाम भाषासाहित्य का अद्भुत ग्रन्थ रचा है, जो देखने योग्य है ॥ ४३ सफ़ा ॥

४६ कोविद कवि श्रीपंडित उमापति त्रिपाठी अयोध्यानिवासी, सं० १६३० में उ० ।

यह महाराज षट्शास्त्र के वक्ता थे । प्रथम काशी में पढ़कर बहुत दिनों तक दिग्विजय करते रहे, अंत में श्रीअवधपुरी में आये । क्षेत्रसंन्यास लेकर विद्यार्थी लोगों के पढ़ाने, उपदेश देने और काव्य करने में काल व्यतीत करते-करते संवत् १६३१ में कैलाश को पधारे । इनके ग्रन्थ संस्कृत में बहुत हैं, भाषा में हमने केवल दोहावली, रत्नावली इत्यादि दो-चार ग्रन्थ छोटे-छोटे देखे हैं । इन महाराज का बनाया हुआ एक श्लोक हम लिखते हैं, जिससे इनकी विद्या का हाल मालूम होगा ॥

भिल्लीपल्लीविशंपाददुरुगृहिपुरी चंचरीकस्यचंपावल्लीवाभाति कंपा कलितदलवती फुल्लमल्लीमतल्ली ॥ झिल्लीगीष्केवेषां सुरवरवनिता तल्लजस्फीतगीतिर्विन्मल्लावल्लभाशं विदधतु शिशवो भारतीभल्लकस्ते ॥ ४३ सफ़ा ॥

५० कृपाराम कवि जयपुरनिवासी, सं० १७७२ में उ० ।

महाराज जयसिंह सवाई के यहाँ ज्योतिषियों में थे, और भाषा में समयबोध नाम एक ग्रंथ ज्योतिष का बनाया है ॥

५१ कृपाराम ब्राह्मण नरैनापुर, ज़िले गोंडा ।

श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध का उल्था भाषा में किया है—दोहा-चौपाई सीधी बोली में । महेशदत्त ने इनका नाम काव्यसंग्रह में लिखा है । हमको अधिक मालूम नहीं ॥ ४४ सफ़ा ॥

५२ कमंच कवि राजपूतानेवाले सं० १७१० में उ० ।

इनकी कविता हमको एक संग्रह-पुस्तक में मिली है, जो संवत् १७१० की लिखी हुई माड़वार देश की है ॥ ४५ सफ़ा ॥

५३ किशोरसूर कवि सं० १७६१ में उ० ।

बहुत कवित्त और छप्पय इनके हैं ॥ ४५ सफ़ा ॥

५४ कुंभनदास ब्रजवासी वल्लभाचार्य्य के शिष्य सं० १६०१ में उ०।

इनके पद कृष्णानन्द व्यासदेवजी ने अपने संगृहीत ग्रंथ रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम में लिखे हैं। इनकी गिनती अष्ट-छाप में है॥ ३३ सफ़ा॥

५५ कृष्णानन्द व्यासदेव ब्रजवासी सं० १८०६ में उ०।

यह महात्मा महाकवीश्वर थे। इन्होंने सूरसागर तथा और बड़े बड़े महात्मा कवीश्वर कृष्णभक्तों के काव्य इकट्ठेकर एक ग्रंथ संगृहीत रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम के नाम से बनाया है। इसमें सूरजी, तुलसीदास, कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाई, हितहरिवंश, विट्ठलस्वामी इत्यादि महात्माओं के सैकड़ों पद लिखे हैं। यह ग्रंथ किसी समय कलकत्ते में छापा गया था, और १००) रु० को मोल आता था। अब नहीं मिलता॥ ४६ सफ़ा॥

५६ कल्याणदास कृष्णदास पयअहारी के शिष्य सं० १६०७ में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं॥ ३६ सफ़ा॥

५७ कालीदीन कवि।

दुर्गा को भाषा के कवित्तों में महाकविता से उल्था किया है॥ ४० सफ़ा॥

५८ कालीचरण वाजपेयी विगहपुर, ज़िले उन्नाव वि०।

कविता में निपुण हैं। हमने इनका कोई ग्रंथ नहीं देखा

५९ कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्य के शिष्य सं० १६०१ में उ०।

इनके बहुत पद रागसागरोद्भव में लिखे हैं, और इनकी कविता अत्यंत ललित और मधुर है। यह कवि, सूरदास, परमानन्द और कुम्भनदास, ये चारों वल्लभाचार्य्य के शिष्य थे। कृष्णदासजी की कविता सूरदास की कविता से मिलती थी। एक दिन सूरजी बोले—आप अपना कोई ऐसा पद सुनाओ, जैसा

हमारे काव्य में न मिले । तब कृष्णदासजी ने चार पद सुनाये। उन सब पदों में सूरजी ने अपने पदों की चोरी साबित की, तब कृष्णदासजी ने कहा--कल हम अनूठे पद सुनावेंगे । ऐसा कह सारी रात इसी सोच में नहीं सोये । प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखा हुआ देख सूरजी के आगे पढ़ा--"आवत बने कान्ह गोपबालक सँग छुरित अलकावली।" सूरजी जान गये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकी की है । बोले--अपने बाबा की सहायता की है । इनकी गिनती अष्टछाप में है । अर्थात् व्रज में आठ बड़े कवि हुए हैं । तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथ में गोपाल-सिंह ने अष्टछाप का ब्योरा इस भाँति लिखा है कि सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द, कुम्भनदास, ये चारों वल्लभाचार्य्य के शिष्य, और चतुर्भुज, छीतस्वामी, नन्ददास, गोविन्ददास, ये चारों विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य्य के पुत्र के शिष्य, अष्टछाप के नाम विख्यात हैं। कृष्णदासजी का बनाया हुआ प्रेमरसरास ग्रंथ बहुत सुंदर है ॥ ४६ सफ़ा ॥

६० केशवदास व्रजवासी कश्मीर के रहनेवाले सं० १६०८ में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं । इन्होंने दिग्विजय की और व्रज में आकर श्रीकृष्णचैतन्य से शास्त्रार्थ में पराजित हुए ॥ ४६ सफ़ा ॥

६१ केवलराम कवि व्रजवासी सं० १७६७ में उ० ।

ऐज़न । इनकी कथा भक्तमाल में है ॥ ४२ सफ़ा ॥

६२ कान्हरदास कवि व्रजवासी, विट्ठलदास चौबे मथुरावासी के पुत्र सं० १६०८ में उ० ।

ऐज़न । इनके यहाँ जब सभा हुई थी, तब उसी सभा में नाभाजी को गोसाईं की पदवी मिली थी ॥ ४५ सफ़ा ॥

६३ केदार कवि बंदीजन सं० १२८० में उ० ।

यह महान् कवीश्वर अलाउद्दीन गोरी के यहाँ थे, और यद्यपि इन की कविता हमारी नजर से नहीं गुज़री, परन्तु हमने किसी तारीख़ में भी इनका ज़िक्र पढ़ा है ॥

६४ कृपाराम कवि (३) ।

माधव-सुलोचना चम्पू भाषा में बनाया ॥

६५ कृपाराम कवि (४) ।

हिततरंगिणी-शृङ्गार दोहा छंद में एक ग्रंथ महाविचित्र काव्य बनाया ॥

६६ कुंजगोपी गौड़ब्राह्मण जयपुर राज्य के वासी ।

ऐज़न ॥

६७ कृपाल कवि ।

ऐज़न ॥

६८ कनक कवि सं० १७४० में उ० ।

ऐज़न ॥

६९ कुम्भकर्ण राना चित्तौड़ मीराबाई के पति * सं० १४७५ के लगभग उ० ।

यह महाराना चित्तौड़ में संवत् १५०० के लगभग राजगद्दीपर बैठे, और संवत् १५२५ में उदाना में इनके पुत्र ने इनको मार डाला। टाड साहब चित्तौड़ की हिन्दी तारीख़ से इनका जीवनचरित्र विस्तार-पूर्वक लिखकर कहते हैं कि राना कुम्भा महान् कवि थे। नायिका-भेदके ज्ञानमें बड़े प्रवीणथे, और गीतगोविन्द का तिलक बहुत विस्तार-पूर्वक बनाया है। प्रकट नहीं होता कि राना के कवि होने के कारण उनकी स्त्री मीराबाई ने काव्यशास्त्र को सीखा, अथवा मीराबाई के कवि होने से राना साहब कवि हो गये। मीराबाई का हाल हम मकार अक्षर में बहुत विस्तार से लिखेंगे ॥

* खोज से यह गलत साबित हुआ है। राना कुंभा मीरा के पति नहीं थे। मीरा का और इनका समय एक नहीं है।

७० कल्याणसिंह भट्ट ।

ऐज़न ॥

७१ कामताप्रसाद ब्राह्मण लखपुरा, ज़िला फ़तेपुर, सं० १६११ में उ०।

यह महाराज साहित्य में अद्वितीय हो गये हैं। संस्कृत, प्राकृत, भाषा, फ़ारसी, इन सबमें कविता करते थे। इनके विद्यार्थी सैकड़ों काव्यकला के महान् कवि इस समय तक विद्यमान हैं॥ ४७ सफ़ा ॥

७२ कृष्ण कवि, प्राचीन ।

ऐज़न ॥ ४३ सफ़ा ॥

१ खुमान बंदीजन चरखारी बुन्देलखण्डी सं० १८४० में उ०।

बुंदेलखण्ड में आज तक यह बात विदित है कि खुमान जन्म से अन्धे थे। इसी कारण कुछ लिखा-पढ़ा नहीं। दैवयोग से इनके घर में एक महापुरुष संन्यासी आये, और चार महीने तक वास कर चलने लगे। बहुतेरे चरखारी के सज्जन कवि-कोविद-महात्मा थोड़ी दूर जा-जाकर संन्यासी महाराज की आज्ञा से अपने-अपने घरों को लौट आये। खुमान साथ ही चले गये। संन्यासी ने बहुत समझाया, पर जब खुमानजी ने कहा कि हम घर में किस लिये जायँ, हम अंधे अपढ़ निकम्मे घर के काम के नहीं, "धोबी के ऐसे गदहा न घर के न घाट के"; हम आपही के संग रहेंगे, तब संन्यासी यह बात श्रवण कर बहुत प्रसन्न हो खुमान जी की जीभ में सरस्वती का मंत्र लिख बोले—प्रथम हमारे कमण्डलु की प्रशंसा में कवित्त कहो। खुमानजी ने शीघ्र ही २५ कवित्त कमण्डलु के बनाये, और संन्यासी के चरणारविन्दों को दंड-प्रणाम कर घर आकर संस्कृत और भाषा की सुंदर कविता करने लगे। एक बार सेंधिया महाराजा ग्वालियर के दरबार में गये। सेंधिया ने आज्ञा दी कि संस्कृत में रात भर में एक ग्रंथ बनाओ।

खुमानजी ने प्रतिज्ञा करके एक ही रात्रि में ७०० श्लोक दिये। इनकी कविता देखने से इनकी कविता में दैवीशक्ति पाई जाती है। लक्ष्मणशतक और हनुमन्नखाशिख, ये दो ग्रंथ इनके बनाये हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं॥ ५१ सफ़ा॥

२ खुमान कवि।

एक कांड अमरकोश का भाषा में छंदोबद्ध उल्था किया है॥

३ खुमानसिंह महाराजा खुमान राउत गुहलौत सिसोदिया चित्तौरगढ़ के प्राचीन राजा सं० ८१६ में उ०।

यह महाराज कविता में अति चतुर और कविलोगों के कल्पवृक्ष थे। संवत् ६०० में इनके नाम से एक कवि ने खुमानरायसा नाम एक ग्रंथ बनाया है, जिसमें इनके वंशवाले प्रतापी महाराजों के और खुद इनके जीवनचरित्र लिखे हैं। टाड साहब ने राजस्थान में इस ग्रंथ का ज़िक्र किया है और लिखा है कि इस ग्रंथ के दो भाग हैं। प्रथम भाग तो खुमानसिंह के समय में बनाया गया, जिसमें पँवार राजों की रामचंद्र से लेकर खुमान तक कुरसानामा है, और दसवीं सदी में जब कि मुसल्मानों ने चित्तौर पर धावा किया और तेरहवीं सदी में जब अलाउद्दीन ग़ोरी से युद्ध हुआ और चित्तौर लूटा गया, दूसरा भाग राना प्रतापसिंह के समय में बनाया गया, जिसमें राना प्रतापसिंह और अकबर बादशाह के युद्ध का वर्णन है॥

४ ख़ानख़ाना नवाब अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना बैरामख़ाँ के पुत्र रहीम और रहिमन छाप है सं० १५८० में उ०।

यह महाविद्वान् अरबी, फ़ारसी, तुरकी इत्यादि यावनी भाषा और संस्कृत तथा ब्रजभाषा के बड़े पण्डित अकबर बादशाह की आँख की पुतली थे। इन्हीं के पिता बैरम की जवाँमर्दी और तदबीर से हुमायूँ को दुबारा दिल्ली का राज्य प्राप्त हुआ। ख़ानख़ानाजी

पंडित कवि मुल्ला शायर ज्योतिषी और सब गुणवान् मनुष्यों के बड़े क़दरदान थे। इनकी सभा रातादिन विद्वज्जनों से भरीपुरी रहती थी। संस्कृत में इनके बनाये श्लोक बहुत कठिन हैं, और भाषा में नवों रसों के कवित्त-दोहे बहुत ही सुंदर हैं। नीति-सम्बन्धी दोहे ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढ़ने से कभी पढ़नेवाले को तृप्ति नहीं होती। फ़ारसी में इनका दीवान बहुत उम्दा है। वाक़यात बाबरी, अर्थात् बाबर बादशाह ने जो अपना जीवन-चरित्र तुर्की ज़बान में आप ही लिखा है, उसका इन्होंने फारसी ज़बान में तर्जुमा किया है। यह ७२ वर्ष की अवस्था में, सन् १०३६ हिज़री में, सुरलोक को सिधारे॥

श्लोक॥ आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका व्योमाकाशखखांबराब्धिवसवस्त्वत्प्रीतयेऽद्यावधि॥ प्रीतिर्यस्य निरीक्षणे हि भगवन्मत्प्रार्थितं देहि मे नोचेद् ब्रूहि कदापि मानय पुनर्मामीदृशीं भूमिकाम्॥ १॥ शृङ्गार का सोरठा भाषा॥ पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति। बाती सी उसकाय, मानौ दीनी दीप की॥१॥ गई आगि उर लाय, आगि लेन आई जु तिय। लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै॥ २॥ नीति का दोहा॥ खीरा सिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय। करुये मुख को चाहिये, रहिमन, यही सजाय॥ १॥

एक दिन खानखाना ने यह आधा दोहा बनाया—तारायनि ससि रैनि प्रति, सूर होहिं ससि गैन। दूसरा चरण नहीं बना सके। रोज़ रात्रि को यह आधा दोहा पढ़ा करते थे। दिल्ली में एक खत्रानी ने यह हाल सुन आधा चरण बनाकर बहुत इनाम पाया—तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन॥ १॥ ४६ सफ़ा॥

५ खूबचन्द कवि माड़वारदेशवासी।

इन्होंने राजा गंभीरसाहि ईडर के रईस के भड़ौवा में एक कवित्त बनाया है। उसके सिवा और कविता इनकी हमने नहीं देखी ॥ ५१ सफ़ा ॥

६ खान कवि।

इनके कवित्त दिग्विजयभूषण में हैं ॥ ५३ सफ़ा ॥

७ खानसुलतान कवि।

इनका एक ही कवित्त मिला है। परन्तु उसमें भी भ्रम है ॥ ५३ सफ़ा ॥

८ खंडन कवि बुंदेलखंडी सं० १८८४ में उ०।

इन्होंने भूषणदाम नाम का एक ग्रन्थ नायिकाभेद संबंधी महा विचित्र रचा है। यह ग्रंथ झाँसी में रामदयाल कवि के, बीजापुर में ठाकुरदास कवि और कुंजविहारी कायस्थ के और दिलीपसिंह बंदीजन के पास है ॥ ५२ साफ़ ॥

९ खेतलकवि।

ऐज़न ॥

१० खुसाल पाठक रायबरेली वाले।

ऐज़न ॥

११ खेम कवि (१) बुंदेलखंडी।

ऐज़न ॥ ५१ सफ़ा ॥

१२ खेम कवि (२) ब्रजवासी सं० १६३० में उ०।

रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम में इनके पद हैं ॥ ५४ सफ़ा ॥

१३ खड्गसेन कायस्थ ग्वालियरनिवासी सं० १६६० में उ०।

इन्होंने दानलीला, दीपमालिका-चरित्र इत्यादि ग्रंथ बड़े परिश्रम से उत्तम बनाये हैं ॥

१ गंग कवि (१), गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर ज़िला इटावा अथवा बंदीजन दिल्लीवाले सं० १५६५ में उ०।

गंग कवि को हम सुनते रहे कि दिल्ली के बंदीजन हैं और अकबर बादशाह के यहाँ थे, जैसा किसी कवि ने बंदीजनों की प्रशंसा में यह कवित्त लिखा है—

कवित्त। प्रथम बिधाता ते प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु-जज्ञ ते प्रकास सरसात है। मानों सूत सौनकन सुनत पुरान रहै जस को बखाने महा सुख बरसात है॥ चंद चउहान के केदार गोरी साहिजू के गंग अकबर के बखाने गुनगात है॥ काग कैसो मास अजनास धन भाटन को लूटि धरै ता को खुराखोज मिटिजात है॥ १॥

परन्तु अब जो हम ने जाँचा तो विदित हुआ कि गंग कवि एकनौर गाँव, ज़िले इटावा के ब्राह्मण थे। जब गंग मर गये और जैनखाँ हाकिम ने एकनौर में कुछ ज़ुल्म किया, तब गंग जी के पुत्र ने जहाँगीर शाह के यहाँ एक कवित्त अर्ज़ी के तौर पर दिया, जिसका अन्तिम अंश था—'जैनख़ाँ ज़ुनारदार मारे एकनौर के'। ज़ुनारदार फ़ारसी में जनेऊ रखनेवाले का नाम है, लेकिन ख़ास ब्राह्मण ही को ज़ुनारदार कहते हैं। ख़ैर जो हो, गंगजी महाकवि थे। राजा बीरबल ने गंग को 'भ्रमर भ्रमत' इस छप्पै में एक लक्ष रुपए इनाम दिए थे। इसी प्रकार अकबर, जहाँगीर, बीरबल, ख़ानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सबने गंग को बहुत दान मान दिया है॥ ५४ सफ़ा॥

२ गंगकवि (२), गंगाप्रसाद ब्राह्मण सपौली के ज़िले सीतापुर, सं० १८६० में उ०।

सपौली गाँव इनको कविता करने के कारण माफ़ी में मिला है। इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान हैं। गंगाप्रसाद ने एक ग्रंथ

दूतीविलास बनाया है, उसमें सब जाति की दूतियों का श्लेष से वर्णन है ॥ ५६ सफ़ा ॥

३ गङ्गाधर (१) कवि बुंदेलखंडी ।

महा ललित कविता की है ॥ ५६ सफ़ा ॥

४ गंगाधर (२) कवि ।

उपसतसैया नाम सतसई का तिलक कुंडलिया छंद और दोहों में बनाया है ॥ ६४ सफ़ा ॥

५ गंगापति कवि सं० १७४४ में उ० ।

कविता सरस है ॥ ७६ सफ़ा ॥

६ गंगादयाल दुबे निसगर, ज़िले रायबरेली के विद्यमान हैं ।

संस्कृत के महापंडित और भाषाकाव्य में भी निपुण हैं ॥ ७६ सफ़ा ॥

७ गंगराम कवि बुंदेलखंडी सं० १८६४ में उ० ।

सामान्य कविता है ॥ ७८ सफ़ा ॥

८ गदाधरभट्ट, बाँदावाले, कवि पद्माकरजू के पौत्र सं० १६१२ में उ० ।

इनके प्रपितामह मोहन भट्ट बुंदेलखण्ड में नामी कवि, पन्ना में राजा हिन्दूपति बुंदेला के यहाँ रहे । पीछे राजा जगत्सिंह सवाई के यहाँ रहे । उनके पुत्र पद्माकरजी के मिहीलाल, अंबाप्रसाद, दो पुत्र हुए । मिहीलाल के वंशीधर, गदाधर, चन्द्रधर, लक्ष्मीधर, ये चार पुत्र हुए । अंबाप्रसाद के एक पुत्र विद्याधर नाम उत्पन्न हुआ । यद्यपि ये सब कवि हैं, तथापि सबमें उत्तम कवि गदाधर हैं । यह राजा भवानीसिंह दतियानरेश के पास रहा करते हैं ॥ अलंकारचन्द्रोदय नाम एक ग्रंथ इन्हों ने बनाया है ॥ ५६ सफ़ा ॥

९ गदाधर कवि ।

शांत-रस के कवित्त चोखे हैं ॥

१० गदाधरराम।

इनकी कविता सरस है ॥ ७७ सफ़ा ॥

११ गदाधर दास मिश्र ब्रजवासी, सं० १५८० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। इनका बनाया हुआ यह पद-"सखी हौं स्याम के रंग रँगी" और "बिकाय गई वह सूरति मूरति हाथ बिकी" देख स्वामी जीव गोसाईं, जो उस समय बड़े महात्मा थे, इनसे बहुत प्रसन्न हुए ॥

१२ गिरिधारी ब्राह्मण बैसवारा गाँव सातनपुरवावाले (१) सं० १९०४ में उ०।

इनकी कविता या तो श्रीकृष्णचन्द्र के लीलासम्बन्धी है और या शान्त रस की। यह कवि पढ़े बहुत न थे। परन्तु ईश्वर के अनुग्रह से कविता सुंदर रचते थे ॥ ५७ सफ़ा ॥

१३ गिरिधारी कवि (२)।

स्फुट कवित्त इनके मिलते हैं ॥ ५८ सफ़ा ॥

१४ गिरिधरकवि, बन्दीजन होलपुरवाले (१) सं० १८४४ में उ०।

यह कवि महाराजा टिकैतराय दीवान नवाब आसिफुद्दौला, लखनऊ के यहाँ थे ॥ ५८ सफ़ा ॥

१५ गिरिधर कविराय अंतरबेदवाले सं० १७७० में उ०।

इनकी नीति सामयिकसम्बन्धी कुण्डलियाएँ विख्यात हैं ॥ ५९ सफ़ा ॥

१६ गिरिधर बनारसी, बाबू गोपालचन्द्र साहूकाले हर्षचंद्र के पुत्र, श्रीबाबू हरिश्चन्द्रजू के पिता सं० १८९६ में उ०।

इनका बनाया हुआ दशावतारकथामृत ग्रंथ बहुत सुन्दर है। और अलंकार में भारतीभूषण नाम भाषाभूषण का टीका बहुत अपूर्व बनाया है। इनके पुत्र बाबू हरिश्चन्द्र बनारस में बहुत प्रसिद्ध और गुणग्राहक थे। इनके सरस्वतीभंडार में बहुत ग्रन्थ थे॥ ६० सफ़ा ॥

१७ गोपाल कवि प्राचीन सं० १७१५ में उ० ।

केहरीकल्याण मित्रजीतसिंह के यहाँ थे ॥ ६१ सफ़ा ॥

१८ गोपाल कवि (१) कायस्थ रीवाँ वासी सं० १९०१ में उ० ।

महाराजा विश्वनाथसिंह बांधवनरेश के यहाँ कामदार थे। गोपालपचीसी ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया है ॥ ६६ सफ़ा ॥

१९ गोपाल बंदीजन (२) चरखारी बुंदेलखंड सं० १८८४ में उ० ।

यह कवि महाराजा रतनसिंह बुंदेला चरखारी-भूप के यहाँ थे ॥ ६६ सफ़ा ॥

२० गोपाललाल कवि (३) सं० १८५२ में उ० ।

शांत-रस में इनके कवित्त अच्छे हैं ॥ ६७ सफ़ा ॥

२१ गोपालराय कवि ।

नरेन्द्रलाल शाह और आदिलखाँ की प्रशंसा में कवित्त कहे हैं ॥ ७७ सफ़ा ॥

२२ गोपालशरण राजा सं० १७४८ में उ० ।

महाललित पद और प्रबंधघटना नाम सतसई का टीका बनाया है ॥ ७९ सफ़ा ॥

२३ गोपालदास व्रजवासी सं० १७२६ में उ० ।

इनके पद राग रोद्भव में हैं ॥ ८० सफ़ा ॥

२४ गोपा कवि सं० १५९० में उ० ।

रामभूषण, अलंकारचन्द्रिका, ये दो ग्रंथ बनाये हैं ॥ ६७ सफ़ा ॥

२५ गोकुलनाथ बंदीजन, बनारसी कवि रघुनाथ के पुत्र सं० १८३४ में उ० ।

इनका चेतचन्द्रिका ग्रन्थ कवि लोगों में प्रामाणिक समझा जाता है। और गोविंदसुखदविहार नाम दूसरा ग्रंथ बहुत सुंदर बना है। यह कवि महाराजा चेतसिंह काशीनरेश के प्राचीन कवीश्वर हैं। चेतचन्द्रिका में राजा की वंशावली का विस्तारपूर्वक वर्णन है।

चौरा गाँव जो पंचकोशी के भीतर है, उसमें इनका घर है। महाराजा उदितनारायण की आज्ञा अनुसार अष्टादश पर्व भारत के हरिवंशपर्य्यंत का भाषा में उल्था किया है। गोपीनाथ इनके पुत्र और मणिदेव गोपीनाथ के शिष्य भी भारत के उल्था में शरीक हैं। काशीजी में रघुनाथ कवीश्वर का घराना कविता करने में महा उत्तम और इस भारतवर्ष में सूर्य के समान प्रकाशमान है ॥ ७० सफ़ा ॥

२६ गोपीनाथ बन्दीजन बनारसी गोकुलनाथ के पुत्र सं० १८५०में उ०।

इनकी अवस्था का बहुत सा भाग भारत का उल्था करने में व्यतीत हुआ। शेष काल शृङ्गारादि नव रसों के काव्य में बीता। हमने भारत के सिवा और कोई ग्रंथ नायिकाभेद अथवा अलंकार इत्यादि का इनका बनाया नहीं देखा। शृंगार में स्फुट कवित्त देखे हैं॥ लोग कहते हैं कि, महाराजा उदितनारायण ने भारत की भाषा करने के लिये एक लक्ष रुपये इन्हें दिये थे ॥ ७१ सफ़ा ॥

२७ गोकुलविहारी सं० १६६० में उ०।

इनकी कविता मध्यम है ॥ ७८ सफ़ा ॥

२८ गोपनाथ कवि सं० १६७० में उ०।

इनके बहुत अच्छे कवित्त हैं ॥ ७६ सफ़ा ॥

२६ श्रीगुरुगोविन्दसिंह शोढ़ी खत्री पंजाबी सं० १७२८ में उ०।

यह गुरुसाहब गुरु तेगबहादुर के आनंदपुर पटना शहर में उत्पन्न हुए थे। गुरु तेगबहादुर का औरंगज़ेब ने वध किया था। हिन्दुओं के मंदिर इत्यादि खुदाने के कारण रुष्ट हो कर गुरुगोविंदसिंह ने नैनादेवी के स्थान में महा घोर तप कर वरदान पाकर सिख-मत को स्थापित कर एक ग्रन्थ बनाया, जिसमें इनके सिवा और कवि महात्माओं का काव्य भी है, और जिसको शिष्य लोग ग्रन्थसाहब कहते हैं। इसमें भविष्य-काल का भी वर्णन है। गुरु साहब ने व्रजभाषा

और पंजाबी और फ़ारसी तीनों ज़बानों में महा सुंदर कविता की है ॥ ७२ सफ़ा ॥

३० गोविन्दअटल कवि सं० १६७० में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारा में हैं ॥ ७५ सफ़ा ॥

३१ गोविन्दजी कवि सं० १७५७ में उ० ।

ऐज़न् ॥ ७६ सफ़ा ॥

३२. गोविन्ददास व्रजवासी सं० १६१५ में उ० ।

रागसागरोद्भव में इनकी कविता है । यह कवि नाभाजी के शिष्य थे ॥ ७९ सफ़ा ॥

३३. गोविन्द कवि सं० १७९१ में उ० ।

यह कवीश्वर बड़े नामी हो गये हैं । इनका बनाया हुआ कर्णाभरण ग्रन्थ बहुत कठिन और साहित्य में शिरोमणि है ॥ ७३ सफ़ा ॥

३४ गुरुदीन पाँड़े कवि सं० १८९१ में उ० ।

इन महाराज ने वाक्मनोहरपिंगल बहुत बड़ा ग्रन्थ रचा है, जिसमें पिंगल के सिवा अलंकार, षटऋतु, नखशिख इत्यादि और भी साहित्य के अंग वर्णन किये हैं । यह ग्रन्थ बहुत अपूर्व है और कवि लोगों के पढ़ने योग्य है ॥ ७८ सफ़ा ॥

३५ गुरुदीनराय बन्दीजन पैंतेपुर ज़िले सीतापुर के विद्यमान हैं ।

यह कवि राजा रणजीतसाह जाँगरे, ईसानगर, ज़िले खीरी के यहाँ रहा करते हैं । कविता में निपुण हैं ॥ ७२ सफ़ा ॥

३६ गुरुदत्त कवि प्राचीन (१) सं० १८८७ में उ० ।

यह कवि-राय शिवसिंह सवाई जयसिंह के पुत्र के यहाँ थे ॥ ७४ ॥

३७ गुरुदत्त कवि (२) शुक्ल मकरंदपुर अंतर्वेदवाले सं० १८६४ में उ० ।

यह महाराज बड़े कवि थे । देवकीनंदन, शिवनाथ, गुरुदत्त, ये तीन भाई थे । तीनों महान् कवि थे । इनका बनाया पक्षीविलास ग्रंथ बहुत सुंदर है ॥ ७५ सफ़ा ॥

३८ गुमानजी मिश्र (१) साँडीवाले सं० १८०५ में उ० ।

यह कवीश्वर साहित्य में महानिपुण, संस्कृत में महाप्रवीण, काव्यशास्त्रको मिश्र सर्वसुख कवि से पढ़कर प्रथम दिल्ली में मोहम्मद शाह बादशाह के यहाँ राजा युगलकिशोर भट्ट के पास रहे । पीछे राजा अलीअकबरखाँ मोहम्मदी अधिपति के पास रहे । अलीअकबर बड़े कवि थे । उनके यहाँ निधान, प्रेम इत्यादि बड़े बड़े कवि नौकर थे । निदान गुमानजी ने श्रीहर्षकृत नैषध काव्य को नाना छंदों में प्रति श्लोक भाषा करि ग्रंथ का नाम काव्यकलानिधि रक्खा । पंचनली, जो नैषध में एक कठिन स्थान है, उसको भी सरल कर दिया । इस ग्रंथ के देखने से गुमानजी का पांडित्य विदित होता है । देखो, कैसा श्लोक प्रति उल्था है—तोटक, कबितानि सुमेरुन बाँटि दियो । जलदानन सिंधुन सोकि लियो ॥ दुहुँ ओर बँधी जुलफैं सुभली । नृप मानप और यश की अवली ॥ ६२ सफ़ा ॥

३९ गुमान कवि (२) सं० १७८८ में उ० ।

इन महाराज ने कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ बनाया है ॥ ६४ सफ़ा ॥

४० गुलाल कवि सं० १८७५ में उ० ।

यह कविराज कविता में महानिपुण थे । इनके कवित्तों और इनके बनाये शालिहोत्र ग्रन्थ से इनका पांडित्य प्रकट होता है ॥ ६५ सफ़ा ॥

४१ ग्वाल कवि बन्दीजन (१) मथुरानिवासी सं० १८७९ में उ० ।

यह कवि साहित्य में बड़े चतुर हो गये हैं । इनके संगृहीत दो बहुत बड़े बड़े ग्रन्थ हमारे पास हैं । इनके नखशिख, गोपीपचीसी, यमुनालहरी इत्यादि छोटे छोटे ग्रन्थ और साहित्यदूषण, साहित्य दर्पण, भक्तिभाव, दोहा-शृंङ्गार, शृङ्गार-कवित्त भी बहुत सुन्दर ग्रन्थ हैं ॥ ६७ सफ़ा ॥

४२ ग्वाल प्राचीन (२) सं० १७१५ में उ० ।

इनके कवित्त हजारा में हैं ॥ ७५ सफ़ा ॥

४३ गुनदेव बुंदेलखंडी सं० १८५२ में उ० ।

कवित्त सुन्दर हैं ॥ ६४ सफ़ा ॥

४४ गुणाकर त्रिपाठी काँथा, ज़िला उन्नाव के निवासी विद्यमान हैं । संस्कृत और भाषा दोनों में काव्य करते हैं । ज्योतिषशास्त्र तो इनके घर में बहुत काल से प्रसिद्ध चला आता है ॥ ७७ सफ़ा ॥

४५ गजराज उपाध्याय काशीवासी सं० १८७४ में उ० ।

इन महाराज ने वृत्तहार नाम पिङ्गल और रामायण ये दो ग्रन्थ रचे हैं ॥ ७५ सफ़ा ॥

४६ गुलामराम कवि ।

कवित्त सुन्दर बनाये हैं ॥ ७३ सफ़ा ॥

४७ गुलामी कवि ।

ऐजन् ॥ ८२ सफ़ा ॥

४८ गुनसिंधु कवि बुंदेलखंडी, सं० १८८२ में उ० ।

शृङ्गाररस के चोखे कवित्त हैं ॥ ६८ सफ़ा ॥

४६ गोसाईं कवि राजपूतानेवाले सं० १८८२ में उ० ।

नीति सम्बन्धी, सामयिक इनके दोहा बहुत अच्छे हैं ॥ ६६ सफ़ा ॥

५० गणेश कवि बन्दीजन बनारसी विद्यमान हैं ।

ये कवीश्वर महाराजा ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेश के यहाँ कविता में महानिपुण हैं ॥ ६६ सफ़ा ॥

५१ गीध कवि ।

फुटकर छप्पै, दोहा, कवित्त हैं ॥ ७१ सफ़ा ॥

५२ गड्डु कवि राजपूतानेवाले, सं० १७७० में उ० ।

कूट, गूढ़ और सामयिक छप्पै इनके बहुत विख्यात हैं ॥ ७२ सफ़ा ॥

५३ गिरिधारी भाट, मऊ रानीपुरा। बुंदेलखंडी विद्यमान हैं।

५४ गुलाबसिंह पंजाबी, सं० १८४६ में उ०।

कुरुक्षेत्र में क्षेत्रसंन्यास ले रामायण चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपंथ, भाँवरसाँवर इत्यादि नाना वेदांत के ग्रन्थ भाषा किये हैं ॥

५५ गोवर्द्धन कवि, सं० १६८८ में उ०।

५६ गोधू कवि, सं० १७५५ में उ०।

५७ गणेशजी मिश्र, सं० १६१५ में उ०।

५८ गुलालसिंह, सं० १७८० में उ०।

५९ गजसिंह।

गजसिंहविलास बनाया ॥

६० ज्ञानचंद्र यती राजपूतानेवाले, सं० १८७० में उ०।

यह कवि टाड साहब एजंट राजपूताने के गुरु हैं, और इन्हीं की सहायता से राजपूताने के बड़े-बड़े ग्रन्थ, वंशावली और प्रबंध साहब ने उल्था किये ॥ (१)

६१ गोविंदराम बन्दीजन राजपूतानेवाले।

हाड़ा लोगों की वंशावली और सब राजों के जीवनचरित्र का एक ग्रन्थ हारावती इतिहास लिखा है, जिसमें राव रतन की प्रशंसा में यह दोहा कहा है—

दोहा—सरवर फूटा जल बहा, अब क्या करो जतन्न।
जाता घर जहँगीर का, राखा राव रतन्न ॥ १ ॥

६२ गोपालसिंह व्रजवासी।

तुलसीशब्दार्थप्रकाश नाम ग्रंथ बनाया है, जिसमें आठ कवियों को अष्टछाप के नाम से वर्णन कर उनके पद लिखे हैं, अर्थात् सूरदास १, कृष्णदास २, परमानन्द ३, कुंभनदास ४, चतुर्भुज ५, छीतस्वामी ६, नंददास ७, गोविंददास ८ ॥

६३ गदाधर कवि।

५६ सफा ॥

१ घनश्याम शुक्ल असनीवाले, सं० १६३५ में उ० ।

यह कवि कविता में महानिपुण और बांधवनरेश के यहाँ थे । ग्रंथ तो पूरा हमने कोई नहीं पाया, इनके कवित्त २०० तक हमारे पास हैं । कालिदास ने भी इनके कवित्त हजारा में लिखे हैं ॥ ८० सफ़ा ॥ (१)

२ घनआनंद कवि सं० १६१५ में उ० ।

यह कवि कविलोगों में महा उत्तम हो गये हैं ॥ ८२ सफ़ा ॥

३ घासीराम कवि, सं० १६८० में उ० ।

कालिदास जी ने हजारा में इनके कवित्त लिखे हैं ॥ ८२ सफ़ा ॥

४ घनराय कवि, सं० १६६२ में उ० ।

५ घाघ कान्यकुब्ज अंतरबेदवाले, सं० १७५३ में उ० ।

इनके दोहा, छप्पै, लोकोक्ति तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोलचाल में विख्यात हैं ॥

दोहा—मुये चाम ते चाम कटावैं, भुइ मा सकरे सोवैं ।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा, उढरि जाइ फिरि रोवैं॥१॥

६ घासी भट्ट

१ चंद कवि प्राचीन बन्दीजन (१) संभलनिवासी, सं० १०६८ में उ० ।

यह चंद कवि महाराजा बीसलदेव चौहान रनथंभोरवाले के प्राचीन कवीश्वर की औलाद में थे । संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आकर मंत्री और कवीश्वर दोनों पद को प्राप्त हुए । पृथ्वीराजरासा नाम एक ग्रन्थ में एक लक्ष श्लोक भाषा के रचे । इसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है । इस ग्रंथ में चंद कवि ने संवत् १११० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविता के साथ बहुत छंदों में वर्णन किया है । छप्पै छंद तो मानो इसी कवि के हिस्से में था, जैसे चौपाई छंद श्रीगोसाईं तुलसीदास के

हिस्से में पड़ा था। इस ग्रंथ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध, आबू पहाड़ का माहात्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियों के स्वभाव, चालचलन, व्यवहार बहुत विस्तार-पूर्वक वर्णन किये हैं। यह कवि केवल कवीश्वर नहीं थे, बरन् नीतिशास्त्र और चारण के कामकाज में निपुण महा शूरवीर भी थे। संवत् ११४६ में पृथ्वीराज के साथ यह भी मारे गये। इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे, जिन्हों ने हमीररासा और हमीरकाव्य भाषा में बनाया है॥ ८३ सफ़ा॥ (१)

२ चंद कवि (२), सं० १७४६ में उ०।

यह कवि सुलतान पठान नव्वाब राजगढ़ भाई बंदन बाबू भूपाल के यहाँ थे। इन्हों ने बिहारीसतसई का तिलक कुंडलिया छंद में सुलतान-पठान के नाम से बनाया है॥ ८५ सफ़ा॥

३ चंद कवि (३)।

सामान्य कवि थे॥ ८६ सफ़ा॥

४ चंद कवि (४)।

शृङ्गाररस में बहुत सुंदर कविता की है। हज़ारा में इनके कवित्त हैं॥ ८६ सफ़ा॥ (२)

५ चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर, ज़िले कानपुरवाले, सं० १७२६में उ०।

यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्य्यों में गिने जातेहैं। अन्तरवेद में प्रसिद्ध है कि इनके पिता दुर्गा पाठ करने नित्य देवीजी के स्थान में जाते थे। वह देवी जी वन की भुइयाँ कहाती हैं, टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं। एक दिन महाराजराजेश्वरी भगवती प्रसन्न होकर चारि मुंड दिखाकर बोलीं, ये ही चारों तेरे पुत्र होंगे। निदान ऐसा ही हुआ कि चिन्तामणि, भूषण, मतिराम, जटा-शंकर या नीलकण्ठ, ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें केवल नील-कण्ठ महाराज एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए, शेष तीनों भाई

संस्कृत-काव्य को पढ़कर ऐसे पण्डित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहेगा। इन्हीं के वंश में शीतल और बिहारीलाल कवि, जिनका उपनाम लाल है, संवत् १९०१ तक विद्यमान थे। निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्यवंशी भोसला मकरन्द शाह के यहाँ रहे, उन्हीं के नाम से छन्द विचार नाम पिंगल का बहुत भारी ग्रन्थ बनाया। काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, काव्यप्रकाश, रामायण, ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं। इनकी रामायण कविता और अन्य नाना छन्दों में बहुत अपूर्व है। बाबू रुद्रसाहि सोलंकी और शाहजहाँ बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिये हैं। इन्होंने अपने ग्रन्थों में कहीं-कहीं अपना नाम मणिलाल कहा है॥ ८७ सफ़ा॥ (१)

९ चिन्तामणि (२)।

ललित काव्य की है॥ ९० सफ़ा॥

७ चूड़ामणि कवि, सं० १८६१ में उ०।

यह कविराज एक अपने ग्रन्थ में गुमानसिंह और अजीतसिंह की बड़ाई करते हैं। ग्रन्थ का नाम मालूम नहीं होता॥ ९० सफ़ा॥

८ चंदनराय कवि बन्दीजन नाहिल, पुवावाँ, ज़िले शाहजहाँपुरवाले, सं० १८३० में उ०।

यह कवि महाविद्वान् बड़े सन्तोषी राजा केसरीसिंह गौर के यहाँ थे। उनके नाम से केसरीप्रकाश ग्रन्थ रचा है। इनके ग्रन्थों की संख्या साफ़ जानी नहीं जाती। जो ग्रन्थ हमने पाये अथवा देखे हैं, उनकी संख्या लिखते हैं। प्रथम शृङ्गारसार ग्रन्थ बहुत भारी काव्य है। दूसरा कल्लोलतरंगिणी, तीसरा काव्याभरण, चौथा चन्दनसतसई, पांचवाँ पथिकबोध। ये सब ग्रन्थ बहुत ही

सुंदर देखने-पढ़ने योग्य हैं। इनके बारह शिष्य थे, और बारहों महान् कवि हुए। सबसे अधिक कवीश्वर मनभावन कवि हैं। चंदनराय नाहिल छोड़कर किसी राजा बाबू, बादशाह के यहाँ नहीं गये। एक दफ़े किसी बुन्देलखण्डी रईस ने वंशगोपाल कवि का बनाया हुआ कूट कवित्त इनके पास अर्थ लिखने के लिये भेजा, और जब इनके अर्थ लिखे देखे तो बहुत प्रसन्न होकर पालकी सवारी को कुछ द्रव्यसहित भेजी। चंदनराय वहाँ नहीं गये, केवल यह दोहा लिखकर भेज दिया—

दोहा—खरी टूक खर खरथुआ, खारी नोन सँजोग।
एतो जो घर ही मिलै, चन्दन छप्पन भोग॥ १॥

९१ सफ़ा॥ (१)

९ चोखे कवि।

इनकी कविता चोखी है॥ ८६ सफ़ा॥

१० चतुरविहारी कवि ब्रजवासी, सं० १६०५ में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं॥ ८६ सफ़ा॥

११ चतुरसिंह राना, सं० १७०१ में उ०।

सीधी बोली में कवित्त हैं॥ ९४ सफ़ा॥

१२ चतुर कवि।

सुंदर कविता है॥ ९५ सफ़ा॥

१३ चतुरविहारी (२)।

ऐजन्॥ ९५ सफ़ा॥

१४ चतुर्भुज।

ऐजन्॥ ९५ सफ़ा॥

१५ चतुर्भुजदास, सं० १६०१ में उ०।

रागसागरोद्भव में इनके बहुत पद हैं। यह महाराजा करौली के राजा स्वामी बिट्ठलनाथजी गोकुलस्थ के शिष्य थे। अष्टछाप में इनका भी नाम है॥ ९६ सफ़ा॥

१६ चैन कवि।

८७ सफ़ा ॥

१७ चैनसिंह खत्री लखनऊवाले, सं० १६१० में उ०।

इनका उपनाम हरचरण है। भारतदीपिका, शृंगारसारावली, ये दो ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं॥ ८७ सफ़ा॥

१८ चैनराय कवि।

६५ सफ़ा ॥

१६ चण्डीदत्त कवि, सं० १८६८ में उ०।

यह कवि महाराजा मानसिंह के साथ अवध में कुछदिन रहे थे। इनकी कविता सरस है॥ ६६ सफ़ा॥

२० चरणदास ब्राह्मण पण्डितपुर, ज़िला फ़ैज़ाबाद, सं० १५३७ में उ०।

ज्ञानस्वरोदय ग्रन्थ बनाया॥ ६४ सफ़ा॥

२१ चेतनचंद्र कवि, सं० १६१६ में उ०।

राजा कुशलसिंह सेंगरवंशावतंस की आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र बनाया॥ ६६ सफ़ा॥

२२ चिरंजीव ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८७० में उ०।

भारत को भाषा किया है॥ ६४ सफ़ा॥

२३ चन्द्सखी व्रजवासी, सं० १६३८ में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं॥ ६३ सफ़ा॥

२४ चोवा कवि, हरिप्रसाद बंदीजन डलमऊवाले विद्यमान हैं।

यह कवि असोथरवाले खींचियों के पुराने कवि हैं। चोवा कवि कविता में निपुण हैं और अब थोड़ेदिन से होलपुर में रहा करते हैं॥ ६६ सफ़ा॥

१ छत्रसाल बुन्देला महाराजा पन्ना, बुन्देलखण्ड, सं० १६६० में उ०।

यह महाराज महान् कवि कविलोगों के कल्पवृक्ष, गुणग्राहक, साहित्य के निपट चाहक, शूरशिरोमणि उदारचित्त बड़े नामी हुए हैं। इनके दरबार तक जो कवि-कोविद पहुँचा, मालामाल हो

गया। बहुतेरे कवि नितप्रति के लिये नौकर थे, और सैकड़ों भूमि के चारों ओर से इनका यश सुन हाज़िर होते थे। इनके ज़माने से लेकर आजतक जो जो राजा दीवान बाबू भाई बेटे सभासिंह हृदयसाहि अमानसिंह हिन्दूपति इत्यादि पन्ना में हुए, वे सब कवि-कोविदों के क़दरदान रहे। राजा छत्रसाल ही के दान-सम्मान सुन-सुन किसी ज़माने में बुंदेलखण्ड, बैसवारा, अन्तरवेद इत्यादि में सैकड़ों हज़ारों मनुष्य कवि होगये थे। एक दफे उड़छा के बुन्देला राजा ने राजा छत्रसालजी को ठट्ठा के तौर पर यह लिखा कि ओड़छे के राजा अरु दतिया की राई। अपने मुँह छत्रसाल बनत भनावाई। तब छत्रसाल ने सुदामा तन हेर्यो तब रंकहू ते राव कीन्हों, यह कवित्त बनाकर उनके पास भेजा। राजा छत्रसाल ने छत्रप्रकाश ग्रन्थ बनवाया है, जिसमें बुन्देलों की उत्पत्ति से लेकर अपने समय तक बुन्देलखण्डी राजों के वृत्तांत हैं। जो युद्ध राजा वीरसिंह देव और अबदुस्समदख़ाँ अबुलफज़ल के दामाद से हुआ है, सो देखने योग्य है। बुन्देला अपने को एक गहरवार की शाखा अर्थात् काशीनरेश के वंश में समझते हैं। महेवा इनकी आदि-राजधानी है॥ ९७ सफ़ा॥

२ छितिपाल राजा माधवसिंह बंधलगोत्री अमेठी, ज़िले सुल्ताँपुर के रईस विद्यमान हैं।

इन महाराज के वंश में सदैव काव्य की चर्चा रही है। राजा हिम्मतसिंह, राजा गुरुदत्तसिंह, राजा उमरावसिंह इत्यादि सब खुद भी कवि थे। उनके यहाँ कवि लोगों में जो शिरोमणि कवि थे, उनका मान रहा, और ऐसा दान मिला कि फिर दूसरी सरकार में जाने की चाह कम रही। राजा हिम्मतसिंह के यहाँ भाषा-

काव्य के महान् पण्डित सुखदेव मिश्र, और गुरुदत्त सिंह के पास उदयनाथ कवीन्द्र, और उमरावसिंह के पास सुवंश शुक्ल जैसे नामी-गिरामी कवि थे, और उनके नाम के बड़े-बड़े साहित्य के ग्रन्थ रचे हैं। राजा माधवसिंह इस अवधप्रदेश में कवि-कोविदों की क़दरदानी में बहुत ही गनीमत हैं। इन महाराज के बनाये हुए मनोजलतिका, देवीचरित्रसरोज, त्रिदीप, अर्थात् भर्तृहरि शतक का भाषा उलथा, ये तीन ग्रन्थ हमारे पास मौजूद हैं। और ग्रंथ हमने नहीं देखे ॥ ९७ सफ़ा ॥

३ छेमकरण कवि ब्राह्मण धनौली, ज़िले बाराबंकी, सं० १८७५ में उ०।

इनके बनाये हुए ग्रन्थ रामरत्नाकर, रामास्पद, गुरुकथा, आह्निक, रामगीतमाला, कृष्णचरितामृत, पदविलास, वृत्तभास्कर, रघुराजघनाक्षरी इत्यादि बहुत सुन्दर हैं। प्रायः ९० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९१८ में, देहांत हुआ ॥ १०१ सफ़ा ॥

४ छेमकरन (२) अन्तरबेदवाले।

कवित्त अच्छे हैं ॥ १०० सफ़ा ॥

५ छत्तन कवि।

इनकी कविता बहुत विचित्र है ॥ ९७ सफ़ा ॥

६ छत्रपति कवि।

९७ सफ़ा ॥

७ छेम कवि, सं० १७५५ में उ०।

९९ सफ़ा ॥

८ छबीले कवि ब्रजवासी।

रागसागरोद्भव में इनके पद हैं ॥ १०० सफ़ा ॥

९ छैल कवि, सं० १७५५ में उ०।

हज़ारा में इनके कवित्त हैं ॥ १०० सफ़ा ॥

१० छीत कवि, सं० १७०५ में उ०।

ऐज़न् ॥ १०० सफ़ा ॥

११ छीतस्वामी, सं० १६०१ में उ०।

इनके पद रागकल्पद्रुम में बहुत हैं। यह महाराज वल्लभाचार्य्य के पुत्र बिट्ठलनाथजी के शिष्य थे। इनकी गिनती अष्टछापमें है॥ १०१ सफ़ा॥

१२ छेदीराम कवि, सं० १८६४ में उ०।

कविनेह नाम पिंगल बनाया है। कविता में महानिपुण मालूम होते हैं। यद्यपि यह ग्रंथ हमारे पुस्तकालय में है, तथापि इनके ग्राम का नाम उसमें नहीं पाया गया॥ १०१ सफ़ा॥

१३ छत्र कवि, सं० १६२५ में उ०।

विजयमुक्तावली नाम ग्रंथ अर्थात् भारत की कथा बहुत ही संक्षेप से सूचीपत्र के तौर से नाना छन्दों में वर्णन की है॥

१४ छेम कवि (२) बंदीजन डलमऊ के, सं० १५८२ में उ०।

यह कवि हुमायूँ बादशाह के यहाँ थे॥ १०१ सफ़ा॥

१ जगतसिंह बिसेन, राजा गोंडा के भाईबन्द, सं० १७६८ में उ०।

यह कवि राजा गोंडा और भिनगा के भैया थे। देउतहा नाम रियासत के तअल्लुक़ेदार थे। शिव कवि अरसेला बंदीजन इन्हीं के ग्राम देउतहा के बासी थे। उनसे काव्य पढ़कर महा विचित्र कविता की है। छंदशृङ्गार ग्रन्थ पिंगल में, और साहित्यसुधानिधि नाम ग्रन्थ अलंकार में बनाया है। इस अलंकारी ग्रन्थ में ६३६ बरवै हैं। इसके सिवा और भी ग्रन्थ बनाये हैं। पर वे हमारे पुस्तकालय में नहीं हैं॥ १०२ सफ़ा॥

२ जुगुलकिशोर भट्ट (२) कैथलवासी, सं० १७६५ में उ०।

यह महाराज मुहम्मदशाह बादशाह के बड़े मुसाहबों में थे। इन्होंने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकार का अद्वितीय बनाया है, जिसमें ६६ अलंकार उदाहरण-समेत वर्णन किये हैं। उसी ग्रन्थ में ये दो दोहे अपने नाम और सभा के समाचार में कहे हैं—

दोहा ॥ ब्रह्मभट्ट हौं जाति को, निपट अधीन नदान ।
राजा-पद मो को दियो, महमदसाह सुजान ॥ १ ॥
चारि हमारी सभा में, कोबिद कबि मति चारु ।
सदा रहत आनँद बड़े, रस को करत बिचारु ॥ २ ॥
मिश्र रुद्रमनि बिप्रबर, औ सुखलाल रसाल ।
सतंजीव सु गुमान हैं, सोभित गुनन बिसाल ॥ ३ ॥
१०५ सफ़ा ॥

३ जुगुलकिशोर कवि (१) ।

शृङ्गाररस में कवित्त अच्छे हैं ॥ १०५ सफ़ा ॥

४ जुगराज कवि ।

इनका बहुत ही सरस काव्य है ॥ १११ सफ़ा ॥

५ जुगुलप्रसाद चौबे ।

इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर है ॥ ११७ सफ़ा ॥

६ जुगुल कवि, सं० १७५५ में उ० ।

इनके बनाये हुए पद अति अनूठे महाललित हैं ॥ ११५ सफ़ा ॥

७ जानकीप्रसाद पवाँर जोहवेनकटी, ज़िले रायबरेली । वि० ।

यह कवि ठाकुर भवानीप्रसाद के पुत्र फ़ारसी संस्कृत भाषा इत्यादि विद्याओं में बहुत प्रवीण हैं । इनके बनाये हुए बहुत ग्रन्थ हमारे पास हैं । उर्दू जबान में शादनामा (अर्थात् हिन्दुस्तान की तारीख़), और भाषा में रघुवीरध्यानावली, रामनवरत्न, भगवती विनय, रामनिवासरामायण, रामानंदविहार, नीतिविलास, ये सात ग्रन्थ हैं । चित्रकाव्य और शांतरस के वर्णन में बहुत अच्छे हैं । सहनशीलता उदारता भी बहुत है ॥ १०७ सफ़ा ॥

८ जानकीप्रसाद (२)।

दुशाले की याचना सिंहराज से करने का केवल एक कवित्त हमने पाया है ॥ १०७ सफ़ा ॥

९ जानकीप्रसाद कवि बनारसी (३), सं० १८६० में उ०।

संवत् १८७१ में केशवकृत रामचन्द्रिका ग्रंथ की टीका बनाई है, और युक्तिरामायण नाम ग्रंथ रचा, जिसके ऊपर धनीराम कवि ने तिलक किया है ॥ १०८ सफ़ा ॥

१० जनकेश भाट मऊ, बुंदेलखण्ड, सं० १९१२ में उ०।

यह कवि छत्रपुर में राजा के यहाँ नौकर हैं। इनकी काव्य बहुत मधुर है ॥ १०४ सफ़ा ॥

११ जसवन्तसिंह बघेले, राजातिरवा, ज़िले कन्नौज, सं० १८५५ में उ०।

यह महाराज संस्कृत, भाषा, फ़ारसी आदि में बड़े पण्डित थे। अष्टादशपुराण और नाना ग्रन्थ साहित्य इत्यादि सब शास्त्रों के इकट्ठे किये। शृंगारशिरोमणि ग्रन्थ नायिकाभेद का, भाषाभूषण अलंकार का, और शालिहोत्र, ये तीन ग्रन्थ इनके बनाये हुए बहुत अद्भुत हैं। संवत् १८७१ में स्वर्गवास हुआ ॥ १०९ सफ़ा ॥ (?)

१२ जसवन्त कवि (२), सं० १७९२ में उ०।

इनके कवित्त हजारा में हैं ॥ ११३ सफ़ा ॥

१३ जवाहिर कवि (१) भाट बिलग्रामी, सं० १८४५ में उ०।

जवाहिररत्नाकर नाम ग्रन्थ बहुत सुंदर बनाया है ॥ १०३ सफ़ा ॥

१४ जवाहिर कवि (२) भाट श्रीनगर, बुंदेलखंडी (१) सं० १९१४ में उ०।

बहुत सुन्दर कविता की है ॥ १०३ सफ़ा ॥

१५ जैनुद्दीन अहमद कवि सं० १७३६ में उ०।

यह कवि लोगों के महामान-दान-दायक और आप भी महान् कवि थे ॥ १०६ सफ़ा ॥

१६ जयदेव कवि (१) कंपिलावासी, सं० १७७८ में उ० ।

यह कवि नवाब फ़ाज़िलअलीख़ाँ के यहाँ थे, और सुखदेव मिश्र कंपिलावाले के शिष्यों में उत्तम थे ॥ १०६ सफ़ा ॥

१७ जयदेव कवि (२), सं० १८१५ में उ० ।

कवित्त चोखे हैं ॥ १०६ सफ़ा ॥

१८ जैतराम कवि ।

शांतरस के कवित्त अच्छे हैं ॥ १०७ सफ़ा ॥

१९ जैत कवि, सं० १६०१ में उ० ।

अकबर बादशाह के यहाँ थे ॥ ११५ सफ़ा ॥

२० जयकृष्ण कवि, भवानीदास कवि के पुत्र ।

छंदसार नाम पिंगल-ग्रन्थ बनाया है । सन-संवत्, निवास ग्रन्थ के खंडित होने के कारण नहीं मालूम हुआ ॥ १०८ सफ़ा ॥

२१ जय कवि भाट लखनऊवाले, सं० १६०१ में उ० ।

यह कवि वाजिद्अली बादशाह लखनऊ के मुजराई थे । बहुत कविता भाषा उर्दू ज़बान में की है । इनका काव्य नीति सामायिक चेतावनीसंबंधी होने से सबको प्रिय है । मुसलमानों से बहुत दिन तक इनका झगड़ा दीन की बाबत होता रहा । अन्त में इन्होंने यह चौबोला बनाया, तब मुसल्मानों से बचे—सुनौ रे तुरकौ करो यकीन । कुरआँ माँझ खुदाय कहि दीन । लुकुम दीन कुँवलुकुमुद्दीन ॥ ११४ सफ़ा ॥

२२ जयसिंह कवि ।

शृंगाररस के कवित्त चोखे हैं ॥ ११४ सफ़ा ॥

२३ जगन कवि, सं० १६५२ में उ० ।

ऐजन् ॥ १०४ सफ़ा ॥

२४ जनार्दन कवि, सं० १७१८ में उ० ।

ऐजन् ॥ १०६ सफ़ा ॥

२५ जनार्दनभट्ट ।

वैद्यरत्न नाम ग्रन्थ वैद्यक का बनाया है ॥ ११७ सफ़ा ॥

२६ जमाल कवि, सं० १६०२ में उ० ।

यह कवि गूढ़कूट में बहुत निपुण थे । इनके दोहे बहुत सुन्दर हैं ॥ १०६ सफ़ा ॥

२७ जीवनाथ भाट नवलगंज, ज़िले उन्नाव के, सं० १८७२ में उ० ।

यह कवि महाराजा बालकृष्ण बादशाह के दीवान के घराने के प्राचीन कवि हैं । बसंतपचीसी ग्रन्थ महाअद्भुत बनाया है ॥ ११० सफ़ा ॥

२८ जीवन कवि (१), सं० १८०३ में उ० ।

मोहम्मदअली बादशाह के यहाँ थे । कविता सुन्दर की है ॥ १११ सफ़ा ॥

२९ जगदेव कवि, सं० १७९२ में उ० ।

कविता सरस है ॥ ११२ सफ़ा ॥

३० जगन्नाथ कवि (१) प्राचीन ।

शांत रस के इनके कवित्त अच्छे हैं ॥ ११२ सफ़ा ॥

३१ जगन्नाथ कवि (२) अवस्थी सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव । वि० ।

यह महाराज इस समय संस्कृत-साहित्य में अद्वितीय हैं । प्रथम महाराजा मानसिंह अवधनरेश के यहाँ बहुत दिन तक रहे । अब महाराजा शिवदीनसिंह अलवरदेशाधिपति के यहाँ हैं । संस्कृत के बहुत ग्रन्थ हैं । भाषा में कोई ग्रन्थ काव्य का, सिवा स्फुट कवित्त दोहों के, नहीं देखने में आया ॥ ११२ सफ़ा ॥

३२ जगन्नाथदास ।

रागसागरोद्भव में इनके पद हैं ॥ ११५ सफ़ा ॥

३३ जलालउद्दीन कवि, सं० १६१५ में उ० ।

हजारा में इनके कवित्त हैं ॥ ११४ सफ़ा ॥

३४ जशोदानन्दन कवि, सं० १८२८ में उ०।

बरवैछंद में बरवै-नायिकाभेद नाम ग्रंथ अति विचित्र बनाया है ॥ ११६ सफ़ा ॥

३५ जगनन्द कवि वृन्दावनवासी, सं० १६५८ में उ०।

इनके कवित्त हजारा में हैं ॥ ११२ सफ़ा ॥

३६ जोइसी कवि, सं० १६५८ में उ०।

इनके कवित्त हजारा में हैं ॥ ११३ सफ़ा ॥

३७ जीवन कवि, सं० १६०८ में उ०।

ऐज़न् ॥ ११३ सफ़ा ॥

३८ जगजीवन कवि, सं० १७०५ में उ०।

ऐज़न् ॥ ११३ सफ़ा ॥

३९ जदुनाथ कवि, सं० १६८१ में उ०।

तुलसी के संग्रह में इनके कवित्त हैं ॥ ११४ सफ़ा ॥

४० जगदीश कवि, सं० १५८८ में उ०।

अकबर बादशाह के यहाँ थे ॥ ११४ सफ़ा ॥

४१ जयसिंह कछवाहे महाराजा आमेर, सं० १७५५ में उ०।

यह महाराज सर्वविद्यानिधान कविकोविदों के कल्पवृक्ष महान् कवि थे। आप ही अपना जीवनचरित्र लिख उस ग्रन्थ का नाम जयसिंहकल्पद्रुम रक्खा है। यह ग्रन्थ अवश्य विद्वानों को दर्शनीय है ॥ ११४ सफ़ा ॥

४२ जयसिंह सिसौदिया, महाराना उदयपुर, सं० १६८१ में उ०।

यह महाराजा राना राजसिंह के पुत्र महान् कवि और कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष थे। एक ग्रन्थ जयदेवबिलास नाम अपने वंश के राजों के जीवनचरित्र का बनवाया है ॥

४३ जलील. (सैयद अब्दुलजलील बिलग्रामी) सं० १७३९ में उ०।

यह कवि औरंगज़ेब बादशाह के यहाँ बड़े पद पर थे। अरबी-फ़ारसी इत्यादि यावनी भाषाओं में इनका पाण्डित्य इनके

बनाये हुए ग्रंथों से प्रकट होता है। अंत में हरिवंश मिश्र कवि बिलग्रामी से भाषा-काव्य पढ़कर सुन्दर कविता की है॥ ११६ सफ़ा॥

४४ जमालुद्दीन पिह्यानीवाले, सं० १६२५ में उ०।

अच्छे कवि थे॥

४५ जगनेश कवि।

ऐज़न्॥

४६ जोध कवि, सं० १५६० में उ०।

अकबर बादशाह के यहाँ थे॥

४७ जगन्नाथ।

ऐज़न्॥

४८ जगामग।

ऐज़न्॥

४६ जुगलदास कवि।

पद बनाये हैं॥

५० जगजीवनदास चंदेल कोटवा, ज़िले बाराबंकी, सं० १८४१ में उ०।

यह महाराज बड़े महात्मा सत्यनामी पंथ के चलानेवाले थे। भाषा-काव्य भी किया है और आज तक जलालीदास इत्यादि जो महात्मा इनकी गद्दी पर बैठे हैं, सब काव्य करते हैं। परंतु बहुधा शांतरस की ही इन की कविता है। दूलमदास, देवीदास इत्यादि सब इसी घराने के शिष्य हैं, जिनके पद बहुत सुनने में आते हैं॥

५१ जुल्फकार कवि, सं० १७८२ में उ०।

इन्होंने विहारीसतसई का तिलक बहुत विचित्र बनाया है॥

५२ जगनिक बंदीजन महोबा, बुंदेलखंड, सं० ११२४ में उ०।

यह कवि चंद कवीश्वर के समय में थे। जैसे चंद का पद पृथ्वीराज चौहान के यहाँ था, वैसे परिमाल महोबेवाले चंदेल

राजा के यहाँ जगनिक का मानदान था। चंद ने रासा में बहुत जगह इनकी प्रशंसा की है ॥

५३ जबरेश वंदीजन, बुंदेलखंडी, वि० ।

१ टोडर कवि, राजा टोडरमल खत्री पंजाबी, सं० १५८० में उ० ।

यह राजा टोडरमल अकबर बादशाह के दीवान-आला थे। इन के हालात से तारीख़-फ़ारसी भरी हुई है। अरबी, फ़ारसी और संस्कृत में महानिपुण थे। श्रीमद्भागवत का संस्कृत से फ़ारसी में उल्था किया है। और भाषा में नीतिसंबंधी बहुत कवित्त कहे हैं। इन महाराज ने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियों के भलाई के लिये किये हैं, एक तो पंजाब देश में खत्रियों के यहाँ रिवाज-तीनसाला-मातम का उठाकर केवल वार्षिक रस्म को नियत किया; दूसरे फ़ारसी हिसाब-किताब को ईरान देश के माफ़िक हिन्दुस्तान में जारी किया। सन् ९९८ हिजरी में शहर लाहौर में देहांत हुआ ॥ ११७ सफ़ा ॥

२ टेर कवि मैनपुरी ज़िले के वासी, सं० १८८८ में उ० ।

इन्होंने सुंदर कविता की है ॥

३ टहकन कवि पंजाबी ।

पांडवों के यज्ञ-इतिहास की कथा संस्कृत से भाषा में की है ॥

१ ठाकुर कवि प्राचीन, सं० १७०० में उ० ।

ठाकुर कवि को किसी ने कहा है कि वह असनी-ग्राम के बंदीजन थे। संवत् १८०० के क़रीब मोहम्मदशाह बादशाह के ज़माने में हुए हैं। और कोई कहता है कि नहीं, ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्ड के वासी हैं। किसी बुंदेलखण्डी कवि का बयान है कि छत्रपुर, बुंदेलखण्ड में बुंदेलालोग हिम्मतबहादुर गोसाईं के मारने को इकट्ठा हुए थे। ठाकुर कवि ने यह कवित्त, 'समयो यह बीर बरावने है' लिख भेजा। सब बुंदेला चले गये, और हिम्मत-

बहादुर ने ठाकुर को बहुत रुपए इनाम में दिए। हिम्मतबहादुर संवत् १८०० में थे। कवि कालिदास ने हज़ारा संवत् १७४५ के करीब बनाया है, और उसमें ठाकुर के बहुत कवित्त और ऊपर लिखा हुआ कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि बुंदेलखण्डी अथवा असनीवाले भाट या कायस्थ कुछ हों, पर अवश्य संवत् १७०० में थे। इनका काव्य महा-मधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरापुरा सर्व प्रसन्नकारी है। सवैया इनके बहुतही चुटीले हैं। इनके कवित्त तो हमारे पुस्तका-लय में सैकड़ों हैं, पर ग्रन्थ कोई नहीं। न हमने किसी ग्रन्थ का नाम सुना॥ ११७ सफ़ा॥ (१)

२ ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी (१) किशुनदासपुर, ज़िले रायबरेली, सं० १८८२ में उ०।

यह महान् पण्डित संस्कृतसाहित्य में महाप्रवीण थे। सारे हिन्दु-स्तान में काव्य ही के हेतु फिरकर ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्य की इकट्ठा की थीं। अपने हाथ से भी नाना ग्रन्थ लिखे थे। बुंदेलखंड में तो घर-घर कवियों के यहाँ फिरकर एक संग्रह भाषा के कवियों का इकट्ठा किया था। रसचंद्रोदय ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है। तत्पश्चात् काशीजी में गणेश और सरदार इत्यादि कवियों से बहुत मेल-जोल रहा। अवधदेश के राजा-महाराजों के यहाँ भी गये। जब इनका संवत् १९२४ में देहान्त हुआ, तो इन के चारों महामूर्ख पुत्रों ने अठारह-अठारह बस्ते बाँट लिये और कौड़ियों के मोल बेच डाले। हम ने भी प्रायः २०० ग्रंथ अंत में मोल लिये थे॥ ११९ सफ़ा॥

३ ठाकुरराम कवि।

इनके कवित्त शांतरस के सुंदर हैं॥ ११९ सफ़ा॥

४ ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी (२) अलीगंज, ज़िले खीरी। विद्यमान हैं। सत्कवि हैं ॥ १२० सफ़ा ॥

१ ढाखन कवि।

इनका महाअद्भुत काव्य है ॥ १२० सफ़ा ॥

१ श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी (१), सं० १६०१ में उ०।

यह महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर, ज़िले प्रयाग के रहने वाले और संवत् १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए थे। संवत् १६८० में स्वर्गवास हुआ। इनके जीवनचरित्र की पुस्तक वेणीमाधवदास कवि पसका-ग्रामवासी ने, जो इनके साथ-साथ रहे, बहुत विस्तार-पूर्वक लिखी है। उसके देखने से इन महाराज के सब चरित्र प्रकट होते हैं। इस पुस्तक में ऐसी विस्तृत कथा को हम कहाँतक संक्षेप में वर्णन करें। निदान गोस्वामीजी बड़े महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध हो गये हैं। इनके बनाये ग्रन्थों की ठीक ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई। केवल जो ग्रंथ हमने देखे, अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं, उनका ज़िकर किया जाता है। प्रथम ४९ काण्ड रामायण बनाया है, इस तफ़सील से, १ एक चौपाई-रामायण ७ काण्ड, २ कवित्तावली ७ काण्ड, ३ गीतावली ७ काण्ड, ४ छन्दावली ७ काण्ड, ५ बरवै ७ काण्ड, ६ दोहावली ७ काण्ड, ७ कुंडलिया ७ काण्ड। सिवा इन ४९ काण्डों के १ सतसई, २ रामशलाका, ३ संकटमोचन, ४ हनुमत्‌बाहुक, ५ कृष्णगीतावली, ६ जानकीमङ्गल, ७ पार्वतीमङ्गल, ८ करखाछन्द, ९ रोलाछन्द, १० झूलनाछन्द इत्यादि और भी ग्रन्थ बनाये हैं। अन्त में विनयपत्रिका महाविचित्र मुक्तिरूप ब्रह्मानंदसागर ग्रंथ बनाया है। चौपाई गोस्वामी महाराज की ऐसी किसी कवि ने नहीं बना पाई, और न विनयपत्रिका के समान अद्भुत ग्रन्थ आजतक किसी कवि महात्मा ने रचा। इस

काल में जो रामायण न होती, तो हम ऐसे मूर्खों का बेड़ा पार न लगता। गोसाईंजी श्रीअयोध्या जी, मथुरा-वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, पुरुषोत्तमपुरी इत्यादि क्षेत्रों में बहुत दिनों तक घूमते रहे हैं। सबसे अधिक श्रीअयोध्या, काशी, प्रयाग और उत्तराखण्ड, वंशीवट जिले सीतापुर इत्यादि में रहे हैं। इनके हाथ की लिखी हुई रामायण, जो राजापुर में थी, खंडित होगई है। पर मलिहाबाद में आजतक सम्पूर्ण सातों कांड मौजूद हैं। केवल एक पत्रा नहीं है। विस्तार-भय से अधिक हालात हम नहीं लिख सकते। दो दोहे लिखकर इन महाराज का वृत्तांत समाप्त करते हैं:—

दोहा—कविता कर्ता तीनि हैं, तुलसी, केसव, सूर।
कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर॥ १॥
सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
अब के कबि खद्योतसम, जहँ तहँ करत प्रकास॥ २॥

१२० सफ़ा॥

२ तुलसी (२) श्रीओझाजी, जोधपुरवाले।

सुन्दरीतिलक में इनके कवित्त हैं। शृङ्गाररस चोखा बर्णन किया है॥ १२३ सफ़ा॥

३ तुलसी (३) कवि यदुराय के पुत्र, सं० १७१२ में उ०।

यह कवि कविता में सामान्य कवि हैं। इन्हों ने कविमाला नाम एक संग्रह बनाया है, जिसमें प्राचीन ७५ कवियों के कवित्त लिखे हैं। ये सब कवि संवत् १५०० से लेकर १७०० तक के हैं। इस संग्रह के बनाने में इस ग्रन्थ से हम को बड़ी सहायता मिली है॥ १२३ सफ़ा॥

४ तुलसी (४)

इनका काव्य सरस है॥ १२४ सफ़ा॥

५ तानसेन कवि ग्वालियरनिवासी, सं० १५८८ में उ०।

यह कवि मकरन्द पाँड़े गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे। प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजी गोकुलस्थ के शिष्य होकर काव्यकला को यथावत् सीख कर पीछे शेख मोहम्मद गौस ग्वालियरवासी के पास जाकर संगीतविद्या के लिये प्रार्थना की। शाहसाहब तंत्रविद्या में अद्वितीय थे। मुसल्मानों में इन्हींको इस विद्या का आचार्य्य सब तवारीखों में लिखा गया है। शाह साहब ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ में लगा दी। उसी समय से तानसेन गानविद्या में महानिपुण होगये। इनकी प्रशंसा आईन-अकबरी में ग्रन्थकर्ता फहीम ने लिखा है कि ऐसा गानेवाला पिछले हज़ारा में कोई नहीं हुआ। निदान तानसेन ने दौलतखाँ, शेरखाँ बादशाह के पुत्र, पर आशिक होकर उनके ऊपर बहुत सी कविता की। दौलत खाँ के मरने पर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेला के यहाँ गये। फिर वहाँ से अकबर बादशाह ने अपने यहाँ बुला लिया। तानसेन और सूरदासजी से बहुत मित्रता थी। तानसेनजी ने सूरदास की तारीफ़ में यह दोहा बनाया—

दोहा—किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद लग्यो, तनमन धुनत सरीर॥ १॥

तब सूरदासजी ने यह दोहा कहा—

दोहा—बिधना यह जिय जानि कै, सेस न दीन्हे कान।
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान॥ २॥

इनके ग्रन्थ रागमाला इत्यादि महा उत्तम काव्य के ग्रंथ हैं॥ १२८ सफ़ा॥

६ तारापति कवि, सं० १७६० में उ०।

कवित्त नखशिख के सुंदर हैं॥ १२४ सफ़ा॥

७ तारा कवि, सं० १८२६ में उ० ।

सुन्दर कविता की है ॥ १२४ सफ़ा ॥

८ तत्त्ववेत्ता कवि, सं० १६८० में उ० ।

हज़ारा में इनके कवित्त हैं ॥ १२४ ॥

६ तेगपाणि कवि, सं० १७०८ में उ० ।

ऐज़न् ॥ १२५ सफ़ा ॥

१० ताज कवि, सं० १६५२ में उ० ।

ऐज़न् ॥ १२६ सफ़ा ॥ (१)

११ तालिबशाह, सं० १७६८ में उ० ।

कवित्त अच्छे हैं ॥ १२६ सफ़ा ॥

१२ तीर्थराज ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८०० में उ० ।

यह महाराज महान् कवीश्वर बैसवंशावतंस राजा अचलसिंह बैस रनजीतपुरवावाले के यहाँ थे, और उन्हीं की आज्ञानुसार संवत् १८०७ में समरसार भाषा किया ॥ १२८ सफ़ा ॥

१३ तीखी कवि ।

ऐज़न् ॥ १२८ सफ़ा ॥

१४ तेही कवि ।

ऐज़न् ॥ १२८ सफ़ा ॥

१५ तोख कवि, सं० १७०५ में उ० ।

यह महाराम भाषाकाव्य के आचार्यों में हैं । ग्रन्थ इनका कोइ हमको नहीं मिला । पर इनके कवित्तों से हमारा कुतुबखाना भरा हुआ है । कालिदास तथा तुलसीजी ने भी इनकी कविता अपने ग्रंथों में बहुत सी लिखी है ॥ १२५ सफ़ा ॥

१६ तोखनिधि ब्राह्मण कंपिलानगरवासी, सं० १७६८ में उ० ।

इनके बनाये हुए तीन ग्रंथ हैं—सुधानिधि १, व्यंग्यशतक २, नखशिख ३, ये तीनों ग्रंथ विचित्र हैं ॥ १२७ सफ़ा ॥

१ राजा दलसिंह कवि, बुंदेलखंडी, सं० १७८१ में उ० ।

केवल प्रेमपयोनिधि नाम ग्रंथ राधामाधव के परस्पर नाना लीलाविहार के वर्णन में बनाया है ॥ १३२ सफ़ा ॥

२ दलपतिराय-बंशीधर श्रीमाल ब्राह्मण अमदाबादवासी, सं० १८८५ में उ० ।

भाषाभूषण का तिलक दोनों ने मिलकर बहुत विचित्र रचना करके बनाया है ॥ १३६ सफ़ा ॥

३ दयाराम कवि (१) ।

अनेकार्थमाला ग्रंथ बनाया है ॥ १३८ सफ़ा ॥

४ दयाराम कवि त्रिपाठी, सं० १७६६ में उ० ।

शांतरस के कवित्त चोखे हैं ॥ १३६ सफ़ा ॥

५ दयानिधि कवि (२) ।

१३६ सफ़ा ॥

६ दयानिधि ब्राह्मण पटनानिवासी (३) ।

१४० सफ़ा ॥

७ दयानिधि कवि बैसवारे के, सं० १८११ में उ० ।

राजा अचलसिंह बैस की आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया ॥ १३६ सफ़ा ॥

८ दयानाथ दुबे, सं० १८८६ में उ० ।

आनंदरस नाम ग्रंथ नायिकाभेद का बनाया है ॥ १४६ सफ़ा ॥

६ दयादेव कवि ।

१३१ सफ़ा ॥

१० दत्त प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण कुसमड़ा ज़िले कन्नौज, सं० १८७० में उ० ।

इन महाराज ने सुंदर कविता की है ॥

११ दत्त देवदत्त ब्राह्मण साढ़ ज़िले कानपुर, सं० १८३६ में उ० ।

यह कवि पद्माकर के समय में महाराज खुमानसिंह बुंदेला चरखारी के यहाँ थे । उन दिनों पद्माकर, ग्वाल, दत्त, इन तीनों कवियों की बड़ी छेड़छाड़ रहती थी । धारा बाँधि कूटत

फुहारा मेघमाला से, इस कवित्त पर राजा सुखमानसिंह ने दत्त जी को बहुत दान दिया था ॥ १४७ सफ़ा ॥

१२ दास, भिखारीदास कायस्थ अरघल, बुंदेलखंडी, सं० १७८० में उ०।

यह महान् कवि भाषासाहित्य के आचार्य गिने जाते हैं। छन्दोर्णव नाम पिंगल, रससारांश, काव्यनिर्णय, शृङ्गारनिर्णय, बागबहार, ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए अति उत्तम काव्य हैं ॥ १३२ सफ़ा ॥ (१)

१३ दास (२) बेनीमाधवदास, पसका, ज़िले गोंडा, सं० १६५५ में उ०।

यह महात्मा गोस्वामी तुलसीदासजी के शिष्य उन्हीं के साथ रहते रहे हैं, और गोसाईंजी के जीवनचरित्र की एक पुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाई है। संवत् १६९९ में देहान्त हुआ ॥ १३१ सफ़ा ॥

१४ दान कवि।

शृंगार की सरस कविता है ॥ १३८ सफ़ा ॥

१५ दामोदरदास ब्रजवासी, सं० १६०० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ १५० सफ़ा ॥

१६ दामोदर कवि (२)।

१३१ सफ़ा ॥

१७ द्विजदेव, महाराजा मानसिंह शाकद्वीपी अवधनरेश, सं० १९३० में उ०।

यह महाराज संस्कृत, भाषा, फ़ारसी, अँगरेज़ी इत्यादि विद्याओं में महानिपुण थे। प्रथम संवत् १९०७ के क़रीब इनको भाषा-काव्य करने की बहुत रुचि थी। इसीकारण शृंगारलतिका नाम एक ग्रंथ बहुत सुन्दर-टीका सहित बनाया। इनके यहाँ ठाकुरप्रसाद, जगन्नाथ, बलदेवसिंह इत्यादि महान् कवि थे। अन्त में इन दिनों अब क़ानून-अँगरेज़ी का शौक़ हुआ था। संवत् १९३० में

देहान्त हुआ, और इस देश के रईसों के भाग फूट गये ॥ ११४ सफ़ा ॥

१८ द्विज कवि, पण्डित मन्नालाल बनारसी विद्यमान हैं।

इनके कवित्त सुंदरीतिलक में हैं ॥ ११५ सफ़ा ॥

१९ द्विजनन्द कवि ।

१४५ सफ़ा ॥

२० द्विजचन्द कवि, सं० १७५५ में उ० ।

१५४ सफ़ा ॥

२१ दिलदार कवि, सं० १६५० में उ० ।

हजारा में इनका काव्य है ॥ १३१ सफ़ा ॥

२२ द्विजराम कवि ।

१४० सफ़ा ॥

२३ दिलाराम कवि ।

१३८ सफ़ा ॥

२४ दिनेश कवि ।

इनका नखशिख बहुत ही विचित्र है ॥ ११८ सफ़ा ॥

२५ दीनदयालगिरि बनारसी, सं० १९१२ में उ० ।

यह कवि संस्कृत के महान् पण्डित थे । भाषा-साहित्य में अन्योक्तिकल्पद्रुम नाम ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर बनाया है । अनुराग-बाग और बागबहार, ये दो ग्रन्थ भी इनके बहुत विचित्र हैं ॥ १४० सफ़ा ॥

२६ दीनानाथ कवि बुंदेलखंडी, सं० १९११ में उ० ।

कवित्त अच्छे हैं ॥ १३२ सफ़ा ॥

२७ दुर्गा कवि, सं० १८६० में उ० ।

१३६ सफ़ा ॥

२८ दूलह त्रिवेदी बनपुरावाले कविंदजी के पुत्र सं० १८०३ में उ० ।

इनका बनाया हुआ कविकुलकण्ठाभरण नाम ग्रन्थ भाषा-साहित्य में बहुत प्रामाणिक है ॥ १४४ सफ़ा ॥ (१)

२६ देव कवि प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण समनिगाँव, ज़िले मैनपुरी के निवासी, सं० १६६१ में उ० ।

यह महाराज अद्वितीय कवि अपने समय के भाम, मम्मट के समान भाषाकाव्य के आचार्य हो गये हैं । शब्दों में ऐसी समाई कहाँ कि उनमें इनकी प्रशंसा की जाय ? इनके बनाये ग्रन्थों की संख्या आजतक ठीक ७२ हम को मालूम हुई है । उनमें केवल ११ ग्रन्थों के नाम, जो हमको मालूम हैं, लिखे जाते हैं, जिनमें से कुछ को अक्सर हमने भी देखा है ॥ १ प्रेमतरङ्ग, २ भावविलास, ३ रसविलास, ४ रसानन्दलहरी, ५ सुजानविनोद, ६ काव्यरसायन पिंगल, ७ अष्टयाम, ८ देवमायाप्रपंच-नाटक, ९ प्रेमदीपिका, १० सुमिलविनोद, ११ राधिकाविलास ॥ १४५ सफ़ा ॥ (१)

३० देव (२) काष्ठजिह्वा स्वामी काशीस्थ ।

यह महाराज पण्डितराज षट्शास्त्र के वक्ता थे । इन्होंने प्रथम संस्कृत काशीजी में पढ़ी । दैवयोग से एकबार अपने गुरु से वाद कर बैठे । पीछे पछताय काष्ठ की जीभ मुँह में डाल बोलना बन्द कर दिया । पाटी में लिखके बातचीत करते थे । उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेश ने इनसे उपदेश ले रामनगर में टिकाया। तब इन महाराज ने भाषा में विनयामृत इत्यादि नाना ग्रन्थ बनाये । इन्हींके पद आजतक काशीनरेश की सभा में गाये जाते हैं ॥ १४३ सफ़ा ॥

३१ देवदत्त कवि, सं० १७०५ में उ० ।

ललित काव्य है ॥ १४६ सफ़ा ॥

३२ देवीदास कवि बुंदेलखंडी, सं० १७१२ में उ० ।

यह महान् कवि नाना-ग्रन्थ बनाकर संवत् १७४२ में भैया रतनपालसिंह यादववंशावतंस करौली-अधिपति के यहाँ जाकर महामान पाकर जन्म भर उसी जगह रहे, और उन्हीं के नाम से प्रेमरत्नाकर

नाम का एक महा अपूर्व ग्रंथ रचा, जो हमारे पुस्तकालय में मौजूद है। इनके नीतिसम्बन्धी कवित्त हरएक मनुष्य को जानना आवश्यक है ॥ १३५ सफ़ा ॥

३३ देवकीनंदन शुक्ल मकरंदपुर, ज़िले कानपुर, सं० १८७०में उ० ।

यह महाराज काव्य में बहुतही निपुण थे। इनकी कविता देखने से इनका पाण्डित्य प्रकट होता है। यह तीन भाई थे–देवकीनन्दन १, गुरुदत्त २, शिवनाथ ३। तीनों महान् कवि थे। गुरुदत्त का बनाया हुआ पक्षीविलास ग्रंथ तो हमने देखा है, पर देवकीनन्दन का केवल नखशिख और स्फुट दो तीन सौ कवित्त हमारे पास हैं। शिवनाथ का कोई ग्रंथ नहीं देखने में आया ॥ १४१ सफ़ा ॥ (१)

३४ देवदत्त कवि (२), सं० १७५२ में उ० ।

योगतत्त्व ग्रंथ बनाया ॥ १४६ सफ़ा ॥

३५ देवीदत्त कवि ।

शांत और सामयिक कवित्त सुंदर हैं ॥ १३७ सफ़ा ॥

३६ देवी कवि ।

शृंगाररस के चोखे कवित्त हैं ॥ १३७ सफ़ा ॥

३७ देवीदास बन्दीजन, सं० १७५० में उ० ।

सूरसागर इत्यादि हास्यरस के ग्रंथ बनाये हैं ॥ १३७ सफ़ा ॥

३८ देवीराम कवि, सं० १७५० में उ० ।

इनका काव्य मध्यम और शांतरस का है ॥ १५० सफ़ा ॥

३६ देवा कवि (३) राजपूतानेवाले, सं० १८५५ में उ० ।

यह कवि कृष्णदास पयअहारी गलताजीवाले के शिष्य और उदयपुर के समीप एक मन्दिर में चतुर्भुज स्वामी के पुजारी थे ॥ १५१ सफ़ा ॥

४० दौलत कवि, सं० १६५१ में उ० ।

४१ दौल्ह कवि, सं० १६०५ में उ० ।

४२ देवनाथ कवि ।

४३ देवमणि कवि ।

१६ अध्याय तक चाणक्यराजनीति को भाषा किया ॥

४४ दास ब्रजवासी ।

प्रबोधचन्द्रोदय ग्रंथ बनाया ॥

४५ दिलीप कवि ।

४६ दीनानाथ अध्वर्यु, मोहार, ज़िले फ़तेपुर, सं० १८७६ में उ० ।

ब्रह्मोत्तरखण्ड को भाषा किया ॥

४७ देवीदीन बन्दीजन बिलग्रामी, विद्यमान हैं ।

यह कवि रसाल बिलग्रामी के भांजे हैं, और यद्यपि सत्कवि हैं, पर संतोष और घर बैठने के कारण दारिद्रय के हाथ से तंग हैं । इनका बनाया हुआ नखशिख और रसदर्पण, ये दो ग्रंथ सुन्दर हैं ॥

४८ देवीसिंह कवि ।

४६ दयाल कवि बन्दीजन बेतीवाले भौन कवि के पुत्र, विद्यमान हैं ।

१५१ सफ़ा ॥

१ धर्नसिंह कवि, सं० १७६१ में उ० ।

यह कवि मौरावाँ, ज़िले उन्नाव के रहनेवाले बन्दीजन महा-निपुण कवि हो गये हैं ॥ १५१ सफ़ा ॥

२ धनीराम कवि बनारसी, सं० १८८८ में उ० ।

इनकी कविता बहुत ललित है । बाबू देवकीनन्दन बनारसी की आज्ञानुसार काव्यप्रकाश को संस्कृत से भाषा किया और रामचन्द्रिका का तिलक बनाया ॥ १५२ सफ़ा ॥ (१)

३ धीर कवि, सं १८७२ में उ० ।

यह कवि शाहआलम बादशाह दिल्ली के यहाँ थे ॥ १५२ सफ़ा ॥

४ धुरंधर कवि।

इनके कवित्त दिग्विजयभूषण में हैं ॥ १५२ सफ़ा ॥

५ धीरजनरिन्द महाराजा इंद्रजीतसिंह बुंदेला उड़छावाले, सं० १६१५ में उ०।

इन्हीं महाराज के यहाँ कवि केशवदास थे, और प्रवीणराय पातुर भी इन्हीं की सभा में विराजमान थी। इनके समय में उड़छा बड़ी राजधानी था ॥ १५१ सफ़ा ॥

६ धोंधेदास ब्रजवासी।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ १५३ सफ़ा ॥

७ धौंकलसिंह बैस न्यावाँ, ज़िले रायबरेली, सं० १८६० में उ०।

रमलप्रश्न इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थ बनाये ॥ १५३ सफ़ा ॥

१ नरहरिराय बंदीजन असनीवाले, सं० १६०० के बाद उ०।

यह कवि जलालुद्दीन अकबर बादशाह के यहाँ थे। असनी गाँव इनको माफ़ी में मिला था। इनके पुत्र हरिनाथ महाकवीश्वर और उदारचित्त थे। नरहरि-वंशी बंदीजन इस समय वाराणसी, बेंती और इधर-उधर देशांतरों में तितिरबितिर हो गये हैं। गाँव भी ब्राह्मणों के दख़ल में है। इनका घर जो असनी से लगा हुआ पूर्व ओर ऐन गंगा के किनारे बड़े महाराजों का ऐसा गढ़ था, अब ढहा पड़ा है। ईंटें आज तक बिकती हैं। गीदड़, श्वान, शृगाल दिन-दोपहर फिरा करते हैं। इनका बनाया हुआ कोई ग्रंथ हमारे देखने-सुनने में नहीं आया। कवित्त और बहुधा छप्पै देखने-सुनने में आये हैं। एक बार अकबरशाह ने करन कवि सिरोहिया बंदीजन से पूछा कि तुम्हारी जाति में कौन भाट बड़े हैं? करन बोले, महाराज सिरोहिया भाट कलँगी के समान सर्वोपरि हैं। तब अकबर शाह ने नरहरि से पूछा। नरहरि बोले, महाराज सत्य है, सिरोहिया शिर के समान और हम पावँ के तुल्य हैं।

तब अकबरशाह बोले, और सब भाट तो गुण के पात्र हैं, तुम महापात्र हो। तब से नरहरिवंशी भाट महापात्र कहाये ॥ १५३ सफ़ा ॥

२ निपटनिरंजन स्वामी, सं० १६५० में उ०।

यह महाराज गोस्वामी तुलसीदास के समान महान् सिद्ध हो गये हैं। इनके ग्रन्थों की ठीक-ठीक संख्या मालूम नहीं होती। पुरानी संगृहीत पुस्तकों में सैकड़ों कवित्त हम इनके देखते हैं। हमारे पुस्तकालय में शान्तसरसी और निरंजनसंग्रह, ये दो ग्रन्थ इन महाराज के बनाये हुए हैं। इनकी कविता में बहुत बड़ा प्रभाव यह है कि मनुष्य कैसा ही काम-क्रोध इत्यादि पापों से बद्ध हो, इनके वाक्य के श्रवण-कीर्तन से निःसन्देह मुक्त हो जायगा ॥१६०सफ़ा॥

३ निहाल ब्राह्मण निगोहाँ, ज़िले लखनऊ, सं० १८२० में उ०।

इनकी कविता बहुत ही ललित है ॥ १५४ सफ़ा ॥

४ नानक जी वेदी खत्री तिलवड़ी गाँव पंजाबवासी सं०१५२६ में उ०।

यह महात्मा कार्त्तिकी पूर्णमासी को संवत् १५२६ में उत्पन्न और संवत् १५९६ में वैकुण्ठवासी हुए। इनकी कथा सब छोटे-बड़ों पर विदित है। इनका ग्रन्थ ग्रन्थसाहब के नाम से नानक-पंथियों में पूजनीय है। उसमें दसों गुरुओं की कविता के सिवा और भक्त कविलोगों का काव्य भी शामिल है। इस तफ़सील से १नानकजी, २ अंगदजी, ३ अमरदास, ४ रामदास, ५ हरि-रामदास, ६ हरिगोविंद, ७ हरिराय, ८ हरिकिशुन, ९ तेगबहादुर, १० गोविन्दसिंह, इन दसों में ६, ७, ८ के पद ग्रन्थसाहब में नहीं हैं, और सबके हैं। छाप सबकी नानक है। जहाँ महल्ला लिखा है, उसी से मालूम होता है कि यह पद किस गुरु का है। सिवा इन दसों के और जिनके काव्य ग्रन्थ साहब में हैं, उनके ये नाम हैं— १ कबीरदास, २ त्रिलोचन, ३ धनाभक्त, ४ रय-

दास, ५ सैन, ६ शेख़ फरीद, ७ मीराबाई, ८ नामदेव, ९ बलभद्र ॥ १५६ सफ़ा ॥

५ नेही कवि ।

सरस कविता की है ॥ १५९ सफ़ा ॥

६ नैन कवि ।

ऐज़न् ॥ १५९ सफ़ा ॥

७ नोने कवि बंदीजन बाँदा, बुन्देलखण्डनिवासी, कवि हरिलालजी के पुत्र, सं० १९०१ में उ० ।

यह महान् कवि भाषा साहित्य में निरट प्रवीण बहुत अच्छा काव्य करते हैं । ग्रंथ इनका हमने नहीं देखा ॥ १५४ सफ़ा ॥

८ नैसुक कवि बुंदेलखंडी, सं० १९०४ में उ० ।

शृङ्गार में सुन्दर कवित्त हैं ॥ १६५ सफ़ा ॥

९ नायक कवि ।

दिग्विजयभूषण में इनके कवित्त हैं ॥ १६७ सफ़ा ॥

१० नबी कवि ।

इनका नखशिख अद्भुत है ॥ १६८ सफ़ा ॥

११ नागरीदास कवि, सं० १६४८ में उ० ।

हज़ारा में इनके कवित्त हैं ॥ १६८ सफ़ा ॥ (१)

१२ नरेश कवि ।

नायिकाभेद का कोई ग्रंथ बनाया है; क्योंकि इनके कवित्तों से यह बात पाई जाती है ॥ १६९ सफ़ा ॥

१३ नवीन कवि ।

शृङ्गाररस के बहुत ही सुन्दर कवित्त हैं ॥ १६९ सफ़ा ॥

१४ नवनिधि कवि ।

इनकी कविता बहुत मधुर है ॥ १५६ सफ़ा ॥

१५ नाभादास कवि, नामनारायणदास महाराज दक्षिणी, सं० १५४० में उ० ।

इनको स्वामी अग्रदासजी ने गलता नाम इलाके आमेर में

लाकर अपना शिष्य बनाकर भक्तमाल नाम ग्रन्थ लिखने की आज्ञा की। नाभाजी ने १०८ छप्पै छंदों में इस ग्रंथ को रचा। पीछे स्वामी प्रियादास वृन्दावनी ने उसका तिलक कवित्तों में किया। फिर लालजी कायस्थ काँधला के निवासी ने सन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाकर भक्तउरबसी नाम रक्खा। इन दिनों उसी भक्तमाल को महारसिक भगवत्भक्त तुलसीराम अगरवाल मीरापुर-निवासी ने उर्दू में उलथा कर भक्तमालप्रदीपन नाम रक्खा है। नाभादास की विचित्र कथा भक्तमाल में लिखी है ॥१७१ सफ़ा॥

१६ नरवाहन जी कवि भौगाँवनिवासी, सं० १६०० में उ०।

यह कवि स्वामी हितहरिवंशजी के शिष्य थे। इनके पद बहुत विचित्र हैं। इनकी कथा भक्तमाल में है॥ १५७ सफ़ा॥

१७ नरसिया कवि अर्थात् नरसी जूनागढ़ निवासी, सं० १५९० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं॥ १७१ सफ़ा॥

१८ नवखान कवि बुन्देलखण्डी, सं० १७९२ में उ०।

कवित्त सुन्दर हैं॥ १७२ सफ़ा॥

१९ नारायण भट्ट गोसाँई गोकुलस्थ ऊँचगाँव बरसाने के समीप के निवासी, सं० १६२० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। यह महाराज बड़े भक्त थे। बृन्दावन-मथुरा-गोकुल इत्यादि में जो तीर्थस्थान लुप्त हो गये थे, उन सबको प्रकट कर रासलीला की जड़ इन्हों ने प्रथम डाली है॥ १५८ सफ़ा॥

२० नारायणरायवंदीजनबनारसी कविसरदारके शिष्य(२)विद्यमानहैं।

भाषाभूषण का तिलक कवित्तों में और कविप्रिया का टीका वार्तिक बनाया है। शृङ्गाररस के बहुतेरे कवित्त इनके हमारे पास हैं। ग्रन्थ कोई नहीं है॥ १५५ सफ़ा॥

२१ नारायणदास कवि (३), सं० १६१५ में उ० ।

हितोपदेश (राजनीति) को भाषा में छंदोबद्ध रचा है ॥ १७० सफ़ा ॥

२२ नारायणदास वैष्णव (४) ।

छन्दसार पिंगल बनाया है, जिसमें ५२ छन्दों का वर्णन है । ग्रन्थ में सन्-संवत् नहीं लिखे ॥ १७१ सफ़ा ॥

२३ निधान कवि (१) प्राचीन, सं० १७०८ में उ० ।

सरस कविता है । हज़ारे में इनका नाम है ॥ १६० सफ़ा ॥

२४ निधान (२) ब्राह्मण, सं० १८०८ में उ० ।

यह राजा अलीअकबरख़ाँ बहादुर मोहम्मदीवाले के यहाँ महान् कवि थे । इन्हों ने शालिहोत्र भाषा में बहुत ही अच्छी कविता की है ॥ १६० सफ़ा ॥

२५ निवाज कवि (१) जुलाहा बिलग्रामी, सं० १८०४ में उ० ।

शृंगार के अच्छे कवित्त हैं ॥ १५५ सफ़ा ॥

२६ निवाज कवि (२) ब्राह्मण अन्तरबेदवाले, सं० १७३९ में उ० ।

यह कवि महाराजा छत्रसाल बुन्देला पन्नानरेश के यहाँ थे । आजमशाह की आज्ञा के अनुसार शकुंतला नाटक को संस्कृत से भाषा की । एक दोहे से लोगों को शक है कि निवाज कवि मुसल्मान थे; पर हमने बहुत जाँचा तो एक निवाज़ मुसल्मान और एक निवाज हिन्दू पाये गये—

दोहा—तुम्हैं न ऐसी चाहिये, छत्रसाल महराज ।
जहँ भगवत गीता पढ़ै, तहँ कबि पढ़ै निवाज ॥ १५६ सफ़ा ॥

२७ निवाज ब्राह्मण (३) बुंदेलखंडी, सं० १८०१ में उ० ।

यह कवि भगवन्तराय खीँची ग़ाज़ीपुरवाले के यहाँ थे ॥ १५७सफ़ा ॥

२८ नरोत्तमदास ब्राह्मण (१) बाड़ी ज़िले सीतापुर के, सं० १६०२में उ० ।

सुदामाचरित्र बनाया है, मानो प्रेमसमुद्र बहाया है ॥ १६५ सफ़ा ॥

२९ नरोत्तम (२) बुंदेलखंडी, सं० १८५६ में उ० ।

सरस कविता की है ॥ १६५ सफ़ा ॥

३० नरोत्तम (३) अन्तरबेदवाले, सं० १८९६ में उ० ।

ऐज़न् ॥ १६९ सफ़ा ॥

३१ नीलकंठ मिश्र अंतरबेदवासी, सं० १६४८ में उ० ।

दासजी ने इनकी प्रशंसा व्रजभाषा जानने की की है ॥ १७० सफ़ा ॥

३२ नीलकंठ त्रिपाठी टिकमापुरवाले मतिराम के भाई, सं०१७३० में उ० ।

इनका कोई ग्रन्थ हमने नहीं देखा ॥ १६६ सफ़ा ॥

३३ नीलसखी जैतपुर बुंदेलखंडी, सं० १९०२ में उ० ।

पद रसीले हैं ॥ १५८ सफ़ा ॥

३४ नरिंद कवि (१) प्राचीन, सं० १७८८ में उ० ।

१७२ सफ़ा ॥

३५ नरिंद (२) महाराजा नरेंद्रसिंह पटियाला के, सं० १९१४ में उ० ।

सरस कविता है। इनका नाम हमको केवल सुंदरीतिलक से मालूम हुआ है ॥ १६९ सफ़ा ॥

३६ नन्दन कवि, सं० १६२५ में उ० ।

यह महाराज सत्कवि हो गये हैं । हज़ारे में इनका नाम है ॥ १६१ सफ़ा ॥

३७ नन्द कवि ।

कवित्त सुंदर हैं ॥ १६१ सफ़ा ॥

३८ नन्दलाल कवि (१), सं० १६११ में उ० ।

ऐज़न् । हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ १५८ सफ़ा ॥

३९ नन्दलाल (२), सं० १७७४ में उ० ।

सरस कविता है ॥ १६२ सफ़ा ॥

४० नन्दराम कवि ।

शांतरस के चोखे कवित्त हैं ॥ १६२ सफ़ा ॥

४१ नन्ददास ब्राह्मण रामपुरनिवासी बिट्ठलनाथजी के शिष्य, सं० १५८५ में उ० ।

इनकी गणना अष्टछाप, अर्थात् व्रजभूमि के आठ महान्कवि सूर, कृष्णदास, परमानंद, कुंभनदास, चतुर्भुज, छीत, नंददास,

और गोविन्ददास में, की गई है । इनकी बाबत यह मसल मशहूर है कि और सब गढ़िया नंददास जड़िया । इनके बनाये हुए ग्रन्थों के नाम ये हैं—नाममाला, अनेकार्थ, पंचाध्यायी, रुक्मिणीमंगल, दशमस्कंध, दानलीला, मानलीला । इन ग्रंथों के सिवा इनके हज़ारों पद भी हैं। इन आठों महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आज तक ब्रज में मिलते हैं ॥ १७२ सफ़ा ॥

४२ नन्दकिशोर कवि ।

रामकृष्णगुणमाला नाम का ग्रन्थ बनाया है ॥ १६७ सफ़ा ॥

४३ नाथ कवि (१)।

नाथ कवि के नाम से मालूम नहीं हो सकता कि कितने नाथ हुए हैं । उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शंभुनाथ, हरिनाथ इत्यादि कई नाथ होगये हैं । जहां तक हमको मालूम हुआ, हमने हरएक नाथ की कविता अलग अलग लिख दी है ॥ १६३ सफ़ा ॥

४४ नाथ (२), सं० १७३० में उ० ।

यह कवि नवाब फ़जलअलीख़ाँ के यहाँ थे ॥ १६३ सफ़ा ॥

४५ नाथ (३), सं० १८०३ में उ० ।

मानिकचंद के यहाँ थे ॥ १६३ सफ़ा ॥

४६ नाथ (४), सं० १८११ में उ० ।

राजा भगवंतराय खींची के यहाँ थे ॥ १६४ सफ़ा ॥

४७ नाथ (५) हरिनाथ गुजराती काशीवासी, सं० १८२६ में उ० ।

अलंकारदर्पण नाम का ग्रन्थ बहुत अद्भुत बनाया है ॥ १६४ सफ़ा ॥

४८ नाथ (६) ।

कविता सुन्दर है ॥ १६४ सफ़ा ॥

४९ नाथ कवि (७) ब्रजवासी गोपालभट्ट ऊँचगाँववाले के पुत्र, सं० १६४१ में उ० ।

इनका काव्य रागसागरोद्भव में षट्ऋतु इत्यादि पर सुन्दर है ॥ १६५ सफ़ा ॥

५० नवलकिशोर कवि ।

१६६ सफ़ा ॥

५१ नवल कवि ।

१६६ सफ़ा ॥

५२ नवलसिंह कायस्थ झाँसी के निवासी, राजा संथर के नौकर, सं० १९०८ में उ० ।

यह महान् कवि हैं । नामरामायण, हरिनामावली, ये दो ग्रन्थ अद्भुत बनाये हैं ॥ १६७ सफ़ा ॥

५३ नवलदास क्षत्रिय गूढ़गाँव, ज़िले बाराबंकी, सं० १३१९ में उ० ।

ज्ञानसरोवर नाम ग्रन्थ बनाया है । यह नाम महेशदत्त ने अपनी पुस्तक में लिखा है । हमको सन्-संवत् के ठीक होने में संदेह है ॥ १६९ सफ़ा ॥

५४ नीलाधर कवि, सं० १७०५ में उ० ।

दासजी ने प्रशंसा की है ॥

५५ निधि कवि, सं० १७५१ में उ० ।

ऐज़न् ॥

५६ निहाल प्राचीन, सं० १६३५ में उ० ।

५७ नारायण बंदीजन काकूपुर, ज़िले कानपुर, सं० १८०९ में उ० ।

राजा शिवराजपुर चंदेले की वंशावली महा अपूर्व नाना छंदों में बनाई है ॥

१ परसाद कवि, सं० १६०० में उ० ।

यह कवि महाराना उदयपुर के यहाँ थे । इनकी कविता बहुत विख्यात है ॥ १७२ सफ़ा ॥

२ पद्माकर भट्ट बाँदावाले मोहन भट्ट के पुत्र, सं० १८३८ में उ०।

यह कवि प्रथम आपा साहब अर्थात् रघुनाथराव पेशवा के यहाँ थे। जब पद्माकरजी ने यह कवित्त, 'गिरि ते गरे ते निज गोद ते उतारै ना' बनाया, तो पेशवा ने एक लक्ष मुद्राएँ पद्माकर को इनाम में दीं। फिर पद्माकरजी ने जयपुर में जाकर सवाई जगत्सिंह के नाम से जगद्विनोद नाम ग्रन्थ बनाया, बहुत रुपया हाथी घोड़े रथ पालकी पाये, और गंगासेवन में शेष काल व्यतीत किया। गंगालहरी नाम ग्रन्थ भी इनका है॥ १७३ सफ़ा॥ (१)

३ पजनेश कवि बुंदेलखंडी, सं० १८७२ में उ०।

यह कवि पन्ना में थे, और मधुप्रिया नाम ग्रंथ भाषासाहित्य का अद्भुत बनाया है। इस कवि की अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रास और जमक तारीफ़ के योग्य हैं। पर शृङ्गाररस में टवर्ग और कटु अक्षरों को जो अपनी कविता में भर दिया है, इस कारण इनका काव्य कवि लोगों के तीररूपी जिह्वा का निशाना हो रहा है। इनका नखशिख देखने योग्य है। इन्हों ने फ़ारसी में भी श्रम किया था॥ १७५ सफ़ा॥

४ परतापसाहि बंदीजन बुंदेलखंडी, रतनेश के पुत्र, सं० १७६० में उ०।

यह कवि महाराज छत्रसाल परनापुरन्दर के यहाँ थे। इनका बनाया हुआ भाषासाहित्य का काव्यविलास ग्रन्थ अद्वितीय है। भाषाभूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक विक्रमसाहि की आज्ञा के अनुसार इन्होंने बनाया है। विज्ञार्थकौमुदी ग्रन्थ इनका बनाया हुआ बहुत ही सुन्दर है॥ १७४ सफ़ा॥ (१)

५ प्रवीणराय पातुर उड़छा, बुन्देलखंडवासिनी, सं० १६४० में उ०।

इस वेश्या की तारीफ़ में केशवदासजी ने कविप्रिया ग्रंथ के आदि में बहुत कुछ लिखा है। इसके कवि होने में कुछ संदेह नहीं। इसका बनाया हुआ ग्रन्थ तो कोई हमको नहीं मिला,

केवल एक संग्रह मिला है, जिसमें इसके बनाये सैकड़ों कवित्त हैं। हमने यह किसी तवारीख़ में लिखा नहीं देखा कि बादशाह अकबर ने प्रवीण को बुलाया, केवल प्रसिद्धि है कि अकबर ने प्रवीण की प्रवीणता सुन दरबार में हाज़िर होने का हुक्म दिया, तो प्रवीणराय ने प्रथम राजा इंद्रजीत की सभा में जाकर ये तीन कूट कवित्त पढ़े—'आई हौं बूझन मंत्र' इत्यादि। फिर जब प्रवीण बादशाह की सभा में गई, तो बादशाह से इस प्रकार प्रश्नोत्तर हुए—

बादशाह—जुबन चलत तिय-देह ते, चटकि चलत केहि हेत ?
प्रवीण—मनमथ बारि मसाल को, सैंति सिहारो लेत ॥ १ ॥
बादशाह—ऊँचे ह्वै सुर बस किये, सम ह्वै नर बस कीन ॥
प्रवीण—अब पताल बस करन को, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥

इसके पीछे जब प्रवीण ने यह दोहा पढ़ा कि—

बिनती राय प्रबीन की, सुनिये शाह सुजान ॥
जूठी पतरी भखत हैं, बारी, बायस, स्वान ॥१॥

तब बादशाह ने उसे बिदा किया, और प्रवीण इंद्रजीत के पास आगई ॥ १७९ सफ़ा ॥

६ प्रवीण कविराय (२), सं० १६६२ में उ०।

नीति और शांतरस के कवित्त सुंदर हैं। हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ १८० सफ़ा ॥

७ परमेश कवि प्राचीन (१), सं० १६६८ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ १७७ सफ़ा ॥

८ परमेश बंदीजन (२) सतावाँ, ज़िले रायबरेली, सं० १८६६ में उ०।

फुटकर कवित्त बनाये हैं, ग्रन्थ कोई नहीं ॥ १७६ सफ़ा ॥

९ प्रेमसखी, सं० १७९१ में उ०।

१७८ सफ़ा ॥

१० परम कवि महोबे के बंदीजन बुंदेलखण्डी, सं० १८७१ में उ०।

इनका बनाया नखशिख बहुत सुन्दर है ॥ १८१ सफ़ा ॥

११ प्रेमियमन मुसल्मान दिल्लीवाले, सं० १७६८ में उ०।

अनेकार्थनाममाला-कोष बहुत सुन्दर ग्रन्थ रचा है ॥ १८२ सफ़ा ॥

१२ परमानन्द लल्ला पौराणिक अजयगढ़, बुंदेलखंडी, सं०१८६४ में उ०।

इनका नखशिख सुन्दर है ॥ १८२ सफ़ा ॥

१३ प्राणनाथ कवि (१) ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८५१ में उ०।

चक्राब्यूह का इतिहास नाना छन्दों में बहुत अद्भुत बनाया है ॥ १८२ सफ़ा ॥

१४ प्राणनाथ (२) कोटावाले, सं० १७८१ में उ०।

राना कोटा के यहाँ थे। इनकी कविता सुन्दर है ॥ १६१ सफ़ा॥

१५ परमानन्ददास ब्रजवासी बल्लभाचार्य के शिष्य, सं० १६०१में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। इनकी गिनती अष्टछाप में है ॥ १६२ सफ़ा ॥

१६ प्रसिद्ध कवि प्राचीन, सं० १५६० में उ०।

यह महान् कवीश्वर ख़ानख़ाना के यहाँ थे॥ १६१ सफ़ा ॥

१७ प्रधान केशवराय कवि।

शालिहोत्र भाषा बनाया ॥ १६० सफ़ा ॥

१८ प्रधान कवि, सं० १८७५ में उ०।

कवित्त सुंदर हैं ॥ १६० सफ़ा ॥

१६ पंचम कवि प्राचीन (१) बंदीजन बुंदेलखंडी, सं० १७३५ में उ०।

महाराज छत्रसाल बुंदेला के यहाँ थे ॥ १६० सफ़ा ॥

२० पंचम कवि, (२) डलमऊवाले।

१६० सफ़ा ॥

२१ पंचम कवि नवीन (३), बंदीजन बुंदेलखंड के, सं०१६११ में उ०।

राजा गुमानसिंह अजयगढ़वाले के यहाँ थे ॥ १६० सफ़ा ॥

२२ प्रियादास स्वामी वृन्दावनबासी, सं० १८११ में उ०।

नाभाजी के भक्तमाल का टीका कवित्तों में बनाया है। यह महाराज बड़े महात्मा हो गये हैं॥ १८९ सफ़ा॥

२३ पुरुषोत्तम कवि बंदीजन बुंदेलखंडी, सं० १७३० में उ०।

यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ थे॥ १८९ सफ़ा॥

२४ पहलाद कवि, सं० १७०१ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं॥ १८६ सफ़ा॥

२५ पंडित प्रवीण, ठाकुरप्रसाद पयासी के मिश्र अवधवाले, सं० १९२४ में उ०।

यह महान् कवि पलिया शाहगंज के क़रीब के निवासी थे, और महाराजा मानसिंह के यहाँ रहे। इनकी कविता देखने योग्य है॥ १८६ सफ़ा॥

२६ पतिराम कवि, सं० १७०१ में उ०।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं॥ १८६ सफ़ा॥

२७ पृथ्वीराज कवि, सं० १६२४ में उ०।

ऐज़न्। यह कवि बीकानेर के राजा और संस्कृत-भाषा के बड़े कवि थे॥ १८४ सफ़ा॥

२८ परबत कवि, सं० १६२४ में उ०।

ऐज़न्॥ १८४ सफ़ा॥

२९ परशुराम कवि (१)।

दिग्विजयभूषण में इनके कवित्त हैं॥ १७९ सफ़ा॥

३० परशुराम (२) ब्रजवासी, सं० १६६० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। यह महाराज श्रीभट्ट और हरिव्यासजी के मत पर चलते थे। बड़े भक्त थे। इनकी कविता बहुत सुन्दर है॥ यथा—

दोहा—माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार॥
परसुराम यहि जीव को, सगा सो सिरजनहार॥ १७५ सफ़ा॥

३१ पुंडरीक कवि बुंदेलखंडी सं०, १७६६ में उ० ।

इनकी कविता बहुत ही सुंदर है ॥ १७६ सफ़ा ॥

३२ पद्मेश कवि, सं० १८०३ में उ० ।

सुंदर कविता की है ॥ १८६ सफ़ा ॥

३३ पुषी कवि ब्राह्मण, मैनपुरी समीप के निवासी, सं० १८०३ में उ० ।

सुंदर कविता की है ॥ १८३ सफ़ा ॥

३४ पद्मनाभजी ब्रजवासी कृष्णदास पयअहारी गलताजी के शिष्य, सं०१५६० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं । कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठीनारायण, पद्मनाभ, ये सब कृष्णदासजी के शिष्य और महान् कवि हुए हैं । अग्रदास के शिष्य नाभादास थे ॥ १८४ सफ़ा ॥

३५ पारस कवि ।

कवित्त सुंदर हैं ॥ १८४ सफ़ा ॥

३६ प्रेम कवि ।

ऐज़न् ॥ १८५ सफ़ा ॥

३७ पुरान कवि ।

ऐज़न् ॥ १८५ सफ़ा ॥

३८ परवीने कवि ।

इनकी कविता देखने योग्य है ॥ १८५ सफ़ा ॥

३९ पुष्कर कवि ।

रसरत्न नाम साहित्य का ग्रंथ बनाया है ॥ १९१ सफ़ा ॥

४० पराग कवि बनारसी, सं० १८८३ में उ० ।

यह कवि महाराजा उदितनारायणसिंह काशीनरेश के यहाँ थे । तीनों काण्ड अमरकोष की भाषा की है ॥ १९२ सफ़ा ॥

४१ पहलाद बंदीजन चरखारी वाले ।

राजा जगतसिंह बुंदेला चरखारीवाले के यहाँ थे ॥

४२ पंचम कवि, बंदीजन डलमऊ, ज़िले रायबरेली, सं० १९२४ में उ०
१८६ सफ़ा ॥

४३ प्रेमनाथ ब्राह्मण, कलुआ, ज़िले खीरी के, सं०१८३५ में उ० ।

राजा अलीअकबर मोहम्मदीवाले के यहाँ थे । ब्रह्मोत्तर-खण्ड की भाषा की है ॥

४४ प्रेमपुरोहित कवि ।

४५ पृथपूरनचन्द ।

रामरहस्य रामायण बनाई है ॥

४६ पुण्ड कवि, उज्जैन के निवासी, सं० ७७० में उ० ।

टाड साहब अपनी किताब राजस्थान में अवंतीपुरी के पुराने प्रबंधों के अनुसार लिखते हैं कि संवत् ७७० बिक्रमीय में राजा मान अवंतीपुरी का राजा बडा पण्डित और अलंकार-ज्ञान में अद्वितीय था । उसके पास पुण्ड भाट ने प्रथम संस्कृत-अलंकार ग्रंथ पढ़ पीछे भाषा में दोहे बनाये । इसी राजा मान के संवत् ७७० में राजा भोज उत्पन्न हुआ । हमको भाषा-काव्य की जड़ यही कवि मालूम होता; क्योंकि इससे पहले के किसी भाषा-कवि और काव्य का नाम मालूम नहीं होता ॥

१ फेरन कवि ।

इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है ॥ १९२ सफ़ा ॥

२ फूलचन्द कवि ।

ऐज़न ॥ १९३ सफ़ा ॥

३ फूलचन्द ब्राह्मण बैसवारेवाले, सं० १९२८ में उ० ।
१९३ सफ़ा ॥

४ फालका राव अनोवामरहय ग्वालियरनिवासी, सं० १९०१ में उ० ।

यह पण्डितजी लछिमन राव के मंत्री और महान् कवि थे । इन्होंने कविप्रिया का तिलक बहुत सुन्दर बनाया है ॥

५ फ़ैज़ी, शेख़ अबुलफ़ैज़ नागौरी शेख़ मुबारक के पुत्र,
सं० १५८० में उ० ।

इनको छोटे बड़े सभी विद्वान् भली भाँति जानते हैं कि यह अरबी, फ़ारसी और संस्कृत भाषा में महानिपुण थे । इनका ग्रंथ भाषा का हमने नहीं पाया, केवल दोहरे मिले हैं । यह अकबर के दरबार के कवि थे ॥

६ फहीम, शेख़ अबुलफ़ज़ल फ़ैज़ी के कनिष्ठ सहोदर,
सं० १५८० में० उ० ।

इनके केवल दोहरे हमने पाये हैं, ग्रंथ कोई नहीं मिला । यह अकबर के वज़ीर थे ॥

१ ब्रह्म कवि, राजा बीरबल ब्राह्मण अन्तरबेदवाले,
सं० १५८५ में उ० ।

इनका प्रथम नाम महेशदास था । यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण दुबे ज़िले हमीरपुर के किसी गाँव के रहनेवाले थे । काव्य पढ़-लिखकर राजा भगवान्दास आमेरनरेश के यहाँ कवियों में नौकर हो गये । राजा भगवान्दास ने इनकी कविता से बहुत प्रसन्न होकर अकबर बादशाह को नज़र के तौर देदिया । यह कवि काव्य में अपना उप नाम ब्रह्म रखते थे । अकबर ने कविता के सिवा इनमें सब प्रकार की बुद्धि पाकर पूर्व-संस्कार के अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाकर कविराय की पदवी दी, तदुपरान्त पाँच हज़ारी का मनसब और मुसाहेब दानिशवर राजा बीरबल का ख़िताब दिया । इनके विचित्र जीवनचरित्र तवारीख़ों में लिखे हैं । सन् ९९० हिज़री में बिजौर (इलाके क़ाबुल) में पठानों के हाथ से समर-भूमि में मारे गये । इनका समग्र ग्रंथ तो कोई हमने देखा-सुना नहीं, पर इनकी फुटकर कविता बहुत सी हमारे पुस्तकालय में है । सूरदासजी ने कहा है—

सुंदर पद कवि गंगके, उपमा को बरबीर ।
केसव अर्थ गँभीर को, सूर तीनि गुन तीर ॥

राजा बीरबल ने अकबर के हुक्म से अकबरपुर गाँव (ज़िले कानपुर में) बसा कर आपने भी अपना निवासस्थान उसी को नियत किया और नारनौल क़सबे में इनकी पुरानी बड़ी आलीशान इमारतें आज तक मौजूद हैं। चौधराई का ओहदा बहुधा ब्राह्मणों को मिला, गोवध बंद हुआ, और हिन्दू मुसलमानों में बहुत मेलजोल होगया। ये सब बातें इन्हीं महाराज की कृपा से हुई थीं॥ २२१ सफ़ा॥

२ बुद्धराय, राव बुद्ध हाड़ा बूँदीवाले, सं० १७५५ में उ०।

यह महाराज बूँदी के राजा और आमेरवाले जयसिंह सवाई के बहनोई थे। बहादुर शाह बादशाह ने इनका बड़ा मान किया। इस बादशाह के यहाँ दूसरे की ऐसी इज्जत न थी। जब सय्यद बारहा बादशाह को बेदख़ल कर आप ही बादशाही नक़ारा बजाते हुए गली-कूचों में निकलने लगा, तब भला इस शूरवीर से कब रहा जा सकता था! सय्यदों का मुँह तरवारों की धार से फेर दिया और तमाम उमर बादशाह के यहाँ रहे। कविता इनकी बहुत ही अपूर्व है। यह कवि लोगों का बड़ा मान-दान करनेवाले थे॥

३ बलदेव कवि (१) बघेलखंडी, सं १८०६ में उ०।

यह कवि राजा विक्रमसाहि बघेल देवरानगरवाले के यहाँ थे। उन्हीं राजा की आज्ञानुसार एक सतकवि-गिराविलास नामक बहुत ही अद्भुत संग्रह ग्रन्थ बनाया। इस ग्रंथ में १७ कवियों की कविता है। उसमें शंभुनाथ मिश्र, शंभुराज सोलंकी, चिंतामणि, मतिराम, नीलकंठ, सुखदेव पिंगली, कबिंद त्रिवेदी, कालिदास, केशवदास, बिहारी, रविदत्त, मुकुंदलाल, विश्वनाथ अताई, बाबू केशवराय, राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी, नवाब हिम्मतबहादुर, दूलह और बलदेव का महा विचित्र काव्य है॥ २०६ सफ़ा॥

४ बलदेव कवि, चरखारीवाले (२), सं० १८९६ में उ० ।

बहुत अच्छे कवि थे ॥ २०८ सफ़ा ॥

५ बलदेव क्षत्रिय (३) अवध इलाक़े के निवासी, सं १९११ में उ० ।

यह कवि महाराजा मानसिंह और राजा माधवसिंह के साहित्य-विद्या के गुरु थे । काव्य में बहुत अच्छे कवि हो गये हैं ॥ २१३ सफ़ा ॥

६ बलदेव कवि प्राचीन (४), सं० १७०४ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २१८ सफ़ा ॥

७ बलदेव कवि अवस्थी (५) दासापुर ज़िले सीतापुर के वि० ।

राजा दलथंभनसिंह गौर सवैया हथिया के नाम शृंगारसुधाकर नामक नायिकाभेद का ग्रंथ बनाया है ॥ २२६ सफ़ा ॥

८ बलदेवदास कवि (६) जौहरी हाथरसवाले, सं० १९०३ में उ० ।

इन्होंने कृष्णखण्ड के हर श्लोक का भाषा में उल्था किया है ॥ २२७ सफ़ा ॥

९ बिजय, राजा बिजयबहादुर बुंदेला टेहरीवाले, सं० १८७८ में उ० ।

कवियों के कदरदान कविता में महा प्रधान थे ॥ १९६ सफ़ा ॥

१० बिक्रम, राजा विजयबहादुर बुंदेला चरखारीवाले, सं० १८८० में० उ० ।

इन्होंने बिक्रमाबिरदावली और बिक्रमसतरसई दो ग्रन्थ महा अद्भुत बनाये हैं ॥ १९६ सफ़ा ॥

११ बेनी कवि प्राचीन (१) असनी ज़िले फतेपुरवाले, सं० १६९० में उ० ।

यह महाकवीश्वर हुए हैं । इनका एक नायिकाभेद का ग्रन्थ अति विचित्र देखने में आया है । इनकी कविता बहुत ही सरस, ललित, और मधुर है ॥ २०१ सफ़ा ॥

१२ बेनी कवि (२) बंदीजन बैंती ज़िले रायबरेली के निवासी, सं० १८४४ में उ० ।

यह कवि महाराजा टिकैतराय नवाब लखनऊ के दीवान के यहाँ थे और बहुत वृद्ध होकर संवत् १८९२ के क़रीब मर गये ॥ २०४ सफ़ा ॥

१३ बेनीप्रवीन (३) बाजपेयी लखनऊ के निवासी, सं० १८७६ में उ० ।

यह कवि महासुन्दर कविता करने में विख्यात हैं। इनका ग्रंथ नायिकाभेद का देखने के योग्य है ॥ २०५ सफ़ा ॥

१४ बेनीप्रगट (४) ब्राह्मण कविंद कवि नरवल-निवासी के पुत्र, सं० १८८० में उ० ।

इनका काव्य महासुन्दर है ॥ २०६ सफ़ा ॥

१५ बीर कवि, दाऊ दादा वाजपेयी मंडिलानिवासी, सं० १८७१ में उ० ।

इनके भाई विक्रमसाहि ने जो महान् कवि थे, अपने भाई दाऊ दादा को यह समस्या दी कि 'तिय झूमती भूमि लौं' । तब दाऊ दादा ने इसी समस्या पर स्नेहसागर ग्रंथ की जोड़ का प्रेमदीपिका नाम एक ग्रंथ महाअद्भुत बनाया । यह कवि महा निपुण थे ॥ २०८ सफ़ा ॥

१६ बीर (२) बीरबर कायस्थ दिल्ली-निवासी, सं० १७७७ में उ० ।

यह महाकवि थे । इनका बनाया हुआ कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ साहित्य में बहुत सुंदर और हमारे पुस्तकालय में मौजूद है ॥ २०८ सफ़ा ॥

१७ बलभद्र (१) सनाढ्य टेहरीवाले, केशवदास कवि के भाई, सं० १६४२ में उ० ।

इनका नखशिख सारे कवि-कोविदों में महाप्रामाणिक ग्रंथ है । भागवत पुराण पर टीका भी बहुत सुन्दर की है ॥२११सफ़ा ॥

१८ व्यासजी कवि, सं० १६८५ में उ० ।

इनके दोहे नीति-व्यवहार-सम्बन्धी बहुत सुंदर हैं । हज़ारे में बहुत दोहे इनके लिखे हैं ॥ २१८ सफ़ा ॥

१९ व्यासस्वामी, हरीराम शुक्ल उड़छेवाले, सं० १५६० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं । इन महाराज ने संवत् १६१२ में, ४५ वर्ष की अवस्था में, उड़छे से वृन्दावन में आकर

भगवत्धर्म को फैलाया । इस गुरुद्वारे के सेवक हरव्यासी नाम से पुकारे जाते हैं ॥ २२६ सफ़ा ॥

२० बल्लभरसिक कवि (१), सं० १६८१ में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं ॥ २२० सफ़ा ॥

२१ बल्लभ कवि (२), सं० १६८६ में उ० ।

इनके दोहे बहुत सुंदर हैं ॥ २२५ सफ़ा ॥

२२ बल्लभाचार्य (३) व्रजवासी गोकुलस्थ, सं० १६०१ में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं । राधाबल्लभी संप्रदाय के यही महाराज आचार्य हैं ॥ २२६ सफ़ा ॥

२३ बिट्ठलनाथ-गोकुलस्थ गोस्वामी बल्लभाचार्य के पुत्र, १६२४ में उ० ।

यह महाराज बल्लभाचार्यजी के पुत्र परमभक्त वात्सल्य निष्ठा के हुए हैं । इनके सात पुत्रों की सात गद्दियाँ गोकुलजी में चली आती हैं । इनकी कविता पद इत्यादि बहुत से रागसागरोद्भव में हैं ॥ २२२ सफ़ा ॥

२४ बिपुलबिट्ठल (२) गोकुलस्थ श्रीस्वामीहरिदासके शिष्य, सं० १५८० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं । यह महाराज मधुवन में बहुधा रहा करते थे ॥ २२८ सफ़ा ॥

२५ बीठलकवि (३) ।

शृङ्गार में अच्छे कवित्त हैं ॥ २२१ सफ़ा ॥

२६ बालिजू कवि ।

ऐज़न् २१६ सफ़ा ॥

२७ बलरामदास व्रजवासी ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २३० सफ़ा ॥

२८ बंशीधर ।

ऐज़न ॥ २३० सफ़ा ॥

२६ बंशीधर मिश्र संदीलेवाले, सं० १६७२ में उ० ।

शांतरस के चोखे कवित्त हैं ॥ २२६ सफ़ा ॥

३० बिष्णुदास (१)।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २३० सफ़ा ॥

३१ बिष्णुदास (२)।

इनके कूट दोहे बहुत हैं ॥ २२२ सफ़ा ॥

३२ वंशीधर कवि (३)

बहुत सुंदर कवित्त हैं ॥ २१४ सफ़ा ॥

३३ ब्रजेश कवि बुंदेलखण्डी।

१९५ सफ़ा ॥

३४ ब्रजचन्द कवि, सं० १७९० में उ०।

इनकी कविता अत्यंत ललित है ॥ २०९ सफ़ा ॥

३५ ब्रजनाथ कवि, सं० १७८० में उ०।

इनका रागमाला काव्य महासुंदर है ॥ २१० सफ़ा ॥

३६ ब्रजमोहन कवि।

शृङ्गार के चोखे कवित्त हैं ॥ २११ सफ़ा ॥

३७ ब्रज, लाला गोकुलप्रसाद कायस्थ बलरामपुरवाले वि०।

इनके बनाये हुए दिग्विजयभूषण, अष्टयाम, चित्रकलाधर, दूतीदर्पण इत्यादि ग्रंथ मनोहर हैं ॥ २१२ सफ़ा ॥

३८ ब्रजबासीदास कवि (१)।

प्रबोधचंद्रोदय नाटक भाषा में किया है ॥ २१७ सफ़ा ॥

३९ ब्रजदास कवि प्राचीन, सं० १७५५ में उ०।

सुंदर कवित्त हैं। हज़ारे में इनका नाम है ॥ २१८ सफ़ा ॥

४० ब्रजलाल कवि, सं० १७०२ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २१९ सफ़ा ॥

४१ ब्रजवासीदास (२) वृन्दावन-निवासी,
सं० १८१० में उ०।

संवत् १८२७ में ब्रजबिलास नाम ग्रन्थ बनाया ॥ २२५ ॥

४२ ब्रजराज कवि बुंदेलखंडी, सं० १७७५ में उ०।

इनके कवित्त बहुत सुंदर हैं ॥ २२६ सफ़ा ॥

४३ ब्रजपति कवि, सं० १६८० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २२६ सफ़ा ॥

४४ बिजयाभिनन्दन बुंदेलखंडी, सं० १७४० में उ० ।

राजा छत्रशाल बुंदेला पन्नाधिपति के यहाँ थे ॥

४५ बंशरूप कवि बनारसी, सं० १६०१ में उ० ।

महाराजा बनारस के प्रशंसक सत्कवि थे ॥ १९७ सफ़ा ॥

४६ बंशगोपाल कवि वंदीजन ।

१९७ सफ़ा ॥

४७ बोधा कवि, सं० १८०४ में उ० ।

इनके कवित्त बहुत ही सुंदर हैं ॥ १९८ सफ़ा ॥

४८ बोध कवि बुंदेलखण्डी, सं० १८५५ में उ० ।

ऐज़न् ॥ १९८ सफ़ा ॥ (१)

४९ बलभद्र कायस्थ (२) पन्ना-निवासी, सं० १९०१ में उ० ।

राजा नरपतिसिंह बुंदेला पन्ना-महिपाल के यहाँ थे । कविता में निपुण थे । काव्य इनका सरस है ॥ २१२ सफ़ा ॥

५० बिश्वनाथ कवि (१), सं० १९०१ में उ० ।

लखनऊ-निवासियों के चलन-व्यवहार पर बहुत कवित्त बनाये हैं ॥ २१४ सफ़ा ॥

५१ बिश्वनाथ (२) बंदीजन टिकई, ज़िले रायबरेली के वि० ।

सामान्य कवि हैं ॥ २१४ सफ़ा ॥

५२ बिश्वनाथ (३) महाराजा विश्वनाथसिंह बघेले बांधवनरेश, सं० १८९१ में उ० ।

यह महाराज कविकोविदों व ब्राह्मणों के कल्पतरु और कविता क्या सर्वविद्यानिधान थे । सर्वसंग्रह नाम ग्रन्थ संस्कृत का बहुत ही सुन्दर बनाया है, और कबीर के बीजक नाम ग्रंथ, विनयपत्रिका का तिलक और रामचन्द्र की सवारी, ये बहुत सुन्दर ग्रन्थ बनाये हैं । इस रियासत में सदैव कवि-कोविदों का मान रहा है । महाराज राम-

सिंह ने अकबर के समय में एक दोहे पर हरिनाथ कवि को एक लक्ष मुद्राएँ दी थीं ॥ २२१ सफ़ा ॥

५३ बिश्वनाथ अताई (४) बघेलखण्डनिवासी, सं० १७८४ में उ० ।

इनके कवित्त और दोहे सत्कविगिराविलास नाम ग्रंथ में हैं ॥ २२७ सफ़ा ॥

५४ बिश्वनाथ कवि प्राचीन (५), सं० १६५५ में उ० ।

२२६ सफ़ा ॥

५५ बिहारीलाल चौबे व्रजवासी, सं० १६०२ में उ० ।

यह कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा आमेर के यहाँ थे । जयपुर की तवारीख़ देखने से प्रकट है कि महाराजा मानसिंह से, जो संवत् १६०३ में विद्यमान थे, संवत् १८७६ तक तीन जयसिंह होगये हैं । पर हमको निश्चय है कि यह कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे, जो महागुणग्राहक थे । दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे । यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोड़ी अवस्थावाली रानी पर मोहित होकर रात-दिन राजमंदिर में रहनेलगे, राज्य के सम्पूर्ण काज-काम बंद हो गये, तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाकर राजा के पास तक किसी उपाय से पहुँचाया—

नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास यहि काल ।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल ॥

इस दोहे पर राजा ने अत्यंत प्रसन्न होकर १०० मोहरें इनाम देकर कहा, इसी प्रकार के और दोहे बनाओ । बिहारीलाल ने ७०० दोहे बनाये और ७०० अशरफ़ियाँ इनाम में पाईं । यह सतसई ग्रंथ अद्वितीय है । बहुत कवियों ने इसके ढंग पर सतसइयाँ बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा, पर किसी कवि को सुर्खरूई नहीं प्राप्त हुई । यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक

इसके देखे हैं, और आज तक तृप्ति नहीं हुई। लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं, सो वास्तव में इसी ग्रंथ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं। सब तिलकों में सूरति मिश्र आगरेवाले का तिलक विचित्र है, और सब सतसइयों में बिक्रमसतसई और चंदनसतसई लगभग इसके टक्कर की हैं ॥ १६४ सफ़ा ॥

५६ बिहारी कवि प्राचीन (२), सं० १७३८ में उ०।

हज़ारे में इनके महासुन्दर कवित्त हैं ॥ २१६ सफ़ा ॥

५७ बिहारी कवि (३) बुंदेलखण्डी, सं० १७८६ में उ०।

सरस कविता की है ॥ २२३ सफ़ा ॥

५८ बिहारीदास कवि (४) ब्रजवासी, सं १६७० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम में हैं ॥ २२८ सफ़ा ॥

५९ बालकृष्ण त्रिपाठी (१) बलभद्रजी के पुत्र और काशिनाथ कवि के भाई, सं १७८८ में उ०।

इन्होंने रसचन्द्रिका नाम पिंगल बहुत सुंदर बनाया है ॥ १६४ सफ़ा ॥

६० बालकृष्ण कवि (२)।

सामान्य कविता है ॥ १६५ सफ़ा ॥

६१ बोधीराम कवि।

१६८ सफ़ा ॥

६२ बुद्धिसेन कवि।

१६८ सफ़ा ॥

६३ बिन्दादत्त कवि।

शृङ्गार के महासुन्दर कवित्त हैं ॥ १६६ सफ़ा ॥

६४ बदन कवि।

१६६ ॥ सफ़ा

६५ बंदन पाठक काशीवासी, विद्यमान हैं।

मानसशंकावली रामायण की टीका बहुत अद्भुत बनाई है। आज के दिन रामायण के अर्थ करने में ऐसा दूसरा कोई समर्थ नहीं है ॥ २०० सफ़ा ॥

६६ बृन्दावन कवि ।

सुंदर कवित्त हैं ॥ १९९ सफ़ा ॥

६७ बिश्वेश्वर कवि ।

२०० सफ़ा ॥

६८ बिदुष कवि ।

श्रीकृष्णजी की लीला कवित्तों में वर्णन की है ॥ २०१ सफ़ा ॥

६९ बारन कवि राउतगढ़, भूपालवाले, सं० १७४० में उ० ।

यह कवि सुजाउलशाह नव्वाब राजगढ़ के यहाँ थे और रसिकविलास नाम ग्रन्थ साहित्य का अति अद्भुत बनाया है । यह ग्रंथ अवश्य देखने योग्य है ॥ २१५ सफ़ा ॥

७० बृंद कवि ।

२१८ सफ़ा ॥

७१ बाजीदा कवि, सं० १६०८ में उ० ।

इस कवि की कुछ कविता हज़ारे में है ॥ २१८ सफ़ा ॥

७२ बुधराम कवि, सं० १७२२ में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ २१९ सफ़ा ॥

७३ बलिजू कवि, सं० १७२२ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २१९ सफ़ा ॥

७४ बनवारी कवि, सं० १७२२ में उ० ।

यह कवि राजा अमरसिंह हाड़ा जोधपुर के यहाँ थे ॥ २२० सफ़ा ॥

७५ बिश्वंभर कवि ।

शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं ॥ २२० सफ़ा ॥

७६ बेताल कवि बंदीजन, सं० १७३४ में उ० ।

नीति-सामयिक-सम्बन्धी छप्पै बहुत सुंदर हैं । राजा विक्रमशाह के यहाँ थे ॥ २२३ सफ़ा ॥

७७ बेचू कवि, सं० १७८० में उ० ।

इनके कवित्त बहुत सुंदर हैं ॥ २२४ सफ़ा ॥

७८ बजरंग कवि ।

ऐज़न् ॥ २२४ सफ़ा ॥

७९ बकसी कवि ।

सुंदर कवित्त हैं ॥ २२५ सफ़ा ॥

८० बाजेश कवि बुंदेलखण्डी, सं० १८३१ में उ० ।

अनूप गिरि की तारीफ़ में बहुत कवित्त कहे हैं ॥ २२७ सफ़ा ॥

८१ बालनदास कवि, सं० १८५० में उ० ।

रमलभाषा ग्रंथ बनाया है । रमलविद्या के ग्राहकों के लिये यह ग्रंथ बहुत अच्छा है ॥ २२७ सफ़ा ॥

८२ बृन्दावनदास (२) ब्रजवासी, सं० १६७० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २३० सफ़ा ॥

८३ बिद्यादास ब्रजवासी, सं० १६५० में उ० ।

ऐज़न् ॥ २३१ सफ़ा ॥

८४ बारक कवि, सं० १६५५ में उ० ।

८५ बनमालीदास गोसांई, सं० १७१६ में उ० ।

यह कवि अरबी, फ़ारसी और संस्कृत भाषा में महानिपुण थे । दाराशिकोह के मुंशी थे । वेदान्त में इनके दोहरे बहुत चुटीले हैं ।

जैसा मोती ओस का, वैसे है संसार ।
झलकत देखा दूर से, जात न लागै बार ॥

इन्हीं महाराज ने पण्डित रघुनाथकृत राजतरंगिणी और मिश्र विद्याधरकृत राजावली का संस्कृत से फ़ारसी में उल्था किया है ॥

८६ बेनीमाधव भट्ट ।

८७ बंशीधर बाजपेयी चिन्ताखेरा, ज़िले रायबरेली, सं० १६०१ में उ० ।

इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं ।

संग किसी के मत चलै, यह जग माया रूप ।
तातें तुम वाको भजहु, जो जगदीस अनूप ॥

८८ बंशीधर कवि बनारसी गणेश बंदीजन कवीन्द्र के पुत्र, सं० १६०१ में उ० ।

साहित्यवंशीधर, भाषाराजनीति, ये दो ग्रन्थ बनाये हैं, जिन के नाम बिदुरप्रजागर और मित्रमनोहर हैं । ये दोनों ग्रन्थ नीति के न्यारे-न्यारे हैं ॥ + ॥

८६ बंशगोपाल बंदीजन जालवन-निवासी, सं० १६०२ में उ० ।

६० बृन्दावन ब्राह्मण सेमरौता, ज़िले रायबरेली, विद्यमान हैं ।

६१ बुधसिंह पंजाबी ।

माधवानल की कथा बहुत सुंदर कविता के साथ भाषा की है ॥+॥

६२ बाबू भट्ट कवि ।

६३ ब्रह्म, श्री राजाबीरबर ।

२२१ सफ़ा ॥

६४ बिद्यानाथ कवि अंतरवेदवाले, सं० १७३० में उ० ।

६५ बैन कवि ।

६६ बिजयसिंह उदयपुर के राना, सं० १७८७ में उ० ।

यह महाराज महाकवि थे । इन्होंने विजयविलास नाम एक ग्रन्थ बनवाया है, जिसमें एक लक्ष दोहे हैं । इस ग्रन्थ में जो युद्ध विजयसिंह और उनके भांजे रामसिंह अभयसिंह के पुत्र से हुआ है, सो पढ़ने योग्य है । इसी लड़ाई के कारण मरहठे लोग मारवाड़ देश में गये थे । इस ग्रन्थ का एक दोहा लिखते हैं—

याद घने दिन आवैं, आपा बोला हेल ।
भागे तीनों भूपती, माल ख़जाना मेल ॥ १ ॥ + ॥

६७ बरवै सीता कवि राठौर कन्नौज के राजा, सं० १२४६ में उ० ।

यह महाराजाधिराज कन्नौज के राजा भाषा में बड़े कवि हो गये हैं ॥ + ॥

६८ बारदरवेणाकवि, बंदीजन राठौरों का प्राचीन कवि, सं० ११४२ में उ० ।

जब महाराजा जयचन्द राठौर का ज़माना पलटा, और शिवजी

जयचन्द के पुत्र मेवाड़ देश की ओर भाग गये, तब यह कवि उनके साथ गया, और वहाँ मुघियावार नाम एक लक्ष रुपये का इलाक़ा उसके पास था ॥ + ॥

९९ बेनीदास कवि, बंदीजन मेवाड़ देश के निवासी, सं० १८९२ में उ० ।

यह कविराज संवत् १८९० के क़रीब मारवाड़ देश के प्रबन्ध-लेखक अर्थात् तारीख़नवीसों में नौकर थे ॥ + ॥

१०० बादेराय कवि बन्दीजन डलमऊवाले, सं० १८८२ में उ० ।

यह कवि महाराजा दयाकृष्ण दीवान सरकार लखनऊ के यहाँ थे ॥ २२८ सफ़ा ॥

१ भूषण त्रिपाठी टिकमापुर, ज़िले कानपुर, सं० १७३८ में उ० ।

रौद्र, वीर, भयानक, ये तीनों रस जैसे इनके काव्य में हैं, ऐसे कवियों की कविता में नहीं पाये जाते । यह महाराज प्रथम राजा छत्रशाल पन्नानरेश के यहाँ छः महीने तक रहे । तेहि पीछे महाराज शिवराज सोलंकी सितारागढ़वाले के यहाँ जाय बड़ा मान पाया । जब यह कवित्त भूषणजी ने पढ़ा—इंद्र जिमि जम्भ पर, तब शिवराज ने पाँच हाथी और २५ हज़ार रुपए इनाम में दिए । इसीप्रकार भूषण ने बहुत बार बहुत-रुपए हाथी घोड़े पालकी इत्यादि दान में पाये । ऐसे-ऐसे शिवराज के कवित्त बनाये हैं, जिनके बराबर किसी कवि ने वीर-यश नहीं बना पाया । निदान जब भूषण अपने घर को चले, तो पन्ना होकर राजा छत्र-शाल से मिले । छत्रशाल ने विचारा, अब तो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन-धान्य दिया है कि हम उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं देसकते । ऐसा सोच-विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कन्धे पर धर लिया । ब्राह्मण कोमलहृदय तो होते ही हैं, भूषणजी ने बहुत प्रसन्न होकर यह कवित्त पढ़ा—साहू को सराहौं की सराहौं छत्रशाल को । और दूसरा यह कवित्त

बनाया कि—तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के । इनके सिवा दो दोहे और बना कर छत्रशाल को देकर आप घर में आये—

यक हाड़ा बूँदी धनी, मरद महेवा वाल ।
सालत औरँगजेब के, ये दोनों छत्रसाल ॥
वे देखो छत्ता-पता, ये देखो छत्रसाल ।
वे दिल्ली की ढाल ये, दिल्ली ढाहनवाल ॥

भूषणजी थोड़े दिन घर में रह बहुत देशान्तरों में घूम-घूम रजवाड़ों में शिवराज का यश प्रकट करते रहे । जब कुमाऊँ में जाय राजा कुमाऊँ के यश में यह कवित्त पढ़ा—उलदत मद अनुमद ज्यों जलधिजल, तब राजा ने सोचा कि ये कुछ दान लेने आए हैं और हमने जो सुना था कि शिवराज ने लाखों रुपए इनको दिए, सो सब झूठ है । ऐसा विचारकर हाथी, घोड़े, मुद्रा बहुत कुछ भूषण के आगे रक्खा । भूषणजी बोले—इसकी अब भूख नहीं, हम इसलिये यहाँ आये थे कि देखें शिवराज का यश यहाँतक फैला है या नहीं । इनके बनाये हुये ग्रंथ शिवराज-भूषण, भूषणहजारा, भूषणउल्लास, दूषणउल्लास, ये चार सुने जाते हैं । कालिदासजी ने अपने ग्रंथ हज़ारा के आदिमें ७० कवित्त नव रस के इन्हीं महाराज के बनाये हुये लिखे हैं ॥ २३६ सफ़ा ॥

२ भगवतरासिक वृन्दावननिवासी माधवदासजी के पुत्र हरिदासजी के शिष्य, सं० १६०१ में उ० ।

इनकी कुंडलियाँ बहुत सुंदर हैं ॥ २४३ सफ़ा ॥

३ भगवन्तराय कवि (१)

सातो काण्ड रामायण की कवित्तों में महाअद्भुत रचना कविता के साथ की है ॥ २३८ सफ़ा ॥

४ भगवन्त कवि (२)।

शृंगार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं ॥ २३८ सफ़ा ॥

५ भगवान कवि।

ऐज़न् ॥ २३२ सफ़ा ॥

६ भगवतीदास ब्राह्मण, सं० १६८८ में उ०।

नासिकेत उपाख्यान भाषा में बनाया ॥ २३३ सफ़ा ॥

७ भगवानदास निरंजनी।

भर्तृहरिशतक कवित्तों में भाषा किया है ॥ २३३ सफ़ा ॥

८ भगवानहितराम राय।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २४२ सफ़ा ॥

९ भगवानदास मथुरानिवासी, सं० १५६० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २४४ सफ़ा ॥

१० भोज कवि प्राचीन (१), सं० १८७२ में उ०।

२३३ सफ़ा ॥

११ भोज कवि (२) मिश्र, सं० १७८१ में उ०।

यह महाराज रावबुद्ध हाड़ा बूँदीवाले के यहाँ थे, और मिश्रशृङ्गार नाम ग्रंथ बहुत सुन्दर बनाया है ॥ २३३ सफ़ा ॥

१२ भोज कवि (३) विहारीलाल बन्दीजन चरखारीवाले, सं० १९०१ में उ०।

यह कवि महाराज रतनसिंह बुंदेला चरखारीवाले के यहाँ थे। इनकी कविता महा सुंदर है। इन्होंने भोजभूषण नाम ग्रंथ बहुत अद्भुत रचा है। शरफ़ो नाम वेश्या पर बहुत स्नेह रखते थे। उसकी तारीफ़ में बहुत कवित्त बनाये हैं। चाहके हैं चाकर, यह कवित्त बहुत सुन्दर है। इनका बनाया हुआ रसविलास नाम एक और ग्रंथ बहुत सुन्दर है ॥ २३४ सफ़ा ॥

१३ भौन कवि प्राचीन (२) बुंदेलखंडी, सं० १७६० में उ०।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ २३९ सफ़ा ॥

१४ भौन कवि (१) नरहरिवंशी बन्दीजन बैंती, ज़िले रायबरेलीवाले, सं० १८८१ में उ० ।

यह महाकवि शृङ्गाररस के वर्णन में बड़े प्रवीण थे । अलंकार का शृङ्गाररत्नाकर नाम ग्रन्थ इनका बनाया हुआ बहुतही सुन्दर है। इनके पुत्र दयाल कवि भी कविता में निपुण हैं ॥ २३७ सफ़ा ॥

१५ भावन कवि, भवानीप्रसाद पाठक मौराबाँ, ज़िले उन्नाव के, सं० १८६१ में उ० ।

यह महाराज बड़े नामी कवि हो गये हैं । इनका बनाया हुआ काव्यशिरोमणि नाम ग्रंथ बहुत सुन्दर है । इस ग्रंथ में पिंगल, अलंकार, नायक-नायिका, दूती-दूत, नवरस, षट्ऋतु इत्यादि सब काव्य के अंग विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं । इस ग्रंथ का दूसरा नाम काव्यकल्पद्रुम भी है ॥ २३६ सफ़ा ॥

१६ भीषम कवि, सं० १६८१ में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ २३२ सफ़ा ॥

१७ भीषमदास।

रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम में इनके पद हैं ॥ २४२ सफ़ा ॥

१८ भंजन कवि, सं० १८३१ में उ० ।

इनकी कविता महाललित है ॥ २४३ सफ़ा ॥

१९ भूमिदेव कवि, सं० १६११ में उ० ।

२३६ सफ़ा ॥

२० भवानीदास कवि, सं० १६०२ में उ० ।

२३६ सफ़ा ॥

२१ भानदास कवि बन्दीजन चरखारीवाले, सं १८५५ में उ० ।

राजा खुमानसिंह बुंदेला राजा-चरखारी के पास थे, और रूपविलास नाम पिंगल बनाया ॥ २३४ सफ़ा ॥

२२ भूधर कवि काशीवासी, सं० १७०० में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २३५ सफ़ा ॥

२३ भूसुर कवि, सं० १६११ में उ० ।

२३५ सफ़ा ॥

२४ भोलासिंह कवि, पन्ना बुंदेलखंडी, सं० १८६८ में उ० ।

२६६ सफ़ा ॥

२५ भूपति कवि, राजा गुरुदत्तसिंह बंधलगोती अमेठी, सं० १६०३ में उ० ।

यह महाराज महाकवि कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष थे । कवीन्द्र इत्यादि इनकी सभा में थे ॥ २३१ सफ़ा ॥

२६ भृङ्ग कवि, सं० १७०८ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २३२ सफ़ा ॥

२७ भरमी कवि, सं० १७०८ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २३२ सफ़ा ॥

२८ भीषम कवि, सं० १७०८ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २३२ सफ़ा ॥

२६ भूपनारायण बन्दीजन काकूपुर, ज़िले कानपुर, सं० १८५६ में उ० ।

शिवराजपुर के चन्देले क्षत्रिय राजों की वंशावली बनाई है ॥ २४३ सफ़ा ॥

३० भोलानाथ ब्राह्मण कन्नौजनिवासी ।

बैतालपच्चीसी छंदों में रची है ॥

कोई जो बिक्रय करै, बस्तु सु धन के हेत ।
सदा चकरिया आपनो, तन-बिक्रय करि देत ॥ + ॥

३१ भूधर कवि (२), असोथरवाले, सं० १८०३ में उ० ।

भगवंतराय खींची के यहाँ थे ॥ २४४ सफ़ा ॥

१ मानदास कवि (२) ब्रजवासी, सं० १६८० में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं । इन्होंने वाल्मीकीय रामायण, हनुमन्नाटक इत्यादि रामायणों से सार खींचकर रामचरित्र बहुत ललित भाषा में वर्णन किया है । यह महाकवि थे ॥ २५६ सफ़ा ॥

२ मान कवि (१)

शांतरस के सुंदर कवित्त हैं ॥ २४४ सफ़ा ॥

३ मान कवि ब्राह्मण (३) बैसवारे के, सं० १८१८ में उ० ।

कृष्णकल्लोल नाम ग्रंथ (अर्थात् कृष्णखण्ड) को नाना छन्दों में लिखा है । इस ग्रंथ के आदि में शालिवाहन से लेकर चंपतिराय तक की वंशावली है । वह अवश्य देखने योग्य है ॥ २४५ सफ़ा ॥

४ मोहन भट्ट बाँदानिवासी (१) कवि पद्माकर के पिता, सं० १८०३ में उ० ।

यह महाराज महाकवि प्रथम राजा हिन्दूपति बुंदेला पन्ना-नरेश के यहाँ और पीछे, सवाई प्रतापसिंह और जगतसिंह के यहाँ रहे । इनकी कविता बहुत सरस है ॥ २४५ सफ़ा ॥

५ मोहन कवि (२), सं० १८७५ में उ० ।

यह कवि सवाई जयसिंह (३) महाराजा आमेर के यहाँ थे ॥ २४६ सफ़ा ॥

६ मोहन कवि (३), सं० १७१५ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २७१ सफ़ा ॥

७ मुकुंदलाल कवि बनारसी, रघुनाथ कवीश्वर के गुरु के शिष्य, सं० १८०३ में उ० ।

इनका काव्य तो सूर्य के समान भासमान है ॥ २४७ सफ़ा ॥

८ मुकुन्दसिंह हाड़ा महाराजा कोटा, सं० १६३५ में उ० ।

यह महाराजा शाहजहाँ बादशाह के बड़े सहायक और कविता में महानिपुण व कवि-कोविदों के चाहक थे ॥ २४७ सफ़ा ॥

९ मुकुंद कवि प्राचीन, सं० १७०५ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २७१ सफ़ा ॥

१० माखन कवि (१), सं० १८७० में उ० ।

इनकी कविता बहुत ही ललित है ॥ २४७ सफ़ा ॥

११ माखन लखेरा (२) पन्नावाले, सं० १६११ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २४८ सफ़ा ॥

१२ मनसा कवि ।

इनकी कविता लालित्य और सुन्दर अनुप्रासों में विदित है ॥ २५१ सफ़ा ॥

१३ मनसाराम कवि ।

नायिकाभेद का इनका ग्रंथ अद्भुत है ॥ २५२ सफ़ा ॥

१४ मून ब्राह्मण असोथर, गाज़ीपुर के निवासी सं० १८६० में उ० ।

यह कवि कविलोगों में बड़े विख्यात होगये हैं । इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं, पर हमारे पास केवल राम-रावण का युद्ध नामका एक छोटा-सा ग्रन्थ इनका है ॥ २६३ सफ़ा ॥

१५ मणिदेव बंदीजन बनारसी, सं० १८६६ में उ० ।

यह कवि महाकवियों में गिने जाते हैं । उल्था में गोकुलनाथ, गोपीनाथ के साथ इन्हों ने भी भारत के कई पर्वों का उल्था किया है। इनका काव्य महा सुन्दर है ॥ २६४ सफ़ा ॥

१६ मकरंद कवि, सं० १८१४ में उ० ।

शृंगार के इनके कवित्त बहुत ललित हैं ॥ २६५ सफ़ा ॥

१७ मकरंदराय बंदीजन पुवावाँ, ज़िले शाहजहाँपुर, सं०१८८०में उ० ।

यह कवि चंदन कवि के घराने में हैं । इन्होंने हास्यरस नाम एक ग्रंथ बहुत रोचक बनाया है ॥ २६५ सफ़ा ॥

१८ मंचित कवि, सं० १७८५ में उ० ।

इनकी कविता महासरस है ॥ २६५ सफ़ा ॥

१९ मुबारक, सय्यद मुबारकअली बिलग्रामी, सं० १६४० में उ० ।

इनका काव्य तो प्रसिद्ध है । इन का ग्रन्थ कोई हमने नहीं पाया, कवित्त सैकड़ों हमारे पुस्तकालय में हैं ॥ २६६ सफ़ा ॥

२० मातादीन शुक्ल अजगरा, ज़िले प्रतापगढ़, विद्यमान हैं।

यह पण्डितजी राजा अजीतसिंह सोमवंशी प्रतापगढ़वाले के यहाँ दो-चार ग्रन्थ छोटे-छोटे बना चुके हैं ॥ २६८ सफ़ा ॥

२१ मानिकदास कवि मथुरानिवासी।

मानिकबोध नाम ग्रन्थ श्रीकृष्णचन्द्रजी की लीला का बनाया है ॥ २६८ सफ़ा ॥

२२ मुरारिदास व्रजवासी।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २६९ सफ़ा ॥

२३ मन्य कवि।

शृङ्गार के सुंदर कवित हैं ॥ २६९ सफ़ा ॥

२४ मननिधि कवि।

ऐज़न् ॥ २६९ सफ़ा ॥

२५ मणिकंठ कवि।

ऐज़न् ॥ २६९ सफ़ा ॥

२६ मोतीलाल कवि।

ऐज़न् ॥ २७० सफ़ा ॥

२७ मुरली कवि।

ऐज़न् ॥ २७० सफ़ा ॥

२८ मोतीराम कवि, सं० १७४० में उ०।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ २७० सफ़ा ॥

२९ मनसुख कवि, सं० १७४० में उ०।

ऐज़न् ॥ २७० सफ़ा ॥

३० मिश्र कवि, सं० १७४० में उ०।

ऐज़न ॥ २७१ सफ़ा ॥

३१ मुरलीधर कवि, सं० १७४० मे उ०।

ऐज़न् ॥ २७१ सफ़ा ॥

३२ मलूकदास कवि ब्राह्मण, कड़ामानिकपुर, सं० १६८५ में उ० ।

इनकी कविता बहुत ललित है ॥ २७१ सफ़ा ॥

३३ मीररुस्तम कवि, सं० १७३५ में उ० ।

इनके कवित्त हजारे में हैं ॥ २७२ सफ़ा ॥

३४ महम्मद कवि, सं० १७३५ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २७२ सफ़ा ॥

३५ मीरीमाधव कवि, सं० १७३५ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २७३ सफ़ा ॥

३६ मदनकिशोर कवि, सं० १८०७ में उ० ।

सरस कविता की है ॥ २७३ सफ़ा ॥

३७मखजात कवि, वाजपेयी जालिपाप्रसाद तारगाँव, ज़िले उन्नाव, वि० ।

२७३ सफ़ा ॥

३८ महराज कवि ।

सुंदरीतिलक में इनके कवित्त हैं ॥ २७४ सफ़ा ॥

३६ मुरलीधर कवि (२) ।

ऐज़न ॥ २७४ सफ़ा ॥

४० मोतीलाल कवि बाँसी-राज्य के निवासी, सं० १५६७ में उ० ।

गणेशपुराण भाषा बनाया ॥ २७४ सफ़ा ॥

४१ महेशदत्त ब्राह्मण धनौली, ज़िले बाराबंकी । विद्यमान हैं ।

भाषाकाव्य का बनाना आरंभ किया है । संस्कृत अच्छी जानते हैं ॥ २७५ सफ़ा ॥

४२ मनभावन ब्राह्मण मुंड़िया, ज़िले शाहजहाँपुर, सं० १८३० में उ० ।

यह कवि चंदनराय के १२ शिष्यों में प्रथम शिष्य हैं । इनका बनाया हुआ ग्रंथ शृङ्गाररत्नावली देखने योग्य है ॥ २७५ सफ़ा ॥

४३ मनियारसिंह कवि क्षत्रिय काशीनिवासी, सं० १८६१ में उ० ।

यह महाउत्तम कवि होगये हैं । इनके बनाये हुये दो महासुन्दर ग्रंथ, हनुमतछब्बीसी और सौंदर्य्यलहरी भाषा, हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं ॥ २७६ सफ़ा ॥ (१)

४४ मधुसूदन कवि, सं० १६८१ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २५३ सफ़ा ॥

४५ मधुसूदन दास माथुर ब्राह्मण इष्टकापुरी के, सं० १८३९ में उ० ।

रामाश्वमेध भाषा रचा है ॥ २५३ सफ़ा ॥

४६ मनीराम कवि (२) मिश्र कन्नौजवाले, सं० १८२९ में उ० ।

छंदछप्पनी नाम पिङ्गल का बहुत ही सुंदर ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है । पिङ्गल के संकेतों को भली भाँति खोला है॥२६२सफ़ा॥(२)

४७ मनीराम कवि (१) ।

शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं ॥ २६२ सफ़ा ॥

४८ मनीराय कवि ।

ऐज़न ॥ २६२ सफ़ा ॥

४९ मदनगोपाल शुक्ल फतूहाबादवाले, सं० १८७६ में उ० ।

यह कवि बहुत दिन तक जनवार-वंशावतंस श्री राजा अर्जुनसिंह बलरामपुर के यहाँ थे, और उन्हीं की आज्ञानुसार अर्जुनविलास नाम महाविचित्र ग्रन्थ बनाया है । दूसरा ग्रन्थ इनका वैद्यरत्न वैद्यक का महासरल है ॥ २६० सफ़ा ॥

५० मदनगोपाल (२) ।

२७४ सफ़ा ॥

५१ मदनगोपाल कवि (३) चरखारीवाले ।

२६१ सफ़ा ॥

५२ मदनमोहन कवि चरखारीवाले बुंदेलखण्डी (२), सं० १८८० में उ० ।

यह महानिपुण कवि राजा चरखारी के मंत्रियों में थे । इनके शृङ्गार के कवित्त सुन्दर हैं ॥ × ॥

५३ मनोहर कवि, (१)राय मनोहरदास कछवाहा, सं० १५९२ में उ० ।

यह महाराज अकबरशाह के मुसाहब फ़ारसी और संस्कृत भाषा

के महाकवि थे । फ़ारसी में अपना नाम 'तोसनी' लिखते थे ॥ २६७ सफ़ा ॥

५४ मनोहर (२) काशीराम रिसालदार भरतपुरवाले। विद्यमान हैं।

इनका बनाया हुआ मनोहरशतक नाम ग्रंथ सुन्दर है ॥ २६७ सफ़ा ॥

५५ मनोहर कवि (३), सं० १७८० में उ० ।

२७४ सफ़ा ॥

५६ माधवानन्द भारती काशिस्थ, सं० १६०२ में उ० ।

इन्होंने शंकरदिग्विजय को संकृस्त से भाषा किया है ॥ २४६ सफ़ा ॥

५७ महेश कवि, सं० १८६० में उ० ।

२४६ सफ़ा ॥

५८ मदनमोहन, सं० १६६२ में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २४६ सफ़ा ॥

५६ मंगद कवि ।

२४६ सफ़ा ॥

६० माधवदास ब्राह्मण, सं० १५८० में उ० ।

इनके पद रागसगरोद्भव में हैं । यह महाराज बड़े पण्डित थे, और जगन्नाथ-पुरी में रहा करते थे । एक बार व्रज में भी आये थे ॥ २५० सफ़ा ॥

६१ मल्ला कवि, सं० १७८० में उ० ।

२५० सफ़ा ॥ (१)

६२ महताब कवि ।

नखशिख बहुत सुंदर बनाया है ॥ २५० ॥

६३ मीरन कवि ।

ऐजन् ॥ २५२ सफ़ा ॥

६४ मल्ल कवि, सं० १८०३ में उ० ।

भगवंतराय खींची के यहाँ थे ॥ २५८ सफ़ा ॥

६५ मानिकचंद कवि, सं० १६०८ में उ० ।

रागसागरोद्भव में इनके पद हैं ॥ २५९ सफ़ा ॥

६६ मानिकचंद कायस्थ, सं० १९३० में उ० ।

ज़िले सीतापुर के अच्छे कवि हैं ॥ २६३ सफ़ा ॥

६७ मुनिलाल कवि ।

२५९ सफ़ा ॥

मतिराम त्रिपाठी टिकमापुर, ज़िले कानपुरके, सं० १७३८ में उ० ।

यह महाराज भाषाकाव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं । हिंदुस्तान में बहुधा बड़े राजों-महाराजों के यहाँ थोड़े थोड़े दिन रहे, और राजा उदोतचंद कुमाऊँनरेश और भाऊसिंह हाड़ा छत्रशाल राजा कोटाबूँदी और शंभुनाथ सुलंकी इत्यादि के यहाँ बहुत दिनों तक रहे । ललितललाम अलंकार का ग्रंथ राव भाऊसिंह कोटावाले के नामसे बनाया और छंदसार पिंगल फतेसाहि बुंदेला श्रीनगर के नाम से रचा । रसराज नायिकाभेद का ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया २५३ सफ़ा ॥

६९ मंडन कवि जैतपुर बुंदेलखण्डी, सं० १७१६ में उ० ।

यह कवि बुंदेलखण्ड में महाकवि होगये हैं । राजा मंगदसिंह के यहाँ रहे । रसरत्नावली, रसविलास, नयनपचासा, ये तीनों ग्रन्थ इनके बनाये महा उत्तम हैं । रसरत्नावली साहित्य में देखने योग्य ग्रन्थ है ॥ २५६ सफ़ा ॥

७० मेधा कवि, १८६७ में उ० ।

चित्रभूषण नाम चित्रकाव्य का ग्रन्थ बहुत सुंदर बनाया है ॥ २६१ सफ़ा ॥

७१ महबूब कवि, सं० १७६२ में उ०।

सत्कवियों में गिने जाते हैं ॥ २६१ सफ़ा ॥

७२ महानन्द वाजपेयी बैसवारे के, सं० १६०१ में उ०।

यह महाराज परम शैव, सारी उमर शिवजी के यशो वर्णन में व्यतीत की। बृहच्छिवपुराण को संस्कृत से भाषा किया है॥ २६३ सफ़ा॥

७३ मीराबाई, सं० १४७५ में उ०।

हमने इनका जीवनचरित्र तुलसीदास कायस्थ-कृत भक्तमाल में देखा और तारीख़-चित्तौर से मिलाया तो बड़ा फ़रक़ पाया गया। अब हम इनका हाल चित्तौर के प्राचीन प्रबंध से लिखते हैं। यह मीराबाई मारवाड़ देश में राना राठौर-वंशावतंस रतिया-देशाधिपति के यहाँ उत्पन्न हुई थीं। यह रियासत सारे मारवाड़ के फ़िरक़ों में उत्तम है। मीराबाई का विवाह संवत् १४७० के क़रीब राना मोकल देव के पुत्र राना कुंभकर्णसी चित्तौर-नरेश के साथ हुआ था। संवत् १४७५ में ऊदा राना के पुत्र ने राना को मार डाला। मीराबाई महा स्वरूपवती और कविता में अति निपुण थीं। रागगोविंद ग्रंथ भाषा का बहुत ललित बनाया है। चित्तौरगढ़ में दो मंदिर राना रायमल के महल के क़रीब थे। एक रानाकुंभा का और दूसरा मीरा बाई का। सो मीरा बाई अपने इष्टदेव श्यामनाथ को उसी मंदिर में स्थापित कर नृत्यगीत भावभक्ति से रिझाया करती थीं। एक दिन श्यामनाथ मीरा के प्रेमवश होकर चौकी से उतर अंक में लेकर बोले—हे मीरा। केवल इतना ही शब्द राधानाथ के मुँह से सुन मीरा बाई प्राणत्याग कर रसिकविहारी गिरिधारी के नित्यविहार में जाय मिलीं। इन दोनों मंदिरों के बनाने में नब्बे लाख रुपया ख़र्च हुआ था॥ २७५ सफ़ा॥ *

---

* मीराबाई के पति राना कुंभकर्ण नहीं थे! (संपादक)

७४ मनीराम मिश्र साढ़ि, ज़िले कानपुर, सं० १८६६ में उ० ।

७५ मान कवि बंदीजन चरखारीवाले ।

विक्रमशाह बुंदेला राजा चरखारी के यहाँ थे ॥

७६ मधुनाथ कवि, सं० १७८० में उ० ।

७७ मानराय बंदीजन असनीवाले, सं० १५८० में उ० ।

अकबर के यहाँ थे ॥ + ॥

७८ मीतूदास गौतम हरधौरपुर, ज़िले फतेहपुर, सं० १६०१ में उ० ।

वेदांत के बहुतेरे ग्रन्थ बनाये हैं ॥

जीवनमुक्त अद्वैत मत, करी न सहज प्रकास ।
बीजमंत्र गति गुह्य यह, समझै मीतूदास ॥ + ॥

७९ मदनकिशोर कवि, सं० १७०८ में उ० ।

बहादुरशाह के यहाँ थे ॥ २७३ सफ़ा ॥

८० मीरामदनायक, मीर अहमद बिलग्रामी, सं० १८०० में उ० ।

८१ मलिकमोहम्मद जायसी, सं० १६८० में उ० ।

पद्मावत भाषा बनाया है ॥

८२ मलिन्द, मिहींलाल बंदीजन डलमऊवाले, सं० १६०२ में उ० ।

२५० सफ़ा ॥

८३ मुसाहब, राजा बिजावर ।

विनयपत्रिका और रसराज का टीका बहुत सुंदर बनाया है ॥

८४ मनोहरदास निरंजनी ।

ज्ञानचूर्ण-वचनिका ग्रंथ वेदांत में बनाया है ॥

८५ मातादीन मिश्र सरायमीरा । वि० ।

शाहनामे का अनुवाद हिंदी में किया और कवित्तरत्नाकर नाम संग्रह बनाया । इस ग्रंथ के बनाने में हमको इनसे बहुत सहायता मिली है ॥

८६ मूकजी कवि बन्दीजन राजपूतानेवाले, सं० १७५० में उ० ।

इस महाकवि ने खींची, जो एक शाखा चौहानोंकी है, उसकी वंशावली और प्राचीन और नवीन राजों के जीवनचरित्र की एक पुस्तक बहुत अच्छी बनाई है ॥

८७ मान कवीश्वर बन्दीजन राजपूताने के, सं० १७५६ में उ० ।

यह कवि व्रजभाषा में महा निपुण थे । राना राजसिंह सिसोदिया मेवाड़वाले की आज्ञानुसार एक ग्रंथ राजदेवविलास नाम उदयपुरके हालात का बनाया है । इस ग्रंथ में राना राजसिंह और औरंगज़ेब बादशाह की लड़ाइयाँ बहुत कविता के साथ वर्णन की गई हैं ॥

८८ मानसिंह महाराजा कछवाह आमेरवाले, सं० १५६२ में उ० ।

यह महाराजा कवि-कोविदों के बड़े क़दरदान थे । हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरों को एक-एक दोहे पर लक्ष-लक्ष रुपया इनाम दिया । इन्होंने अपने जीवनचरित्र की किताब बहुत विस्तारपूर्वक बनाई है, जिसका नाम मानचरित्र है । उसी ग्रंथ में लिखा है कि जब राजा मानसिंह काबुल की ओर अकबर के हुक्म से चले, और अटक नदी पर पहुँचकर धर्मशास्त्र को विचारकर उतरने में सोच-विचार करने लगे, और अकबरशाह को लिखा, तब अकबर ने यह दोहा लिखा—

सबै भूमि गोपाल की, तामें अटक कहा ।
जाके मन में अटक है, सोई अटक रहा ॥

यह दोहा पढ़ मानसिंह ने अटक पार जाकर स्वामिकार्य में बड़ी वीरता की ॥

१ राम कवि, (१) रामबक़्श ।

राना शिरमौर के यहाँ थे और रससागर नाम भाषा साहित्य का

एक महा सुंदर ग्रंथ बनाया है। सतसई का टीका भी बहुत सुंदर किया है ॥ २७६ सफ़ा ॥

२ रामसिंह कवि बुंदेलखंडी, सं० १८३४ में उ०।

यह कवि हिम्मतबहादुर के यहाँ थे। इनका काव्य रोचक है। २७७ सफ़ा ॥

३ रामजी कवि (१), सं० १६६२ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २७७ सफ़ा ॥

४ रामदास कवि, सं० १८३६ में उ०।

२७८ सफ़ा ॥

५ रामसहाय कवि कायस्थ बनारसी, सं० १६०१ में उ०।

यह कवि महाराजा उदितनारायणसिंह गहरवार काशी-नरेश के यहाँ थे। वृत्ततरंगिणी-सतसई नाम पिंगल का बहुत सुंदर ग्रंथ बनाया है ॥ २७८ सफ़ा ॥

६ रामदीन त्रिपाठी टिकमापुर, ज़िले कानपुर, सं० १६०१ में उ०।

यह मतिरामवंशी कवि महाराजा रतनसिंह चरखारी के यहाँ बहुधा रहते थे। इन्होंने एक बार कुछ अनादर देख यह दोहा शीघ्रही पढ़ा—

जो बाँधी छत्रसालजू, हृदयसाहि जगतेस।
परिपाटी छूटै नहीं, महाराज रतनेस ॥ २७९ सफ़ा ॥

७ रामदीन बंदीजन अलीगंजवाले, सं० १८६० में उ०।

यह बड़े कवि होगये हैं ॥ २७९ सफ़ा ॥

८ रामलाल कवि।

कवित्त अच्छे हैं ॥ २७९ सफ़ा ॥

९ रामनाथ प्रधान अवधनिवासी, सं० १६०२ में उ०।

रामकलेवा इत्यादि छोटे-छोटे ग्रंथों के कर्त्ता हैं ॥ २८० सफ़ा ॥

१० रामसिंह देव सूर्यवंशी क्षत्रिय खडासा वाले।
सरस कविता की है ॥ २८० सफ़ा ॥

११ रामनारायण कायस्थ मुंशी महाराजा मानसिंह। वि०।
शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ २८१ सफ़ा ॥

१२ रामकृष्ण चौबे कालिंजरनिवासी, सं० १८८६ में उ०।
विनयपचीसी नाम ग्रंथ शांतरस का बनाया है ॥ २८१ सफ़ा ॥

१३ रामसखे कवि, ब्राह्मण।
नृत्यराघव-मिलन नाटक ग्रंथ बनाया है ॥ २८२ सफ़ा ॥

१४ रामकृष्ण कवि (२)।
इनके कवित्त बहुत ललित हैं ॥ २६१ सफ़ा ॥

१५ रामदया कवि।
रागमाला ग्रंथ महा सुन्दर बनाया है ॥ २६८ सफ़ा ॥

१६ रामराइ राठौर राजा खेमपाल के पुत्र।
रागसागरोद्भव में इनके पद महा ललित हैं ॥ ३०१ सफ़ा ॥

१७ रामचरण ब्राह्मण गणेशपुर, ज़िले बाराबंकी।
यह पण्डितजी संस्कृत और भाषा, दोनों कविताओं में अत्यंत निपुण थे। कायस्थकुलभास्कर संस्कृत में और कायस्थधर्मदर्पण भाषा में बनाया है। संस्कृत-काव्य का एक श्लोक इनका लिखते हैं ॥

श्लोक—कौशल्याशोकशल्यापहरणकुशली पादपाथोजधूल्याऽहल्याकल्याणकारी शमयतु दुरितं कांडकोदंडधारी। रामो मारीचमारी रणनिहतखरः क्ष्माकुमारीविहारी ॥ संसारीतिप्रतीतः शमितशमुखः सम्मुखः सज्जनानाम् ॥ ३०१ सफ़ा ॥

१८ रामदास बाबा सूरजी के पिता, सं० १७८८ में उ०।
रागसागरोद्भव में इनके पद बहुत ललित हैं ॥ ३०२ सफ़ा ॥

१६ रघुराय कवि बुंदेलखण्डी भाट, सं० १७६० में उ०।
इन्होंने बहुत काव्य किया है। इनका बनाया हुआ यमुनाशतक देखने योग्य है ॥ २८० सफ़ा ॥

२० रघुराय कवि (२), सं० १८३० में उ० ।

शृंगार में सुंदर कवित्त हैं ॥ २९१ सफ़ा ॥

२१ रघुलाल कवि ।

ऐज़न् ॥ २९२ सफ़ा ॥

२२ रघुराज कवि, श्रीबांधवनरेश बघेले राजा रघुराजसिंह बहादुर । विद्यमान हैं ।

इन महाराज ने श्रीमद्भागवत द्वादश स्कंध का नाना छन्दों में कविता की रीति से प्रतिश्लोक उल्था करके आनंदाम्बुनिधि नाम ग्रंथ बनाया है । हमने फ़ारसी भाषा इत्यादि में बहुत से भागवत के उल्था देखे हैं, पर ऐसा कोई उल्था नहीं हुआ । इसके सिवा सुन्दरशतक इत्यादि और ग्रंथ भी इनके बनाये हुए महा अद्भुत हैं ॥ २८५ सफ़ा ॥

२३ रघुनाथ कवि (१) असेला बंदीजन बनारसी, सं० १८०२ में उ० ।

यह कवीश्वर महाराज बरिबंडसिंह काशीनरेश के कवि थे, और चौरागाँव काशी पंचकोसी के समीप रहते थे । यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं । इनके बनाये हुए ग्रन्थ रसिकमोहन, जगमोहन, काव्यकलाधर, इश्कमहोत्सव, बहुत सुंदर हैं । इनके पढ़ने से फिर काव्य में दूसरे ग्रंथ की कुछ अपेक्षा नहीं होती । सतसई का टीका भी किया है ॥ २९५ सफ़ा ॥

२४ रघुनाथ (२) पंडित शिवदीन ब्राह्मण रसूलाबादी । वि० ।

इन्होंने भावमहिम्न इत्यादि छोटे-छोटे बहुत ग्रन्थ बनाये हैं ॥ २८१ सफ़ा ॥

२५ रघुनाथ प्राचीन, सं० १७१० में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २८९ सफ़ा ॥

२६ रघुनाथराय कवि, सं० १६३५ में उ०।

यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुर के यहाँ थे ॥ २६० सफ़ा ॥

२७ रघुनाथदास महंत अयोध्यावासी।

यह महाराज ब्राह्मण थे। पैंतेपुर, जिले सीतापुर में घर था। रामचन्द्र के उपासक थे। भगवद्भक्ति के कारण घरबार त्यागकर अयोध्याजी में विराजमान रहा करते थे। रामनाम की महिमा के सैकड़ों कवित्त बनाये हैं। इनसे लाखों मनुष्यों ने उपदेश पाया है ॥ २६१ सफ़ा ॥

२८ रघुनाथ उपाध्याय जौनपुरनिवासी, सं०१६२१ में उ०।

निर्णयमंजरी नाम ग्रन्थ बनाया है ॥ २६२ सफ़ा ॥

२९ रसराज कवि, सं० १७८० में उ०।

इनका नखशिख बहुत सुन्दर है ॥ २८० सफ़ा ॥

३० रसखानि कवि, सय्यद इब्राहीम पिहानीवाले, सं० १६३० में उ०।

यह कवि मुसल्मान थे। श्रीवृन्दावन में जाकर कृष्णचन्द्र की भक्ति में ऐसे डूबे कि फिर मुसल्मानी धर्म त्याग कर माला-कंठी धारण किये हुए वृन्दावन की रज में मिल गये। इनकी कविता निपट ललित माधुरी से भरी हुई है। इनकी कथा भक्तमाल में पढ़ने योग्य है ॥ २८६ सफ़ा ॥

३१ रसाल कवि, अंगनेलाल बन्दीजन बिलग्रामी, सं० १८८० में उ०।

इनका काव्य महा सुंदर है। बरवै-अलंकार इनका बनाया हुआ ग्रंथ देखने योग्य है ॥ २८६ सफ़ा ॥

३२ रसिकदास व्रजवासी।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ २८७ सफ़ा ॥

३३ रसिया कवि, नजीबख़ाँ, सभासद महाराजा पटियाला। वि०।

इनके कवित्त सुंदरीतिलक में हैं ॥ २८७ सफ़ा ॥

३४ रसिकशिरोमणि कवि, सं० १७१५ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २८९ सफ़ा ॥

३५ रसरास कवि, सं० १७१५ में उ० ।

शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ २९० सफ़ा ॥

३६ रामरूप कवि ।

ऐज़न् ॥ २९० सफ़ा ॥

३७ रसरंग कवि लखनऊवाले, सं० १९०१ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २९२ सफ़ा ॥

३८ रसिकलाल कवि बाँदावाले, सं० १८८० में उ० ।

ऐज़न् ॥ ३०० सफ़ा ॥

३९ रसपुंजदास दादूपंथी ।

प्रस्तारप्रभाकर, वृत्तविनोद ये दोनों ग्रंथ इनके पिंगल में बहुत उत्तम हैं ॥ ३०० सफ़ा ॥

४० रसलीन कवि, सय्यद गुलामनबी बिलग्रामी, सं १७९८ में उ० ।

यह कवि अरबी-फ़रसी के आलिम-फाज़िल और भाषा कविता में बड़े निपुण थे। रसप्रबोध नाम ग्रन्थ अलंकार का इनका बनाया हुआ बहुत प्रामाणिक है। इनके पुस्तकालय में पाँच सौ जिल्दें भाषाकाव्य की थीं ॥ ३०० सफ़ा ॥

४१ रसलाल कवि बुंदेलखंडी, सं० १७९३ में उ० ।

शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३०० सफ़ा ॥

४२ रसनायक, तालिबअली बिलग्रामी, सं० १८०३ में उ० ।

शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं ॥ २८४ सफ़ा ॥

४३ ऋषिजू कवि, सं० १८७२ में उ० ।

शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं ॥ २८१ सफ़ा ॥

४४ ऋषिराम मिश्र पट्टीवाले, सं० १९०१ में उ० ।

वंशीकल्पलता नाम ग्रन्थ बनाया है। यह कवि महाराज बालकृष्णशाह अवध के दीवान के यहाँ थे ॥ २८२ सफ़ा ॥

४५ ऋषिनाथ कवि ।

शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ २८३ सफ़ा ॥

४६ रविनाथ कवि, बुंदेलखंडी, सं० १७९१ में उ० ।

ऐज़न् ॥ २८३ सफ़ा ॥

४७ रविदत्त कवि, सं० १७४२ में उ० ।

इनके कवित्त बलदेवकृत संग्रह में हैं ॥ २८३ सफ़ा ॥

४८ रतनेश कवि बंदीजन बुंदेलखंडी, प्रताप कविके पिता, सं०१७८८में उ०।

अद्भुत कवित्त शृङ्गार के बनाये हैं ॥ २८३ सफ़ा ॥

४९ रत्नकुँवरि बाबू शिवप्रसाद सितारेहिन्द की प्रपितामही, बनारसी, सं० १८०८ में उ० ।

प्रेमरत्न नाम ग्रंथ इनका श्रीकृष्णभक्तों की जीवनमूरि है ॥ २८४ सफ़ा ॥

५० रतन कवि (१) ब्राह्मण बनारसी, सं० १९०५ में उ० ।

प्रेमरत्न नाम ग्रन्थ बनाया ॥ २९१ सफ़ा ॥

५१ रतन कवि (२) श्रीनगर बुंदेलखंडवासी, सं० १७९८ में उ० ।

यह कवि राजा फ़तेशाह बुंदेला श्रीनगर के यहाँ थे । उन्हीं के नाम से फ़तेशाहभूषण, फ़तेप्रकाश, ये दो ग्रंथ भाषा-साहित्य के बहुत सुन्दर बनाये हैं ॥ २९३ सफ़ा ॥

५२ रतन कवि (३), सं० १७३८ में उ० ।

सभासाहि पन्नानरेश के यहाँ रसमंजरी का भाषा में उल्था किया है । यह ग्रंथ देखनेयोग्य है ॥ २९३ सफ़ा ॥

५३ रतनपाल कवि ।

इनके नीति सम्बंधी दोहे पढ़ने योग्य हैं ॥ २९४ सफ़ा ॥

५४ रावराना कवि, बन्दीजन चरखारी के निवासी, सं० १८९१ में उ० ।

यह कवीश्वर बुंदेलों के प्राचीन कवीश्वरों के वंश में हैं । राजा रतनसिंह के यहाँ इनका बड़ा मान था । कवित्त सुंदर बनाये हैं ॥ २८४ सफ़ा ॥

५५ रनछोर कवि, सं० १७५० में उ०।

सामान्य कविता की है ॥ २८६ सफ़ा ॥

५६ रूप कवि।

शृंगार के सुंदर कवित्त लिखे हैं ॥ २८८ सफ़ा ॥

५७ रूपनारायण कवि, सं० १००५ में उ०।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ २८८ सफ़ा ॥

५८ रूपसाहिकायस्थ, बागमहल, पूना के निवासी, सं० १८१३ में उ०।

यह महान् कवि हिन्दूपति बुंदेला पन्नामहाराज के यहाँ थे। इनका बनाया हुआ रूपविलास ग्रंथ कवियों के अवश्य देखने योग्य है ॥ २९४ सफ़ा ॥

५९ राजाराम कवि (१), सं० १६८० में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ २८९ सफ़ा ॥

६० राजाराम कवि (२), सं० १७८८ में उ०।

शृंगार के सुंदर कवित्त हैं ॥ २९८ सफ़ा ॥

६१ राजा रणधीरसिंह, शिरमौर, सिंगरामऊवाले। विद्यमान हैं।

यह राजा कबि-कोविदों का बड़ा सम्मान करते हैं, और काव्य में महानिपुण हैं। इनके बनाये हुए भूषणकौमुदी, काव्यरत्नाकर, ये दोनों ग्रंथ देखने योग्य हैं ॥ २९९ सफ़ा ॥

६२ रज्जब कवि।

इनके दोहे सुंदर हैं ॥ २९२ सफ़ा ॥

६३ राय कवि।

शृंगार के कवित्त अच्छे हैं ॥ २८६ सफ़ा ॥

६४ रायजू कवि।

ऐज़न् ॥ २८६ सफ़ा ॥

६५ रायचन्द कवि, नागर गुजरात-निवासी।

यह कवि राजा डालचंद अर्थात् जगत् सेठ के यहाँ मुर्शिदाबाद में थे। गीतगोविन्दादर्श नाम ग्रंथ (भाषा गीतगोविन्द) और

लीलावती, नाना छंदों में रची है, जिसके देखने से इनका पांडित्य प्रकट होता है ॥ २९८ सफ़ा ॥

६६ रंगलाल कवि, सं० १७०५ में उ० ।

यह कवि बदनसिंहके आत्मज सुजानसिंहके यहाँ थे॥२८९सफ़ा॥

६७ रामशरण ब्राह्मण, हमीरपुर, ज़िले इटावावाले, सं० १८३२ में उ० ।

गोसाईं हिम्मतबहादुर के यहाँ थे ॥

६८ राम भट्ट फर्रुखाबादी, सं० १८०३ में उ० ।

नव्वाब क़ायमख़ाँ के यहाँ रहकर शृंगार-सौरभ, बरवै-नायिका भेद, ये दो ग्रंथ बनाये हैं ॥

६९ रामसेवक कवि ।

ध्यानचिंतामणि ग्रंथ बनाया है ॥

७० रामदत्त कवि ।

७१ रामप्रसाद बन्दीजन बिलग्रामी, सं० १८०३ में उ० ।

२७९ सफ़ा ॥

७२ रघुराम गुजराती अहमदाबादवासी ।

माधवविलास नाटक बनाया है ॥

७३ रामनाथ मिश्र आजमगढ़वाले ।

७४ रुद्रमणि ब्राह्मण, सं० १८०३ में उ० ।

राजा युगलकिशोर के यहाँ दिल्ली में थे ॥

७५ रुद्रमणि चौहान, सं० १७८० में उ० ।

७६ राजा रणजीतसिंह जाँगरे, ईसानगर, ज़िले खीरी, विद्यमान ।

यह कविता में महाचतुर हैं । हरिवंशपुराण को भाषा में लिखा है ॥

७७ रसरूप कवि, सं० १७८८ में उ० ।

७८ राधेलाल कायस्थ राजगढ़ बुंदेलखंडी, सं० १९११ में उ० ।

७९ रसधाम कवि, सं० १८२५ में उ० ।

अलंकारचंद्रिका नाम ग्रंथ बनाया है ॥

८० रसिकबिहारी, सं० १७८० में उ० ।

८१ रावरतन राठौर, परपोता राजा उदयसिंह रतलामवाले ।

यह महाराज कवि-कोविदों के कल्पतरु और आप भी महान् कवि थे । अपने नाम से एक ग्रंथ रायसा-राबरतन नाम का बहुत सुंदर बनवाया है ॥

८२ राना राजसिंह, राजकुमार भीमपुत्र, सं० १७३७ में उ० ।

यह महाराज महान् कवि थे । राजविलास नाम अपने जीवन-चरित्र का ग्रंथ महा अद्भुत बनवाया है ॥

८३ रहीम कवि ।

यह रहीम कवि खानखाना के अतिरिक्त दूसरे हैं । कविता इनकी सरस है । काव्यनिर्णय में दास कवि ने इनका नाम एक कवित्त में लिखा है, परंतु दोनों रहीम अर्थात् अब्दुलरहीम खान-खाना और इन रहीम के फुटकर काव्य को छाँटना कठिन है । वह कवित्त यह है—सूर केसौ, मंडन, बिहारी, कालिदास, ब्रह्म, चिन्तामनि, मतिराम, भूषन, सो जानिये । नीलकंठ, नीलाधर, निपट, नेवाज, निधि, नीलकंठ मिश्र, सुखदेव, देव, मानिये ॥ आलम, रहीम, खानखाना, रसलीन, बली, सुंदर, अनेक गन गनती बखानिये । ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान एते एते कविन की बानी हू ते जानिये ॥ ३०२ सफ़ा ॥ (?)

८४ रामप्रसाद अग्रवाल मीरापुरवाले तुलसीराम के पिता, सं० १६०१ में उ० ।

इन कवि ने शांत रस की अच्छी कविता की है ॥ ३०२ सफ़ा ॥

१ लाल कवि प्राचीन (१), सं० १७३८ में उ० ।

यह कवि राजा छत्रसाल हाड़ा कोटा-बूँदीवाले के यहाँ थे । जिस समय दाराशिकोह और औरंगज़ेब फतूहा में लड़े हैं, और राजा छत्रसाल मारे गये, उस समय यह कवि उस युद्ध में

मौजूद थे। इनका बनाया हुआ विष्णुविलास नाम ग्रंथ नायिका भेद का अति विचित्र है ॥ ३०२ सफ़ा ॥

२ लाल कवि (२) बंदीजन बनारसी, सं० १८४७ में उ० ।

यह कवि राजा चेतसिंह काशीनरेश के यहाँ थे। आनन्दरस नाम ग्रंथ नायिकाभेद का और लालचन्द्रिका नाम सतसई का टीका बनाया है ॥ ३०३ सफ़ा ॥

३ लाल कवि (३), विहारीलाल त्रिपाठी टिकमापुरवाले, सं०१८८५ में उ० ।

यह कवि मतिराम-वंशी और बड़े भारी कवि थे। इस कुल में इन्हीं तक कविता रही। पीछे जो रामदीन, शीतल इत्यादि हुए, वे सामान्य कवि थे ॥ ३०४ सफ़ा ॥

४ लाल कवि (४)

इन्हों ने चाणक्य-राजनीति का उल्था भाषा दोहों में बहुत अच्छा किया है ॥ ३०५ सफ़ा ॥

५ लाल कवि (५), लल्लूलाल गुजराती आगरेवाले, सं० १८९२ में उ० ।

यह महाराज बोलचाल की भाषा के प्रथम आचार्य हैं। इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रंथ इस बात का साक्षी है। यह दोहा-चौपाई इत्यादि सीधे सादे छन्दों के बनाने में भी निपुण थे। सभाविलास, माधवविलास, वार्त्तिक राजनीति इत्यादि इनके और ग्रंथ भी बहुत सुंदर हैं ॥ ३१२ सफ़ा ॥

६ लालगिरिधर बैसवारेवाले, सं० १८०७ में उ० ।

इन महाराज ने एक ग्रंथ नायिकाभेद का पदों में ऐसा सुंदर बनाया है, जिसके देखने से इनका पांडित्य प्रकट है ॥ ३०५ सफ़ा ॥

७ लालमुकुंद कवि, सं०१७७४ में उ० ।

शृंगार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३०६ सफ़ा ॥

८ लालचन्द कवि।

इनके कवित्त और कुंडलिया बहुत कूट हैं ॥ ३०६ सफ़ा ॥

९ लालनदास ब्राह्मण डलमऊवाले, सं० १६५२ में उ०।

यह महाराज बड़े महात्मा हो गये हैं। इनके कवित्त शांतरस के हैं। हज़ारे में भी कालिदास ने इनका नाम लिखा है ॥ ३११ सफ़ा ॥

१० लाला पाठक कवि रुकुमनगरवाले, सं० १८३१ में उ०।

इनका बनाया हुआ शालिहोत्र बहुत सुन्दर है ॥ ३१३ सफ़ा ॥

११ लोने कवि, बंदीजन (२) बुंदेलखण्डी, सं० १८७६ में उ०।

श्रृंगार की सुन्दर कविता की है ॥ ३०७ सफ़ा ॥

१२ लोनेसिंह (१), बाछिल मितौली, ज़िले खीरीवाले, सं० १८१२ में उ०।

यह कविता में महा निपुण और क्षात्रधर्म में बड़े साहसी क्रियावान् थे। भागवत के दशम स्कंध की नाना छंदों में भाषा की है। लड़ाई में महाशूरवीरता के साथ शिर दिया ॥ ३०६ सफ़ा ॥

१३ लीलाधर कवि, सं० १६१५ में उ०।

यह कवि महाराज गजसिंह जोधपुर के यहाँ थे, और इनका प्रमाण सत्कवि करते चले आये हैं ॥ ३०८ सफ़ा ॥

१४ लक्ष्मणदास कवि।

पद बहुत सुन्दर बनाये हैं ॥ ३०७ सफ़ा ॥

१५ लक्ष्मणसिंह, सं० १८१० में उ०।

श्रृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३०७ सफ़ा ॥

१६ लच्छू कवि, सं० १८२८ में उ०।

ऐज़न् ॥ ३०८ सफ़ा ॥

१७ लछिराम कवि (१) होलपुर के बंदीजन । विद्यमान हैं ।

यह कवि शिवसिंहसरोज नाम नायिकाभेद का एक ग्रंथ हमारे नाम से बना रहे हैं ॥ ३०६ सफ़ा ॥

१८ लछिराम कवि (२) व्रजवासी ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ॥ ३११ सफ़ा ॥

१६ लक्ष्मणशरणदास कवि ।

ऐज़न ॥ ३१३ सफ़ा ॥

२० लोधे कवि, सं० १७७० में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ ३११ सफ़ा ॥

२१ लोकनाथ कवि, सं० १७८० में उ० ।

इनकी प्रशंसा दास कवि ने काव्यनिर्णय की भूमिका में की है ॥ ३१२ सफ़ा ॥

२२ लतीफ़ कवि, सं० १८३४ में उ० ।

शृंगार के सुन्दर कवित्त बनाये हैं ॥ ३१२ सफ़ा ॥

२३ लेखराज कवि, नन्दकिशोर मिश्र गँधौली, ज़िले सीतापुर । विद्यमान हैं ।

यह महाराज भट्टाचार्यों के नातेदार गँधौली ग्राम के नम्बरदार काव्य में महानिपुण हैं । रसरत्नाकर, लघुभूषण अलंकार, गंगाभूषण, ये तीन ग्रंथ इनके बहुत सुन्दर हैं ॥ ३१० सफ़ा ॥

२४ लोकनाथ कवि, उपनाम बनारसीनाथ ।

२५ ललितराम कवि ।

२६ लक्ष्मीनारायण मैथिल, सं० १५८० में उ० ।

यह कवि ख़ानख़ाना के यहाँ थे ॥

२७ लक्ष्मण कवि ।

शालिहोत्र भाषा बनाया ॥

२८ लाजच कवि ।

२६ लोकमणि कवि ।

सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है ॥

३० लक्ष्मी कवि।

ऐज़न ॥

३१ लालबिहारी कवि, सं० १७३० में उ०।

१ बाहिद कवि।

शृङ्गार के इनके कवित्त बहुत ही सरस हैं॥ ११४ सफ़ा॥

२ वजहन कवि।

इनके दोहे चौपाई शांत वेदांत के बहुत अच्छे हैं॥

दोहा- वजहन कहैं तो क्या कहैं, कहने की नहिं बात।
समुद्र समान्यो बुंद में, अचरज बड़ा देखात॥

३ वहाब।

इनका बारहमासा प्रसिद्ध है॥

१ श्रीसुखदेव मिश्र कवि, (१) कंपिलावासी, सं० १७२८ में उ०।

यह कवि भाषा-साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। प्रथम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजा राजसिंह गौर के यहाँ जाकर कविराज की पदवी पाकर वृत्तविचार नाम पिंगल सब पिंगोलों में उत्तम ग्रन्थ रचा। तत्पश्चात् राजा हिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठी के यहाँ आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया। फिर नवाब फ़ाज़िलअलीखाँ औरंगज़ेब बादशाह के मंत्री के नाम भाषा-साहित्य का फ़ाज़िलअली प्रकाश नाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा। इन तीनों ग्रंथों के सिवा हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश, दशरथराय, ये दो ग्रंथ और भी इन्हीं महाराज के रचे हुए हैं॥ ३२५ सफ़ा॥

२ सुखदेव मिश्र कवि (२) दौलतपुर ज़िले रायबरेली वाले, सं० १८०३ में उ०।

बैसवारे में यह महाराज महा कवि होगये हैं। राव मर्दनासिंह बैस डौंड़ियाखेरे के यहाँ थे, और उन्हीं के नाम से नायिकाभेद का रसार्णव नाम ग्रन्थ बहुत सुंदर बनाया है। शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हीं के शिष्य थे ॥ ३२४ सफ़ा॥

३ सुखदेव कवि (३) अन्तरबेदवाले, सं० १७६१ में उ०।

यह कवि महाराजा भगवंतराय खींची असोथरवाले के यहाँ थे। कुछ आश्चर्य्य नहीं कि यह महाराज सुखदेवमिश्र दौलतपुर वाले ही हों ॥ ३२४ सफ़ा ॥

४ शंभु कवि, (१) राजा शंभुनाथसिंह सुलंकी, सितारागढ़वाले, सं० १७३८ में उ०।

यह महाराज कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष महा कवि हो गये हैं। शृङ्गार का इनका काव्य निराला है। नायिकाभेद का इनका ग्रन्थ सर्वोपरि है। यह महाराज मतिराम त्रिपाठी के बड़े मित्र थे॥ ३३२ सफ़ा ॥

५ शंभुनाथ कवि (२) बंदीजन, सं० १७६८ में उ०।

यह कवि सुखदेव के शिष्य थे। रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है। रामचंद्रिका की तरह इस ग्रन्थ में भी नाना छन्द हैं ॥ ३३४ सफ़ा ॥

६ शंभुनाथ मिश्र कवि (३), सं० १८०३ में उ०।

यह कवि महाराज भगवंतराय खींची के यहाँ असोथर में रहा करते थे। शिव कवि इत्यादि सैकड़ों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया। कविता में महानिपुण थे। रसकल्लोल, रसतरंगिणी, अलंकारदीपक, ये तीन ग्रन्थ इनके बनाये हुए हैं॥ ३३४ सफ़ा॥

७ शंभुनाथ कवि (४) त्रिपाठी डौंड़ियाखेरेवाले, सं० १८०६ में उ०।

यह महाराज राजा अचलसिंह बैस डौंड़ियाखेरे के यहाँ थे। राव रघुनाथसिंह के नाम से बैतालपचीसी को संस्कृत से भाषा किया है। मुहूर्तचिंतामणि ज्योतिष का ग्रंथ भी भाषा के नाना छंदों में बनाया है। ये दोनों ग्रंथ सुन्दर हैं॥ ३३५ सफ़ा ॥

८ शंभुनाथ मिश्र कवि (५) सातनपुरवा बैसवारेवाले, सं० १६०१ में उ०।

यह कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजुरगाँव के यहाँ थे। थोड़ी

ही अवस्था में अल्पायु हो गये। बैस वंशावली और शिवपुराण का चतुर्थखण्ड भाषा बनाया है॥ ३३६ सफ़ा॥

९ शंभुप्रसाद कवि।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं॥ ३३७ सफ़ा॥

१० शिव कवि (१) अरसेला बंदीजन, देवनहा, ज़िले गोंडा के निवासी, सं० १७१६ में उ०।

यह कवि असोथर में शम्भु कवि से काव्य पढ़कर भैया जगत्‌सिंह बिसेन, अपनी जन्मभूमि के अधिपति, के पास रहे, और उन को भी कविता में ऐसा प्रवीण किया कि जगत्‌सिंह का पिंगल विख्यात है। निदान शिव कवि ने रसिकविलास नाम एक ग्रंथ भाषासाहित्य का ऐसा अपूर्व बनाया है, जो अवश्य दर्शनीय है। अलंकारभूषण और पिंगल, ये दो ग्रंथ और भी इनके बनाये हुए हैं। इनके वंश में अब राम कवि विद्यमान हैं॥ ३२८ सफ़ा॥

११ शिव कवि (२) बंदीजन बिलग्रामी सं० १७६५ में उ०।

इन्होंने शृंगार का रसनिधि नाम एक बहुत विचित्र ग्रंथ बनाया है॥ ३२८ सफ़ा॥

१२ शिवप्रसाद सितारेहिंद बनारसी। विद्यमान हैं।

यह राजासाहब अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, भाषा, अँगरेज़ी इत्यादि बहुत ज़बानों से वाक़िफ़ हैं। वार्तिक में भूगोल हस्तामलक, इतिहासतिमिरनाशक इत्यादि इनके बनाये ग्रंथ अपूर्व व अद्वितीय हैं। हमको इसमें कुछ सन्देह नहीं कि आज दिन हिन्दुओं में इन बाबू साहब के समान और मुसल्मानों में सय्यद अहमद के सदृश तारीख़ इत्यादि की विद्या में दूसरा मनुष्य भारत में नहीं है। इनकी कविता छन्दोबद्ध न मिलने से हम को बड़ा अफ़सोस है। भूगोल में एक कवित्त मिला, सो निपटनिरंजन कवि का है॥ ३२९ सफ़ा॥

१३ शिवनाथ कवि बुंदेलखंडी, सं० १७६० में उ० ।

यह कवीश्वर राजा जगत्सिंह बुंदेला, छत्रसाल के पुत्र, के पास पन्ना में थे, और रसरंजन नाम काव्य ग्रंथ का बहुत सुन्दर रचा है ॥ ३२९ सफ़ा ॥

१४ शिवराम कवि, सं० १७८८ में उ० ।

इनकी प्रशंसा सूदन कवि ने की है । शृंगार के अच्छे कवित्त हैं ॥ ३३० सफ़ा ॥

१५ शिवदास कवि ।

कविता चोखी है ॥ ३३० सफ़ा ॥

१६ शिवदत्त कवि ।

ऐज़न् ॥ ३३० सफ़ा ॥

१७ शिवलाल दुबे डौंड़ियाखेरेवाले, सं० १८३९ में उ० ।

यह बड़े कवि हो गये हैं । यद्यपि हमको कोई इनका पूरा ग्रंथ नहीं मिला, तथापि हमारा पुस्तकालय इनके काव्य से भरा पड़ा है । इनका नखशिख, षट्ऋतु, नीति-सम्बन्धी कवित्त और हास्य-रस देखने योग्य है ॥ ३३१ सफ़ा ॥

१८ शिवराज कवि ।

सामान्य कवि हैं ॥ ३३२ सफ़ा ॥

१९ शिवदीन कवि ।

ऐज़न् ॥ ३३२ सफ़ा ॥

२० शिवसिंह प्राचीन (१), सं० १७८८ में उ० ।

ऐज़न् ॥ ३२६ सफ़ा ॥

२१ शिवसिंह सेंगर (२) काँथा, ज़िले उन्नाव के निवासी, सं० १८७८ में उ० ।

अपना नाम इस ग्रन्थ में लिखना बड़े संकोच की बात है । कारण यह कि हमको कविता का कुछ भी ज्ञान नहीं । इस हमारी ढिठाई को विद्वज्जन क्षमा करें । हमने बृहच्छिवपुराण को

भाषा और उर्दू दोनों बोलियों में उल्था करके छपा दिया है। और प्रश्नोत्तरखंड की भी भाषा की है। काव्य करने की हम में शक्ति नहीं है। काव्य इत्यादि सब प्रकार के ग्रन्थों के इकट्ठा करने का बड़ा शौक है। हमने अरबी, फ़ारसी, संस्कृत आदि के सैकड़ों अद्भुत ग्रन्थ जमा किये हैं, और करते जा रहे हैं। इन विद्याओं का थोड़ा अभ्यास भी है॥ ३२६ सफ़ा॥

२२ शिवनाथ शुक्ल मकरन्दपुरवाले, देवकीनन्दन कवि के भाई, सं० १८७० में उ०।

इनकी कविता सरस है। परन्तु यह भी अपना उपनाम नाथ रखते थे। इनका बनाया ग्रन्थ कोई नहीं मिलता, इस कारण छः-सात नाथों के बीच से शिवनाथ को निकालना कठिन होगया है॥ ३५१ सफ़ा॥

२३ शिवप्रकाशसिंह डुमराँव के बाबू, सं० १६०१ में उ०।

इन्होंने विनयपत्रिका का तिलक रामतत्त्वबोधिनी नाम से बहुत सुंदर बनाया है॥ ३५२ सफ़ा॥

२४ शिवदीन कवि भिनगा, ज़िले बहिरायचवाले, सं० १६१५ में उ०।

इन कवि ने राजा कृष्णदत्तसिंह बिसेन, राजा भिनगा, के नाम से कृष्णदत्तभूषण नाम एक महाअद्भुत काव्य का ग्रन्थ बनाया है। भिनगा में सदैव सब राजा-बाबू कवि-कोविद होते आये हैं, और अब भी भैया सुखराजसिंह इत्यादि सत्कवि हैं॥ ३५३ सफ़ा॥

२५ शिवप्रसन्न कवि शाकद्वीपी ब्राह्मण रामनगर, ज़िले बाराबंकी, वि०।

सामान्य काव्य है॥ ३५७ सफ़ा॥

२६ शंकर कवि (१)।

शृंगार के बहुत सुंदर कवित्त हैं॥ ३३६ सफ़ा॥

२७ शंकर कवि (२)।

ऐज़न्॥ ३४६ सफ़ा॥

२८ शंकर कवि (३) त्रिपाठी बिसवाँवाले, सं० १८६१ में उ० ।

रामायण की कथा कवित्तों में, अपने पुत्र शालिक कवि की सहायता से, बहुत ललित बनाई है ॥ ३४७ सफ़ा ॥

२६ शंकरसिंह कवि (४) चँहरा, ज़िले सीतापुर के तालुक़ेदार, वि० ।

सामान्य कवि हैं ॥ ३४५ सफ़ा ॥

३० श्रीगोविन्द कवि, सं० १७३० में उ० ।

यह कवि राजा शिवराज सुलंकी सितारेवाले के यहाँ थे ॥ ३४० सफ़ा ॥

३१ श्रीभट्ट कवि, सं० १६०१ में उ० ।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं । प्रिया प्रियतम के चरित्र बड़ी कविता में वर्णन किये हैं ॥ ३५८ सफ़ा ॥

३२ श्रीपति कवि पयागपुर, ज़िलेवहिरायच के, सं० १७०० में उ० ।

यह महाराज भाषासाहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं । इन के बनाये हुए काव्य-कल्पद्रुम, काव्यसरोज, श्रीपतिसरोज, ये तीन ग्रंथ विख्यात हैं । हमने ये तीनों ग्रंथ नहीं देखे, और न इनके कुल और जन्मभूमि से हमको ठीक-ठीक आगाही है ॥ ३१४ सफ़ा ॥

३३ श्रीधर कवि (१) प्राचीन, सं० १७८६ में उ० ।

शृङ्गार के सरस कवित्त हैं ॥ ३-० सफ़ा ॥

३४ श्रीधर कवि (२) राजा सुब्बासिंह चौहान ओयल, ज़िले खीरीवाले, सं० १८७४ में उ० ।

इन्होंने भाषासाहित्य का एक महा अद्भुत ग्रंथ विद्वन्मोदतरंगिणी नाम का बनाया है । इस ग्रंथ में अपने और अपने गुरु सुवंश शुक्ल कवि के सिवा और भी ४४ सत्कवियों के कवित्त उदाहरण में प्रसंग प्रसंग पर लिखे हैं । इस ग्रन्थ में नायिका-नायक-भेद, चारो दर्शन, सखी, दूतीवर्णन, षट्ऋतु, रसनिर्णय, विभाव, अनुभाव,

भावरस, रसदृष्टिभाव, सबलादि भाव-उदय इत्यादि विषय विस्तारपूर्वक कहे हैं ॥ ३२० सफ़ा ॥

३५ श्रीधर मुरलीधर कवि।

कविविनोद नाम पिंगल बनाया है ॥ ३२१ सफ़ा ॥

३६ श्रीधर कवि (४) राजपूतानेवाले, सं० १६८० में उ०।

इस कवि ने भवानीछंद नाम एक ग्रंथ बनाया है, जिसमें दुर्गा की कथा है ॥ ३२३ सफ़ा ॥

३७ संतन कवि (१) बिंदकी, ज़िले फतेपुर के ब्राह्मण, सं० १८३४ में उ०।

३३७ सफ़ा ॥

३८ संतन कवि (२) ब्राह्मण जाजमऊ, ज़िले कानपुर के सं० १८३४ में उ०।

३३८ सफ़ा ॥

३९ सन्तबकस बंदीजन होलपुरवाले। विद्यमान हैं।

३३८ सफ़ा ॥

४० सन्त कवि (१)।

शृंगार के अच्छे कवित्त हैं ॥ ३४३ सफ़ा ॥

४१ सन्तदास ब्रजवासी, निवरी विमलानन्दवाले, सं० १६८० में उ०।

रागसागरोद्भव में इनके पद हैं। इनकी कविता सूरदासजी के काव्य से मिलती-जुलती है ॥ ३२० सफ़ा ॥

४२ सन्त कवि (२) प्राचीन, सं० १७५६ में उ०।

३५७ सफ़ा ॥

४३ सुन्दर कवि (१) ब्राह्मण ग्वालियरनिवासी, सं १६८८ में उ०।

यह महाराज शाहजहाँ बादशाह के कवि थे। पहले कविराय का पद पाकर, पीछे महाकविराय की पदवी पाई। इनका बनाया हुआ सुंदरशृङ्गार नाम ग्रन्थ भाषा-साहित्य में बहुत सुंदर है। इन्हीं कवि के पद में यह वाक्छल पड़ा था—सुन्दर को पनहीं सपने ॥ ३४४ सफ़ा ॥

४४ सुन्दर कवि (२) दादूजी के शिष्य मेवाड़ देश के निवासी ।

इनकी कविता शांतरस की कुछ अच्छी है । सुन्दरसांख्य नाम एक इनका बनाया हुआ ग्रन्थ भी सुना जाता है ॥ ३४६ सफ़ा ॥

४५ सखी सुख ब्राह्मण नरवरवाले, कविंद के पिता, सं० १८०७ में उ० ।

३४१ सफ़ा ॥

४६ सुखराम कवि, सं० १६०१ में उ० ।

शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं ॥ ३४१ सफ़ा ॥

४७ सुखदीन कवि, सं० १६०१ में उ० ।

ऐज़न् ॥ ३४१ सफ़ा ॥

४८ सुखन कवि, सं० १६०१ में उ० ।

ऐज़न् ॥ ३४२ सफ़ा ॥

४६ सेख कवि, सं० १६८० में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ ३४२ सफ़ा ॥

५० सेवक कवि (२) असनीवाले, सं० १८६७ में उ० ।

राजा रतनसिंह चक्रपुरवाले के यहाँ थे ॥ ३५३ सफ़ा ॥

५१ सेवक कवि (१) बंदीजन बनारसी । वि० ।

यह कवि काशीजी में बाबू देवकीनंदन, महाराजा बनारस के भाई, के यहाँ हैं । शृङ्गाररस के इनके कवित्त बहुत सुंदर हैं ॥ ३४२ सफ़ा ॥

५२ शीतल त्रिपाठी टिकमापुरवाले (१), लाल कवि के पिता, सं० १८६१ में उ० ।

यह मतिरामवंशी कवि बुंदेलखण्ड में चरखारी इत्यादि रियासतों में आते-जाते थे ॥ ३४७ सफ़ा ॥

५३ शीतलराय बन्दीजन (२) बौंड़ी, ज़िले बहिरायच, सं० १८६४ में उ० ।

यह कवि बड़े नामी हो गये हैं । राजा गुमानसिंह जनवार ऐकौनावाले ने कहा कि अब कोई गंग कवि के समान छप्पय छंद

के बनाने में प्रवीण नहीं है। तब इन्होंने राजा गुमानसिंह की प्रशंसा में यह छप्पय पढ़ा—चकित पवन गति प्रबल, और एक हाथी इनाम में पाया॥ १४८ सफ़ा॥

५४ सुलतानपठान नवाब सुलतान मोहम्मद खाँ (१) राजगढ़, भूपालवाले, सं० १७६१ में उ०।

यह कविता के ग्राहक थे। चंद कवि ने इनके नाम से सतसई का टीका कुंडलिया छंद में किया है॥ ३५० सफ़ा॥

५५ सुलतान कवि (२)।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं॥ ३५१ सफ़ा॥

५६ सहजराम बनिया (१) पैंतेपुर, ज़िले सीतापुर, सं० १८६१ में उ०।

इस कवि ने रामायण सातो कांड बहुत ललित, हनुमन्नाटक और रघुवंश के श्लोकों का उलथा करके, बनाई है॥३५१ सफ़ा॥

५७ सहजराम (२) सनाढ्य बँधुआवाले, सं० १६०५ में उ०।

इन्होंने प्रह्लादचरित्र नाम ग्रंथ बनाया है॥ ३५७ सफ़ा॥

५८ श्यामदास कवि, सं० १७५५ में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं॥ ३५८ सफ़ा॥

५६ श्याममनोहर कवि।

ऐज़न्॥ ३५८ सफ़ा॥

६० श्यामशरण कवि, सं० १७५३ में उ०।

भाषास्वरोदय ग्रन्थ बनाया॥ ३५७ सफ़ा॥

६१ श्यामलाल कवि, सं० १७७५ में उ०।

३५६ सफ़ा॥

६२ सबलश्याम, कवि।

३५४ सफ़ा॥

६३ श्याम कवि, सं० १७०५ में उ०।

इनके कवित्त हजारे में हैं॥ १३७ सफ़ा॥

६४ शोभा कवि।

शृंगार के सुंदर कवित्त हैं॥ ३३८ सफ़ा॥

६५ शोभनाथ कवि।

३५६ सफ़ा॥

६६ शिरोमणि कवि, सं० १७०३ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं॥ ३३८ सफ़ा॥

६७ सिंह कवि, सं० १८३५ में उ०।

बहुत सुन्दर कविता की है॥ ३३९ सफ़ा॥

६८ संगम कवि, सं १८४० में उ०।

सिंहराज के यहाँ थे॥ ३३९ सफ़ा॥

६९ सम्मन कवि ब्राह्मण, मल्लावाँ, ज़िले हरदोई, सं० १८३४ में उ०।

इनके नीतिसंबंधी दोहे बहुत ही सुंदर हैं॥ ३४० सफ़ा॥

७० सवितादत्त बाबू, सं० १८०३ में उ०।

सत्कविगिराविलास में इनके कवित्त हैं॥ ३४४ सफ़ा॥

७१ साधर कवि, सं० १८५५ में उ०।

सामान्य कविता है॥ ३४४ सफ़ा॥

७२ संपति कवि, सं० १८७० में उ०।

ऐज़न्॥ ३४७ सफ़ा॥

७३ सिरताज कवि बरसानेवाले, सं १८२५ में उ०।

३४९ सफ़ा॥

७४ सुमेर कवि।

३४९ सफ़ा॥

७५ सुमेरसिंह साहेबजादे।

इनके कवित्त सुंदरीतिलक में हैं॥ ३५३ सफ़ा॥

७६ सागर कवि ब्राह्मण, सं० १८४३ में उ०।

वामामनरंजन नाम शृङ्गार का ग्रंथ बनाया है। यह कवि महाराजा टिकैतराय दीवान के यहाँ थे॥ ३५० सफ़ा॥

७७ सुखलाल कवि, सं० १८५५ में उ० ।

३५१ सफ़ा ॥

७८ सुजान कवि भाट ।

शृंगार के अच्छे कवित्त हैं ॥ ३३७ ॥ सफ़ा ॥

७९ सबलसिंह कवि ।

इन्होंने षट्ऋतु बरवै और भाषा ऋतुसंहार, ये दो ग्रन्थ साहित्य के बहुत ही सुंदर बनाये हैं । दोनों ग्रन्थों में कवि का ग्राम, कुल और सन्-संवत् नहीं है ॥ ३५२ सफ़ा ॥

८० सबलसिंह चौहान, सं० १७२७ में उ० ।

दोहा-चौपाइयों में महाभारत के २४ हज़ार श्लोकों का उल्था बहुत ही संक्षेप के साथ किया है । कोई-कोई कहता है, यह कवि चंदगढ़ के राजा थे, कोई कहता है, सबलगढ़ के थे । इनके वंशवाले आजतक ज़िले हरदोई में हैं । परन्तु हम इसे ठीक नहीं मानते । हम कहते हैं, नहीं यह कवि ज़िले इटावा के किसी ग्राम के ज़िमीदार थे, और आप ही दस पर्वों का उल्था किया । सूचीपत्र लिखा है ॥ ३५६ सफ़ा ॥

८१ शेखर कवि ।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३५३ सफ़ा ॥

८२ शशिशेखर कवि, सं० १७०५ में उ० ।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ ३५५ सफ़ा ॥

८३ सोमनाथ कवि, सं० १८८० में उ० ।

३५४ सफ़ा ॥

८४ शम्भुनाथ कवि ।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३५४ ॥

८५ सहीराम कवि, सं० १७०८ में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ ३५५ सफ़ा ॥

८६ सदानन्द कवि, सं० १६८० में उ० ।

इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है। हज़ारे में इनका केवल एक ही कवित्त है, और दिग्विजयभूषण में दोहे हैं ॥ ३५५ सफ़ा ॥

८७ सकल कवि, सं० १६६० में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ ३५५ सफ़ा ॥

८८ सामंत कवि, सं० १७३८ में उ० ।

यह कवि औरङ्गज़ेब के यहाँ थे। हज़ारे में इनके कवित्त हैं ॥ ३५६ सफ़ा ॥

८९ सेन कवि नापित बांधवगढ़ के, सं० १५६० में उ० ।

हज़ारे में इनके कवित्त हैं। यह कवि स्वामी रामानन्दजी के शिष्य थे ॥ ३५६ सफ़ा ॥

९० सीतारामदास बनिया बीरापुर, ज़िले बाराबंकी । वि० ।

जोड़-गाँठ लेते हैं ॥ ३५७ सफ़ा ॥

९१ सुकवि कवि, सं० १८५५ में उ० ।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं ॥ ३५७ सफ़ा ॥

९२ सगुणदास कवि ।

इनके कवित्त रागसागरोद्भव में हैं ॥ ३५८ सफ़ा ॥

९३ सुवंश शुक्ल बिगहपुर, ज़िले उन्नाववाले, सं० १८३४ में उ० ।

यह महाराज प्रथम राजा उमरावसिंह बंधलगोती अमेठी के यहाँ रहे। अमरकोश, रसतरंगिणी, रसमंजरी, ये तीन ग्रन्थ संस्कृत से भाषा में किये। फिर राजा सुब्बासिंह ओयल के यहाँ जाकर विद्वन्मोदतरंगिणी नाम ग्रन्थ के बनाने में राजा साहब की सहायता की। यह महा कवि होगये हैं, और इनका काव्य देखने योग्य है ॥ ३४८ सफ़ा ॥

९४ सरदार कवि बंदीजन बनारसी । वि० ।

यह महाकवि महाराजा ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेश के यहाँ विद्यमान हैं। इस महानीच काल में ऐसे उत्तम मनुष्यों

का होना महा लाभ समझना चाहिये । इनके बनाये हुये जो ग्रन्थ हमने देखे सुने हैं, वे ये साहित्य-सरसी, हनुमत-भूषण, तुलसी-भूषण, मानस-भूषण, कविप्रिया का तिलक, रसिकप्रिया का तिलक, सतसई का तिलक, शृंगारसंग्रह, और तीन सौ अस्सी सूरदास के कूटों का टीका। इनके शिष्य नारायणराय इत्यादि बड़े कवि हैं ॥ ३१८ सफ़ा ॥

९५ सूरदास ब्राह्मण व्रजवासी बाबा रामदास के पुत्र, बल्लभाचार्य के शिष्य, सं० १६४० में उ० ।

इन महाराज के जीवनचरित्र से सब छोटे-बड़े आगाह हैं। भक्तमाल इत्यादि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है । इनका बनाया सूरसागर ग्रन्थ विख्यात है । हमने इनके पद ६० हज़ार तक देखे हैं । समग्र ग्रन्थ कहीं नहीं देखा । इनकी गिनती अष्ट-छाप अर्थात् व्रज के आठ महाकवीश्वरों में है ॥ ३१९ सफ़ा ॥

९६ सूदन कवि, सं० १८१० में उ० ।

यह कवि राजा बदनसिंह के पुत्र सुजानसिंह के यहाँ थे। कविता बहुत ही सुंदर की है । इन्होंने दश कवित्त कवियों के नामगणना के लिखे हैं । हमारे पास वे दस कवित्त थे, परंतु किसी कारण से केवल अंतवाला एक कवित्त रहगया । सो हम लिखते हैं--सोमनाथ, सूरज, सनेही, शेख, श्यामलाल, साहेब, सुमेरु, शिवदास, शिवराम है । सेनापति, सूरति, सरवसुख, सुखलाल, श्रीधर, सबलसिंह, श्रीपति सुनाम है ॥ हरिपरसाद, हरिदास, हरिबंस, हरि, हरीहर, हीरा से हुसेन, हित-राम है । जस के जहाज जगदीस के परमपति सूदन कबिंदन को मेरो परनाम है ॥ ३२१ सफ़ा ॥

९७ सेनापति कवि वृन्दावनवासी, सं० १६८० में उ० ।

इन महाराज ने वृंदावन में क्षेत्रसंन्यास लेकर सारी बयस वहीं

व्यतीत की। इनके काव्य की प्रशंसा हम कहाँ तक करें, अपने समय के भानु थे। इनका काव्यकल्पद्रुम ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर है। हज़ारे में इनके बहुत कवित्त हैं॥ ३२२ सफ़ा॥

९८ सूरत मिश्र आगरेवाले, सं० १७६६ में उ०।

इन महान् कवीश्वर ने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं। सतसई का टीका बहुत ही विचित्र बनाया है, और सरसरस, नखशिख, रसिकप्रिया का तिलक, अलंकारमाला, ये चार ग्रन्थ भी इन्होंने बहुत सुन्दर बनाये हैं॥ ३२३ सफ़ा॥

९९ शारंग कवि बंदीजन चन्द-कवीश्वर के वंश के।

यह प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंश में संवत् १३३० के क़रीब उत्पन्न हुए थे, और राजा हमीरदेव चौहान रनथम्भौर-वाले के यहाँ, जो राजा विशालदेव के वंश में था, रहा करते थे। इन्होंने हमीररासा और हमीरकाव्य, ये दो ग्रन्थ महाउत्तम बनाये हैं। हमीररासा राजा हमीर की प्रशंसा में लिखा है॥

दोहा॥ सिंहगमन सुपुरुषबचन, कदलि फरै इकबार।
तिरिया तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार॥ ३६१ सफ़ा॥

१०० सदाशिव कवि बंदीजन, सं० १७३४ में उ०।

यह कवीश्वर राना राजसिंह, जो औरंगज़ेब बादशाह के दिली शत्रु थे, उनके पास रहा करते थे, और उन्हीं राना के जीवन-चरित्र के वर्णन में राजरत्नाकर नाम ग्रन्थ बनाया है॥ + ॥

१०१ शिव कवि प्राचीन, सं० १६३१ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं॥ + ॥

१०२ सुखलाल कवि, सं० १८०३ में उ०।

यह कवि राजा युगलकिशोर मैथिल के पास दिल्ली में थे॥

१०३ सन्तजीव कवि, सं० १८०३ उ०।

ऐज़न्॥

१०४ सुदर्शनसिंह राजा चन्द्रापुर के राजकुमार, सं० १९३० में उ० ।

यह महाराज कविता में महा निपुण थे । एक ग्रंथ इन्होंने बनाया है, जिसमें अपने बनाये पद और कवित्त आदि का संग्रह किया है ॥ ३६१ सफ़ा ॥

१०५ शंख कवि ।

इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं ॥ + ॥

१०६ साहब कवि ।

ऐज़न् ॥ + ॥

१०७ सुबुद्धि कवि ।

ऐज़न् ॥ + ॥

१०८ सुन्दर कवि बन्दीजन असनीवाले ।

रसप्रबोध ग्रन्थ बनाया है ॥

१०९ सोमनाथ ब्राह्मण, नाथ उपनाम साँडिवाले, सं० १८०३ में उ० ।

११० सुखराम ब्राह्मण, चहोतर, ज़िले उन्नाव के । वि० ।

१११ समनेश कवि कायस्थ, रीवाँ, बघेलखण्डवासी, सं० १८८१ में उ० ।

यह कवि महाराजा जयसिंह, विश्वनाथसिंह बांधवनरेश के पिता के यहाँ थे, और काव्यभूषण नाम ग्रन्थ बनाया है ॥

११२ शत्रुजीतसिंह बुंदेला, दतिया के राजा ।

रसराज का टीका बनाया है । इस ग्रंथ में अलंकार, ध्वनि, लक्षणा, व्यंजना और व्यंग्य का यथावत् वर्णन है ॥ + ॥

११३ शिवदत्त ब्राह्मण काशीस्थ, सं० १९११ में उ० ।

११४ श्रीकर कवि ।

इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं ॥ + ॥

११५ सनेही कवि ।

सूदनने इनकी प्रशंसा की है ॥ + ॥

११६ सूरज कवि ।

ऐज़न् ॥ × ॥

११७ सुखानन्द कवि बन्दीजन चचेड़ीवाले, सं० १८०३ में उ० ।

११८ सर्वसुखलाल, सं० १७६१ में उ० ।

सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है ॥ × ॥

११९ श्रीलाल गुजराती भाँडेर, राजपूतानेवाले, सं० १८५० में उ० ।

भाषाचंद्रोदय इत्यादि ६ ग्रंथ बनाये हैं ॥ ३५९ सफ़ा ॥

१२० शंभुनाथ मिश्र गंज-मुरादाबादवाले,

३३६ ॥ सफ़ा ॥

१२१ समरसिंह क्षत्रिय हड़हा ज़िले बाराबंकी वि० ।

सातोंकाण्ड रामायण बहुत ही ललितपदों में बनाई है ॥ × ॥

१२२ श्यामलाल कवि कोड़ा-जहानाबादवाले, सं० १८०४ में उ० ।

यह कवि भगवंतराय खींची के यहाँ थे ॥ ३६० सफ़ा ॥

१२३ श्रीहठ कवि, सं० १७६० में उ० ।

तुलसी कवि के संग्रह में इनके कवित्त हैं ॥ + ॥

१२४ सिद्ध कवि, सं० १७८५ में उ० ।

ऐज़न् ॥ + ॥

१२५ शारंग कवि, असोथरवाले, सं० १७६३ में उ० ।

यह कवि राजा भवानीसिंह खींची, भगवंतरायजी के भतीजे, के पास असोथर में रहा करते थे ॥

१ हरिनाथ कवि, महापात्र बन्दीजन असनीवाले, सं० १६४४ में उ० ।

यह महान् कवीश्वर नरहरिजी के पुत्र बड़े भाग्यवान् पुरुष थे । जहाँ जिस दरबार में गये, लाखों रुपए-हाथी-घोड़े-गाँव-रथ-पालकी पाकर लौटे । श्रीबांधवनरेश नेजाराम बघेले की प्रशंसा में यह दोहा पढ़ा—

लंका लौं दिल्ली दई, साहि विभीषन काम ॥
भयो बघेल रमायणे, राजा राजाराम ॥

इस दोहे पर एक लक्ष रुपए का इनाम पाया । राजा मानसिंह सवाई आमेरवाले के पास ये दोहे पढ़कर दो लक्ष रुपएका दान पाया—

बलि बोई कीरति-लता, करन करी द्वै पात ॥
सींची मान महीप ने, जब देखी कुँभिलात ॥
जाति जाति ते गुन अधिक, सुन्यो न कबहूँ कान ॥
सेतु बाँधि रघुबर तरे, हेला दै नृप मान ॥

जब हरिनाथजी रुपए और सब सामान लेकर घर को चले तो मार्ग में एक नागर पुत्र मिला, और उसने हरिनाथजी की प्रशंसा में यह दोहा पढ़ा--

दान पाय दोई बढ़े, की हरि की हरिनाथ ।
उन बढ़ि ऊँचो पग कियो, इन बढ़ि ऊँचो हाथ ॥

हरिनाथ ने सब धन-धान्य जो पाया था, इसी नागरपुत्र को देकर आप खाली हाथ घर को चले आये । अपनी और अपने पिता की कमाई तमाम उमर इसी भाँति लुटाते रहे ॥ ३६४ सफ़ा ॥

२ हरिदास कवि पकाक्ष कायस्थ पन्ना के निवासी (१),
सं० १६०१ में उ० ।

इनका बनाया हुआ रसकौमुदी नाम ग्रन्थ भाषा-साहित्य में बहुत सुन्दर है । इसके सिवा छन्द, अलंकार इत्यादि भाषा-काव्य के अंगों-उपांगों के १२ और ग्रंथ बनाये हैं ॥ ३६१ सफ़ा ॥

३ हरिदास कवि (२) बंदीजन बाँदावाले, नोने कवि के पिता,
सं० १८९१ में उ० ।

इन्होंने राधाभूषण नाम शृंगार का बहुत सुंदर ग्रन्थ बनाया है ॥ ३६२ सफ़ा ॥

४ हरिदासस्वामी वृन्दावननिवासी, सं० १६४० में उ० ।

इन महाराज का जीवनचरित्र भक्तमाल में है । यहाँ हम को केवल काव्य का ही वर्णन करना ज़रूरी है । सो संस्कृत काव्य के जयदेव कवि से इनकी कविता कम नहीं है । भाषा में तो इनके पद सूर और तुलसी के पदों के समान मधुर और ललित हैं ।

इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं, पर हमने इनकी कविता केवल वही देखी है, जो रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में है । तानसेन को इन्हीं महाराज ने काव्य और संगीत-विद्या पढ़ाई थी ॥ ३७४ सफ़ा ॥

५ हरिदेव कवि बनिया वृन्दावननिवासी ।

इन्होंने छन्दपयोनिधि नाम पिंगल का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है ॥ ३६३ सफ़ा ॥

६ हरीराम कवि, सं० १७०८ में उ० ।

इन्होंने पिंगल बहुत अच्छा बनाया है ॥ ३६३ सफ़ा ॥

७ हरदयाल कवि ।

शृंगार की सुन्दर कविता की है ॥ ३६३ सफ़ा ॥

८ हिरदेश कवि बंदीजन झाँसीवाले, सं० १९०१ में उ० ।

शृङ्गारनवरस नाम ग्रंथ बनाया है ॥ ३६४ सफ़ा ॥

९ हरिहर कवि, सं० १७९४ में उ० ।

सत्कवि थे ॥ ३६४ सफ़ा ॥

१० हरिकेश जहाँगीराबाद, सेहुँडा, बुंदेलखंडवासी, सं० १७६० में उ० ।

यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ पन्ना में थे । इनका काव्य बहुत ललित है ॥ ३६५ सफ़ा ॥

११ हरिवंश मिश्र बिलग्रामी, सं० १७२९ में उ० ।

यह महाकवि अमेठी में बहुत दिन तक राजा हनुमन्तसिंह के पास रहे हैं । हमने इनके हाथ के लिखे हुए पद्मावत ग्रंथ में यह बात देखी है कि इन्होंने अब्दुल जलील बिलग्रामी को भाषाकाव्य पढ़ाया था ॥ ३६५ सफ़ा ॥

१२ हितहरिवंश स्वामी गोसाईं वृन्दावननिवासी,
व्यास स्वामी के पुत्र, सं० १५५९ में उ० ।

इनके पिता व्यासजी ने राधावल्लभी सम्प्रदाय चलाया । यह देवबन्द के रहनेवाले गौड़ ब्राह्मण थे । हितहरिवंशजी महान्

कवि थे। संस्कृत में राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषा में हित-चौरासीधाम ग्रंथ महा सुन्दर बनाया है ॥ ३६९ सफ़ा ॥

१३ हरि कवि।

यह महान् कवि थे। इन्होंने चमत्कारचन्द्रिका नाथ ग्रंथ भाषा-भूषण का टीका, और कविप्रियाभरण नाम ग्रन्थ कविप्रिया का तिलक, विस्तारपूर्वक बनाया है। तीनों काण्ड अमरकोष की भाषा भी की है ॥ ३६६ सफ़ा ॥

१४ हरिवल्लभ कवि।

शांतरस की कविता की है ॥ ३६६ सफ़ा ॥

१५ हरिलाल कवि।

सामान्य कविता की है ॥ ३६६ सफ़ा ॥

१६ हठी कवि व्रजवासी, सं० १८८७ में उ०।

इन्होंने राधाशतक नाम ग्रंथ बनाया है ॥ ३६६ सफ़ा ॥

१७ हनुमान् कवि बन्दीजन बनारसी। वि०।

शृंगार की सरस कविता की है। सुन्दरीतिलक में इनके बहुत कवित्त हैं ॥ ३६७ सफ़ा ॥

१८ हनुमंत कवि।

राजा भानुप्रतापसिंह के यहाँ थे ॥ ३६८ सफ़ा ॥

१९ होलराय कवि बंदीजन होलपुर, ज़िले बाराबंकी, सं० १६४० में उ०।

यह महान् कवि अकबर के दरबार तक, राजा हरिवंशराय दीवान कायस्थ बदरकावासी के वसीले से, पहुँचे, और एक चक पाकर उसी में होलपुर नाम ग्राम बसाया। एक दिन श्री गोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्या से लौटते समय होलपुर में आये। होल-राय ने गोसाईंजी के लोटे की प्रशंसा में कहा—

लोटा तुलसीदास को, लाख टका को मोल ॥

सुनकर गोसाईंजी बोले —

मोल-तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल ॥

होलराय उस लोटे को मूर्ति के समान स्थापित कर उसके ऊपर चबूतरा बाँध पूजन करते रहे। हमने अपनी आँखों से देखा है कि आज तक उसकी पूजा होती है। इस होलपुर में सिवा गिरिधर और नीलकंठ इत्यादि के कोई नामी कवि नहीं हुए। इन दिनों लछि-राम और सन्तबकस, ये दो कवि अच्छे हैं। यह गाँव आज तक इन्हीं बन्दीजनों के पास है ॥ ३६८ सफ़ा ॥

२० हितनन्द कवि।

सत्कवि थे ॥ ३६९ सफ़ा ॥

२१ हरिभानु कवि।

भाषासाहित्य का नरिन्दभूषण नाम ग्रंथ महासुन्दर बनाया है। अपने घर और सन्-संवत् का कुछ हाल नहीं लिखा ॥ ३७० सफ़ा ॥

२२ हुसेन कवि, सं० १७०८ में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं ॥ ३७० ॥

२३ हेमगोपाल कवि, सं० १७८० में उ०।

इनका एक ही कवित्त महाकूट हमने पाया है ॥ ३७० सफ़ा ॥

२४ हेमनाथ कवि।

केहरी कल्यानसिंह के यहाँ थे ॥ ३७१ सफ़ा ॥

२५ हेम कवि।

शृंगार के सुंदर कवित्त हैं ॥ ३७२ सफ़ा ॥

२६ हरिश्चन्द्र बाबू बनारसी, गोपालचंद्र साहु उपनाम गिरिधरदास के पुत्र। वि०।

यह विद्या के प्रचार में रात-दिन लगे रहते हैं। सब विद्याओं

की पुस्तकें अपने सरस्वती-भंडार में इकट्ठी की हैं। सब प्रकार के गुणीजन इनकी सभा में विराजमान रहते हैं। यह भाषा और उर्दू, दोनों ज़बानों के कवि हैं। सुंदरीतिलक नामक बहुत ही ललित संग्रह छपवाया है, और जो ग्रंथ इन्होंने बनाये हैं, उनके हालात से हम नावाक़िफ़ हैं॥ ३७१ सफ़ा॥

२७ हरिजीवन कवि।

कवित्त सुंदर हैं॥ ३७२ सफ़ा॥

२८ हरिजन कवि, सं० १६१० में उ०।

इनके कवित्त हज़ारे में हैं॥ ३७३ सफ़ा॥

२९ हरजू कवि, सं० १७०५ में उ०।

ऐज़न्॥ ३७३ सफ़ा॥

३० हीरामणि कवि, सं० १६८० में उ०।

ऐज़न्॥ ३७३ सफ़ा॥

३१ हरदेव कवि, सं० १८३० में उ०।

यह कवि रघुनाथराव पेशवा के यहाँ थे॥ ३७२ सफ़ा॥

३२ हरिलाल कवि (२)।

शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं॥ ३७२ सफ़ा॥

३३ हरिराम प्राचीन, सं० १६८० में उ०।

इनका नखशिख बहुत सुन्दर है॥ ३७३ सफ़ा॥

३४ हिमाचलराम कवि, शान्तिजी श्रीब्राह्मण भटौली, ज़िले फ़ैज़ाबाद, सं० १९०४ में उ०।

सीधीसादी कविता है॥ ३७४ सफ़ा॥

३५ हीरालाल कवि।

शृङ्गार के बहुत सुंदर कवित्त हैं॥ ३७४ सफ़ा॥

३६ हुलास कवि।

ऐज़न्॥ ३७४ सफ़ा॥

३७ हरिचरणदास कवि ।

इन्होंने भाषासाहित्य का महा सुंदर, अद्भुत, अपूर्व, बृहत् कविवल्लभ नाम एक ग्रंथ बनाया है । इस ग्रंथ में अपने ग्राम और सन्-संवत् का वर्णन नहीं किया ॥ ३७५ सफ़ा ॥

३८ हरिचन्द्र कवि बरसानेवाले ।

इन महाराज ने छंदस्वरूपिणी पिंगल का ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया है । परंतु ग्रंथ में सन्-संवत् कुछ नहीं लिखा ॥ ३७५ सफ़ा ॥

३९ हज़ारीलाल त्रिवेदी अलीगंज, ज़िले खीरी । वि० ।

नीति-शांत-रस-सम्बन्धी इनका काव्य सुंदर है ॥ ३६९ सफ़ा ॥

४० हरिनाथ ब्राह्मण काशीनिवासी, सं० १८२६ में उ० ।

इन्होंने अलंकारदर्पण नाम ग्रंथ बनाया है ॥

४१ हिम्मतबहादुर नवाब, सं० १७६५ में उ० ।

बलदेव कवि ने सत्कविगिराविलास में इनके कवित्त लिखे हैं ॥

४२ हितराम कवि ।

सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है ॥

४३ हरिजन कवि ललितपुरनिवासी, सं० १९११ में उ० ।

इन कवि ने महाराज ईश्वरीनारायणसिंह काशिराज के नाम से रसिकप्रिया की टीका बनाई है ॥

४४ हरिचन्द्र कवि बन्दीजन चरखारीवाले ।

राजा छत्रशाल चरखारीवाले के यहाँ थे ॥

४५ हुलासराम कवि ।

शालिहोत्र भाषा बनाया है ॥

इति श्रीशिवसिंहसेंगरकृत शिवसिंहसरोज में
कवियों के जीवनचरित्र समाप्त हुए ।
